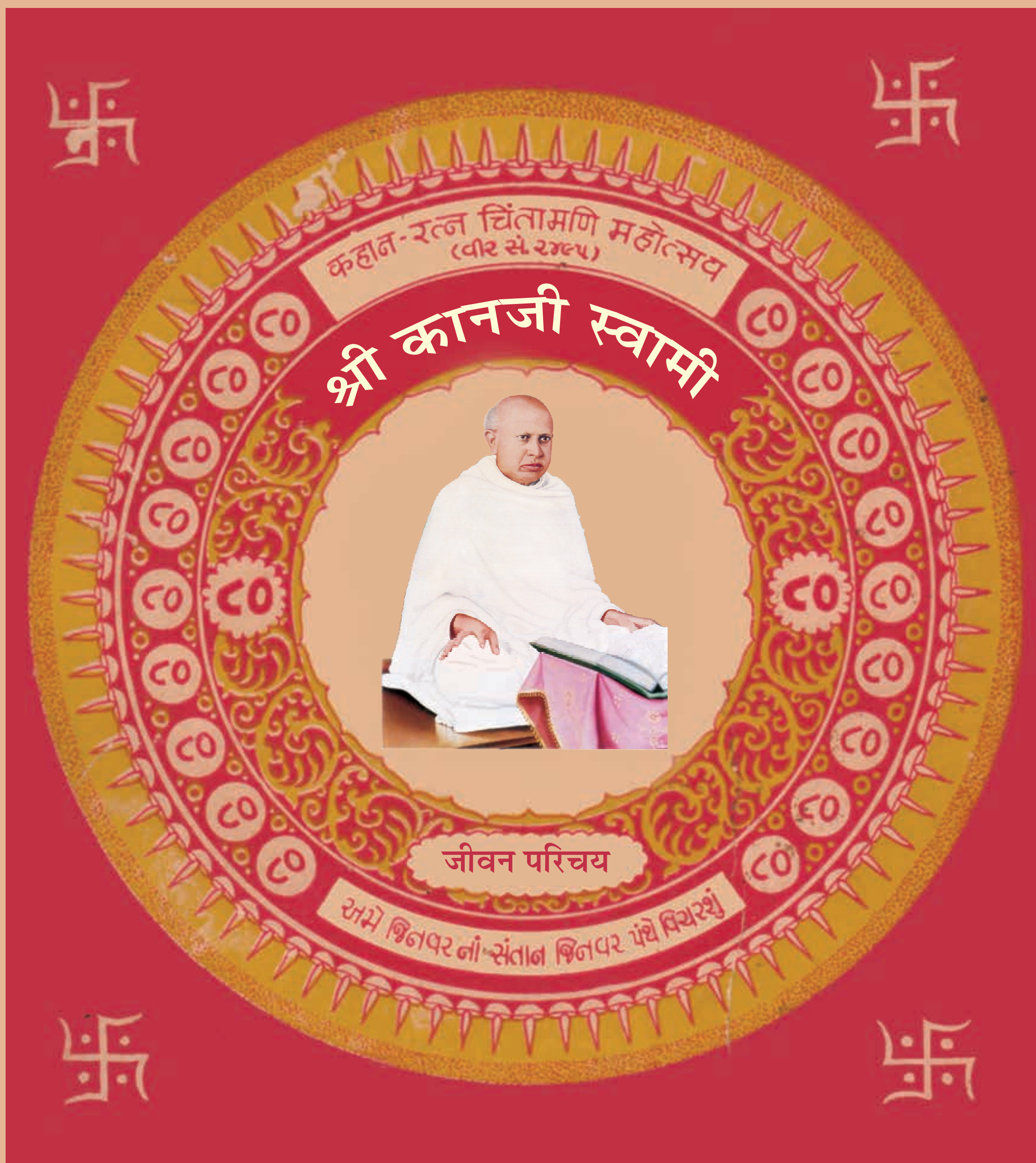

संपादक
ब्र. हरिलाल जैन
सोनगढ़

प्रकाशक
दि. जैन मुमुक्षु मण्डल
मुम्बई

ॐ

परमात्मने नमः

कहानरत्नचिन्तामणि महोत्सव

(वीर संवत् 2495)

श्री कानजीस्वामी जीवन परिचय

(पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के रत्नचिन्तामणि जन्मजयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रकाशित जीवन परिचय एवं प्रभावना तथा विशिष्ट परिशिष्टसहित)

गुजराती सम्पादक :

ब्रह्मचारी हरिलाल जैन, सोनगढ़

हिन्दी अनुवाद :

पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन

बिजौलियां, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

आद्य प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल मुम्बई

वर्तमान प्रस्तुति :

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट

302, कृष्णकुंज, प्लॉट नं. 30, नवयुग सी.एच.एस. लि.

वी. एल. मेहता मार्ग, विलेपार्ले (वेस्ट), मुम्बई-400 056

फोन : (022) 26130820

मंगल बधाई

विक्रम संवत	वीर संवत	ई. सन
2078	2548	2022

प्रकाशन तिथि

प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन की **109वीं जन्म-जयन्ती प्रसंग** पर प्रकाशित,

भाद्र कृष्ण दो, दिनांक 13 अगस्त 2022

स्वागत आज तुम्हारा है

विदेहक्षेत्रथी भरते आव्या,
सीमन्धरदेवना सन्देश लाव्या;
आवो... गुरुजी! आवो आवो,
अमने शुद्धात्मा दरशावो...

मोक्षमार्गना पंथे चाल्या,
मुमुक्षुने अे मार्ग बताव्या;
रत्नचिंतामणि आप अमारा,
करीअे सन्मान आज तुमारा....

अष्टकर्म ने शून्य करो छो,
अष्ट महा गुण आप वरो छो,
रत्नत्रयना दाता गुरुजी!
स्वागत आज तुमारा है...

—: प्राप्ति स्थान :—

1. श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट
सोनगढ़ (सौराष्ट्र) – 364250 फोन : 02846-244334

2. श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट
302, कृष्णकुंज, प्लॉट नं. 30, नवयुग सी.एच.एस. लि.
वी. एल. मेहता मार्ग, विलेपार्ला (वेस्ट), मुम्बई-400 056
फोन : (022) 26130820, 26104912, 62369046
www.vitragvani.com, email - info@vitragvani.com

टाईप सेटिंग : **विवेक कम्प्यूटर,** अलीगढ़।

रत्नत्रयवरदः शतं जीव शरदः

वन्दे तद्गुणलब्धे

पूज्य गुरुदेवश्री की 80वीं रत्नचिन्तामणि जन्मजयन्ती महोत्सव के प्रसंग पर मुम्बई मुमुक्षु मण्डल द्वारा प्रकाशित होनेवाली इस पुस्तक में गुरुदेव के पवित्र जीवन का और उनके द्वारा हुई प्रभावना का परिचय दिया गया है। गुरुदेव के पवित्र जीवन में से आत्मिक साधना की महान प्रेरणा अपने को प्राप्त होती है। गुरुदेव के पवित्र हस्ताक्षरों का संग्रह भी इस पुस्तक में लिया गया है, वे हस्ताक्षर मात्र अक्षर ही नहीं परन्तु उनके अन्तर के पवित्र भावों को स्पर्श कर निकले हुए उद्गार हैं।

गुरुदेव की 75वीं हीरक जयन्ती का उत्सव और यह 80वीं रत्नचिन्तामणि जयन्ती का उत्सव, ये दोनों महान उत्सव मनाने का महाभाग्य मुम्बई महानगरी को प्राप्त हुआ और दोनों प्रसंग सुन्दर-सुशोभित ग्रन्थों का प्रकाशन भी मुम्बई मुमुक्षु मण्डल द्वारा ही हुआ, इसलिए मुम्बई के मुमुक्षु मण्डल धन्यवाद के पात्र हैं। और दोनों ग्रन्थों द्वारा गुरुदेव के पवित्र गुणगान गाने का और उनके प्रति अन्तर की उर्मियाँ व्यक्त करने का जो सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ—एक भावी तीर्थंकर के साथ उनके चरण सानिध्य में सदैव रहने का और उनके उत्तम जीवन का आलेखन करने का जो मंगलकार्य मुझे प्राप्त हुआ, उसे मैं मेरे जीवन की सफलता और निकट भव्यता की निशानी समझता हूँ। गुरुदेव के मंगल आशीर्वाद प्राप्त करके जीवन में धन्यता अनुभव होती है। हे गुरुदेव! आपके गुणगान के फलरूप आपके जैसे गुण मुझे प्राप्त होओ—वन्दे तद्गुणलब्धे।

—हरि.

प्रकाशकीय

सम्यक्त्व जैसा उत्तम चिन्तामणिरत्न जिनकी वाणी में सदैव झलक रहा है, जिनका ज्ञानरत्न अपनी किरणों द्वारा लाखों जीवों के अन्तर में चेतन प्रकाश फैलाता हुआ सूर्य को भी शर्मिन्दा कर रहा है, ऐसे इस रत्नचिन्तामणि गुरुदेव का मंगल जन्मोत्सव 'रत्नचिन्तामणि जन्म-जयन्ती' रूप से मुम्बई में मनाते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है तथा इस प्रसंग पर इस पुस्तक द्वारा गुरुदेव के प्रति भक्ति-अंजुली अर्पण करते हुए और उनके मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर हम विशेष हर्ष अनुभव कर रहे हैं।

महान भाग्य से कहान गुरु जैसे उत्तम रत्नचिन्तामणि अपने को प्राप्त हुए, उनका जीवन वह भूतकाल में साक्षात् तीर्थंकर के सान्निध्य से गौरववन्त है तो भविष्यकाल में भी वे साक्षात् तीर्थंकरत्व के वैभव से गौरववन्त बननेवाला है। वर्तमान में भी तीर्थंकर के पंथ पर चलते हुए और जगत में उस मार्ग को प्रसिद्ध करते हुए अपने को उस मार्ग पर ले जा रहे हैं, ऐसे मुक्तिपथ प्रदर्शक गुरुदेव के सहवर्तीपने से जीवन में धन्यता अनुभव होती है।

ऐसे महिमावन्त गुरुदेव के जीवन का यह भावभीना संकलन ब्रह्मचारी भाईश्री हरिलाल जैन ने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक करके दिया है, वे 25 वर्ष से गुरुदेव के चरणों में रहते हैं इसलिए गुरुदेव के अन्तर के विशेष भावों को और कितने ही विशेष प्रसंगों को इस पुस्तक में उतार सके हैं, इसलिए यह पुस्तक बहुत सुन्दर बनी है, इसके लिये धन्यवाद के साथ उनका आभार मानते हैं। आर.आर. सेठ की सोनगढ़ की प्रवीण प्रिन्टरी ने लगनपूर्वक इस पुस्तक का सुन्दर प्रकाशन कार्य समय पर करके दिया तदर्थ उनका और उनके मैनेजर श्री जुगलदासभाई का और स्टाफ का भी हम आभार मानते हैं।

गुरुदेव की मंगल छाया में ऐसे प्रसंग बारम्बार प्राप्त हो, और उनके प्रताप से मनोरथ पूरे करनेवाले रत्नत्रयचिन्तामणि अपने को प्राप्त हो, यही भावना।

मुम्बई दिनांक 18-4-1969 श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल (मुम्बई) द्वारा

वीर संवत् 2495, वैशाख शुक्ल दूज रमणीकलाल जेठालाल सेठ (प्रमुख)

(नोट - प्रस्तुत पुस्तक का यह कम्प्यूटराईज्ड संस्करण www.vitragvani.com वेबसाईट में शास्त्र भण्डार के अन्तर्गत अन्य साहित्य विभाग में उपलब्ध है।)

अध्यात्मसन्त श्री कानजीस्वामी

[संक्षिप्त जीवनपरिचय]

[वि.सं. 1999 : वैशाख शुक्ल 2]

[ले. : **हिम्मतलाल जेठालाल शाह,** बी.एससी.]

जिनकी 80वीं जन्मजयन्ती का रत्नचिन्तामणि–महोत्सव गत मास वैशाख शुक्ला दोज के दिन मुम्बई में अत्यन्त हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया, ऐसे परमपूज्य गुरुदेव का जीवनपरिचय आत्मधर्म में पहली बार प्रकाशित करते हुए अति आनन्द हो रहा है। पूज्य गुरुदेव के पवित्र जीवन का गुणगान ही उनके प्रति सर्वश्रेष्ठ उपकार–अंजलि है। गुरुदेव का जीवन हममें सत् एवं सन्त दोनों के प्रति परम आदर भाव जागृत करके आत्मार्थिता का पोषण करता है। **(सम्पादक)**

जन्म एवं बाल्यकाल

परम पूज्य अध्यात्मसन्त श्री कानजीस्वामी का शुभजन्म वि.सं. 1946; वैशाख शुक्ला दोज, रविवार के दिन सौराष्ट्र के उमराला ग्राम में स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय में हुआ था। उनकी माता का नाम उजमबाबाई तथा पिता का नाम मोतीचन्दजी था। वे दशाश्रीमाली वणिक थे। बचपन में किसी ज्योतिषी ने उनके भविष्य के बारे में कहा था कि वे महापुरुष होंगे। बचपन से ही उनके मुख पर वैराग्य की सौम्यता तथा नेत्रों में बुद्धि एवं वीर्य का तेज दृष्टिगोचर होता था। उन्होंने उमराला के स्कूल में अध्ययन किया था। यद्यपि वे स्कूल में तथा जैन पाठशाला में प्राय: प्रथम नम्बर ही आते थे, परन्तु स्कूल में जो व्यवहारिक ज्ञान दिया जाता था, उससे उनके मन को सन्तोष नहीं होता था और अन्तर में ऐसा लगता रहता था कि ''मैं जिसकी खोज में हूँ वो यह नहीं है।'' कभी–कभी तो यह दु:ख तीव्र हो उठता था; और एकबार तो माता से बिछुड़े हुए बालक की भाँति वे बाल–महात्मा सत्–(तात्त्विक सत्य) के वियोग में खूब रोये थे।

व्यापार में लगने पर भी वैराग्य की जागृति

छोटी उम्र में ही माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने से वे आजीविका हेतु अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री खुशालभाई के साथ पालेज गये और दुकान पर बैठने लगे। धीरे-धीरे दुकान भी अच्छी जम गयी। व्यापार में उनका वर्तन प्रामाणिक था। एक बार (करीब 16 वर्ष की उम्र में) उन्हें किसी कारणवश बड़ौदा की अदालत में जाना पड़ा। वहाँ उन्होंने हाकिम के समक्ष वास्तविक स्थिति स्पष्टता से बतला दी। उनके चेहरे पर तैरती निर्दोषता एवं निडरता की छाप हाकिम के मन पर पड़ी और उसे विश्वास हो गया कि उनकी बात बिल्कुल सत्य है, इसलिए उसे मान्य रखा।

पालेज में वे कभी-कभी नाटक देखने जाते थे; परन्तु अत्यन्त आश्चर्य की बात तो यह है कि नाटक में से शृंगारिक प्रभाव पड़ने के बदले उन महात्मा के मन पर किसी वैराग्यप्रेरक दृश्य का प्रभाव पड़ता था और वह कई दिनों तक रहता था। कभी-कभी तो नाटक देखकर आने के बाद सारी रात वैराग्य की धुन रहती थी। एकबार नाटक देखने के बाद उन्होंने 'शिवरमणी रमनार तुं, तुं ही देवनो देव' इस पंक्ति से प्रारम्भ होनेवाली कविता बनायी थी। सांसारिक रस के प्रबल निमित्तों को भी महान आत्मा वैराग्य का निमित्त बनाते हैं।

वैराग्य और दीक्षा

इस प्रकार पालेज की दुकान में व्यापार का कामकाज करने पर भी उन महात्मा का मन व्यापारमय या संसारमय नहीं हुआ था। उनका अन्तर व्यापार तो भिन्न ही था। उनके अन्तर का स्वाभाविक झुकाव सदा धर्म एवं सत्य की खोज में ही रहता था। उपाश्रय में कोई साधु आयें कि वे तुरन्त उनकी सेवा और धार्मिक चर्चा के लिये दौड़ जाते थे और अधिक समय उपाश्रय में ही बिताते थे। धार्मिक अध्ययन भी चल रहा था। उनका धार्मिक जीवन तथा सरल अन्तःकरण देखकर उनके सम्बन्धी उन्हें 'भगत' कहते थे। उन्होंने अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री खुशालभाई से स्पष्ट कह दिया था कि

'मेरी सगाई मत करना, मेरा विचार दीक्षा लेने का है।' खुशालभाई ने उन्हें बहुत समझाया कि—'भाई, तुझे विवाह न करना हो तो कोई बात नहीं, लेकिन तू दीक्षा न ले। दुकान में तेरा मन न लगता हो तो तू सारा दिन धार्मिक अध्ययन और साधुओं की संगत में लगा, लेकिन दीक्षा की बात न कर।'—इस प्रकार बहुत-बहुत समझाने पर भी उन महात्मा के वैरागी चित्त को संसार में रहना पसन्द नहीं आया। दीक्षा लेने से पूर्व वे कुछ महीने तक उन्होंने आत्मार्थी गुरु की खोज में काठियावाड, गुजरात तथा मारवाड़ के अनेक नगरों में भ्रमण किया; अनेक साधु मिले, परन्तु कहीं उनका मन स्थिर नहीं हुआ। सच बात तो यह थी कि—पूर्वभव की अधूरी छोड़ी हुई साधना के लिये जन्मे हुए वे महात्मा स्वयं ही गुरु होनेयोग्य थे। अन्त में बोटाद सम्प्रदाय के स्थानकवासी जैन साधु हीराचन्दजी महाराज के हस्त से दीक्षा ग्रहण करने का निर्णय किया और वि.सं. 1970, मगसिर शुक्ला 9 रविवार के दिन उमराला में बड़ी धूमधाम से दीक्षामहोत्सव हुआ।

शास्त्राभ्यास और पुरुषार्थ-जीवन मन्त्र

दीक्षा लेने के पश्चात् तुरन्त ही पूज्य गुरुदेवश्री ने श्वेताम्बर शास्त्रों का गहन अध्ययन प्रारम्भ कर दिया; वह यहाँ तक कि आहारादि शारीरिक आवश्यकताओं में जो समय जाता था, वह भी उन्हें खटकता था। वे तो दिन भर उपाश्रय के किसी एकान्त भाग में अध्ययन करते दिखायी देते थे। इस प्रकार चार वर्ष में लगभग सभी श्वेताम्बर शास्त्रों का गहन अध्ययन विचारपूर्वक समाप्त कर लिया। वे सम्प्रदाय की रीति अनुसार चारित्र का पालन दृढ़ता से करते थे। कुछ ही समय में उनकी आत्मार्थिता की, ज्ञानपिपासा की एवं उग्र चारित्र की सुवास काठियावाड़ (सौराष्ट्र) में फैल गयी। उनके गुरु की उन पर बड़ी कृपा थी। स्वामीजी पहले से ही तीव्र पुरुषार्थी थे। कई बार उन्हें किसी 'भवितव्यता' में ही माननेवाले व्यक्ति की ओर से ऐसा सुनने को मिलता कि—'चाहे जैसे कठिन चारित्र का पालन करें परन्तु यदि केवली भगवान

ने अनन्त भव देखे होंगे तो उनमें से एक भी भव कम होनेवाला नहीं है।' गुरुदेवश्री ऐसे पुरुषार्थहीनता के मिथ्यावचनों को सहन नहीं कर सकते थे और बोल उठते थे कि 'जो पुरुषार्थी है, उसके अनन्त भव केवली भगवान ने देखे ही नहीं हैं।' जिसे पुरुषार्थ भासित हुआ है, उसके अनन्त भव होते ही नहीं, पुरुषार्थ को भवस्थिति आदि कोई बाधक नहीं होते, उसे तो पाँचों समवाय कारण प्राप्त हो गये हैं। 'पुरुषार्थ, पुरुषार्थ और पुरुषार्थ' यह गुरुदेवश्री का जीवन मन्त्र है।

दीक्षा के वर्षों में गुरुदेवश्री ने श्वेताम्बर शास्त्रों का खूब अध्ययन किया। 'भगवती सूत्र' उन्होंने 17 बार पढ़ा है। प्रत्येक कार्य करते हुए उनका लक्ष सत्य की शोध के प्रति रहता था।

शासन-उद्धार की एक पवित्र घटना : समयसार की प्राप्ति

सं. 1978 में अनेक मुमुक्षुओं की पुण्योदय सूचक एक पवित्र घटना हो गयी। भाग्य के किसी धन्य क्षण में श्रीमद् भगवत् कुन्दकुन्दाचार्यदेव-विरचित श्री समयसार नाम का महान ग्रन्थ गुरुदेवश्री के हस्तकमल में आ गया। समयसार पढ़ते ही उनके हर्ष का पार न रहा। जिसकी खोज में वे थे, वह उन्हें मिल गया। उनके अन्तर्नेत्रों ने श्री समयसारजी में अमृत के सरोवर झलकते देखे। एक के बाद एक गाथा पढ़ते हुए गुरुदेवश्री ने घूँट ले-लेकर उस अमृत का पान किया। ग्रन्थाधिराज समयसारजी ने गुरुदेवश्री पर अपूर्व, अलौकिक, अनुपम उपकार किया और उनके आत्मानन्द का पार न रहा। गुरुदेवश्री के अन्तर्जीवन में परम पवित्र परिवर्तन हुआ। भूली-भटकी हुई परिणति ने निजघर देखा; उपयोग-झरने का प्रवाह अमृतमय हो गया। जिनेश्वरदेव के सुनन्दन गुरुदेव की ज्ञान कला अब अपूर्व ढंग से खिलने लगी।

अद्भुत व्याख्यान शैली और सम्यग्दर्शन की महिमा

संवत् 1991 तक गुरुदेवश्री ने स्थानकवासी सम्प्रदाय में रहकर बोटाद, बढ़वाण, अमेरली, पोरबन्दर, जामनगर, राजकोट आदि नगरों में चातुर्मास किये और

शेष काल में सैकड़ों छोटे–बड़े ग्रामों को पावन किया। काठियावाड़ के हजारों लोगों में गुरुदेवश्री के उपदेश के प्रति हार्दिक बहुमान प्रगट हुआ। अन्तरात्मधर्म का खूब उद्योत हुआ। जिस नगर में गुरुदेवश्री का चातुर्मास हो, वहाँ बाहर के हजारों स्त्री–पुरुष दर्शन करने आते और गुरुदेवश्री की अमृतवाणी का लाभ लेते थे। गुरुदेवश्री श्वेताम्बर सम्प्रदाय में होने से व्याख्यान में मुख्यत: श्वेताम्बर शास्त्रों की वचनिका होती थी (यद्यपि अन्तिम वर्षों में समयसारादि शास्त्र भी सभा में पढ़े जाते थे।) परन्तु अपना हृदय अपूर्व होने से उन शास्त्रों में से भी गुरुदेवश्री अन्य व्याख्याताओं की अपेक्षा भिन्न प्रकार के अपूर्व सिद्धान्त निकालते थे, विवाद के स्थलों को छेड़ते ही न थे। वे कोई भी अधिकार पढ़ते हों, उसमें कही हुई वास्तविकता को अन्तरंग भावों के साथ मिलाकर उसमें से ऐसे अलौकिक आध्यात्मिक न्याय निकालते थे कि जो कहीं सुनने को न मिले हों। ''जिस भाव से तीर्थंकर नामकर्म का बन्ध हो, वह भाव भी हेय है... शरीर के रोम–रोम में तीव्र रोग का होना, वह दु:ख नहीं है, दु:ख का स्वरूप अलग है... व्याख्यान सुनकर कई लोग पूछे तो मुझे बहुत लाभ हो, ऐसा माननेवाला व्याख्याता मिथ्यादृष्टि है... इस दु:ख में समता नहीं रखूँगा तो कर्म बन्ध होगा—ऐसे भाव सहित समता रखना, वह भी मोक्षमार्ग नहीं है... व्यवहार पाँच महाव्रत भी मात्र पुण्य बन्ध का कारण है।'' ऐसे हजारों अपूर्व न्याय गुरुदेवश्री अपने व्याख्यान में अत्यन्त स्पष्टरूप से लोगों को समझाते थे। प्रत्येक व्याख्यान में वे सम्यग्दर्शन पर अत्यन्त भार देते थे। वे अनेक बार कहते थे कि—''शरीर की त्वचा उतारकर नमक छिड़कनेवाले पर भी क्रोध नहीं किया—ऐसे व्यवहारचारित्र को इस जीव ने अनन्त बार पालन किया है परन्तु सम्यग्दर्शन एक बार भी प्रगट नहीं किया। लाखों जीवों की हिंसा की अपेक्षा मिथ्यादर्शन का पाप अनन्तगुना है... सम्यक्त्व सुगम नहीं है। लाखों–करोड़ों में किसी जीव को वह होता है। सम्यक्त्वी जीव अपना निर्णय स्वयं ही कर सकता है, सम्यक्त्वी समस्त ब्रह्माण्ड के भावों को पी गया होता है। आजकल तो सब अपने–अपने घर का सम्यक्त्व मान बैठे हैं; सम्यक्त्वी को तो मोक्ष के अनन्त सुख

का नमूना प्राप्त हुआ होता है। सम्यक्त्वी का वह सुख, मोक्षसुख के अनन्तवें भाग होने पर भी अनन्त है।'' अनेक प्रकार से, अनेक तर्कों से, अनेक दृष्टान्तों से सम्यक्त्व का अद्‌भुत माहात्म्य वे लोगों को ठसाते थे। स्वामीजी की जैनधर्म के प्रति अनन्य अचल श्रद्धा है। सारा जगत न माने, तथापि अपनी मान्यता में स्वयं अकेले टिके रहने की अजब दृढ़ता तथा अनुभव के जोरपूर्वक निकलती हुई उनकी न्याय भरी वाणी बड़े–बड़े नास्तिकों को विचार में डाल देती थी और कितनों को आस्तिक बना देती थी। उस केसरी सिंह का सिंहनाद पात्र जीवों के हृदय की गहराई का स्पर्श करके उनके आत्मिक वीर्य को उल्लसित करता था। सत्य के बल से समस्त जगत के अभिप्रायों से सम्मुख जूझते हुए उस अध्यात्मयोगी की गर्जना जिन्होंने सुनी होगी, उनके कानों में अब भी उसकी ध्वनि गूँजती होगी।

ऐसी अद्‌भुत प्रभावशाली एवं कल्याणकारिणी वाणी अनेक जीवों को आकर्षित करे, वह स्वाभाविक है। साधारणतः उपाश्रय में काम–धन्धे से निवृत्त हुए वृद्ध पुरुष आते हैं; परन्तु जहाँ कानजीस्वामी पधारते थे, वहाँ तो शिक्षित युवक, वकील, डॉक्टर और शास्त्रज्ञान रखनेवाले लोगों से उपाश्रय भर जाता था। बड़े नगरों में तो पूज्य गुरुदेवश्री का व्याख्यान किसी विशाल जगह में रखना पड़ता था। दिन–प्रतिदिन उनकी ख्याति बढ़ती ही गई। व्याख्यान में हजारों लोग आते थे। आसपास के ग्रामों से भी लोग अच्छी संख्या में एकत्रित होते थे। जगह आगे मिले, इस हेतु अनेक स्त्री–पुरुष घण्टा डेढ़ घण्टा पहले ही आ बैठते थे। कोई जिज्ञासु व्याख्यान संक्षेप में लिख लेते थे। जिस नगर में स्वामीजी पधारते थे, वहाँ श्रावकों के घर–घर में धर्मचर्चा चलती थी और सर्वत्र धर्म का वातावरण छा जाता था। गलियों में भी श्रावकों की टोलियाँ धर्म की बातें करती दिखायी देती थीं। प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल उपाश्रय के रास्तों पर लोगों का आना–जाना लगा रहता था। उपाश्रय में लगभग पूरे दिन तत्त्वज्ञानचर्चा की शीतल लहरें आती थीं। कितने ही मुमुक्षुओं का मन तो व्यापार–धन्धे में भी नहीं लगता था और गुरुदेवश्री की शीतल छाया में अधिकांश समय बिताते

थे। इस प्रकार गाँव-गाँव में अनेक सत्पात्र जीवों के हृदय में गुरुदेवश्री ने सत् का बीजारोपण किया। गुरुदेवश्री के वियोग में भी वे मुमुक्षु उनके बोध का विचार करते थे। भवभ्रमण का अन्त कैसे हो, सम्यक्त्व की प्राप्ति किस प्रकार होगी—उसकी अभिलाषा करते हुए कभी-कभी मिलकर तत्त्वचर्चा और गुरुदेवश्री द्वारा बतलायी गई पुस्तकों का अध्ययन-मनन करते थे।

स्थानकवासी साधुओं में गुरुदेवश्री का स्थान अद्वितीय था। 'कानजीस्वामी क्या कहते हैं'—यह जानने के लिये साधु-साध्वियाँ उत्सुक रहते थे। कुछ साधु साध्वियाँ पूज्य गुरुदेवश्री के व्याख्यान की टिप्पणियाँ मुमुक्षु भाई-बहिनों से लेकर पढ़ लेते थे।

गुरुदेवश्री ने कई वर्षों तक स्थानकवासी समुदाय में रहकर धर्म का खूब प्रचार किया और साधुओं तथा श्रावकों को विचार में डाल दिया।

परिवर्तन : सम्प्रदाय त्याग

गुरुदेवश्री सं. 1991 तक स्थानकवासी सम्प्रदाय में रहे; परन्तु अन्तरंग आत्मा में वास्तविक वस्तुस्वभाव एवं सर्वज्ञ वीतराग कथित दिगम्बर जैन निर्ग्रन्थ मार्ग दीर्घकाल से सत्य लगने के कारण उन्होंने सोनगढ़ नामक छोटे से ग्राम में वहाँ के एक गृहस्थ के खाली मकान में सं. 1991 चैत्र शुक्ला 13 मंगलवार के दिन 'परिवर्तन' किया—स्थानकवासी सम्प्रदाय के चिह्न मुखवस्त्रिका (मुँहपत्ति) का त्याग कर दिया। सम्प्रदाय का त्याग करनेवालों पर कैसी-कैसी महान विपत्तियाँ आती हैं, बाल जीवों की ओर से अज्ञान के कारण उन पर कैसी अघटित निन्दा की झड़ियाँ बरसती हैं, उसका उन्हें पूरा ख्याल था; तथापि उन निडर तथा निस्पृह महात्मा ने उसकी कोई परवाह नहीं की। सम्प्रदाय के हजारों श्रावकों के हृदय में गुरुदेवश्री अग्रस्थान पर विराजते थे, इसलिए अनेक श्रावकों अनेक प्रकार से प्रेमपूर्वक परिवर्तन न करने की प्रार्थना की; परन्तु जिनके रोम-रोम में सर्वज्ञ वीतराग प्रणीत यथार्थ सन्मार्ग के प्रति (सम्यक् दिगम्बर जैनधर्म के प्रति) भक्ति उल्लसित हो रही थी, वे महात्मा उस प्रेमपूर्ण प्रार्थना को हृदय में लेकर, राग में बहकर, सत् को कैसे गौण होने देते? सत्

के प्रति परम भक्ति में सर्वप्रकार की प्रतिकूलता का भय तथा अनुकूलता का राग अत्यन्त गौण हो गये। जगत से बिल्कुल निरपेक्षरूप विशाल मानवसमुदाय के बीच गरजनेवाला वह सिंह सत् के लिये सोनगढ़ के एकान्त स्थान में जा बैठा।

गुरुदेवश्री ने जिसमें परिवर्तन किया था, वह मकान बस्ती से दूर होने के कारण अत्यन्त शान्त था। आनेवाले मनुष्य का पगरव दूर से सुनायी देता था। कुछ महीनों तक ऐसे निर्जन स्थान में मात्र (गुरुदेवश्री के परमभक्त) जीवणलालजी महाराज के साथ तथा दर्शनार्थ आनेवाले किन्हीं दो–चार मुमुक्षुओं के साथ स्वाध्याय, ज्ञान–ध्यान आदि में लीन हुए गुरुदेवश्री को देखने पर हजारों का जनसमुदाय स्मृतिगोचर होता था और उस वैभव को सर्पकंचुकवत् छोड़नेवाले महात्मा की सिंहवृत्ति, निरीहता एवं निर्मानता के आगे हृदय झुक जाता था।

सम्प्रदाय पर परिवर्तन का प्रभाव

जो स्थानकवासी सम्प्रदाय कानजीस्वामी के नाम से गौरव लेता था, उसमें गुरुदेवश्री के 'परिवर्तन' से खलबली मच जाना स्वाभाविक है। परन्तु गुरुदेवश्री ने सं. 1991 तक तो काठियावाड़ में लगभग प्रत्येक स्थानकवासी के हृदय में स्थान बना लिया था, गुरुदेवश्री के पीछे मानों काठियावाड़ पागल हो गया था। इसलिए 'स्वामीजी ने जो कुछ किया होगा, वह समझकर ही किया होगा'—ऐसा विचारकर धीरे–धीरे कई लोग तटस्थ हो गये। कई लोग सोनगढ़ में क्या चलता है, वह देखने के लिये आते थे परन्तु गुरुदेवश्री का परम पवित्र जीवन एवं अपूर्व उपदेश सुनकर शान्त हो जाते थे, भक्ति का टूटा हुआ प्रवाह पुनः प्रवाहित होने लगता था। कोई–कोई तो पश्चाताप करते थे कि—'महाराज, आपके सम्बन्ध में बिलकुल कल्पित बातें सुनकर हमने आपकी बड़ी आशातना की है, और खूब कर्म बाँधे हैं, हमें क्षमा कीजिये।' इस प्रकार ज्यों–ज्यों गुरुदेवश्री के पवित्र उज्ज्वल जीवन एवं आध्यात्मिक उपदेश सम्बन्धी बातें लोगों में फैलती गई, त्यों–त्यों अधिकाधिक लोग गुरुदेवश्री के प्रति मध्यस्थ होते गये और साम्प्रदायिक मोह के कारण जो भक्ति दब गई थी, वह कई

लोगों में पुन: प्रगट होती गई। मुमुक्षु एवं बुद्धिशाली समुदाय की भक्ति तो गुरुदेवश्री के प्रति ज्यों की त्यों बनी हुई थी। अनेक मुमुक्षुओं के जीवनाधार कानजीस्वामी सोनगढ़ जाकर रहे, तो उनके चित्त सोनगढ़ की ओर आकर्षित हुए। धीरे-धीरे मुमुक्षुओं का प्रवाह सोनगढ़ की ओर बहने लगा। साम्प्रदायिक मोह अत्यन्त दुर्निवार होने पर भी सत् के अर्थी जीवों की संख्या त्रिकाल अत्यन्त अल्प होने पर भी, साम्प्रदायिक मोह तथा लौकिक भय को छोड़कर सोनगढ़ की ओर बहता हुआ सत्संगार्थी जनों का प्रवाह दिन-प्रतिदिन वेगपूर्वक बढ़ता ही जा रहा है।

परिवर्तन करने के पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री का मुख्य निवास सोनगढ़ में ही है। उनकी उपस्थिति से सोनगढ़ एक तीर्थ जैसा बन गया है। बाहर के अनेक मुमुक्षु भाई-बहिन गुरुदेवश्री की वाणी का लाभ लेने के लिये सोनगढ़ आते हैं। दूर-दूर के प्रदेशों से अनेक दिगम्बर जैन पण्डित, ब्रह्मचारी-त्यागी भी आते हैं। बाहर से आनेवालों के लिये ठहरने तथा भोजनादि के लिये यहाँ एक जैन-अतिथिगृह है। अनेक मुमुक्षु भाई-बहिन तो अब यहाँ अपने घर बसाकर स्थायीरूप से रहने लगे हैं; कुछ लोग लगातार महीनों तक रहते हैं। वर्तमान में करीब 200 घर स्थायीरूप से निवास करनेवाले मुमुक्षुओं के हो गये हैं।

श्री जैन स्वाध्यायमन्दिर एवं धर्मचर्चा

पूज्य गुरुदेवश्री ने जिस मकान में परिवर्तन किया था, वह मकान छोटा था; इसलिए जब कई लोग आ जाते थे, तब व्याख्यान के लिये स्थान की कमी पड़ती थी। भक्तों ने एक योजना बनाकर सं. 1994 में एक मकान बनवाया और उसका नाम 'श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर' रखा। गुरुदेवश्री आजकल वहाँ रहते हैं। लगभग पूरे दिन स्वाध्याय चलती रहती है। सवेरे-दोपहर को धर्मोपदेश दिया जाता है। दोपहर को धर्मोपदेश के पश्चात् भक्ति होती है और रात्रि को धर्मचर्चा चलती है। धर्मोपदेश में तथा अन्य वचनिका में यहाँ भगवान कुन्दकुन्दाचार्य के शास्त्र, तत्त्वार्थसार, गोम्मटसार, षट्खण्डागम, पंचाध्यायी, पद्मनन्दि पंचविंशतिका, द्रव्यसंग्रह,

मोक्षमार्गप्रकाशक, समाधितन्त्र, इष्टोपदेश, परमात्मप्रकाश आदि का पठन होता है। आनेवाले मुमुक्षु का सारा दिन धार्मिक आनन्द में व्यीतत हो जाता है।

समयसार एवं कुन्दकुन्दाचार्य भगवान तथा श्री सीमन्धर भगवान की भक्ति

परम पूज्य अध्यात्मयोगी गुरुदेवश्री को समयसारजी के प्रति अतिशय भक्ति है, इसलिए जिस दिन स्वाध्यायमन्दिर का उद्‌घाटन हुआ, उसी दिन अर्थात् सं. 1994 ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी रविवार के दिन स्वाध्यायमन्दिर में श्री समयसारजी की प्रतिष्ठा की गई है। श्री समयसारजी प्रतिष्ठा–महोत्सव के अवसर पर बाहर से करीब 700 (सात सौ) मुमुक्षु सोनगढ़ आये थे। गुरुदेवश्री श्री समयसार को उत्तमोत्तम शास्त्र मानते हैं। समयसारजी की बात करते हुए भी वे अति उल्लसित हो जाते हैं। उनका कहना है कि समयसारजी की प्रत्येक गाथा मोक्ष प्रदान करे ऐसी है। भगवान कुन्दकुन्दाचार्य के समस्त शास्त्रों के प्रति उन्हें अत्यन्त प्रेम है। वे कई बार भक्तिभीने अन्तर से कहते हैं कि 'भगवान कुन्दकुन्दाचार्यदेव का हमारे ऊपर महान उपकार है, हम उनके दासानुदास हैं।' श्रीमद् भगवत्कुन्दकुन्दाचार्य महाविदेहक्षेत्र में सर्वज्ञ वीतराग श्री सीमन्धर भगवान के समवसरण में गये थे और वहाँ वे आठ दिन रहे थे—इस विषय में स्वामीजी को रंचमात्र शंका नहीं है। वे कई बार पुकार कर कहते हैं कि—'कल्पना मत करना, इंकार मत करना, यह बात ऐसी ही है; मानो तो भी ऐसी ही है, न मानो तो भी ऐसी ही है यथातथ्य बात है, अक्षरशः सत्य है, प्रमाण सिद्ध है।' श्री सीमन्धर भगवान के प्रति गुरुदेव को अपार भक्ति हैं। कभी–कभी तो सीमन्धरनाथ के विरह में परमभक्तिवान स्वामीजी के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगती है।

जैनधर्म की श्रद्धा और प्रचार

वीतराग के परम भक्त गुरुदेव कहते हैं कि—'जैनधर्म वह कोई वाड़ा नहीं है, वह तो विश्वधर्म है। जैनधर्म का मेल अन्य किसी धर्म के साथ है ही नहीं। जैनधर्म के साथ अन्य धर्मों के समन्वय का प्रयत्न करना, वह रेशम के साथ टाट के समन्वय का

प्रयत्न करने जैसा व्यर्थ है। दिगम्बर जैनधर्म ही वास्तविक जैनधर्म है और आन्तरिक तथा बाह्य दिगम्बरत्व के बिना कोई जीव मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता।—ऐसी उनकी दृढ़ मान्यता है। वे कहते हैं कि—स्वानुभूतियुक्त सम्यग्दर्शन सम्प्राप्त करके, पश्चात् शुद्धात्मा में विशेष स्थिर होकर, जब जीव ऐसी आन्तरिक शुद्धदशारूप परिणमित हो कि बाह्य में भी वह (आन्तरिक सहजज्ञानदशा के अनुरूप) यथाजातरूप–दिगम्बरत्व सहजरूप से (हठ के बिना) धारण करे और अन्तर्बाह्य सर्वविरतदशारूप से सदैव वर्ते, तभी वह जीव यथार्थ मुनि कहलाता है। ऐसे शुद्धात्मस्थित भावद्रव्यलिंगी यथाजातरूप मुनि के हम दास हैं। सर्वज्ञप्रणीत दिगम्बर जैन शासन के महान उपासक स्वामीजी के द्वारा समयसार, प्रवचनसार, पंचाध्यायी, मोक्षमार्गप्रकाशक आदि अनेक दिगम्बर ग्रन्थों का खूब–खूब प्रचार काठियावाड़ में हो रहा है। सोनगढ़ के साहित्य–प्रकाशन विभाग द्वारा श्री समयसार की 2000 प्रतियाँ छपकर तुरन्त बिक गई हैं। तदुपरान्त समयसार–गुटका, समयसार–हरिगीत, समयसार प्रवचन, अनुभव प्रकाश आदि अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई और सौराष्ट्र में फैल गईं। आत्मसिद्धि शास्त्र की हजारों प्रतियाँ भी यहाँ से छपकर प्रचार में आयी हैं। गुजरात–सौराष्ट्र के अध्यात्मप्रेमी मुमुक्षुओं को गुजराती भाषा में आध्यात्मिक साहित्य सुलभ हुआ है। हजारों मुमुक्षु उसका अध्ययन करने लगे हैं। अनेक नगरों में दस–बीस आदि मुमुक्षु एकत्रित होकर गुरुदेव के निकट ग्रहण किये हुए रहस्यानुसार समयसारादि उत्तम शास्त्रों का नियमित पठन–पाठन करते हैं। इस प्रकार परम पूज्य गुरुदेवश्री की कृपा से परम पवित्र श्रुतामृत की नहरें सौराष्ट्र के गाँव–गाँव में बहने लगी हैं। अनेक सुपात्र जीव उस जीवनोदक का पान करके कृतार्थ हो रहे हैं।

[पूज्य श्री कानजीस्वामी के पुनीत प्रताप से सं. 2025 तक गुजराती के अलावा हिन्दी भाषा में भी आध्यात्मिक–साहित्य अति विपुल प्रमाण में प्रकाशित हुआ है और सौराष्ट्र–गुजरात की सीमाओं से पार देश के अनेक भागों में विस्तृत प्रचार

हुआ है। चेतन द्रव्य एवं सम्यग्दर्शन की महिमा को तथा सत्पुरुषार्थ के पंथ को प्रकाशित करनेवाला वह साहित्य भारत के अनेकानेक स्वाध्याय प्रेमी जिज्ञासु जीवों को जिनेन्द्रप्रणीत सन्मार्ग का लक्ष कराने में निमित्तभूत बन रहा है।]

उपदेश का प्रधान स्वर

पूज्य गुरुदेवश्री का मुख्य भार यथार्थ समझने पर है। 'तुम समझो, समझे बिना सब व्यर्थ है'—ऐसा वे बारम्बार कहते हैं। कोई आत्मा—ज्ञानी या अज्ञानी—एक परमाणुमात्र को हिलाने का सामर्थ्य नहीं रखता; तो फिर शरीरादि की क्रिया आत्मा के हाथ में कहाँ से होगी? ज्ञानी और अज्ञानी में आकाश-पाताल जितना महान अन्तर है और वो यह है कि—अज्ञानी परद्रव्य का तथा राग-द्वेष का कर्ता होता है, जबकि ज्ञानी अपने को शुद्ध अनुभव करता हुआ उनका कर्ता नहीं होता। उस कर्तृत्वबुद्धि को छोड़ने का महापुरुषार्थ प्रत्येक जीव को करना है। वह कर्तृत्वबुद्धि सम्यग्ज्ञान के बिना नहीं छूटेगी; इसलिए तुम ज्ञान करो।'—यह उनके उपदेश का प्रधान स्वर है। जब कोई श्रोता कहते हैं कि—'स्वामीजी! आप तो मेट्रिक की और एम.ए. की बात करते हैं; हम अभी एकन्ना पढ़ रहे हैं, हमें एकन्ने की बात सुनाइये' तब गुरुदेवश्री कहते हैं—'यह जैनधर्म का एकन्ना ही है; इसे समझना ही प्रारम्भ है; मेट्रिक की तथा एम.ए. की अर्थात् निर्ग्रन्थ दशा की और वीतरागता की बातें तो दूर हैं। इसे समझने से ही उद्धार है। एक भव में, दो भव में, पाँच भव में या अनन्त भव में इसे समझने पर ही मोक्षमार्ग का प्रारम्भ होना है।'

अन्तर्विकास एवं मुमुक्षुओं पर परम उपकार

पूज्य गुरुदेवश्री के ज्ञान को सम्यक्पने की मुहर तो बहुत समय से लग चुकी थी। वह सम्यग्ज्ञान सोनगढ़ के विशेष निवृत्तिवाले स्थान में अद्भुत सूक्ष्मता को प्राप्त हुआ; नयी-नयी ज्ञानशैली सोनगढ़ में खूब विकसित हुई। अमृतकलश में जैसे अमृत घुल रहा हो, उसी प्रकार गुरुदेवश्री के परम पवित्र अमृतकलशस्वरूप आत्मा में

तीर्थंकरदेव के वचनामृत खूब घुले-घुँटे। वह घुँटा हुआ अमृत गुरुदेवश्री अनेक मुमुक्षुओं को परोसते हैं और उन्हें निहाल कर देते हैं। समयसार, प्रवचनसार आदि ग्रन्थों पर प्रवचन करते हुए गुरुदेवश्री के प्रत्येक शब्द में इतनी गहनता, सूक्ष्मता एवं नवीनता निकलती है कि वह श्रोताजनों के उपयोग को भी सूक्ष्म बना देती है और विद्वानों को आश्चर्यचकित कर देती है। जिस अनन्त आनन्दमय चैतन्यघन दशा को प्राप्त करके तीर्थंकरदेव ने शास्त्रों की प्ररूपणा की, उस परम पवित्रदशा का सुधास्यन्दी स्वानुभूतिस्वरूप पवित्र अंश अपने आत्मा में प्रगट करके गुरुदेवश्री विकसित ज्ञानपर्याय द्वारा शास्त्र में विद्यमान गहन रहस्य सुलझाकर मुमुक्षु को समझाकर अपार उपकार कर रहे हैं। सैकड़ों शास्त्रों के अभ्यासी विद्वान भी गुरुदेवश्री की वाणी सुनकर उल्लसित होकर कहते हैं—'गुरुदेव! आपके अपूर्व वचनामृत का श्रवण करके हमें तृप्ति ही नहीं होती! आप कोई भी बात समझायें, उसमें से हमें नई-नई जानकारी मिलती है। नवतत्त्वों का स्वरूप हो या उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य का स्वरूप, स्याद्वाद का स्वरूप या सम्यक्त्व का स्वरूप निश्चय-व्यवहार का स्वरूप या व्रत-नियम-तप का स्वरूप, उपादान-निमित्त का स्वरूप या साध्य-साधन का स्वरूप, द्रव्यानुयोग का स्वरूप या चरणानुयोग का स्वरूप, गुणस्थान का स्वरूप या बाधक-साधकभाव का स्वरूप, मुनिदशा का स्वरूप या केवलज्ञान का स्वरूप—जिस-जिस विषय का स्वरूप हम आपके मुख से सुनते हैं, उसमें हमें अपूर्व भाव दृष्टिगोचर होते हैं। हमने शास्त्रों में से जो अर्थ निकाले थे, वे बिलकुल ठीक जड़-चेतन की मिलावट वाले, शुभ की शुद्ध में खतौनी करनेवाले, संसारभाव का पोषण करनेवाले, विपरीत एवं न्यायविरुद्ध थे; आपके अनुभवमुद्रित अपूर्व अर्थ तो शुद्ध सुवर्ण जैसे, जड़-चेतन को भिन्न-भिन्न करनेवाले, शुभ और शुद्ध के स्पष्ट विभाग करनेवाले, मोक्षभाव का ही पोषण करनेवाले, सम्यक् एवं न्याययुक्त हैं। आपके शब्द-शब्द में वीतरागदेव का हृदय प्रगट होता है; हम वाक्य-वाक्य में

वीतरागदेव की विराधना करते थे; हमारा एक वाक्य भी सच्चा नहीं था। शास्त्र में ज्ञान नहीं है, ज्ञानपर्याय में ज्ञान है—इस बात का हमें अब साक्षात्कार होता है। शास्त्रों में सद्गुरुदेव का जो माहात्म्य है, वह अब हमारी समझ में आ रहा है। शास्त्रों के ताले खोलने की कुंजी वीतरागदेव ने सद्गुरु को सौंपी है। सद्गुरु का उपदेश प्राप्त किये बिना शास्त्रों को उकेलना अत्यन्त कठिन है।

अध्यात्ममस्ती से भरपूर, चमत्कारिक व्याख्यानशैली

परम कृपालु गुरुदेव का ज्ञान जैसा अगाध और गम्भीर है, वैसी ही उनकी व्याख्यानशैली चमत्कार पूर्ण है। जो बात वे कहते हैं, उसे स्पष्टता से, अनेक सादा उदाहरण देकर, शास्त्री शब्दों का कम से कम प्रयोग करके इस प्रकार समझाते हैं कि सामान्य मनुष्य भी उसे सरलता से समझ जाये। अत्यन्त गहन विषय को भी अत्यन्त सुगम रीति से प्रतिपादित करने की गुरुदेवश्री में विशिष्ट शक्ति है। तथा गुरुदेवश्री की व्याख्यानशैली इतनी रसपूर्ण है कि जिस प्रकार सर्प बीन का नाद सुनकर मुग्ध हो जाता है; उसी प्रकार श्रोता भी मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं; समय कहाँ बीत जाता है, उसका ध्यान तक नहीं रहता। स्पष्ट एवं रसपूर्ण होने के अलावा भी गुरुदेवश्री का प्रवचन श्रोताओं में अध्यात्म का प्रेम उत्पन्न करता है। गुरुदेवश्री प्रवचन करते हुए अध्यात्म में ऐसे तन्मय हो जाते हैं, परमात्मदशा के प्रति ऐसी भक्ति उनके मुख पर दिखायी देती है जिसका प्रभाव श्रोताओं पर पड़े बिना नहीं रहता। अध्यात्म की जीवन्मूर्ति गुरुदेव के शरीर के अणु-अणु से मानों अध्यात्म रस झरता है; उन अध्यात्ममूर्ति की मुखमुद्रा, नेत्र, वाणी, हृदय सब एकतार होकर अध्यात्म की धारा बहाते हैं और मुमुक्षुओं के हृदय उस अध्यात्मरस में भीग जाते हैं।

वर्तमान काल में मुमुक्षुओं का महाभाग्य

पूज्य गुरुदेवश्री का व्याख्यान सुनना जीवन का महान लाभ है। उनका व्याख्यान सुनने के पश्चात् अन्य व्याख्याताओं का व्याख्यान अच्छा नहीं लगता।

उनका व्याख्यान सुननेवाले को इतना तो स्पष्ट लगता है कि—'यह पुरुष कुछ और प्रकार का है, जगत से यह कुछ अलग कहता है, अपूर्व कहता है। इसके कथन में कोई अजब दृढ़ता एवं जोर है। ऐसा तो कहीं नहीं सुना।' गुरुदेवश्री के व्याख्यान में से अनेक जीव अपनी-अपनी पात्रतानुसार लाभ प्राप्त कर लेते हैं। कितनों के सत् के प्रति रुचि जागृत होती है, कितनों में सत् को समझने के अंकुर फूटते हैं और किन्हीं विरले जीवों की तो दशा ही पलट जाती है।

अहो! ऐसा अलौकिक पवित्र अन्तर्परिणमन-कथंचित् केवलज्ञान का अंश तथा ऐसा प्रबल प्रभावना उदय-तीर्थंकरत्व का अंश—इन दो का सुयोग इस कलिकाल में देखकर रोमांच होता है। अब भी मुमुक्षुओं का महापुण्य तप रहा है।

काठियावाड़ के आँगन में कल्पवृक्ष

अहो! उन परम प्रभावक अध्यात्म मूर्ति की वाणी की तो क्या बात! उनके दर्शन भी महापुण्य उल्लसित हो, तब प्राप्त होते हैं। उन अध्यात्मयोगी के निकट संसार के आधि-व्याधि-उपाधि आ नहीं सकते। संसारतप्त प्राणी वहाँ परम विश्रान्ति प्राप्त करते हैं और संसार के दु:ख उन्हें मात्र कल्पना से उत्पन्न किये भासित होने लगते हैं। जो वृत्तियाँ महाप्रयत्न से भी नहीं दबती थीं, वे गुरुदेवश्री के सान्निध्य में बिना किसी प्रयत्न के शान्त हो जाती हो जाती हैं—ऐसा अनेक मुमुक्षुओं का अनुभव है। आत्मा का निवृत्तिमय स्वरूप, मोक्ष का सुख आदि भावों की जो श्रद्धा अनेक तर्कों से नहीं होती, वह गुरुदेवश्री के दर्शनमात्र से हो जाती है। गुरुदेवश्री का ज्ञान और चारित्र मुमुक्षु पर कल्याणकारी प्रभाव डालता है। सचमुच काठियावाड़ के आँगन में शीतल छायायुक्त, वांछित फल देनेवाला कल्पवृक्ष फलित हुआ है। काठियावाड़ का महा-भाग्योदय हुआ है।

अब, सोनगढ़ में परिवर्तन करने के पश्चात् गुरुदेवश्री के जीवनवृत्तान्त के साथ सम्बन्ध रखनेवाले कुछ प्रसंग कालानुक्रम से संक्षेप में देखें।

शत्रुंजय यात्रा

सोनगढ़ से 14 मील दूर स्थित श्री शत्रुंजयतीर्थ की यात्रा की भावना गुरुदेवश्री को बहुत दिनों से थी, जो संवत् 1995 के माघ कृष्णा तेरस को पूर्ण हुई। करीब 200 भक्तों सहित गुरुदेवश्री ने तीर्थराज की यात्रा अति उत्साह एवं भक्तिपूर्वक की थी।

राजकोट में चातुर्मास

राजकोट के जिज्ञासुओं का अत्याग्रह होने से गुरुदेवश्री संवत् 1995 में राजकोट पधारे और वहाँ दसेक महीने की स्थिति में गुरुदेवश्री ने समयसार, आत्मसिद्धि एवं पद्मनन्दि पंचविंशतिका पर अपूर्व प्रवचन किये। गुरुदेवश्री की आगे बढ़ी हुई ज्ञान-पर्यायों में से निकले हुए जड़-चेतन के विभाग के, निश्चय-व्यवहार की सन्धि के तथा अन्य अनेक अपूर्व न्याय सुनकर राजकोट के हजारों लोग पावन हुए और अनेक सुपात्र जीवों ने पात्रानुसार आत्मलाभ प्राप्त किया। दस महीने तक 'आनन्दकुंज' में (जहाँ गुरुदेवश्री ठहरे थे) दिन-रात आध्यात्मिक आनन्द का वातावरण गूँजता रहा।

गिरनार यात्रा

राजकोट से सोनगढ़ लौटते समय गुरुदेवश्री गिरिराज गिरनारतीर्थ की यात्रा करने पधारे और उस पवित्र नेमगिरि पर लगभग 300 भक्तों के साथ तीन दिन तक रहे। वहाँ दिगम्बर जिनमन्दिर में हुई अद्भुत भक्ति, सहस्राम्रवन में मची हुई भक्ति की धुन और उस समश्रेणी की पाँचवीं टोंक पर पूज्य गुरुदेवश्री जब 'मैं एक शुद्ध सदा अरूपी, ज्ञानदर्शनमय खरे!' आदि पद परम अध्यात्मरस में सराबोर होकर गवाते थे, उस समय का शान्त आध्यात्मिक वातावरण—इन सबके धन्य स्मरण तो जीवनभर भक्तों के स्मरण-पट पर अंकित रहेंगे।

राजकोट जाते हुए तथा वहाँ से लौटते समय पूज्य गुरुदेवश्री मार्ग में आनेवाले अनेक नगरों में वीतरागप्रणीत सद्धर्म का डंका बजाते गये और अनेक सत्पात्रों के कर्णपट खोलते गये। गाँव-गाँव में लोगों की भक्ति गुरुदेवश्री के प्रति उल्लसित हो

उठती थी और लाठी, अमरेली आदि बड़े नगरों में अत्यन्त भव्य स्वागत होता था। गुरुदेवश्री का प्रभावना उदय देखकर, जिस काल तीर्थंकरदेव विचरते होंगे, उस धर्मकाल में धर्म का भक्ति का, अध्यात्म का कैसा वातावरण छा जाता होगा। उसका दृश्य आँखों के समक्ष उपस्थित हो जाता था।

श्री सीमन्धर भगवान की प्रतिष्ठा और अपूर्व भक्ति

संवत् 1996 के वैशाख में गुरुदेवश्री का पवित्र आगमन सोनगढ़ में हुआ और तुरन्त ही राजकोट निवासी सेठ श्री कालीदास राघवजी जसाणी के भक्तिवान सुपुत्रों ने श्री स्वाध्यायमन्दिर के निकट श्री सीमन्धरस्वामी के जिनमन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ करवा दिया, जिसमें श्री सीमन्धर भगवान की अति भाववाही मनोज्ञ प्रतिमाजी के उपरान्त श्री शान्तिनाथ आदि अन्य भगवन्तों की भाववाही प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा पंचकल्याणक विधिपूर्वक संवत् 1997 के फाल्गुन शुक्ला दूज के शुभदिन हुई। प्रतिष्ठा महोत्सव में बाहर से लगभग 1500 लोगों ने भाग किया था। प्रतिष्ठा महोत्सव के आठ दिनों तक पूज्य गुरुदेवश्री के मुख से भक्तिरस पूर्ण अलौकिक वाणी निकलती रही। लोगों में भी अत्यन्त उत्साह था। प्रतिष्ठा से कुछ दिन पूर्व श्री सीमन्धर भगवान के प्रथम दर्शनों से पूज्य गुरुदेवश्री की आँखों से आँसू बहने लगे थे। सीमन्धर भगवान प्रथम मन्दिर में पधारे, तब पूज्य गुरुदेवश्री को भक्तिरस की मस्ती चढ़ गई और सारा शरीर भक्तिरस के मूर्तस्वरूप समान शान्त.. शान्त निश्चेष्ट भासित होने लगा। गुरुदेव से साष्टांग नमस्कार हो गया और भक्तिरस में अत्यन्त एकाग्रता के कारण शरीर दो–तीन मिनट तक ज्यों का त्यों निश्चेष्टरूप से पड़ा रहा। भक्ति का वह अद्भुत दृश्य, पास खड़े हुए मुमुक्षुओं से मानों सहन नहीं हो रहा था; उनके नेत्रों में आँसू और हृदय में भक्ति उमड़ पड़ी। गुरुदेवश्री ने अपने पवित्र हाथों से प्रतिष्ठा भी ऐसे अपूर्व भाव से की थी मानों भक्तिभाव में तल्लीन होकर शरीर की सुध भूल गये हों।

जिनमन्दिर में दोपहर के व्याख्यान के पश्चात् प्रतिदिन आधे घण्टे तक भक्ति

होती है। भक्ति में पूज्य गुरुदेवश्री भी उपस्थित रहते हैं। प्रवचन सुनते हुए आत्मा के सूक्ष्म स्वरूप के प्रणेता वीतराग भगवान का माहात्म्य हृदय में स्फुरित होता ही है, इसलिए प्रवचन से उठकर तुरन्त जिनमन्दिर में भक्ति करते हुए वीतरागदेव के प्रति पात्र जीवों को अद्‌भुत भाव उल्लसित होता है। इस प्रकार जिनमन्दिर ज्ञान एवं भक्ति के सुन्दर समन्वय का निमित्त बना है।

श्री सीमन्धर भगवान के समवसरण का दृश्य

श्री जिनमन्दिर का निर्माण होने के एक ही वर्ष बाद कुछ मुमुक्षु भाईयों द्वारा जिनमन्दिर के निकट ही श्री समवसरण मन्दिर का निर्माण हुआ। जिसमें श्री सीमन्धर भगवान की अति भाववाही चतुर्मुख प्रतिमाजी विराजमान हैं। सुन्दर आठ भूमि, कोट, (मुनि, आर्यिका, देव, मनुष्य, तिर्यंचादि की सभाओं सहित) श्रीमण्डप, तीन पीठिका, कमल, चँवर, छत्र, अशोक वृक्ष, विमान आदि की रचना शास्त्रोक्त विधि अनुसार अति आकर्षक है। मुनियों की सभा में श्री सीमन्धर भगवान के समक्ष हाथ जोड़कर खड़े हुए श्रीमद् भगवत् कुन्दकुन्दाचार्यदेव की प्रतिमाजी अति मनोज्ञ एवं भाववाही है। समवसरण मन्दिर का प्रतिष्ठा-महोत्सव संवत् 1998 में ज्येष्ठ कृष्णा 6 के शुभदिन हुआ था। इस अवसर पर बाहर से लगभग दो हजार स्त्री-पुरुष आये थे। श्री समवसरण के दर्शन करते हुए वह दृश्य आँखों के समक्ष खड़ा हो जाता है जब श्रीमद् भगवत् कुन्दकुन्दाचार्यदेव सर्वज्ञ वीतराग श्री सीमन्धर भगवान के समवसरण में गये थे। तथा उससे सम्बद्ध अनेक पवित्र भाव हृदय में स्फुरित होने से मुमुक्षु का हृदय भक्ति एवं उल्लास से छलक उठता है। श्री समवसरण-मन्दिर बन जाने से मुमुक्षुओं को अपने अन्तर का एक अति प्रिय प्रसंग दृष्टिगोचर करने का निमित्त प्राप्त हुआ है।

ब्रह्मचर्याश्रम

संवत् 1998 में भाद्रपद शुक्ला पंचमी के दिन सोनगढ़ में श्री सनातन जैन ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना की गई है। उसमें तीन वर्ष का पाठ्यक्रम रखा गया है।

करीब दस ब्रह्मचारी उसमें भर्ती हुए हैं। उसमें भर्ती होनेवाले ब्रह्मचारी तीन वर्ष रहकर प्रतिदिन तीन घण्टे तक पाठ्यक्रम में रखी गई पुस्तकों की शिक्षा प्राप्त करते हैं; और उस प्राप्त की हुई शिक्षा का एकान्त में बैठकर स्वाध्याय द्वारा दृढ़ करते हैं तथा पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन, भक्ति आदि में नियमित भाग लेते हैं;—इस प्रकार पूरा दिन धार्मिक वातावरण में व्यतीत करते हैं।

राजकोट की ओर विहार

राजकोट के श्रावकों का विशेष आग्रह होने के कारण तथा प्रभावना उदय होने से पूज्य गुरुदेवश्री ने संवत् 1999 में फाल्गुन शुक्ला पंचमी के दिन पुनः सोनगढ़ से वढवाण होते हुए राजकोट की ओर विहार किया। अमृत बरसाते महामेघ की भाँति मार्ग में आनेवाले प्रत्येक नगर में परमार्थ–अमृत की मूसलधार वर्षा करते जाते हैं और अनेक तृषित जीवों की तृषा छिपाते जाते हैं। हजारों भाग्यवार जीवन (जैन और जैनेतर) उस अमृतवर्षा को झेलकर सन्तुष्ट होते हैं। जैनेतर भी गुरुदेवश्री का आध्यात्मिक उपदेश सुनकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। जैनदर्शन में मात्र बाह्यक्रिया का ही प्रतिपादन नहीं है परन्तु वह सूक्ष्म तत्त्वज्ञान से भरपूर है—ऐसा समझने पर उन्हें जैनदर्शन के प्रति बहुमान प्रगट होता है। गाँव–गाँव में बालक, युवा एवं वृद्धों में, जैनों एवं जैनेतरों में गुरुदेवश्री आत्मविचार का प्रबल आन्दोलन फैलाते जाते हैं और 'इस अमूल्य मनुष्यभव में यदि जीव ने शरीर, मन, वाणी से पार ऐसे परमतत्त्व की प्रतीति न की, उसकी रुचि भी न की, तो यह मनुष्यभव निष्फल है'—ऐसी घोषणा करते जाते हैं।

उन अमृतसिंचक योगिराज ने काठियावाड के बाहर विचरण नहीं किया है। यदि वे अन्य प्रदेशों में विहार करें तो सारे भारत में धर्म की प्रभावना करके हजारों तृषातुर जीवों की तृषा छिपा सकते हैं, ऐसी अद्‌भुत शक्ति उनमें दिखायी देती है।

[संवत् 2025 तक तीर्थयात्रा के निमित्त से तथा जिनबिम्ब प्रतिष्ठा आदि हेतु से समस्त भारतवर्ष में पूज्य गुरुदेवश्री के अनेक मंगलविहार हुए हैं और उन प्रसंगों पर

उन्होंने स्वानुभवगर्भित आध्यात्मिक प्रवचनों द्वारा समस्त जैनजगत को हिलाकर जिनेन्द्रप्रणीत अध्यात्ममार्ग के प्रति जागृत किया है। तथा दिगम्बर जैन मार्ग की स्वानुभव प्रधानता को जैनजगत में गुंजित किया है। इस प्रकार भारतवर्ष के अनेक अध्यात्मपिपासु जीवों की पिपासा छिपाकर पूज्य गुरुदेवश्री ने उन्हें नवजीवन प्रदान किया है।]

काठियावाड़ का गौरव

ऐसी अद्भुत शक्ति के धारक पवित्रात्मा श्री कानजीस्वामी काठियावाड की महा प्रतिभाशाली विभूति हैं। उनके परिचय में आनेवाले पर उनके प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। वे अनेक सद्गुणों से अलंकृत हैं। उनको कुशाग्रबुद्धि प्रत्येक वस्तु के हार्द में उतर जाती है। उनकी स्मरणशक्ति वर्षों की बात को तिथि वार सहित याद रख सकती है। उनका हृदय वज्र से भी कठोर एवं कुसुम से कोमल है। वे अवगुण के समक्ष अडिग होने पर भी, थोड़ा सा गुण देखते ही झुक जाते हैं। बालब्रह्मचारी कानजीस्वामी एक अध्यात्ममस्त आत्मानुभवी पुरुष हैं। उनकी प्रत्येक नसें में अध्यात्म की मस्ती व्याप्त हो गई है। उनके प्रत्येक शब्द में आत्मानुभव झलकता है। उनकी साँस–साँस में 'वीतराग–वीतराग!' की ध्वनि उठती है। कानजीस्वामी काठियावाड़ का अद्वितीय रत्न है। काठियावाड़ कानजीस्वामी से गौरवान्वित है।

* * *

यहाँ विक्रम की बीसवीं सदी तक का गुरुदेवश्री का जीवन–परिचय आपने पढ़ा। तत्पश्चात् इक्कीसवीं सदी के कुछ मुख्य प्रसंगों का आलेखन अब आगे देखिये।

अध्यात्मसन्त श्री कानजीस्वामी

[संक्षिप्त जीवनपरिचय]

हीरक जयन्ती अंक

[वि.सं. 2020 : वैशाख शुक्ल 2] [ले. : **हरिलाल जैन,** सम्पादक-आत्मधर्म]

गुरुदेव के जीवनप्रसंग और उनके प्रताप से हुई शासन प्रभावना के महान कार्यों का संक्षिप्त आलेखन यहाँ किया है। वैसे तो विद्वान् वडीलबन्धु श्री हिम्मतलालभाई ने गुरुदेवश्री का भावभीना जीवनचरित्र लिखा है—जो हमने अभी ही इस पुस्तक में देखा। परन्तु उसमें संवत् 1999 तक का ही आलेखन है, इसलिए उसकी पूर्तिरूप से तत्पश्चात् के लगभग 20 वर्ष का—आज तक के मुख्य प्रसंगों का यहाँ विहंगावलोकन किया है।

गुरुदेव का जीवन किसलिए आलेखित किया जाता है ? किसलिए इतने सब मुमुक्षु उनके जीवन में रस लेते हैं ?—एक ही कारण है कि उनके जीवन में से अपने को आत्महित साधने का मार्ग मिलता है, उनका जीवन अपने को संसार की तुच्छता और धर्म की महत्ता समझाता है, उनका पवित्र जीवन वह कोई पुराण पुरुषों के पूर्व जीवन की झाँकी कराता है, आत्मार्थ साधने के लिये जीव की कितनी तैयारी होनी चाहिए, वह उनका जीवन बतलाता है। ऐसे महापुरुष के अन्तरंग जीवन की पहिचान करने के लिये अन्तर की कोई अलग ही दृष्टि चाहिए और उसकी पहिचान करनेवाले तो कोई विरले ही होते हैं। यहाँ तो अपने को एक निकटवर्ती चरणसेवकरूप से उनके जो जीवन प्रसंग देखने या सुनने को मिले, उसमें से यत्किंचित् उल्लेखनीय प्रसंग प्रस्तुत करते हैं। साधर्मी पाठकों को लक्ष्य में रहे कि यह सम्पूर्ण जीवन चारित्र नहीं परन्तु मात्र किंचित् जीवनपरिचय ही है। गुरुदेव के जीवन में दूसरा ऐसा बहुत है कि जिसका उल्लेख इसमें नहीं होगा। गुरुदेव जैसे महापुरुष का जीवन, वह तो एक

समुद्र है, भूत-वर्तमान-भावी के अनेक रत्न उसमें भरे हुए हैं। वे सब रत्न तो हम कहाँ से चुन सकते हैं? परन्तु उस पावन जीवन में डुबकी लगाने से थोड़े-बहुत जो कीमती रत्न हाथ आते हैं, वे भी महान हितकारी हैं।

संवत् 1946, वैशाख सुदी दोज को जब उमराला में उनका जन्म हुआ तभी 'आत्मा की शोध' के संस्कार तथा आत्मिक झंकार साथ में लेकर आये थे। उनके जीवन का प्रवाह प्रारम्भ से ही आत्मशोध की ओर बहता था। इस दिशा में निरन्तर लगन द्वारा अन्तर के आत्मबल से जिस प्रकार सत्य की खोज की, जिस प्रकार आत्मा की मुक्ति का निशंकमार्ग ढूँढ़ा तथा जिस तरह जगत के मुमुक्षु जीवों के लिये इस मार्ग को स्पष्ट किया, उसे देखने पर आश्चर्य, आनन्द तथा बहुमान के साथ मुमुक्षुओं के हृदय में पूज्य गुरुदेवश्री के जीवन का आदर्श अंकित हो जाता है। पूज्य स्वामीजी के जन्मकाल की परिस्थिति देखें तो—

'ऐसे इस कलिकाल में जगत के कुछ पुण्य शेष थे,
जिज्ञासु-हृदयों थे तरसते, सद्वस्तु को प्राप्त करने;
ऐसे प्रभाव से भरत में ओ कहान तू उतरे,
अन्धकार में डूबते अखण्ड सत् को तू जीवन्त करे।'

पूज्य गुरुदेवश्री के जन्म से युग में परिवर्तन होने लगा, रागपोषक, रूढ़िगत क्रियाकाण्ड के स्थान अध्यात्म ज्ञान का और जिनेन्द्र भक्ति का युग प्रारम्भ होने लगा। उजमबा को कहाँ कल्पना थी कि स्वयं जिसको रेशम की डोरी से झुलाती है, वह कुँवर एकबार समस्त भारत को अध्यात्मरस के झूले में झुलायेगा। जब वे दो वर्ष के थे, तब उनकी बहिन 'हरि' उनको गोद में लेकर मकान की अट्टालिका की खिड़की में बैठती थी, इतना पूज्य गुरुदेवश्री को स्मरण में आता है। उस समय आँगन में से ऊँची दृष्टि करने पर मकान की जिस खिड़की में से कहान कुँवर देखते, आज उसी खिड़की में सीमन्धरनाथ के दर्शन होते हैं। कहाँ उस समय के स्थानकवासी का घर, और कहाँ

आज का सीमन्धर जिन–चैत्यालय। जिनके पुण्य प्रताप से एक जूना–पुराना घर सुन्दर जिनमन्दिर के रूप में परिवर्तित हो गया, उनके प्रताप से आत्मा का रूप भी परमात्मरूप में परिवर्तित होने लगे तो क्या आश्चर्य!! वास्तव में पूज्य गुरुदेवश्री ने आत्मसाधना का अध्यात्मपंथ प्रगट करके भारतवर्ष के कोने–कोने से अनेक जीवों को जागृत किया है। सौराष्ट्र में तो दिगम्बर जैनधर्म का नवसर्जन उन्हीं के द्वारा हुआ है।

सौराष्ट्र में तो दिगम्बर जैनधर्म को 'कानजीस्वामी का धर्म'—ऐसा कहकर लोग पहिचानने लगे—इस पर से ज्ञात होता है कि दिगम्बर जैनधर्म की प्रभावना करने के लिये उनकी कितनी विशेष प्रसिद्धि है। पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा स्वसन्मुखता से खोजा हुआ परम सत्य आत्मामर्ग दिगम्बर जैनधर्म जैसे–जैसे प्रसिद्ध होता गया, वैसे–वैसे अधिक से अधिक जिज्ञासु जीव उनके प्रति आकर्षित होते गये, और जगह–जगह मुमुक्षु–मण्डलों की स्थापना हुई। सम्प्रदाय त्याग के पश्चात् उठा हुआ तूफान शान्त हो गया और पूज्य गुरुदेवश्री की ख्याति दिन–प्रतिदिन बढ़ती गई।

धार्मिक शिक्षण वर्ग

मात्र गृहस्थ ही नहीं परन्तु छोटे–छोटे बालक भी पूज्य गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान में उत्साह से भाग लेते हैं; इसलिए विद्यार्थी ग्रीष्मावकाश की दो माह की छुट्टियों का सदुपयोग करके तत्त्वज्ञान प्राप्त करें—उस हेतु संवत् 1997 से प्रति वर्ष धार्मिक शिक्षण–शिविर का आयोजन किया जाता है—जिसमें सैकड़ों विद्यार्थी उत्साह से भाग लेते हैं, उनकी परीक्षाएँ भी ली लाती हैं तथा इनाम भी दिये हैं। उसी प्रकार संवत् 2004 से प्रति वर्ष भाद्रपद में प्रौढ़ शिक्षणशिविर चलता है, उसमें भी अनेक नगरों से सैकड़ों जिज्ञासु आकर लाभ लेते हैं।

'आत्मधर्म' मासिक पत्र का प्रकाशन

पूज्य गुरुदेवश्री के अनुयायी सौराष्ट्र में तथा देशभर में जगह–जगह फैले हुए हैं और वे नियमित पूज्य गुरुदेवश्री का सन्देश प्राप्त करने के लिये आतुर रहते हैं। इसलिए

संवत् 2000 के मगसिर महीने से 'आत्मधर्म' मासिक का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ; उसके द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री का सन्देश भारतवर्ष में प्रसरने लगा तथा अनेक जिज्ञासु जीव आकर्षित होने लगे। सेठ हुकुमचन्दजी जैसे अनेक महानुभाव भी 'आत्मधर्म' द्वारा सोनगढ़ की ओर आकर्षित हुए। उनको ऐसा प्रमोद आया कि उन्होंने 'आत्मधर्म' का पच्चीस वर्ष का चन्दा एक साथ संस्था को भेज दिया तथा हिन्दी भाषा में उसके प्रकाशन के लिये भी 1001 रुपये भेजे। भारत के अध्यात्म-साहित्य में 'आत्मधर्म' का स्थान बहुत ही ऊँचा है, अनेक पत्र-पत्रिकाएँ तथा साहित्यकार उसका अनुकरण कर रहे हैं। पूज्य गुरुदेवश्री का सन्देश प्रसारित करने में साहित्य क्षेत्र में 'आत्मधर्म' का स्थान महान है। अध्यात्म प्रेमी जिज्ञासु-समाज 'आत्मधर्म' के प्रति विशेष प्रेम रखती है। तदुपरान्त आध्यात्मिक-साहित्य का प्रकाशन भी सोनगढ़ संस्था की ओर से विस्तृतरूप से हो रहा है; श्री समयसार, प्रवचनसार आदि अनेक ग्रन्थ (जिनकी कुल संख्या सात लाख होती है) आज तक प्रकाशित हो चुके हैं।

ब्रह्मचर्याश्रम

पूज्य गुरुदेवश्री की शीतल छत्रछाया में तथा पवित्र चरणसान्निध्य में रहकर अध्यात्म-अभ्यास करने के लिये कितने ही ब्रह्मचारी भाई सोनगढ़ में ही स्थायीरूप से रहने लगे... गुरुदेवश्री समस्त ब्रह्मचारी बालकों के प्रति विशेष वात्सल्य रखते हैं; छोटे-छोटे ब्रह्मचारी बालक गुरुदेवश्री की छत्रछाया में आनन्द किल्लोल करते थे, गुरुदेवश्री के साथ घूमते समय तो अनुपम आनन्द आता था। अनेक कुमार भाईयों ने जीवनपर्यन्त गुरुदेवश्री के चरण में रहने के हेतु से गुरुदेवश्री के पास आजीवन-ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा अंगीकार की है। इसके अतिरिक्त अन्य जिन गृहस्थों ने गुरुदेवश्री के पास सपत्नीक आजीवन-ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा ली है, उनकी संख्या तो बहुत बड़ी है।

जिनवाणी के प्रति अत्यन्त बहुमान

संवत् 2000 में जब पूज्य गुरुदेवश्री विहार में थे, उस समय कषायपाहुड़ सूत्र

सहित जयधवला टीका–शास्त्र का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ। वह हाथ में आने पर तथा पढ़ने पर पूज्य गुरुदेवश्री को उस जिनवाणी के प्रति ऐसा अतिशय बहुमान तथा प्रमोद आया मानो अभी–अभी सुनी हुई दिव्यध्वनि पुनः ग्रन्थरूप में देखने को मिली हो; और गाँव–गाँव राजकोट, वींछिया, लाठी आदि में मुमुक्षु मण्डलों द्वारा उत्साह से उसका श्रुत–पूजन हुआ—जिसमें उन दिनों सैकड़ों रुपये इकट्ठे हुए; प्रवचन में भी उसका कुछ–कुछ भाग पूज्य गुरुदेवश्री कहते, जिसे सुनकर मुमुक्षुओं को अत्यन्त प्रमोद होता। आजकल तो सोनगढ़ में कितने भाई–बहिन धवल–जयधवल की भी स्वाध्याय करते हैं।

राजकोट में संवत् 1999 का चातुर्मास पूर्ण करके सोनगढ़ आते समय पूज्य गुरुदेवश्री ने बीच में अनेक नगरों को पावन किया। प्रत्येक नगर की जनता जो उत्साह दिखलाती वह अद्भुत था। 'कानजीस्वामी' का नाम सुनते ही गाँव के लोग उनके दर्शन की जिज्ञासा को रोक नहीं सकते थे तथा गाँव में कोई विचित्र उत्सव का वातावरण फैल जाता था।

यह सन्तों का धाम है

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रताप से सोनगढ़ की स्थिति में धीरे–धीरे परिवर्तन होने लगा। सोनगढ़ का शान्त आध्यात्मिक वातावरण और सम्पूर्ण धार्मिक कार्यक्रम देखकर बाहर से आये हुए जिज्ञासु जीव मुग्ध हो जाते हैं, तथा सोनगढ़ में जितने दिन रहते हैं, उतने दिन बाहर की दुनिया के वातावरण को लगभग भूल ही जाते हैं, कोई नया ही जीवन उनको प्राप्त हुआ, ऐसा लगता है। शीत प्रदेश के लोग तो कहते हैं कि—अरे, इतनी सख्त गर्मी भी, अध्यात्म की शीतलता में रहनेवाले इन मुमुक्षुओं को मानों असर ही नहीं करती। धर्मात्मा, विद्वान ब्रह्मचारी, भाई–बहिन, श्रीमान, वृद्ध से लेकर बालक तक के तत्त्वप्रेमी जिज्ञासु संसार की अनेक प्रतिकूलताओं के बीच अध्यात्म प्रेम से अडिग रहते हुए संसार के सम्बन्धों को ठुकराकर सन्त की छाया में सोनगढ़ रहनेवाले

जिज्ञासु अपनी–अपनी विविध विशेषताएँ रखते हैं, इस प्रकार सोनगढ़ का 'जीवन्त वैभव' अपार है, परन्तु यहाँ किसी का व्यक्तिगत परिचय देना हम उचित नहीं मानते; पूज्य गुरुदेवश्री की शोभा में समस्त सोनगढ़ की शोभा समा जाती है।

सोनगढ़ में जो उत्सव होते हैं, वे अद्‌भुत भावों से भरपूर होते हैं; मात्र रूढ़िगत रीति से नहीं, परन्तु उस–उस उत्सव के अनुरूप भावभरे वातावरण में मनाये जाते हैं। प्रतिष्ठा के दिवस या पर्यूषण के दिवस, श्रुतपंचमी या वीरशासन जयन्ती, नन्दीश्वर अष्टाह्निका या महावीर जन्मोत्सव, दीपावली या रथयात्रा, सिद्धचक्र विधान आदि उत्सव अपनी विशिष्ट शैली से मनाये जाते हैं। दैनिक कार्यक्रम जैसे कि—दर्शन–पूजन, प्रवचन, भक्ति, तत्त्वचर्चा, शास्त्र स्वाध्याय आदि में भी सर्व जिज्ञासु जीव उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। प्रात: से लेकर रात्रि तक ऐसी उच्च प्रवृत्तियों में सारा दिन किस प्रकार व्यतीत हो जाता है, उसका पता भी नहीं लगता। कुछ दिन यहाँ रहनेवाले मुमुक्षु को अन्य कहीं जाना नहीं रुचता। वास्तव में अध्यात्म की साधना के अनुरूप शान्ति सन्तों के इस धाम में भरी है। यहाँ आने पर ही मुमुक्षु को हृदय में से ध्वनि उठती है कि 'यह सन्तों का धाम है।'

सर सेठ हुकुमचन्दजी सोनगढ़ में

जैन समाज के मुख्य नेता, इन्दौर के श्री हुकुमचन्दजी सेठ पूज्य गुरुदेवश्री की अध्यात्म–प्रसिद्धि सुनकर, तथा उनके द्वारा जैनधर्म की महान प्रभावना देखकर, संवत् 2001 के ज्येष्ठ कृष्णा 6 को पूज्य गुरुदेवश्री के दर्शन तथा सत्संगार्थ अनेक पण्डितों सहित सोनगढ़ आये; उनका पूज्य गुरुदेवश्री से यह पहला ही समागम था। पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन सुनकर और भक्ति आदि का अध्यात्मरस भरा वातावरण देखकर वे बहुत ही प्रसन्न हुए, तथा स्वाध्यायमन्दिर को रुपया 25,001 रुपये 'की उदार भेंट दी' वे सोनगढ़ तीन दिन रहे और ज्येष्ठ कृष्णा छठ से अष्टमी के उत्सव में भाग लिया। समवसरण की रचना देखकर उनको अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

भगवान श्री कुन्दकुन्द–प्रवचन मण्डप

दिन–प्रतिदिन बढ़ती हुई जिज्ञासुओं की संख्या के लिये उत्सव के दिनों में स्वाध्यायमन्दिर छोटा पड़ने लगा। इसलिए उससे चार गुना (पाँच हजार चौसठ फीट का) 'भगवान श्री कुन्दकुन्द प्रवचन–मण्डप' बनाने का निर्णय किया गया। संवत् 2002 की मगसिर शुक्ला दसवीं को श्री हुकुमचन्दजी सेठ के हस्त से अत्यन्त आनन्दोल्लासपूर्वक प्रवचन–मण्डप का शिलान्यास हुआ। श्री हुकुमचन्दजी सेठ ने 11,001 रुपये अर्पण किये तथा करीब सवालाख रुपया एकत्रित हुआ। सेठजी ने कहा कि—'इन महाराजजी के उपदेश के प्रभाव से बहुत जीवों को लाभ हुआ है। मेरा भी अहोभाग्य है कि मुझे महाराजश्री के चरणों की सेवा का लाभ प्राप्त हुआ है। मेरी तो भावना है कि मेरा समाधि–मरण महाराजजी के समीप में हो। आपके पास तो मोक्ष जाने का सीधा रास्ता है।' जिनमन्दिर में जिनेन्द्र–भक्ति होती हुई देखकर सेठजी का हृदय उल्लसित हो उठता था।

संवत् 2003 के चैत्र कृष्णा एकम को भगवान श्री कुन्दकुन्द–प्रवचन–मण्डप का उद्घाटन सेठ श्री हुकुमचन्दजी के शुभहस्त से अत्यन्त उल्लास भरे वातावरण में हुआ। सेठजी ने उस समय के प्रवास को 'सोनगढ़–यात्रा' नाम दिया तथा, उनके साथ करीब 45 यात्री थे। उस अवसर पर सोनगढ़ में लगभग तीन हजार मुमुक्षु एकत्रित हुए थे। अनेक पौराणिक चित्रों तथा सैद्धान्तिक सूत्रों से सुशोभित मण्डप के उद्घाटन के समय 35,000 रुपये दान की घोषणा के साथ सेठजी ने कहा था कि—'मैं अपने हृदय में ऐसा समझता हूँ कि मेरी सब सम्पत्ति इस सद्धर्म की प्रभावना के लिये न्योछावर कर दूँ तो भी कम है। उनके साथ आये हुए पण्डित श्री देवकीनन्दनजी आदि ने भी उत्साह तथा प्रमोद प्रगट किया था। पण्डितजी ने तो कहा कि 'हमारा तो सब भूलवाला था, आपने ही सत्य समझाया है।'

वींछिया में मुहूर्त करते हैं

अब सोनगढ़ के बाद सौराष्ट्र में अन्य अनेक गाँवों में भी दिगम्बर जिनमन्दिरों

की नींव डलना प्रारम्भ हुआ। उनमें सर्वप्रथम संवत् 2003 के चैत्र कृष्णा त्रीज को सेठ श्री हुकुमचन्दजी के हस्त से वींछिया में दिगम्बर जिनमन्दिर का शिलान्यास हुआ। उस प्रसंग के भाषण में उन्होंने कहा कि ऐसे पवित्र धर्म प्रसंग में भाग लेने के लिये मैं दिन–रात तैयार हूँ। मेरी तो भावना है कि जैनधर्म का डंका सारे भारतवर्ष में बज जाये। आप लोगों का अति उत्साह तथा उत्कृष्ट धर्म प्रेम देखकर मेरे हृदय में हर्ष नहीं समाता। जीवन में ऐसी धर्म भक्ति नहीं देखी! मुझे याद करोग तब ऐसे कार्यों में आधी रात को उठकर भी आने के लिये तैयार हूँ।

सोनगढ़ में विद्वत्परिषद का अधिवेशन

संवत् 2003 के चैत्र में सोनगढ़ में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद का वार्षिक अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन का प्रसंग बहुत ही प्रभावशाली था। अधिवेशन में काशी, बनारस, आगरा, देहली, कटनी, सागर, लखनऊ आदि से 32 जितने 'विद्वान' भाई पधारे थे, वे सब विद्वान पूज्य गुरुदेवश्री के प्रभाव तथा सोनगढ़ के अध्यात्म वातावरण को देखकर बहुत प्रसन्न हुए थे। विद्वतपरिषद ने पूज्य श्री कानजीस्वामी के प्रति अभिनन्दन का एक विशेष प्रस्ताव किया था। श्रीमान् सेठ हुकुमचन्दजी के आगमन से तथा विद्वत्परिषद के सम्मेलन के पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री का प्रभाव और अध्यात्म का प्रचार भारत में शीघ्रता से फैलने लगा। सौराष्ट्र में जगह–जगह जिनमन्दिरों की तैयारी होने लगी। तत्त्वज्ञान का प्रचार जैसे–जैसे बढ़ता गया, वैसे–वैसे लोगों की जिज्ञासा भी जागृत होने लगी। सौराष्ट्र के बाहर से भी जिज्ञासु जीव बड़ी संख्या में सोनगढ़ आकर सत्संग का लाभ लेने लगे।

व...न...या...त्रा

संवत् 2003 की ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा को सोनगढ़ में वनयात्रा का आनन्दकारी प्रसंग हुआ। सोनगढ़ में नदी किनारे सैकड़ों आम के वृक्षों का सुन्दर वन है। पूज्य गुरुदेवश्री संघ के साथ इस आम्रवन में पधारे और वहाँ वन के उपशान्त वातावरण में

कुन्दकुन्दादिमुनि भगवन्तों का स्मरण करके वैराग्यमय चारित्रभावनायें भायीं। प्रवचनसार का गुजराती अनुवाद उस समय होता था, उसमें से चारित्रभावना की प्रथम दो गाथाओं का गुजराती अनुवाद भाईश्री हिम्मतभाई ने पढ़ा, उसमें आचार्यदेव कहते हैं कि—चारित्र अंगीकार करने का जो यथानुभूत मार्ग... उसके प्रणेता हम यह खड़े हैं। यह सुनकर सबको बहुत हर्ष हुआ, मुनिमार्ग के प्रति भक्ति जागृत हुई। पूज्य गुरुदेवश्री ने आम्रवन में श्रीमद् राजचन्द्रजी कृत 'अपूर्व अवसर' काव्य गवाकर मुनिपद की भावना भायी। बेनश्री–बेन ने मुनिवरों का स्मरणपूर्वक वैराग्यमय भक्ति करवाई थी। पूज्य गुरुदेवश्री के साथ सोनगढ़ का वह वनविहार आज भी वैराग्य की मधुर ऊर्मियाँ जागृत करता है।

अध्यात्म प्रचार की भावनारूप प्रस्ताव

अब पूज्य गुरुदेवश्री का प्रभाव सौराष्ट्र के बाहर दूर–दूर तक शीघ्रता से फैलने लगा तथा ऐसा कल्याणकारी अध्यात्मज्ञान सारे जगत में प्रचाररूप हो—ऐसी भावना बहुत लोगों को होने लगी। मैनपुरी की जैन साहित्य सभा ने तो इस सम्बन्धी में एक प्रस्ताव किया, (इस प्रस्ताव से पूर्व सोनगढ़ में उत्तरप्रदेश की इस मैनपुरी का नाम भी किसी ने सुना नहीं था) वह प्रस्ताव निम्न प्रकार था:—

'श्री जैन साहित्य सभा–मैनपुरी ऐसा प्रस्ताव करती है कि सुवर्णपुरी सोनगढ़ में एक वायु प्रवचनस्थान (ब्राड कास्टिंग स्टेशन) स्थापित करने में आये, जिसके द्वारा वर्तमान समय के उत्कृष्ट जैन तत्त्ववेत्ता श्री कानजीस्वामी के परम उपकारी अध्यात्मिक प्रवचन सर्व जगत को सरलता से मिल सकें और जिससे जगत के मुमुक्षुओं का कल्याण हो।'

महताबचन्द जैन
मन्त्री,
श्री जैन साहित्य सभा, मैनपुरी

तारीख 14 जून 1947
सर्वानुमति से पास

विशिष्ट जन्म जयन्ती

संवत् 2004 में सोनगढ़ में मनाया गया पूज्य गुरुदेवश्री का 59वाँ जन्मोत्सव एक विशिष्ट आनन्द प्रसंग था। भूत–भविष्य के साथ सन्धि रखेनवाला एक आश्चर्यकारी मंगल–प्रसंग बना; तत्सम्बन्धी महान हर्षोल्लास के कारण इस उत्सव में भी सबको हार्दिक उत्साह था। तीन दिन के इस महान उत्सव के समय (सोनगढ़ में उन दिनों बिजली का प्रबन्ध न होने पर भी) घर–घर में दीपकों की ज्योति जगमगा उठी, इतने दीपकों की रोशनी सोनगढ़ में पहली बार हुई होगी। अनेक मुख्य अतिथियों ने भाषणों द्वारा परमोपकारी गुरु–महिमा प्रसिद्ध करके प्रमोद व्यक्त किया; रात्रि में भी स्वाध्याय मन्दिर के चौक में गुरुभक्ति का विशेष कार्यक्रम था; आनन्दमय नाटक तथा भक्तियों द्वारा इस उत्सव में आनन्द की ऊर्मियाँ जागृत हुई।

छह कुमारिका बहिनों की ब्रह्मचर्य–प्रतिज्ञा

संवत् 2005 की कार्तिक शुक्ला तेरस के दिन एक नवीन भव्य प्रसंग बना। सोनगढ़ में वर्षों से पूज्य बेनश्री–बेन की मंगलछाया में रहकर तथा पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचनों से प्रभावित होती (लगभग 22 वर्ष की) छह कुमारिका बहिनों ने एक साथ आजीवन ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा पूज्य गुरुदेवश्री के समक्ष अंगीकार की। इस प्रसंग को समाज ने विशेष उल्लास से मनाया तथा बहिनों के लिये ब्रह्मचर्याश्रम की भी स्थापना हुई। एक साथ में छह कुमारिका बहिनों की ब्रह्मचर्य–प्रतिज्ञा का यह अपूर्व प्रसंग पूज्य गुरुदेवश्री जो अतीन्द्रिय आत्मतत्त्व की सन्मुखता का उपदेश दे रहे हैं, उसका ही एक छोटा–सा फल है। पूज्य गुरुदेवश्री के आत्मस्पर्शी उपदेश का श्रवण तथा मंथन करनेवालों के जीवन में वैराग्यभावों का सहज ही पोषण होता जाता है, उसमें और पूज्य बहिनश्री चम्पाबहिन और श्री शान्ताबहिन जैसे महान वैरागी धर्मात्माओं की छाया में दिन–रात ज्ञान–वैराग्य का पोषण होता रहता है। माता जैसी वात्सल्यवन्ती उनकी दृष्टि बहिनों के जीवन में महान शरणरूप है। (तत्पश्चात् इसी प्रकार अन्य 14,

8 और 9 कुमारिका बहिनों ने एक ही साथ ब्रह्मचर्य–प्रतिज्ञा ग्रहण की है तथा अन्य अनेक बहिनों की ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा के प्रसंग बने हैं।) आत्महित की साधना के लक्ष्य से, अहर्निश सन्तों की छाया में रहने के हेतु से यह ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा ली है, यह एक विशेष आदर्श है। तथा ऐसे आदर्श को ग्रहण करनेवाली पचास जितनी ब्रह्मचारी बहिनें धन्यवाद की पात्र हैं।

'समयसार—भगवान की जय हो'

पूज्य गुरुदेवश्री को कुन्दकुन्द भगवान के प्रति है, उतना ही प्रेम 'समयसार' के प्रति है। समयसार उनका जीवनसाथी हो, इस तरह लगभग प्रतिदिन वे पढ़ते रहते हैं। सोलह बार तो उस पर प्रवचन हुए; उसमें से आठवीं बार के प्रवचन ढाई वर्ष तक चले... उनकी पूर्णता कैसे आनन्द से हुई, उसे यहाँ बतलाना है। संवत् 2002 की 'श्रुतपंचमी' से प्रारम्भ हुए यह प्रवचन संवत् 2005 में पौष कृष्णा अष्टमी को जब पूर्ण हुए, तब अन्तिम प्रवचन की पूर्णता करने पर पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा कि हे जीवो! अन्तर में विश्राम करो अनन्त महिमावन्त शुद्धात्मभगवान का आज ही अनुभव करो। ज्ञान के दिन (श्रुतपंचमी को) प्रारम्भ हुआ यह समयसार आज चारित्र के दिन (कुन्दप्रभु की आचार्य पदवी के दिन) पूर्ण होता है। इसलिए जो कार्य श्रुतज्ञान से प्रारम्भ हुआ, वह आगे बढ़कर चारित्रदशा प्राप्त करके केवलज्ञान तक पहुँच कर पूर्ण होगा... बोलो समयसार भगवान की... जय हो।' इस प्रकार पूज्य गुरुदेवश्री ने स्वयं केवलज्ञान की प्रतिज्ञा के साथ समयसार के जयकारपूर्वक जब समयसार की पूर्णता की, तब समस्त मुमुक्षु श्रोताजनों ने अत्यन्त ही आनन्दोल्लास से यह जयकार झेल लिया तथा दूसरी ओर 'सद्धर्म प्रभावक दुन्दुभि' का मंगल नाद वातावरण में गूँज उठा।

श्री समयसार की अगाध महिमा का यह एक आश्चर्यकारी प्रसंग था। तत्पश्चात् जब 14वीं बार श्री समयसार पर प्रवचन होने का प्रारम्भ हुआ, तब 14,000 रुपये के दान की घोषणा हुई। वर्तमान में सोलहवीं बार प्रवचन प्रारम्भ हुए हैं।

प्रतिष्ठा-महोत्सव तथा विहार

सोनगढ़ में संवत् 1997 तथा 1998 में दो प्रतिष्ठा-महोत्सव होने के बाद सर्वप्रथम संवत् 2005 में वींछिया में पंचकल्याणक-प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया, तथा इस निमित्त से पूज्य गुरुदेवश्री ने सौराष्ट्र में विहार किया, तब पूज्य गुरुदेवश्री पैदल चलकर विहार करते थे; ब्रह्मचारी बालक उनके साथ रहते थे; प्रतिदिन पाँच सात मील का प्रवास होता था। छोटे गाँवों में उस समय पूज्य गुरुदेवश्री के साथ सारे दिन जो आनन्द आता, उसका मधुर स्मरण आज भी आनन्द उत्पन्न करता है। उस समय पूज्य गुरुदेवश्री जिस गाँव में पधारते, वहाँ के सब किसान भी उत्सव जैसा मानकर उस दिन अपना कार्य बन्द रखते तथा उत्साह से पूज्य गुरुदेवश्री का प्रवचन सुनने आते। इस विहार के बीच पूज्य गुरुदेवश्री उमराला पधारे, तब जन्मभूमिस्थान के उद्धार की योजना तथा फण्ड का प्रारम्भ हुआ। वींछिया जैसे छोटे गाँव में भव्य पंचकल्याणक-प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया। इस महोत्सव में प्रतिष्ठा के लिये पधारे हुए 42 जिनबिम्बों पर पूज्य गुरुदेवश्री ने पवित्र हस्त कमल से अंकन्यास विधान किया। अहा, उन जिनेन्द्रों का जुलूस हाथी पर नहीं परन्तु गाड़ी में बैठकर निकला था-तथापि वे प्रसंग अद्भुत एवं आह्लादकारी थे। उस समय पूज्य गुरुदेवश्री के सुहस्त से प्रतिष्ठा कराने के लिये कलकत्ता, इन्दौर, मेलसा, कानपुर, मलकापुर, अजमेर आदि अनेक स्थानों से जिनबिम्ब आये थे। उसी वर्ष लाठी शहर में भी श्रुतपंचमी को पंचकल्याणक-प्रतिष्ठा का महान उत्सव था। दूसरे वर्ष (संवत् 2006 में) राजकोट में भी महान प्रतिष्ठा-महोत्सव मनाया, जिसमें एक साथ 39 जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा हुई।

शत्रुंजय सिद्धिधाम की यात्रा

सौराष्ट्र के विहार से वापिस लौटते समय संवत् 2006 के प्रथम अषाढ़ सुदी 4 के दिन पूज्य गुरुदेवश्री ने 800 जितने यात्रियों के महान संघ सहित शत्रुंजय-

सिद्धिधाम की अपूर्व उल्लास सहित (दूसरी बार) यात्रा की। पाण्डवधाम में भक्ति पूजा तथा प्रवचन हुए।

'सद्गुरु-प्रवचन-प्रसाद'

संवत् 2006 की भादों सुदी पंचमी से इस दैनिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, वह लगभग छह वर्ष चालू रहा। जिज्ञासुओं को वह प्रिय था, परन्तु उसके संचालक श्री अमृतलालभाई का स्वर्गवास हो जाने के बाद उसका प्रकाश बन्द हो गया।

अफ्रीका

पूज्य गुरुदेवश्री का प्रभाव कहाँ-कहाँ फैला हुआ है, वह जानने के लिये हमें हिन्दुस्तान के बाहर भी दृष्टि डालना पड़ेगी। पूज्य गुरुदेवश्री की प्रकाश किरणें अफ्रीका जैसे अन्धेर देश में भी पहुँच गई। ज्यों-ज्यों पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन साहित्य द्वारा प्रचार बढ़ता गया, त्यों-त्यों देश के कोने-कोने में जिज्ञासु जीव आकर्षित होते गये। इतना ही नहीं देश के मुख्य-मुख्य सभी शहरों में मुमुक्षु-मण्डल स्थापित होने लगे। साथ ही रंगून, पडन तथा अफ्रीका में नैरोबी, मोम्बासा आदि शहरों में रहनेवाले गुजराती भाई भी सोनगढ़ के प्रति आकर्षित हुए। अफ्रीका में एकबार आत्मधर्म के 400 जितने ग्राहक हो गये थे। आज भी अफ्रीका में उत्साह से मुमुक्षु मण्डल चल रहा है; तथा जिन प्रतिमा को विराजमान करके प्रतिदिन दर्शन-पूजन-भक्ति करते हैं और वहाँ के मुमुक्षु भाई कभी-कभी सोनगढ़ आकर भी सत्संग का लाभ लेते हैं।

सीमन्धरनाथ की प्रतिष्ठा के दस वर्ष

भक्तों की हार्दिक भावना से विदेहीनाथ सीमन्धर भगवान संवत् 1997 में सोनगढ़ पधारे। सीमन्धरनाथ की उस प्रतिष्ठा को संवत् 2007 में दस वर्ष पूर्ण होने पर

उल्लासकारी अष्टाह्निका–महोत्सव मनाया। सीमन्धरनाथ की परम भक्ति से सोनगढ़ का वातावरण गूँज उठा। अहो भगवान! आप साधकों के साथी हो... आपको हृदय में रखकर साधक सिद्धपद को निर्विघ्नरूप से साध रहे हैं। पूज्य गुरुदेवश्री कहते हैं कि 'सीमन्धरनाथ की ॐकारध्वनि में से झेलकर कुन्दकुन्दाचार्यदेव जो महान श्रुतामृत ले आये थे, उसी की अल्प प्रसादी यहाँ परोसने में आती है।' पूज्य बेनश्री–बेन को उन विदेहीनाथ के प्रति जो भक्ति उल्लसित होती है, तथा उनकी प्रशान्त मुद्रा देख–देखकर उनके हृदय में जो आनन्दोर्मि जागृत होती हैं, उनका वर्णन किस प्रकार से हो? विदेहवासी हे सीमन्धरनाथ! आप 'सुवर्णधाम में... अथवा तो भक्तों के अन्तर में' पधारने के बाद इस भरतभूमि के जिनेन्द्रशासन में अनेकानेक मंगलवृद्धि हुई है। ऐसे महान भक्तिभावों के साथ दसवर्षीय मंगलोत्सव बहुत ही आनन्द से मनाया गया था। 'कुन्दकुन्द–श्राविका शाला' का उद्‌घाटन भी उस बीच में (फाल्गुन कृष्णा तेरस को) हुआ था। अष्टाह्निका–उत्सव के प्रारम्भ में, एक भक्ति द्वारा सीमन्धरनाथ को सन्देश भिजवाया कि 'स्वस्ति श्री विदेहक्षेत्र में विराजमान हे सीमन्धर नाथ। भरतक्षेत्र के अपने भक्तों की प्रार्थना स्वीकार करके, शीघ्रातिशीघ्र विहार करके आप सोनगढ़ पधारे... भारत के भक्त आपकी राह देखते हैं....' उस उत्सव प्रसंग में अनेक धार्मिक नाटकों, धार्मिक फिल्म (तीर्थधाम सोनगढ़ की) आदि नये–नये कार्यक्रम थे। पूज्य गुरुदेवश्री के प्रताप से सुवर्णधाम में ऐसे आनन्दोत्सव के नये–नये प्रसंग बना ही करते हैं।

श्राविका–ब्रह्मचर्याश्रम का उद्‌घाटन

संवत् 2006 में कलकत्ता के (लाडनू निवासी) सेठ श्री वछराजजी गंगवाल आदि सोनगढ़ पहली बार आये; तथा पूज्य गुरुदेवश्री के मात्र कुछ दिन के संक्षिप्त परिचय से और पूज्य बेनश्री–बेन का जीवन देखकर वे ऐसे प्रभावित हुए कि तुरन्त ही जिनमन्दिर के पास विशाल जगह खरीदकर सवालाख रुपये के खर्च से उन्होंने भव्य आश्रम का निर्माण करवाया। उस 'श्री गोगीदेवी दिगम्बर जैन श्राविका–ब्रह्मचर्याश्रम'

का उद्घाटन सेठजी के हस्त से संवत् 2008 के माह शुक्ला पंचमी को बोधि समाधिदातार पूज्य गुरुदेवश्री की मंगल आशीषपूर्वक हुआ। वह उद्घाटन–महोत्सव अति आनन्दकारी था। उस दिन श्री महावीरस्वामी की प्रतिमाजी को दिनभर आश्रम में विराजमान किया था। पूज्य गुरुदेवश्री का प्रवचन भी आश्रम में हुआ था। सोनगढ़ में भक्ति–उल्लास और हर्ष का वातावरण फैल गया था, तथा पूज्य बेनश्री–बेन की हितकर छाया में 16 जितनी ब्रह्मचारिणी बहिनों ने आश्रय में निवास किया था। फिर तो क्रमश: बढ़ते–बढ़ते ब्रह्मचारिणी बहिनों की संख्या 50 जितनी हो गई है। आश्रम का वातावरण शान्त है और आदर्श महान है।

जैन विद्यार्थीगृह

संवत् 2008, चैत्र कृष्णा तीज से तीन विद्यार्थियों की संख्या से प्रारम्भ हुआ। इस विद्यार्थीगृह में आज 75 जितने विद्यार्थी पढ़ते हैं, धार्मिक ज्ञान का अभ्यास भी करते हैं तथा विद्यार्थीगृह अपना सुन्दर स्वतन्त्र मकान रखता है।

मानस्तम्भ की तैयारी तथा भव्य महोत्सव

संवत् 2009 तक सौराष्ट्र में कहीं पर भी मानस्तम्भ नहीं था, मानस्तम्भ किसको कहते हैं—उसका वास्तव में बहुतों को पता भी नहीं था। दस वर्ष पूर्व सोनगढ़ में जिनमन्दिर हुआ, तभी से मानस्तम्भ की भावना भक्तों के मन में बनी हुई थी, वह इस वर्ष सफल हुई। उसके लिये अत्यन्त उत्साहपूर्वक अल्प समय में ही करीब सवालाख रुपये का चन्दा हो गया। सौराष्ट्र के लिये वह बिल्कुल नवीन था। एक ओर जयपुर में मानस्तम्भ के संगमरमर के सामान का आर्डर दिया गया तथा दूसरी ओर सोनगढ़ में उसके बनने की जोरदार तैयारियाँ होने लगी। जिस दिन तथा जिस समय में पूज्य गुरुदेवश्री ने परिवर्तन किया था, उसके 17 वर्ष बाद ठीक उसी दिन और उसी समय में पूज्य बेनश्री–बेन के सुहस्त से मानस्तम्भ की नींव डाली गई। तथा ज्येष्ठ कृष्णा सप्तमी के दिन पूज्य गुरुदेवश्री की मंगल छाया में अत्यन्त

उल्लासमय वातावरण के बीच पूज्य बेनश्री-बेन ने तथा सेठ श्री नानालालभाई आदि ने उत्साहपूर्वक मानस्तम्भ शिलान्यास किया। मानस्तम्भ की तीन बड़ी-बड़ी पीठिकाओं के सीमेण्ट का कार्य सैकड़ों भक्त भाई-बहिनों के हाथ से उमंगपूर्वक प्रारम्भ करवाया गया। प्रवचन में गुरुदेवश्री प्रतिदिन मानस्तम्भ की महिमा समझाते। उस समय सौराष्ट्र में कितने ही स्थानों पर जिनमन्दिर तैयार हुए थे और मुमुक्षुगण प्रतिष्ठा के लिये पूज्य गुरुदेवश्री के पधारने की प्रतीक्षा कर रहे थे। तो दूसरी ओर देशभर में से अनेक छोटे-बड़े जिज्ञासु जीव (त्यागी तथा गृहस्थ) सोनगढ़ आते और पूज्य गुरुदेवश्री के परिचय से तथा सोनगढ़ के आध्यात्मिक वातावरण से बहुत ही प्रभावित होकर 'धन्य... धन्य बोल उठते।' कुछ लोग कहते थे कि सोनगढ़ तो विदेहधाम जैसा लगता है, तो कोई कहते थे कि वह तो धर्मपुरी है।

जयपुर (मकराना) से छह वेगन भरकर मानस्तम्भ के संगमरमर का सामान आया। बीच में दो वेगन गुम हो गये थे तो वे भी समय पर आ गये। अन्तिम दो वेगन संवत् 2010 में भाईदूज के दिन आये। उसमें अन्य सामान के उपरान्त मानस्तम्भ के जिनबिम्ब भी थे। कार्तिक शुक्ला तीज को जिनप्रतिमा का ग्राम में प्रवेश हुआ; तथा मानस्तम्भ की पीठिका के संगमरमर का पहला पत्थर उस दिन पूज्य बेनश्री-बेन के सुहस्त से रखा गया। भगवान की बैठक माह शुक्ला एकम को स्थापित की गई तथा बराबर उसी रात्रि को स्वप्न में पूज्य गुरुदेवश्री ने सीमन्धरनाथ का अद्भुत दिव्य मन्दिर देखा। पश्चात् तो एक के बाद एक पत्थर ऊपर-ऊपर रखते-रखते 63 फीट तक पहुँच गया। (पूज्य गुरुदेवश्री की उस समय 63वाँ वर्ष चलता था)

इस प्रकार संवत् 2009 का चैत्र मास आया तथा मानस्तम्भ के महोत्सव की मंगल बधाई लाया। जैसी मानस्तम्भ की विचित्र शोभा, वैसा ही उसकी प्रतिष्ठा का उत्सव! भक्तजन तो मानस्तम्भ की तथा महोत्सव की शोभा देख-देखकर प्रसन्न होते थे। प्रतिष्ठा-महोत्सव के समय छह हजार जितने अतिथि आये थे। उन्हीं दिनों

श्रवणबेलगोला में भगवान बाहुबली का महा मस्ताभिषेक का प्रसंग होने से वहाँ जाते–आते हजारों यात्री सोनगढ़ आते थे और सोनगढ़ यात्रियों से भरा रहता था। जैन समाज के अधिकांश प्रतिष्ठित लोग सोनगढ़ आ गये थे। मानस्तम्भ के प्रतिष्ठा महोत्सव की तो क्या बात ? श्री नेमिनाथ भगवान का पंचकल्याणक–जन्मोत्सव, बरात तथा वैराग्य प्रसंग, सहस्राम्रवन में दीक्षा, नेमि मुनि को आहारदान का भावभरा प्रसंग, 32 प्रतिमाओं पर पूज्य गुरुदेवश्री के शुभहस्त से अंकन्यास, समवसरण की रचना तथा गिरनार पर्वत का अद्‌भुत दृश्य ! और जब विदेहीनाथ सीमन्धर भगवान मानस्तम्भ पर पधारे और परमभक्ति से पूज्य गुरुदेवश्री ने उनकी प्रतिष्ठा की, तब चारों ओर जय–जयकार और आनन्द का वातावरण फैल गया। और फिर हुआ उस गगन विहारी मानस्तम्भ का महा अभिषेक। अन्तिम रथयात्रा की तो शोभा ही निराली थी। सौराष्ट्र में मानस्तम्भ का प्रतिष्ठा–महोत्सव अद्‌भुत और अपूर्व था। उसमें चारों ओर से भारत के हजारों भक्तों ने भाग लिया था। उत्सव में आये हुए अनेक त्यागी भी उस समय पूज्य गुरुदेवश्री से प्रभावित हुए थे। उन दिनों में सुवर्णधाम की शोभा अद्‌भुत थी। एक विशाल नगर रचा गया था—उसका नाम 'विदेहधाम' था। उत्सव में आनेवाले कहते थे कि वास्तव में हम विदेह में आये हों, ऐसा लगता है। प्रतिष्ठा के पश्चात् मानस्तम्भ के चारों ओर मंच बँधा होने से पूज्य गुरुदेवश्री सहित अनेक भक्तजन कभी–कभी ऊपर जाकर मानस्तम्भ की यात्रा करते और ऊपर बैठे–बैठे भक्ति–पूजन करते; पूज्य बेनश्री–बेन किसी किसी समय तो आश्चर्यकारी भक्ति करवाती थीं। उन सबके मधुर स्मरण आज भी आनन्द को प्राप्त कराते हैं। यद्यपि पूज्य गुरुदेवश्री ने अभी तक सौराष्ट्र के बाहर विहार नहीं किया था, तथापि उस उत्सव में यह स्पष्ट देखने में आया कि पूज्य गुरुदेवश्री अब केवल सोनगढ़ या सौराष्ट्र के ही नहीं परन्तु भारतभर के दिगम्बर जैन समाज की एक महान विभूति हैं। वैशाख सुदी दसवीं को जब मानस्तम्भ प्रतिष्ठा का एक महीना पूर्ण हुआ, तब सन्ध्या को आश्रम में पूज्य

बेनश्री–बेन ने जो अचिन्त्य भक्ति करवायी, वह सोनगढ़ के भक्ति–इतिहास में अजोड़ थी। मानस्तम्भ पर जाने का मंच ज्येष्ठ सुदी पंचमी तक रहा था। ज्येष्ठ सुदी पंचमी को महान अभिषेक तथा पूजन–भक्ति करके पूज्य गुरुदेवश्री ने मानस्तम्भ पर विशाल भक्ति करायी थी। मंच छोड़ देने पर, आकाश में मानस्तम्भ की शोभा गन्धकुटी जैसी शोभायमान होती थी।

एक ओर पूज्य गुरुदेवश्री का प्रभाव बढ़ने लगा तथा दूसरी ओर प्रवचन में तत्त्वज्ञान की स्पष्टता विशेष खिलती गई। श्वेताम्बर मत तथा दिगम्बर मत के बीच मुख्य सिद्धान्त भेद कहाँ हैं, उसे पूज्य गुरुदेवश्री ने विशेष स्पष्ट रूप से प्रसिद्ध किया। निश्चय–व्यवहार या उपादान–निमित्त आदि अनेक विषयों का भी खूब स्पष्टीकरण होने लगा और अधिक से अधिक जिज्ञासु उसका लाभ लेने लगे।

उमराला–जन्मभूमिस्थान

पूज्य गुरुदेवश्री की जन्मभूमि उमराला सोनगढ़ से मात्र 9 मील दूर है। जन्मभूमि पुराने घर के स्थान पर वैसा ही नया जन्मधाम बनाने के लिये संवत् 2009 की वैशाख सुदी पूनम को पूज्य बेनश्री–बेन के हस्त से शिलान्यास हुआ। ऊपर के भाग में सीमन्धर भगवान की वेदी तथा नीचे जन्मधाम में स्वस्तिक–स्थापना और पास में 'उजमबा स्वाध्यायगृह' का निर्माण हुआ। माघ वदी तीज को उसका उद्घाटन हुआ। उस प्रसंग का उत्सव अत्यन्त भव्य था... पूज्य गुरुदेवश्री का जन्मधाम भक्तों के लिये दर्शनीय बना है। पूज्य गुरुदेवश्री जब उमराला पधारते हैं, तब जन्मधाम में विशेष भक्ति होती है।

सौराष्ट्र में जगह–जगह जिनेन्द्र प्रतिष्ठा तथा गिरनार यात्रा

संवत् 2010 को हम जिनेन्द्र प्रतिष्ठा का वर्ष कह सकते हैं। सौराष्ट्र में जगह–जगह पर तैयार हुए दिगम्बर जिनमन्दिरों में प्रतिष्ठा करने के लिये पूज्य गुरुदेवश्री ने सोनगढ़ से माघ वदी तीज के दिन मंगल विहार किया। उमराला में जन्मधाम तथा

स्वाध्यायगृह का उद्घाटन होने के बाद उसमें पूज्य गुरुदेवश्री के सुहस्त से श्री समयसार की स्थापना हुई। अनेक गाँव–शहरों में होकर महा सुदी दसवीं को पूज्य गुरुदेवश्री गिरनार सिद्धिधाम की यात्रा को पधारे, तथा माघ सुदी 11–12 के दिन एक हजार जितने यात्रियों के साथ गिरनार सिद्धिधाम की यात्रा बहुत ही भक्तिभावपूर्वक की। जगह–जगह वैराग्यमय उद्गारोंपूर्वक पूज्य गुरुदेवश्री ने नेमिनाथ स्वामी का तथा गिरनार में विचरे हुए धरसेनस्वामी, कुन्दकुन्दस्वामी आदि सन्तों का स्मरण किया। पूज्य बेनश्री–बेन ने स्थान–स्थान पर भक्ति द्वारा अद्भुत वैराग्यरस बहाया। पूज्य गुरुदेवश्री ने संघ सहित गिरनार धाम की वह दूसरी यात्रा की थी। उस यात्रा के बाद जूनागढ़ शहर में जिनेन्द्रदेव की विशाल रथयात्रा निकली थी। लोग कहते थे कि ऐसी रथयात्रा हमने जूनागढ़ में कभी नहीं देखी।

पूज्य गुरुदेवश्री के साथ सौराष्ट्र के तीर्थों की यात्रा तो हुई, अब भारत के महान तीर्थ सम्मेदशिखर आदि की यात्रा पूज्य गुरुदेवश्री के साथ हो, ऐसी भावना अनेक भक्तों के हृदय में उत्पन्न हुई।

गिरनार सिद्धिधाम की यात्रा करके पूज्य गुरुदेवश्री पोरबन्दर–मोरबी–बांकानेर पधारे। उन तीनों शहरों में नूतन जिनमन्दिरों का पंचकल्याणक–प्रतिष्ठा का भव्य महोत्सव मनाया। तुदपरान्त वढ़वाण शहर, सुरेन्द्रनगर, राणपुर, बोटाद तथा उमराला में भी नूतन जिनमन्दिर में वेदीप्रतिष्ठा का भव्य महोत्सव मनाया। उमराला–एक तो पूज्य गुरुदेवश्री का जन्मधाम तथा उसमें अपने प्रिय सीमन्धरनाथ का आगमन! उस प्रसंग के उत्सव का क्या कहना? पूज्य गुरुदेवश्री ने रत्नों के अर्घ द्वारा अपने आँगन में प्रभु का स्वागत किया था और पुष्पवृष्टि के लिये विशेष विमान (हेलीकॉप्टर) आया था। इस प्रकार केवल चार महीने में आठ प्रतिष्ठा–महोत्सव हुए। सौराष्ट्र में सर्वत्र जिनेन्द्र प्रभाव फैल गया। ऐसे महान कार्य करके पूज्य गुरुदेवश्री सोनगढ़ पधारे, तब हाथी पर से पुष्पवृष्टि करके भक्तों ने महान भावभरा स्वागत किया।

सौराष्ट्र में विहार करते हुए पूज्य गुरुदेवश्री जामनगर भी पधारे थे। वहाँ सौराष्ट्र के राजप्रमुख श्री जामसाहेब ने अपने महल में निमन्त्रित करके अध्यात्म–उपदेश सुना था। सच्चा आत्मिक साम्राज्य क्या है, उसे सुनकर राजप्रमुख तथा उनकी महारानी अत्यन्त प्रसन्न हुए थे और ज्ञान प्रचार हेतु 1,001) रुपये का दान दिया।

प्रभावना का वेग शीघ्रता से बढ़ने लगा

ज्यों–ज्यों पूज्य गुरुदेवश्री का प्रभाव बढ़ता गया, त्यों–त्यों सोनगढ़ आनेवाले यात्रियों की संख्या भी बढ़ने लगी। भक्ति–पूजन के लिये जिनमन्दिर छोटा पड़ने लगा। पूज्य गुरुदेवश्री की 66वीं जन्मजयन्ती के अवसर पर उस जिनमन्दिर को विस्तृत करने का निर्णय किया गया। आजतक सौराष्ट्र में तो अनेक जिनमन्दिर बने, अब सौराष्ट्र के बाहर गुजरात के पालेज में (जहाँ पूज्य गुरुदेवश्री बचपन में अनेक वर्ष रह चुके थे) वहाँ भी दिगम्बर जिनमन्दिर बना हुआ है तथा संवत् 2012 के कार्तिक में तो गुजरात से भी बाहर निकलकर वह प्रभाव बम्बई तक पहुँचा और वहाँ कार्तिक सुदी दसवीं को एक भव्य जिनमन्दिर का शिलान्यास हुआ। बम्बई के झवेरी बाजार के निकट मुम्बादेवी रोड पर दिगम्बर जिनमन्दिर का निर्माण होने लगा।

प्रतिदिन बढ़ते हुए पूज्य गुरुदेवश्री के प्रभाव के कारण भारतवर्ष के जिज्ञासुओं का आना–जाना सोनगढ़ में बहुत बढ़ गया था। दर्शन–पूजन–भक्ति के लिये जिनमन्दिर काफी छोटा पड़ने लगा था, इसलिए उसका नवनिर्माण करने का निर्णय किया गया और संवत् 2010 की मंगसिर वदी पंचमी को उसका शिलान्यास हुआ। पूज्य गुरुदेवश्री के मंगलहस्त से स्वस्तिक विधान सहित आनन्दोल्लासपूर्वक शिलान्यास कराया गया। शिलान्यास के पश्चात् कुछ ही समय में भक्ति का उल्लासकारी प्रसंग बना। जो विशाल जिनमन्दिर बन रहा था उसकी विशाल छत भरने का कार्य अषाढ़ सुदी 14 तथा 15 के दिन सैकड़ों भक्तों ने हाथोंहाथ किया। उस भक्ति के श्रमयज्ञ में पूज्य बेनश्री–बेन तथा नानालालभाई, रामजीभाई आदि सहित समस्त मण्डल के लोग भाग लेते थे।

जब वह कार्य चला था, तब पूज्य गुरुदेवश्री ने दो दिनों तक प्रवचन बन्द रखा था। सीमेण्ट की गर्मी से हाथ की चमड़ी फट न जाये, उसके लिये सब लोग हाथ में कपड़े की थैली बाँधते थे। भक्ति गाते–गाते निरन्तर दो दिन वह छत भरने का काम चला। वह दृश्य देखने योग्य था; उस कार्य की इतनी धुन थी कि उस समय सौराष्ट्रभर में भूकम्प का जो धक्का लगा था, उसका भी ख्याल भक्तों को नहीं आया था। छत भरी जाने के बाद उस छत पर खड़े–खड़े मुमुक्षुओं ने जो गगनभेदी जयनाद किया था, उससे आकाश गूँज उठा था; उसकी झनकार आज भी हृदय में गूँज रही है। जिन्होंने उस समय का दृश्य देखा, वे तो भक्ति देखकर चकित हो गये थे। जिनमन्दिर के लिये चन्दा भी उत्साहपूर्वक बढ़ता जा रहा था और लाख तक पहुँचने की तैयारी थी।

सम्मेदशिखर यात्रा का निर्णय तथा 14 बहिनों की ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा

अनेक वर्षों से जिज्ञासुओं के हृदय में पूज्य गुरुदेवश्री के साथ श्री सम्मेदशिखरजी शाश्वत् सिद्धिधाम की यात्रा करने की जो भावना थी, उसे पूर्ण करने का अपना निर्णय श्रावण शुक्ला 1 को भक्ति के पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री ने सुनाया। पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा कि—अगले वर्ष (संवत् 2013) के फाल्गुन में सम्मेदशिखरजी की यात्रा के लिये पहुँचना है। अहा, उस निर्णय को सुनते ही समस्त मुमुक्षु मण्डल में सर्वत्र आनन्द फैल गया कि—पूज्य गुरुदेवश्री के साथ तीर्थयात्रा का सुअवसर प्राप्त होगा... वह सन्देश सुनकर अनेक नगरों के मुमुक्षुओं ने अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। भक्तों के हृदय पूज्य गुरुदेवश्री के साथ तीर्थयात्रा के लिये आतुर हो रही थे... जिस यात्रा का निर्णय सुनते ही मुमुक्षुओं में प्रसन्नता फैल गयी थी, वह यात्रा कैसी आनन्दकारी होगी!

संवत् 2012, भादौं शुक्ला पंचमी को एक साथ 14 कुमारिका बहिनों ने आजीवन ब्रह्मचर्य–प्रतिज्ञा ग्रहण की, वह अवसर भी अपूर्व एवं वैराग्य उत्पन्न करनेवाला था।

सवा लाख रुपये की लागत से तैयार हुए भव्य नूतन जिनमन्दिर के ऊपरी भाग में भगवान नेमिनाथ की पुनः वेदीप्रतिष्ठा संवत् 2013 कार्तिक शुक्ला 12 दिन हुई; वह उत्सव भी अत्यन्त हर्षोल्लास से मनाया।... 'सीमन्धरनाथ कितने प्यारे ?'—कि 'जितना अन्तर का ज्ञान प्यारा'... वह वाणी में केसे आये ?—आदि प्रकार से भगवान की अद्भुत भक्ति होती थी। जिनमन्दिर के शिखर पर जाकर पूज्य गुरुदेवश्री ने कलश एवं ध्वज को स्पर्श किया। लगभग 75 फीट की ऊँचाई पर जिनमन्दिर का धर्मध्वज लहरा रहा है। महोत्सव के पश्चात् चाँदी की गन्धकुटीवाले नवीन रथ में भगवान की जो रथयात्रा निकली, उसकी शोभा और उसका उल्लास अद्भुत था! भक्तों को कलकत्ता की रथयात्रा याद आती थी। सोनगढ़ का भव्य जिनमन्दिर देखकर भक्त कहते थे कि जिस प्रकार मूळबिद्री में त्रिभुवनतिलकचूड़ामणि जिनालय है, उसी प्रकार अपना यह जिनमन्दिर 'सम्यक्त्व शिखरचूढ़ामणि' है।

सोनगढ़ का उत्सव समाप्त होते ही तुरन्त ही पूज्य गुरुदेवश्री ने मंगलतीर्थ यात्रा के लिये विहार किया। बीच में पालेज के जिनमन्दिर का प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ। पालेज के जिनमन्दिर में पूज्य गुरुदेवश्री ने स्वहस्त से श्रेयांसनाथ, सीमन्धरनाथ आदि भगवन्तों को भाव से विराजमान किया, और पश्चात् बम्बईनगर में 10-15 हजार लोगों की सभा में परम सत्य की घोषणा करके सिद्धिधाम की यात्रा के लिये प्रस्थान किया। अहा, ऐसे तीर्थों की अपूर्व यात्रा! पूज्य गुरुदेवश्री जहाँ-जहाँ जाते, वहाँ ऐसा स्वागत होता कि वहाँ की जनता आश्चर्य से बोल उठती कि हमने अपने नगर में ऐसा स्वागत कभी नहीं देखा। यात्रा का सम्पूर्ण वर्णन तो 'मंगलतीर्थयात्रा' नामक गुजराती पुस्तक में छपा हुआ है, जिसको पढ़ने पर मुमुक्षुओं को इस यात्रा की विशालता एवं महत्ता ख्याल में आ जाती है। इस यात्रा में 500 यात्री; 8 मोटर बसें तथा 30 मोटर कारें थी। पूज्य गुरुदेवश्री के साथ अनेक तीर्थों की यात्रा की।

सोनगढ़ से वल्लभीपुर, बरवाला, खम्भात, वडवा, अगास, बड़ौदा, पालेज,

भरूच, अंकलेश्वर, सूरत, भिवण्डी, बम्बई; उसके पश्चात् गजपंथा, मांगीतुंगी, रावलगाँव, एलौरा, मालेगाँव, धुलिया, बडवानी... पावागिरि–ऊन, खण्डवा, सनावद, सिद्धवरकूट, इन्दौर, उज्जैन, मक्सी–पार्श्वनाथ सारंगपुर, ब्यावरा, राघौगढ़, सोनकच्छ, भोपाल, कुराना, नरसिंहगढ़, गुना, बजरंगगढ़, कोलारस, सेसई, शिवपुरी, झाँसी, थुवोनजी, आगरा, शौरीपुर–बटेश्वर, मथुरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, कानपुर, लखनऊ, रत्नपुरी, अयोध्यापुरी, बनारस (काशी), चन्द्रपुरी, सिंहपुरी, डालमियानगर, आरा, पटना, राजगृही, कुण्डलपुर–नालन्दा, पावापुरी, गुणवा, गया, सम्मेदशिखरजी, चम्पापुरी–मन्दारगिरि, ऋजुवालिकातीर, जमशेदपुर, झरिया, धनबाद, कलकत्ता, खण्डगिरि–उदयगिरि, चोपारन, इलाहाबाद, कानपुर, कुरावली, एटा, हस्तिनापुर, अलवर, देली, सहरानपुर, आमेर, जयपुर, अलीगढ़–टोंक, अजमेर, लाडनू, सुजानगढ़, कुचामन, किशनगढ़, ब्यावर, शिवगंज, जावाल, आबू, तारंगा, अहमदाबाद होकर सोनगढ़ पधारे।

मधुवन में हजारों लोगों की सभा में जो प्रवचनधारा बहती थी, वह अद्भुत थी... पण्डित बंशीधरजी ने भावभरा भाषण करके साहसपूर्वक गद्‌गद्‌भाव से कहा कि—अनन्त तीर्थंकरों तथा आचार्यों ने सत्य दिगम्बर जैनधर्म को अर्थात् मोक्षमार्ग को प्रगट करने का जो सन्देश सुनाया था, वही श्री कानजीस्वामीजी की वाणी में हम सब यहाँ सुन रहे हैं। अनेक तीर्थों की भावभरी यात्रा करके चैत्र कृष्ण छठ को पूज्य गुरुदेवश्री सोनगढ़ पधारे, तब भव्य स्वागत हुआ और सुवर्णपुरी का छह महीने से सुप्त वातावरण फिर से गूँजने लगा।

यात्रा–उत्सव के उपलक्ष में सोनगढ़ में अषाढ़ मास की अष्टाह्निका में सिद्धचक्रविधान–पूजन बहुत ही उत्साह से मनाया गया। यात्रा के छह हजार फीट चलते–फिरते चित्रों (Film) द्वारा उन तीर्थों को जब सोनगढ़ में देखते हैं, तब यात्रा का आनन्द फिर से ताजा हो जाता है।

संवत् 2014 में लींबडी शहर में पंचकल्याणक–प्रतिष्ठा के कारण पूज्य गुरुदेवश्री ने विहार किया।

दक्षिण देश की विशाल यात्रा तथा बम्बई का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

संवत् 2015 के पौष में पूज्य गुरुदेवश्री ने बम्बई प्रतिष्ठा तथा दक्षिण देश के तीर्थों की यात्रा के लिये विहार किय। इस तीर्थयात्रा में धन्धुका, अहमदाबाद, पालेज, दाहोद, बड़वानी, नासिक, लींबड़ी होकर बम्बई पधारे। बम्बई में मुम्बादेवी मैदान में पंचकल्याणक का अत्यन्त भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया। वहाँ 'महावीरनगर' की सुन्दर रचना हुई थी, 25,000 लोगों का समावेश हो सके, ऐसा विशाल प्रतिष्ठा–मण्डप बनाया गया था। बम्बई शहर में मनाया गया वह प्रतिष्ठा–महोत्सव बम्बई के इतिहास में अद्वितीय था। झवेरी बाजार में जिनमन्दिर लगभग 4 लाख रुपये की लागत से बनवाया गया है। उत्सव में लगभग दो लाख का खर्च तथा ढाई लाख की आमदनी हुई थी। इस महोत्सव के दृश्यों को देखकर बम्बई की जनता मुग्ध हो गई थी। प्रवचन में पन्द्रह हजार लोग लाभ लेते थे। माघ शुक्ला छठ को जिनमन्दिर में भगवन्तों की प्रतिष्ठा करके अष्टमी के दिन पूज्य गुरुदेवश्री ने 650 जितने यात्रियों के विशाल संघ सहित दक्षिण–यात्रा के लिये प्रस्थान किया।

बम्बई से पूना फल्टन, जोगफाल्स, हूमच, कुन्दापुर, कुन्द्रादि, मूलबिद्री, कारकल, वेणुर, हलीबीड, श्रवणबेलगोला, मैसूर, बंगलौर, कांजीवरम्, पुण्डीनगरी, मद्रास, पोन्नूर, बन्देवास, अकलंबस्ती, केरण्डे, नेल्लूर, बेजवाडा, हैदराबाद, सोलापुर, कुंथलगिरि, धाराशिवनी की गुफाओं उस्मानाबाद, एलोरा, अजन्ता, जलगाँव, मलकापुर, शिवपुर, बासीम, कारंजा, परतवाडा (एलिचपुर), मुक्तागिरि, अमरावती, भातकुली, बजारगाँव, नागपुर, डोंगरगढ़, खैरागढ़, रामटेक, सीवनी, जबलपुर, मढियाजी, खजुराहा, मूलघाट, पनागर, दमोह, कुण्डलपुर–सिद्धक्षेत्र, शाहपुर, द्रोणगिरि, सिद्धक्षेत्र, पपौराजी, टीकमगढ़, अहारजी, ललितपुर, देवगढ़,

चन्देरी, बारा, चाँदखेड़ी, झालरापाटन, कोटा, बूंदी, भातपुरा, नीमच, चित्तौड़, उदयपुर, ऋषभदेव–केसरियाजी (धूलेव) ईडर, सोनासन, रामपुरा, फतेपुर, तलोद, रखियाल, दहेगाम, कलोल, अहमदाबाद, पोलारपुर, शिहोर, भावनगर, घोघा होकर सोनगढ़ पधारे।

पूज्य गुरुदेवश्री जहाँ जाते, वहाँ हजारों लोग उत्सुकता से संघ को देखते थे। लोग गुजराती तो क्या, हिन्दी भाषा भी नहीं समझते थे, तथापि प्रवचन में हजारों लोग आते और पूज्य गुरुदेवश्री का प्रभाव देखकर गदगद होते थे। कानडी–तामिल आदि भाषा में प्रवचन का थोड़ा–बहुत अनुवाद भी सुनाने में आता था। प्रतिदिन नये–नये तीर्थों तथा नये–नये मन्दिरों के दर्शन करते हुए आनन्द होता था। दोनों यात्राओं से पूज्य गुरुदेवश्री को तथा यात्रियों को भी तीर्थ का तथा तीर्थ में उत्पन्न हुई उत्तम भावनाओं का स्मरण जीवन में मिला है। उसमें भी भगवान बाहुबली के दर्शनों से उत्पन्न हुई अद्भुत भावनाएँ तो यात्रा के पश्चात् आज भी अनेकों बार पूज्य गुरुदेवश्री याद करते हैं। पोन्नूर को भी अनेक बार याद करते हैं। फतेपुर में पूज्य गुरुदेवश्री का 70वाँ जन्मदिवस अतीव उत्साह से सौराष्ट्र–गुजरात के मुमुक्षुओं द्वारा मनाया गया था। भारत के महान तीर्थों की ऐसी उल्लासभरी मंगलयात्रा हुई, उसके लिये परम पूज्य गुरुदेवश्री का हम सब पर महान–महान उपकार है। संसार से तिरने के लिये तीर्थ वे ही हम सबको दिखला रहे हैं। सम्यक्तीर्थ की अपूर्व यात्रा करवा के सिद्धिधाम की ओर ले जानेवाले पूज्य गुरुदेवश्री के चरणों में भक्तों का हृदय भक्ति से नम जाता है।

पूज्य गुरुदेवश्री का प्रभाव अब मध्य–भारत में भी पहुँच गया था। जब पूज्य गुरुदेवश्री खैरागढ़ पधारे, तब वहाँ नूतन दिगम्बर जिनमन्दिर में वेदी प्रतिष्ठा का महोत्सव हुआ और दो कुमारिका बहिनों ने आजीवन ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा ग्रहण की थी। पहले यहाँ दिगम्बर जैनों का एक भी घर न होने से नया दिगम्बर जैनमन्दिर बना, तथा वेदी प्रतिष्ठा–महोत्सव भी हुआ।

अध्यात्मधाम सोनगढ़ की शीतल छाया में

यात्रा करके गुरुदेव सोनगढ़ पधारे और गुरुदेव की छाया में, सोनगढ़ के शान्त–अध्यात्म वातावरण में मुमुक्षु भक्तजन आनन्द से आत्मिक साधना में रत् बने... यात्रा में से प्राप्त सन्तों के आदर्श जीवन की प्रेरणा अन्तर में दोहराने लगे। गुरुदेव का अन्तर भी अध्यात्म चिन्तन में विशेष संलग्न हुआ। यात्रा के मधुर संस्मरण गुरुदेव बारम्बार याद करते और उनका हृदय तीर्थ के प्रति भक्तिभावना से द्रवित हो जाता। दक्षिण यात्रा की प्रसन्नता में चौबीस तीर्थंकर पूजन विधान हुआ था। (इस दक्षिणयात्रा की पुस्तक भी अब प्रकाशित होगी)।

गुरुदेव के साथ भारत के देश–देश का प्रवास करके सोनगढ़ आने के पश्चात् वहाँ के शान्त अध्यात्म वातावरण में मुमुक्षु को जिस मिठास का वेदन होता है, जो चैतन्य की निकटता के भनकार सुनाई देते हैं—वे अद्‌भुत हैं। गुरुदेव का शीतल वड़ दिन–प्रतिदिन अधिक विस्तरित होता जा रहा है। ऐसे शीतलधाम में पूज्य बहिनश्री बेन की मधुर छाया में निवास करनेवाली कुमारिका ब्रह्मचारिणी बहिनों के प्रति धार्मिक वात्सल्य का प्रमोद आने से, अफ्रीका से एक जिज्ञासु भाई ने प्रत्येक बहिनों को रुपये 101 (– 27 बहिनों के लिये रुपये 2727) भेंट भेजे थे। साथ में सन्देश था कि 'धन्य है उन बहिनों के जीवन को... प्रत्येक आत्मार्थी जीव को उस जीवन का घटतर लेने योग्य है।' अफ्रीका के उत्साही भाईयों की ओर से संवत् 2016 के कार्तिक शुक्ल अष्टमी के दिन दो पत्र आये; एक में जामनगर में जिनमन्दिर बनाने के लिये रुपये 65,000 भेजने का बतलाया था। और दूसरे में रुपये 51,000 भेजने का बतलाया था। जामनगर जिनमन्दिर के लिये अत्यन्त अल्प समय में डेढ़ लाख से अधिक फण्ड हो गया था।

(संवत्) 2016 के पौष माह में फिर से गुरुदेव का विहार सौराष्ट्र में वडिया, जैतपुर और गोण्डल के दिगम्बर जिनमन्दिरों में प्रतिष्ठा के निमित्त हुआ। तीनों गाँवों में

दिगम्बर जिनमन्दिरों में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया। फाल्गुन शुक्ल बारह के दिन राजकोट जिनमन्दिर का दस वर्षीय उत्सव मनाया गया।

उमराला में जन्मोत्सव (संवत् 2016)

गुरुदेव का 71वाँ जन्मोत्सव जन्मनगरी में—और जहाँ जन्म हुआ, उस जन्मधाम में ही मनाया गया था... 70 वर्ष पहले जहाँ माता उजमबा ने कुंवर कहान को लाड़–दुलार किया, जीमाया–खिलाया, उसी स्थान में आज भारत भर के भक्त उजमबा को याद कर–करके भक्ति से गुरु कहान का अभिनन्दन करते थे। आहा! अद्भुत थे वे भक्ति के दृश्य! और अलग ही थे उन धर्म माताओं के वात्सल्य!! 'माता आशीर्वाद देती है' ऐसा दृश्य जब 'पूज्य माताजी ने' भक्ति द्वारा वात्सल्यभाव से दर्शाया, वह सर्वोत्तम दृश्य, वह पवित्र वात्सल्य का झरना मुमुक्षुजनों को जीवन भर विस्मृत नहीं होगा। माता आशीर्वाद देती है—बेटा! तू धर्म का रंगी होना और आत्मा का प्रभावी होना। वैशाख शुक्ल दूज को जन्मबधाई लेकर भारत के भक्त आये और उजमबा के आँगन में पाँच सौ श्रीफल का और रुपयों का ढ़ेर हो गया। आज गुरुदेव भी खुशखुशहाल (प्रसन्नचित्त) थे। गाँव–परगाँव के जितने बालक दर्शन करने आवे उन प्रत्येक को प्रेम से स्वहस्त से जैन बालपोथी तथा आत्मसिद्धि दे देते थे; और गुरुदेव से उनके 'नूतन वर्ष की बौनी' मिलने से सब आनन्दित होते थे। जन्मधाम में भक्ति भी अद्भुत आनन्दकारी हुई थी। वास्तव में उमराला आज फिर से धन्य बना था।

विदेह के संस्मरण

तत्पश्चात् वैशाख मास के उत्सव के दौरान समवसरण में भक्ति के समय, सीमन्धरनाथ और कुन्दकुन्दाचार्यदेव के प्रति परम उल्लास–भक्ति–बहुमान आने से गुरुदेव ने समवसरण में बैठे–बैठे पुस्तक में लिखा कि 'भरत से महाविदेह की मूल देह से यात्रा करनेवाले श्री कुन्दकुन्दाचार्य की जय हो, विजय हो।' तीर्थयात्रा के कैसे

भाव और विदेह के कैसे स्मरण उनके अन्तर में उल्लसित होते हैं वह इस हस्ताक्षर द्वारा दृष्टिगोचर होते हैं।

नवीन मेघ वर्षा

संवत् 2016के ज्येष्ठ कृष्ण तीज को गुरुदेव की दायीं आँख का मोतिया सफल रीति से उतार लिया गया था। और एक सप्ताह में पट्टी छूटने पर गुरुदेव पहले-पहले जब सभा में पाट पर आकर विराजमान हुए, उस समय के आनन्ददायी वातावरण की क्या बात!! और पश्चात् श्रावण माह में गुरुदेव ने प्रवचन शुरु करके पुनः श्रुत की मेघवर्षा शुरु की, तब तो श्रुत के पिपासु जिज्ञासु जीवों के हृदय उस नवीन अमृत वर्षा को झेलकर आनन्द विभोर होकर खिल उठे थे। पूज्य बहिनश्री बेन ने नवीन भक्ति करायी थी, पूरे मण्डल में आनन्दोल्लास का वातावरण था।

अध्यात्म की धुन और मुनिदर्शन की उर्मि

संवत 2016में श्रावण शुक्ल पंचमी को एक बार गुरुदेव बाहर घूमने गये और वहाँ खुल्ले मैदान में बैठे-बैठे एकान्त में अकेले धुन जमायी। (पास में एक भक्त-यह लिखनेवाला स्वयं वह धुन सुनता था, उसकी गुरुदेव को खबर नहीं थी, वे तो अपनी धुन में मस्त थे।) मुख में से शब्द निकलते थे—

जहाँ चेतन वहाँ सर्व गुण केवली बोले ऐम
प्रगट अनुभव आत्मा निर्मल करो सप्रेम... रे...
चैतन्य प्रभु! प्रभुता तेरी चैतन्य धाम में...
जिनवर प्रभु! पधारे समवसरण धाम में...
प्रियवर प्रभुजी! विराजे विदेहधाम में...

—इस रटन और रटन में गुरुदेव को मुनिदर्शन की ऐसी ऊर्मि स्फुरित हुई कि अरे! अभी यहाँ किसी मुनिराज के दर्शन हो तो कितना बढ़िया! कोई

चारणऋद्धिधारक परम दिगम्बर मुनिराज के अभी दर्शन हो, कुन्दकुन्दस्वामी जैसे कोई मुनिराज कहीं से आकाशमार्ग से यहाँ आ चढ़ें और नीचे पधारकर दर्शन दें—तो कैसा धन्य भाग्य!!

—इस प्रकार बहुत बार गुरुदेव एकान्त में बैठे-बैठे, किसी समय स्वाध्यायमन्दिर के चौक में वृक्ष की छाया में अध्यात्मचिन्तन में लवलीन बन जाते हैं... उस समय का उनकी मुद्रा का दृश्य बहुत ही अध्यात्मप्रेरक होता है... और अन्दर में घुलते हुए गहरे भाव किसी समय सुनने को मिलते हैं, तब आत्मार्थी जीव निहाल हो जाते हैं।

सुवर्ण सन्देश — साप्ताहिक

(संवत्) 2016के आसोज कृष्ण अमावस्या को यह साप्ताहिक शुरु हुआ, उसके द्वारा जिज्ञासुओं को सोनगढ़ के ताजा समाचार और प्रवचनों का दोहन नियमित मिला करता था; सर्व जिज्ञासुओं में यह अत्यन्त प्रिय था। संवत् 2018के चैत्र महीने तक इसका प्रकाशन चला था।

(संवत्) 2017 के पौष में कांग्रेस महासभा का अधिवेशन भावनगर मुकाम में हुआ। वहाँ आये हुए अनेक नेता, कार्यकर्ता और प्रेक्षक विशाल संख्या में सोनगढ़ भी आये थे। अधिवेशन के भरचक कार्यक्रम में से भी समय निकालकर ढेबरभाई जैसे प्रमुख (भूतपूर्व कांग्रेस प्रमुख) ने भी सोनगढ़ आकर गुरुदेव के साथ एक घण्टे तत्त्वचर्चा की थी।

ढ़ेबरभाई गुरुदेव के प्रति विशेष प्रेम रखते हैं और बारम्बार सोनगढ़ आकर (तथा अन्यत्र जहाँ अवकाश मिले वहाँ) वे गुरुदेव के सत्संग का लाभ लेते हैं।

2017 में जिनबिम्ब प्रतिष्ठा और गिरनार यात्रा

संवत् 2017 में पुन: वापस विहार आया... यद्यपि बारम्बार होनेवाला विहार

सोनगढ़वासी भक्तों को विरहदाता लगता है... परन्तु भारत में पसरते गुरुदेव के प्रभावना के वेग को कौन रोक सकता है ? जामनगर में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा, सावरकुण्डला में वेदी प्रतिष्ठा और गिरनार सिद्धिधाम की यात्रा—ऐसे मंगल प्रसंग के निमित्त पौष माह में गुरुदेव ने विहार किया। जामनगर में लगभग दो लाख के खर्च से तैयार हुए भव्य जिनमन्दिर में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा का महोत्सव माह महीने में बहुत ही उल्लास से मनाया गया। सौराष्ट्र का यह महोत्सव अति प्रभावशाली था। दिल्ली, जयपुर, कलकत्ता इत्यादि अनेक स्थानों के उपरान्त अफ्रीका में बसते कितने ही जिज्ञासु भी विशेषरूप से इस उत्सव में भाग लेने आये थे; इतना ही नहीं, यह मन्दिर बनवानेवाले कांट्रेक्टर भाईश्री अगरसिंहजी दरबार ने भक्तिपूर्वक रुपये पाँच हजार की बोली लेकर मन्दिर के ऊपर कलश चढ़ाया था। बी.ए. पढ़ी हुई एक कुमारिका बहिन ने इस प्रसंग पर ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा ली थी।

जामनगर के प्रतिष्ठा महोत्सव के पश्चात् गुरुदेव गिरनार की यात्रा हेतु पधारे। गुरुदेव के साथ यात्रासंघ में 1200 जितने यात्री थे। और अद्भुत उत्साहपूर्वक यात्रा हुई थी। गुरुदेव ने संघसहित गिरनार की यह दूसरी यात्रा की। गुरुदेव के साथ बारम्बार इन वैराग्य धामों—यह नेमि-राजुल के साधना के स्थल, वह मोक्ष का धाम और सन्तों के आवास देखने से भक्तों को बहुत ही आनन्द होता था। और हृदय में सन्तों के चैतन्य जीवन की अद्भुत प्रेरणा मिलती थी। आहा! चैतन्य साधना का यह जीवन!! और उस साधना की यह भूमि!—आत्मसाधक सन्तों के साथ उसकी यात्रा-यह जीवन का कीमती अवसर है। सौराष्ट्र की धरा में ऐसा महान महिमावन्त तीर्थ है, इसका वास्तविक गौरव तो गुरुदेव के साथ की यात्रा के समय ही समझ में आया। गिरनार के धाम पर बैठे-बैठे गुरुदेव के मुख से वैराग्य की वाणी सुनते हों, या कोई अध्यात्म की चर्चा चलती हो या किसी टोंक की टोंच पर बैठे-बैठे भक्ति-पूजन करते हों—या मौन बैठे हों, अथवा आनन्द से गाते-गाते सन्तों के साथ पर्वत चढ़ते या

उतरते हों—यह सब प्रसंग मुमुक्षु जीवन में ज्ञान-वैराग्य और भक्ति का अमि भरपूर सिंचन करते हैं। वास्तव में वह जीवन की सुनहरी घड़ी है।

— और उस सिद्धिधाम की यात्रा के पश्चात् तुरन्त दूसरे ही महीने सावरकुण्डला में नूतन दिगम्बर जिनमन्दिर में जिनेन्द्रदेव की वेदी प्रतिष्ठा का भव्य महोत्सव मनाया। और पश्चात् गुरुदेव सोनगढ़ पधारे...

प्रभावना, प्रचार, भक्ति और सन्त की छाया में जीवन घटतर

गुरुदेव के साक्षात् समागम का तो प्रतिवर्ष हजारों जिज्ञासु लाभ लेते हैं। तदुपरान्त साहित्य द्वारा और टेपरिकार्डिंग प्रवचन द्वारा गाँव-गाँव के अनेक जिज्ञासु लाभ लेकर अपनी जिज्ञासा का पोषण करते हैं और सोनगढ़ के प्रति आकर्षित होते हैं। दूर-दूर के जिज्ञासुओं का आगमन दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता है।

सोनगढ़ में स्थिरता के काल दौरान नित्य नये-नये भक्ति के उत्सव प्रसंग मनाये जाते हैं। गुरुदेव भी ऐसे प्रसंगों में उपस्थित रहते हैं। किसी समय चौबीस तीर्थंकर विधान तो किसी समय सप्त मण्डल विधान। किसी समय बीस विहरमान तीर्थंकर विधान, किसी समय ढाई द्वीप विधान, तेरह द्वीप विधान और त्रिलोकमण्डल विधान, तो किसी समय सिद्धचक्र विधान, पंच परमेष्ठी विधान, किसी समय जिनेन्द्र प्रभु के महाभिषेक तो और किसी समय रथयात्रा, किसी समय मुनिवरों की अननवी भक्ति तो किसी समय जिनवाणी माता की सेवा के विध-विध प्रसंग—ऐसे देव-गुरु-शास्त्र की सेवना में अनुरक्त मुमुक्षु का चित्त संसार की अनेकविध अटपटी मायाजालों को भूल जाता है; सन्त चरण में चैतन्य को साधने की धुन में अनुकूलता या प्रतिकूलता के प्रसंगों के प्रति उसका विशेष लक्ष्य नहीं जाता, मुमुक्षु का ऐसा सुन्दर जीवन घडतर गुरुदेव की छाया में होता है। वास्तव में गुरुदेव की छाया में जीवन, वह एक अनोखा जीवन है।

संवत् 2018 के मगसिर माह में गुरुदेव की दायीं आँख का मोतिया

सफलतापूर्वक उतरा, अपेक्षित आराम के पश्चात् ढाई महीने में जब फिर से गुरुदेव के प्रवचन शुरु हुए, तब भारतभर के जिज्ञासुओं ने आनन्दित होकर सन्देश द्वारा प्रसन्नता व्यक्त की थी और इस प्रसंग पर श्रीमान् दीपचन्दजी सेठिया इत्यादि मुमुक्षुओं की ओर से प्रमोद के साथ ज्ञान प्रचार खाते कुल रुपये 25000 जितनी रकम घोषित की गयी थी। भक्ति इत्यादि प्रसंगों से दिन विशाल हर्षोत्सवरूप से मनाया गया था।

मानस्तम्भ का महाभिषेक

संवत् 2018के चैत्र मास में मानस्तम्भ के महान प्रतिष्ठा महोत्सव की दसवीं वर्षगाँठ थी। इस निमित्त मंच बाँधकर मानस्तम्भ के दसवर्षीय महाभिषेक का भव्य आयोजन किया गया था। उत्सव के दो दिन यादगार बन रहे हैं। बारह वर्ष में होनेवाले बाहुबलीनाथ के महामस्तकाभिषेक जैसा यह अभिषेक शोभित होता था और इस प्रकार प्रत्येक दस वर्ष में (या पाँच वर्ष में) ऐसा अभिषेक हो—ऐसी भक्त भावना भाते थे। मंच पर गुरुदेव ने भक्तिभाव से सीमन्धरनाथ की पूजन करके स्वर्ण कलश से महाभिषेक का मंगल प्रारम्भ किया था... मानस्तम्भ महोत्सव के मधुर संस्मरण इस समय ताजा होते थे। हजारों यात्री उत्साहपूर्वक मंच द्वारा ऊपर जाकर मानस्तम्भ की आनन्दकारी यात्रा करते और भक्तिभाव से पूजन करते। गुरुदेव बहुत बार मंच के ऊपर जाकर सीमन्धरनाथ के निकट बैठते और विध–विध भावनाओं के साथ भक्ति गवाते थे। किसी–किसी समय पूज्य बहिनश्री बेन भी अद्‌भुत भक्ति तथा पूजन कराती थीं।

चैत्र शुक्ल 13 का पवित्र दिन भी विशेष आनन्दोल्लास से मनाया था। मानस्तम्भ के प्रतिष्ठा महोत्सव की फिल्म द्वारा उस समय के पावन प्रसंग बारम्बार निहारते हुए सबको अत्यन्त हर्ष होता था।

तत्पश्चात् तुरन्त मुम्बई–दादर में सेठ श्री नवनीतलालभाई झवेरी के हस्ते जिनमन्दिर का (जिसमें समवसरण की भी रचना है, उसका) शिलान्यास हुआ। इस

प्रसंग पर मुम्बई के मुमुक्षुओं को बहुत ही आनन्द था। इसी समय में जोरावरनगर तथा देहगाँव में भी दिगम्बर जिनमन्दिर के शिलान्यास हुए। इस वर्ष गुरुदेव का वैशाख शुक्ल दूज का (73वाँ) जन्मोत्सव राजकोट शहर में उत्साह से मनाया था। अनेक शहर के जैन समाज अब सोनगढ़ की—गुरुदेव की उपदेशशैली को अनुसरण करने लगे हैं, गुरुदेव की अध्यात्मरस झरती वीतरागता प्रेरक आत्मप्रधान उपदेश शैली के समक्ष दूसरे उपदेश उन्हें नीरस जैसे लगते हैं, इसलिए पर्यूषण जैसे विशेष त्योहारों में (पर्वों में) सोनगढ़ से किसी भाई को वांचन के लिये बुलाते हैं। इस प्रकार की माँग अधिक और अधिक गाँवों से आती जा रही है। सोनगढ़ की अध्यात्मशैली से सब प्रभावित होते हैं।

सौराष्ट्र–गुजरात और मध्यप्रदेश में विहार;
लाठी शहर में जन्मोत्सव, भोपाल शहर में प्रतिष्ठा महोत्सव

संवत् 2019 में फाल्गुन महीने में फिर से गुरुदेव का मंगल विहार सोनगढ़–गुजरात और मध्यप्रदेश में हुआ। उस दौरान लाठी शहर में गुरुदेव का 74वाँ जन्मोत्सव अति उत्साहपूर्वक मनाया गया। लाठी में इस जन्मोत्सव के समय गुरुदेव के स्वागत जुलूस में चलते–चलते मुम्बई के प्रमुखश्री और मन्त्री इत्यादि के साथ में आगामी जन्मोत्सव (हीरक महोत्सव) मुम्बई में मनाया जाये उस समय के उल्लास की बातचीत हुई तथा उस प्रसंग पर अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने की इस लेखक की भावना उनके समक्ष प्रस्तुत की... यह महान कार्य मुम्बई के उत्साह मण्डल से ही हो सकता है, ऐसा था; इस सब बातचीत से उस जन्मोत्सव के प्रसंग में ही हीरक जयन्ती अभिनन्दन ग्रन्थ का बीजारोपण हुआ। लाठी में यह जन्मोत्सव बहुत उत्साह से मनाया गया था। जिनमन्दिर के नवीन शिखर की प्रतिष्ठा का उत्सव भी साथ में ही था।

तत्पश्चात् वैशाख में जोरावर नगर में रुपये 65,000 के खर्च से तैयार हुए नवीन दिगम्बर जिनमन्दिर में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा का भव्य महोत्सव हुआ।

जोरावर नगर जैसे छोटे से गाँव में भी ऐसा विशाल महोत्सव गुरुदेव के प्रताप से मनाया गया, वह महोत्सव आनन्दकारी था।

देहगाँव (गुजरात) में भी रुपये 55,000 के खर्च से सुन्दर जिनमन्दिर निर्मित हुआ। और वैशाख कृष्ण में वेदी प्रतिष्ठा का महोत्सव गुरुदेव की छत्रछाया में मनाया गया। गुजरात की जनता ने इस उत्सव में बहुत उत्साह से भाग लिया। इस उत्सव को गुजरात की जनता का उत्सव कहा जा सकता है। आस-पास के गाँवों से पाँच हजार भाई-बहिन आये थे। और विशाल धार्मिक मेला जैसा वातावरण था। छोटी-बड़ी बोलियों द्वारा रुपये 85,000 के लगभग आमदनी हुई थी। देहगाँव के इतिहास में ऐसा महोत्सव यह पहला-पहला ही था। यहाँ से गुरुदेव अहमदाबाद पधारे तब वहाँ भी दिगम्बर जिनमन्दिर का शिलान्यास हुआ था... मुमुक्षुओं को इस प्रसंग पर बहुत आनन्द होता था।

अहमदाबाद से दाहोद होकर गुरुदेव भोपाल शहर पधारे... वहाँ अध्यात्म सम्मेलन हुआ, जिसमें दस हजार लोग थे। नूतन स्वाध्यायभवन तथा जिनभवन में वेदी प्रतिष्ठा का महोत्सव भव्य था। मध्यप्रदेश की जनता गुरुदेव का अध्यात्मसन्देश बहुत उत्सुकता से सुनती थी। ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को शान्तिनाथ भगवान की भव्य रथयात्रा में भगवान के सारथीरूप से गुरुदेव रथ में विराजमान थे। यहाँ से गुरुदेव भेलसा (विदर्भ) पधारे, वहाँ भी उनके हस्त से स्वाध्यायभवन का शिलान्यास हुआ। पश्चात् इन्दौर पधारे। इन्दौर का जैन समाज पहले से ही गुरुदेव के प्रति विशिष्ट प्रेम रखता है; हजारों की संख्या में जिज्ञासुओं ने लाभ लिया और तिलकनगर सोसाइटी में गुरुदेव की उपस्थिति में जिनमन्दिर का शिलान्यास हुआ। वहाँ से गुरुदेव के उज्जैन पधारने पर मुमुक्षु मण्डल के स्वाध्यायमन्दिर का उद्घाटन तथा उसके ऊपर के भाग में जिनालय का शिलान्यास हुआ। इस प्रकार 2020 में मध्यप्रदेश का प्रभावशाली प्रवास करके तथा नौकाविहार द्वारा सिद्धवरकूट इत्यादि तीर्थों की फिर से यात्रा करके गुरुदेव सोनगढ़ पधारे...

आठ कुमारिका बहिनें

पहले छह, बाद में 14 और अब संवत 2019 के भाद्र महीने में 22 वर्ष के आसपास की 8कुमारिका बहिनों की ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा का भव्य प्रसंग बना। ऐसा सामूहिक ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा का यह तीसरा अवसर था। आठ बहिनों में से तीन बहिनें तो बी.ए. तक पढ़ी हुई थीं। छोटे–छोटे बालकों को भी गुरुदेव का उपदेश कैसा प्रिय लगता है और सन्तों के चरण में अध्यात्म जीवन कैसा सुहाता है, उसका यह उदाहरण है।

भाद्र कृष्ण पंचमी को गोगीदेवी आश्रम के अन्तर्गत श्री मनफूला–स्वाध्यायभवन के उद्घाटन का प्रसंग भी बहुत हर्षोल्लास से मनाया गया था। गुरुदेव ने की हुई सम्मेदशिखर इत्यादि मंगल तीर्थों की महान यात्रा के आनन्दकारी स्मरणों से और तीर्थमहिमा से भरपूर पुस्तक दीपावली प्रसंग पर प्रकाशित हुई। तीर्थयात्रा सम्बन्धी साहित्य में यह 'मंगल तीर्थयात्रा' विशिष्ट स्थान रखती है।

बारम्बार यात्रा.... पुनः–पुनः प्रतिष्ठा....

मध्यप्रदेश के प्रवास से वापस होने को छह महीने हुए, वहाँ तो पुनः विशाल प्रभावशाली प्रवास आया—उसमें सौराष्ट्र, गुजरात तथा दक्षिण देश के महान तीर्थों—श्रवणबेलगोल के बाहुबली, मूड़बिद्री, कुन्दाद्रि, और पौन्नूर इत्यादि की यात्रा हुई। इस यात्रा द्वारा गुरुदेव ने पौन्नूर की असाधारण महिमा को भारत भर में प्रसिद्ध किया। इस यात्रा में गुरुदेव का आनन्दोल्लास अपूर्व था। कुन्दकुन्दस्वामी के प्रति उनको भक्ति का पार नहीं था। लगभग हजार यात्रियों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक यात्रा की थी और दक्षिण देश का जैन समाज तो अत्यन्त प्रभावित हुआ था। पौन्नूर यात्रा में आसपास के लगभग 5000 लोग आये थे और पौन्नूर के पास तो विशाल मेला भर गया था। कुन्दकुन्दस्वामी की अजोड़ महिमा को गुरुदेव भक्तिपूर्वक प्रसिद्ध कर रहे हैं। 'अभी ही मानो यहाँ बैठे–बैठे कुन्दकुन्दस्वामी शास्त्र लिख रहे हों या शुद्धात्मा का चिन्तवन कर रहे हों।' ऐसी ऊर्मियाँ पौन्नूर के प्राकृतिक वातावरण में जागृत होती हैं।

पौन्नूर की यात्रा के बाद गुरुदेव राजकोट पधारे, वहाँ समवसरण मन्दिर और मानस्तम्भ मन्दिर का शिलान्यास बहुत उमंग भरे वातावरण में हुआ। पश्चात् रखियाल में जिनमन्दिर का वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव भी कोई विशिष्ट उत्साह से मनाया गया। गुरुदेव के दर्शन से और प्रवचन से गुजरात की जनता अत्यन्त प्रभावित हुई। बोटाद में भी प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हुआ। इस प्रकार कदम-कदम पर जिनेन्द्र शासन की प्रभावना करते-करते, जगह-जगह भगवन्तों को स्थापित करते-करते जिनेन्द्रों का अध्यात्म-सन्देश गाँव-गाँव में पहुँचाते-पहुँचाते गुरुदेव मुम्बई पधारे। मुम्बई में गुरुदेव की 75वीं जन्म-जयन्ती का हीरक महोत्सव और जिनेन्द्रदेव की पंच कल्याणक प्रतिष्ठा का भव्य महोत्सव अत्यन्त आनन्दपूर्वक आयोजित किया गया.... भारत के हजारों भक्तों के हृदय और मुम्बई नगरी के लाखों नागरिक यह उत्सव देखकर मुग्ध बने। जिसका प्रसंग आप अब बाद के तीसरे भाग में पढ़ेंगे।

इक्कीसवीं सदी के 2010 से 2020 तक के दशक को हम 'यात्रा के और प्रतिष्ठा के दशक' रूप से गिन सकते हैं। जिसमें गुरुदेव की हीरक जयन्ती आयोजित की गयी, ऐसे इस दशक के दौरान नौ बार विहार, दो बार बाहुबली-पौन्नूर इत्यादि दक्षिण के तीर्थों की यात्रा तथा मध्यभारत के तीर्थों की यात्रा, एक बार सम्मेदशिखर और उत्तर भारत के तीर्थों की यात्रा, दो बार गिरनार यात्रा, एक बार भोपाल की ओर, तीन बार मुम्बई, आठ बार पंच कल्याणक प्रतिष्ठा और 17 बार वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव तथा कितने ही स्थानों पर दिगम्बर जिनमन्दिरों के शिलान्यास हुए। लाखों जीवों ने भारत की इस महान विभूति के दर्शन किये तथा अध्यात्म-सन्देश सुना। गुरुदेव का जीवन धर्मप्रभावना के प्रसंगों से कैसा भरपूर है—इसका अपने को इससे ख्याल आयेगा। यद्यपि सन्तों के अन्तरंग अध्यात्म जीवन का ख्याल मात्र बाह्य प्रसंगों से तो आ ही नहीं सकता... तथापि विचारक इतना तो स्पष्ट जान सकते हैं कि उनकी सभी प्रवृत्तियों में अध्यात्म की प्रधानता सतत् प्रवर्तमान होती है। सभी प्रवृत्तियों में—वह-

वह प्रवृत्ति करते हुए चैतन्य की महत्ता सदा वर्तती ही रहती है। चैतन्य की ओर का एक विशिष्ट प्रकार का जोर उनके जीवन में सतत् वर्त रहा है। उनके जीवनपरिचय द्वारा इस चैतन्य की महत्ता ही अपने को समझनेयोग्य है, इस चैतन्य सन्मुख के जोर की प्रेरणा अपने को उनके जीवन में से प्राप्त होती है।

चैतन्य प्रेरक जिनका जीवन है, ऐसे गुरुदेव को अत्यन्त
भक्तिपूर्वक चैतन्य प्राप्ति के लिये नमस्कार हो।

मुम्बई में आयोजित हीरक जयन्ती महोत्सव तथा पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव और तत्पश्चात् के पाँच वर्ष में रत्न चिन्तामणि जयन्ती तक में बने हुए महत्त्वपूर्ण प्रसंगों का परिचय आप अब बाद के पृष्ठों में पढ़ेंगे। (— ब्रह्मचारी हरिलाल जैन)

श्री कुन्दकुन्द प्रभु का हमारे ऊपर महान उपकार है

उन्होंने भरतक्षेत्र में पंचम काल में तीर्थंकर जैसा कार्य किया है।

कुन्द के उत्तराधिकारी कहान गुरुजी वर्तावे जय–जयकार

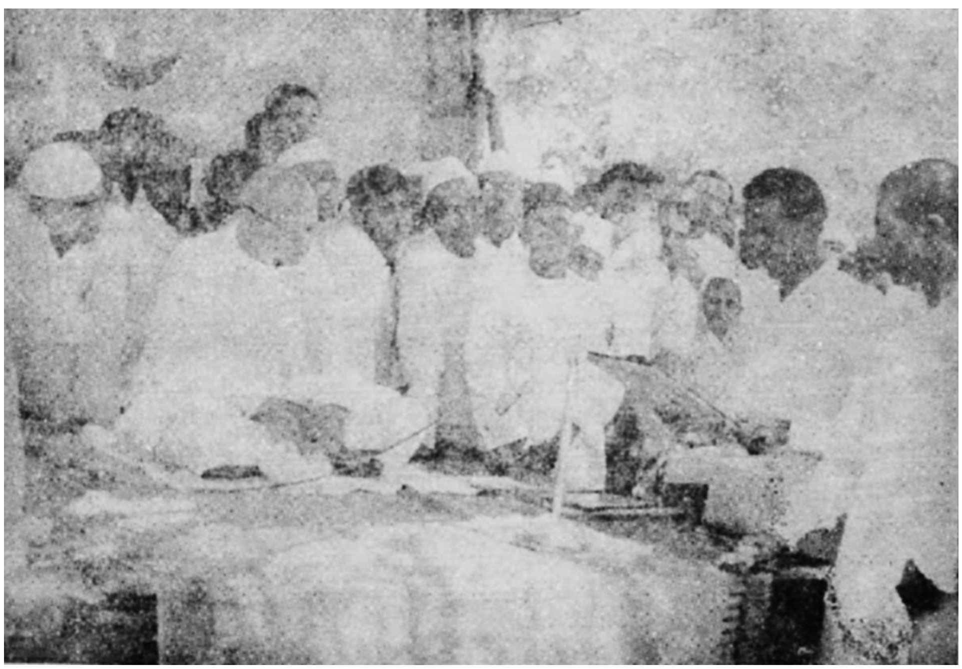

(दिनांक 14–3–1959 के दिन पौन्नूर पहाड़ की तलहटी का यह दृश्य है)

कुन्दकुन्द प्रभु के धाम में.... कहान गुरु का सम्मान

पौन्नूर अर्थात् कुन्दकुन्द प्रभु का देश... वह उनकी विहारभूमि, वह उनकी तपोभूमि... 2000 वर्ष बाद उस गुरुभूमि में कहान शिष्य विचरे... और वहाँ की जनता ने अतिशय प्रेमपूर्वक उनका सम्मान किया। जैसा सम्मान 2000 वर्ष पहले के नागरिक कुन्दकुन्दस्वामी का करते होंगे, वैसा सम्मान आज उस देश के नागरिकों ने उनके शिष्य का किया। कुन्दकुन्दधाम पौन्नूर के प्रति अपूर्व यात्रा के पश्चात् तमिल प्रान्त की जनता की ओर से पठित अभिनन्दन पत्र में लिखा है कि—

'पधारो... पधारो... पधारो! श्री कुन्दकुन्दाचार्य जैसे धर्म के स्तम्भभूत आचार्यवरों ने जन्म लेकर पवित्र किये हुए हमारे तमिल प्रान्त में पधारे हुए आपका श्रद्धापूर्वक स्वागत करते हैं।'

'आपश्री कुन्दकुन्दाचार्य के समयसार तत्त्वग्रन्थ द्वारा नया विकास, नयी प्रतिष्ठा, नयी स्थिति इत्यादि प्राप्त किये हैं। आपने भगवान ऋषभदेव के सद्धर्म की सच्ची वस्तु जो समयसार है, उसकी गहराई में (हार्द में) पहुँचकर उससे सम्यग्दर्शन प्राप्त किया है और आपने स्वयं प्राप्त किये हुए सम्यग्ज्ञान का पूरे देश में प्रचार कर रहे हो। आपकी प्रतिभा और प्रवचन शैली से हजारों लोग सच्चे मार्ग पर आरूढ़ होकर सम्यग्ज्ञानी बन रहे हैं। आपके इस चमत्कारयुक्त कार्य को देखकर दुनिया चकित हो रही है।'

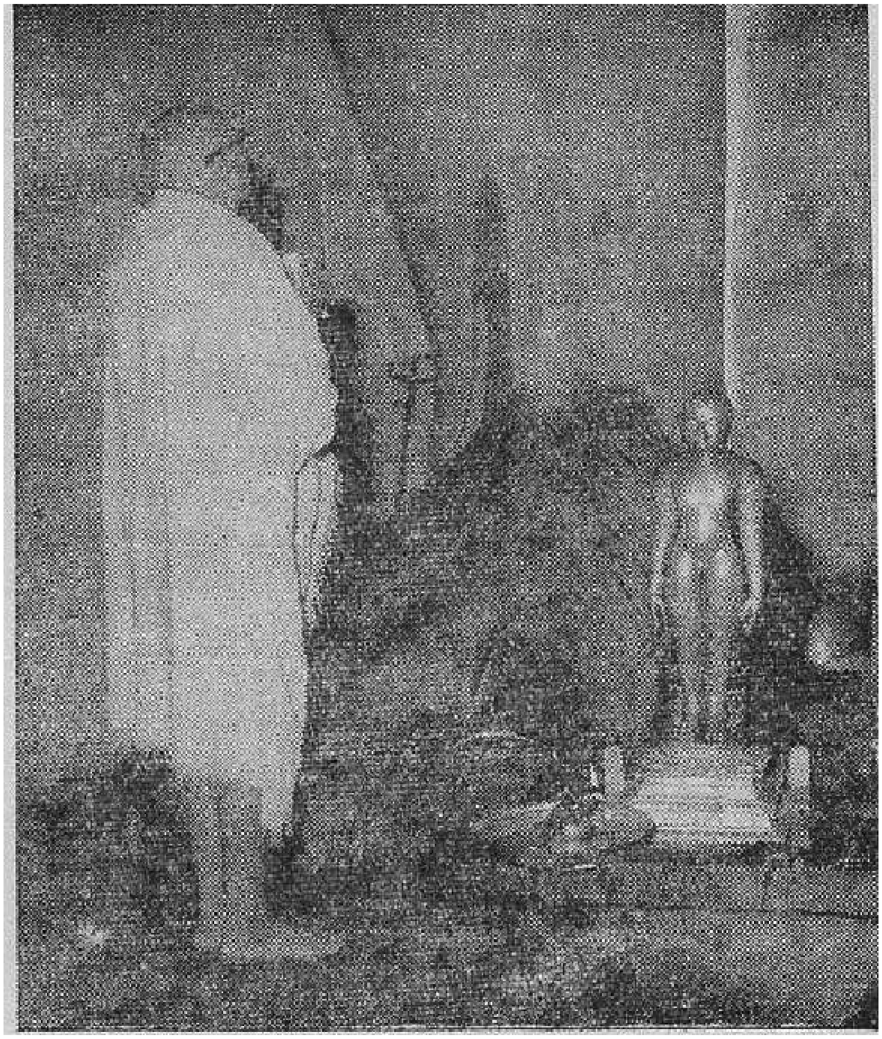

अनन्त आश्चर्यवाली वीतरागता!
चैतन्य की शीतलता का पर्वत!
पवित्रता और पुण्य दोनों अलौकिक,
दुनिया में इसका जोटो नहीं।

अध्यात्मसन्त श्री कानजीस्वामी

[संक्षिप्त जीवनपरिचय (भाग 3) **]**

(रत्न चिन्तामणि जयन्ती प्रसंग पर) **लेखक– ब्रह्मचारी हरिलाल जैन**

पूज्य श्री कहान गुरुदेव के जीवन का अवलोकन करते–करते संवत् 2020 के वैशाख में हम मुम्बई तक आये हैं। मुम्बई के हीरक महोत्सव (75वीं जयन्ती) से लेकर 2025 के इस रत्नचिन्तामणि महोत्सव (80वीं जयन्ती) तक के पाँच वर्ष में हुई प्रभावना का विहंगमावलोकन अब हम करेंगे। अहा! गुरुदेव के जीवन का अवलोकन करने से अपने को एक तीर्थंकर के ही पूर्व जीवन का अवलोकन कर रहे हैं... और हृदय में अपार ऊर्मियाँ उल्लसित होती हैं। सम्यक्त्वरत्न के दातार ऐसे इस रत्नचिन्तामणि समान गुरुदेव का रत्नचिन्तामणि जयन्ती महोत्सव जगत में रत्नत्रय मार्ग की विशिष्ट प्रभावना करेगा।

संवत् 2020 में मुम्बई की हीरक जयन्ती पहले गुरुदेव ने दक्षिण देश के तीर्थधामों की अत्यन्त भावभीनी यात्रा की... उस समय बाहुबली भगवान की चैतन्यवन्ती मुद्रा देख–देखकर, तथा कुन्दकुन्द प्रभुजी के चरणों को भेंट–भेंटकर जो ऊर्मियाँ उल्लसित हुई, वे कोई अद्‌भुत थीं; जिन कुन्दकुन्द प्रभु को विदेहक्षेत्र में साक्षात् देखा था, उन्हीं कुन्दकुन्दस्वामी को मानो यहाँ साक्षात् निहारते हों, ऐसी वृत्तियाँ उल्लसित होती थीं। बहुत बार गुरुदेव कहते हैं कि 'अहा! उस समय के भाव अद्‌भुत थे! जो साथ में आये होंगे उन्होंने वे देखे होंगे'। पौन्नूर पर बैठे–बैठे गुरुदेव ने ऐसे हस्ताक्षर लिखकर दिये कि '**श्री सीमन्धर भगवान के दर्शन करनेवाले भगवान श्री कुन्दकुन्दाचार्य आदि नमो नमः**'।

श्रवणबेलगोल में बाहुबली भगवान के दर्शन के समय ही गुरुदेव स्तब्ध हो जाते थे। उन वीतरागी पिण्ड के दर्शन से शान्ति की और हर्ष की इतनी अधिक ऊर्मियाँ

जागृत होती कि क्षणभर तो वाणी उसे व्यक्त नहीं कर सकती थी। '**श्री बाहुबली भगवान की जय हो। आनन्दामृत की जय हो।**' ऐसे हस्ताक्षर द्वारा गुरुदेव ने उन ऊर्मियों को चिरंजीवी किया। बारम्बार अत्यधिक बहुमानपूर्वक गुरुदेव कहते कि—'**वाह! इनके मुख पर कैसे अलौकिक भाव तैरते हैं! पवित्रता अलौकिक और पुण्य का अतिशय भी अलौकिक—दोनों दृष्टिगोचर होते हैं। उनका ज्ञानोपयोग अन्तर में ऐसा लीन हुआ है कि बाहर आने का अवकाश नहीं। वीतरागी आनन्द के अनुभव में ये लीन हुए हैं। इनके मुख पर अनन्त आश्चर्यवाली वीतरागता है—मानों चैतन्य की शीतलता का पर्वत! अभी इस दुनिया में इनका सानी नहीं है।**'

कुन्दकुन्द प्रभु का तपोधाम पौन्नूर... उसके निकट पाँच मील पर वन्देवास नाम का बड़ा गाँव है, वहाँ के जिनालय में सीमन्धर भगवान की खड्गासन प्रतिमा के दर्शन होने पर आनन्द हुआ। मानो कुन्दकुन्द प्रभु विदेह में जाकर प्रिय सीमन्धरनाथ को यहाँ लेकर आये हों। अहा! जहाँ से कुन्दकुन्द प्रभु ने विदेहयात्रा की और विदेह से लायी हुई श्रुतगंगा प्रवाहित की, उस पावनधाम की रमणीयता कोई अनोखी है... और उसमें भी गुरुदेव जब पौन्नूर में पधारे, तब तो कुन्दकुन्द प्रभु का पूरा जीवन साक्षात् ताजा होता था... मानो कुन्दकुन्दाचार्यदेव पुनः पधारे हों, ऐसा वातावरण छा गया था।

चम्पावृक्ष की छाया में कुन्द प्रभु के चरणों को अति भाव से स्पर्श करके गुरुदेव ने गवाया कि 'मन लाग्यो रे कुन्दकुन्ददेवमां...' अहा! उस समय तो कहान गुरु की भक्ति से प्रसन्न होकर वह सोनेरी पहाड़ कुन्दकुन्द प्रभु के सन्देश सुनाता था। गुरुदेव के साथ की यात्रा में पूज्य बहिनश्री बेन भी ऐसे प्रसन्न होते थे—मानों कि फिर से कुन्दकुन्द प्रभु का साक्षात्कार होता हो! (सोनगढ़ और पौन्नूर दोनों का अर्थ समान है)। तमिल देश की जनता ने 'कुन्दकुन्द प्रभु के प्रतिनिधि' रूप से गुरुदेव का सम्मान किया। दक्षिण यात्रा से वापस मुड़ते हुए बीच में गजपंथा सिद्धक्षेत्र की भी यात्रा की।

गुरुदेव के अन्तर में वीतरागरस का प्रवाह निरन्तर वर्त रहा है... प्रवचन के समय तो वीतरागरस की उस पावन गंगा के प्रवाह में अनेक जिज्ञासु पावन होते हैं; तदुपरान्त तीर्थयात्रा के विशेष प्रसंगों के समय, भूत-भावि के कोई मंगल स्मरणों की याद के समय साधर्मी धर्मात्माओं के साथ का विशेष प्रसंग के समय, विशिष्ट शास्त्रों की स्वाध्याय और चिन्तन करते-करते जागृत हुई ऊर्मियों के समय—ऐसे अनेक प्रसंग उस वीतरागी रस की मस्ती और चैतन्य की धुन दृष्टिगोचर होती है; तब ऐसा लगता है कि वाह! गुरुदेव का वास्तविक जीवन यही है, यही उनके जीवन का कस है... इस वीतरागी चैतन्यरस से भरपूर जीवन की पहिचान, वह गुरु की सच्ची सेवा है। बहुत बार चैतन्य के गहरे मनन से जागृत हुए भाव व्यक्त करते हुए गुरुदेव प्रमोद से कहते हैं कि 'यह तो मेरा आहार है...' चैतन्य का चिन्तवन यही आत्मार्थी का भोजन है। किसी समय बाहर की प्रवृत्ति में विशेष रुकने का प्रसंग उपस्थित हो तब गुरुदेव कहते हैं कि 'हमारे बहुत काम है... हमको समय नहीं...' 'बहुत काम' अर्थात् दूसरा कुछ नहीं परन्तु चैतन्य के गहरे मनन का काम! चैतन्य गुणों के रहस्य इतने गहरे और गम्भीर हैं कि उसमें से निकाले उतना निकला ही करता है। उसकी धुन के समक्ष दूसरी प्रवृत्ति में अटकना मुमुक्षु को सुहाता नहीं। गुरुदेव के जीवन के

निकट परिचय से अपने को भी ऐसी चैतन्य धुन की ही प्रेरणा प्राप्त होती है... और ऐसा लगता है कि **यह जीवन तुमसा जीवन हो...**

संवत् 2020 के माघ महीने में दक्षिण देश के तीर्थों की दूसरी यात्रा करके गुरुदेव राजकोट पधारे और वहाँ 13 दिन तक अध्यात्मरस की गंगा बहायी। गुरुदेव जब–जब राजकोट पधारे, तब वहाँ एक अनोखा वातावरण जम जाता है और तत्त्वचर्चा से गली–गली गूँज उठती है। विशेष में इस फाल्गुन शुक्ल तीज के दिन गुरुदेव की मंगल उपस्थिति में भव्य समवसरण का तथा उन्नत मानस्तम्भ का शिलान्यास हुआ। सौराष्ट्र राज्य का यह पाटनगर जिनेन्द्र वैभव द्वारा विशेष शोभित होने लगा। लगभग तीन लाख रुपये के खर्च से समवसरण तथा मानस्तम्भ तैयार होने लगे। शासन प्रभावी गुरुदेव के प्रताप से तत्त्वचर्चा के युग की भाँति जिनेन्द्र प्रतिष्ठा का भी युग प्रवर्तने लगा... एक जगह जिनेन्द्र प्रतिष्ठा का उत्सव पूरा हो, उससे पूर्व तो दूसरी जगह तैयारी शुरु हो जाये—ऐसे ऊपरा–ऊपरी बना ही करता है। राजकोट में गुरुदेव 13 दिन रहे और बन्धन से छूटने का मार्ग बताया; वह सुनकर राजकोट की सेंट्रल जेल के अधिकारियों को भी ऐसी भावना हुई कि इस जेल के कैदी भी संसार की जेल में से छूटने का मार्ग ऐसे सन्त के मुख से सुनें तो इनका जीवन उन्नत बने। इसलिए उनकी प्रार्थना से लगभग 250 कैदी भाईयों के समक्ष गुरुदेव का प्रवचन हुआ। वहाँ के करुण और वैराग्य प्रेरक वातावरण में गुरुदेव ने लागनी भरे हृदय से बोधवचन सुनाये; उसमें खास ऐसा कहा कि आत्मा ज्ञानस्वरूप है, दोष और पाप, उसका वास्तविक स्वरूप नहीं।

अज्ञान से आवेश में ही पाप कर डालता है, परन्तु वह कहीं शाश्वत् वस्तु नहीं है। इसलिए उस दोष को टाला जा सकता है और ज्ञान द्वारा निर्दोष सुखी जीवन जिया जा सकता है। आत्मा को न पहिचाने तब तक अज्ञान से समस्त जीव संसाररूपी जेल में ही पड़े हैं, देह से भिन्न आत्मा क्या चीज़ है, उसका भान करे तब उस संसार

सोनगढ़ में भीषण गर्मी में शीतल वृक्ष की छाया के
नीचे एकान्त में स्वाध्याय कर रहे गुरुदेव।

चैतन्य शक्ति के गहरे मनन में मग्न गुरुदेव कहते हैं कि
'यह तो मेरा भोजन है'

बन्धनरूपी जेल में से छूटकर मोक्षसुख प्राप्त करता है। बन्धन में तो सुख कैसे हो? ज्ञानस्वभाव बन्धन रहित है, वही सुखरूप है, उसकी पहिचान करने से बन्धन टलते हैं और सुख होता है।

जेल में, जिसे थोड़े ही दिनों बाद फाँसी होनेवाली थी, ऐसे एक छोटी उम्र के उदास युवक को देखकर वैराग्य से रोमांच खड़े हो जाते थे। मरण तो सामने ही आकर खड़ा था। गुरुदेव कहे—अरे! क्षणिक आवेश में जीव क्या कर डालता है, उसका इसे भान नहीं... ऐसा जीवन पाकर जीवन में अच्छा कार्य करनेयोग्य है। पापी से पापी जीव भी क्षण में पापपरिणाम पलटाकर आत्मा का भान कर सकता है, और अपना जीवन सुधार सकता है। जेल के कैदियों की भाँति अन्धशाला के अन्ध भाई-बहिनों को भी गुरुदेव ने सम्बोधन किया, वह भी एक वैराग्य भीना प्रसंग था।

राजकोट में समवसरण और मानस्तम्भ का शिलान्यास करके, पश्चात् जोरावर नगर होकर गुजरात के रखियाल गाँव में पधारे, वहाँ भी नूतन जिनमन्दिर में जिनेन्द्र भगवन्तों की वेदी प्रतिष्ठा का उत्सव फाल्गुन शुक्ल चौदह से चैत्र कृष्ण तीज तक हुआ; पाँच हजार से अधिक लोगों ने उसमें भाग लिया। गुजरात का यह एक महान उत्सव था। उसमें लगभग 150 तम्बू बँधाये हुए थे और नेमिनाथ नगर बसाया हुआ था। गुरुदेव के प्रताप से छोटे से गाँव में विशाल उत्सव आयोजित हुआ।

तत्पश्चात् गुजरात के गाँव देहगाँव, सोनासन, फतेपुर, रणासण और तलोद होकर फिर वढवाण शहर, गोंडल तथा जैतपुर पधारे; जैतपुर से दिनांक 13-3-1964 के शाम गिरनार तलहटी में जाकर उस सिद्धिधाम को वन्दन कर आये... वहाँ नेमिनाथ प्रभु के वैराग्य जीवन का साक्षात्कार करावे ऐसी भावभीनी भक्ति हुई। (जैतपुर से गिरनार पर्वत 15 मील नजदीक है)। जैतपुर के बाद पोरबन्दर, लाठी, सावरकुण्डला, कानातलाब, मोटा आंकड़िया होकर उमराला जन्मधाम में पधारे। पोरबन्दर में वहाँ के महाराणाश्री भी प्रवचन में आते थे। उमराला अपने जन्मधाम में

विराजमान सीमन्धरनाथ के दर्शन किये और यहाँ दो दिन अद्भुत भक्ति हुई। वहाँ से बीच में (दिनांक 4-4-1964 के दिन) सोनगढ़ में सीमन्धरनाथ के दर्शन करके गढडा, पाटी और राणपुर होकर बोटाद पधारे। बोटाद के भव्य शिखरबन्दी जिनालय में ऊपर के भाग में जिनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा का महान उत्सव आयोजित हुआ। बोटाद के पश्चात् वरवाळा होकर चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को अहमदाबाद पधारे और वहाँ मंगलरूप महावीर भगवान का 2562वाँ जन्मोत्सव मनाया। किस प्रकार से आत्मसाधना करके वे परमात्मा बने, उस पाटनगर के प्रवचन में गुरुदेव ने समझाया। और परमभक्ति से भगवान के जन्मोत्सव का ऐसा वर्णन किया—मानों कि स्वयं वीरप्रभु की मधुर लोरियाँ गाते हों! 65 वर्ष पहले 10 वर्ष की उम्र में सुने हुए 'चेतर तेरस अजवाळी'—यह याद करके वीरनाथ के जन्म से लेकर परमात्मदशा तक का भावभीना वर्णन किया। अहमदाबाद के पश्चात् बड़ोदरा, नियागाँव, पालेज, सूरत, बीलीमोरा और घाटकोपर होकर वैशाख कृष्ण 6को रविवार दिनांक 03-5-64 के दिन गुरुदेव ने मुम्बई उपनगरी में प्रवेश किया—किसलिए? कि 75वीं हीरक जयन्ती के लिये और दादर जिनालय तथा समवसरण के भव्य पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये। अद्भुत थे ये महोत्सव!

मुम्बई नगरी में—

हीरक जयन्ती महोत्सव और जिनेन्द्र पंच कल्याणक महोत्सव

वैशाख कृष्ण छठवीं को रविवार दिनांक 3-5-1964। आहा! इस दिन पूरी मुम्बई नगरी मानो आनन्द से जगमगा उठी... हजारों जीवों के झुण्ड हर्षोल्लास से आजाद मैदान की ओर जा रहे हैं... अरे, ऊँचे यह क्या दिखता है? —मानो स्वर्ण के शिखरवाला मन्दिर! वाह! यह तो है महावीरनगर का प्रवेशद्वार। क्या इसकी शोभा! कैसा भव्य यह मण्डप और जिज्ञासुओं की कितनी अधिक भीड़! सवेरे गुरुदेव पधारे सीमन्धरनाथ के दर्शन किये और मुम्बई नगरी की जनता ने हर्ष भरा भव्य स्वागत

किया। कैसा उमंग भरा स्वागत! स्वागत के पश्चात् मंगल प्रवचन में 8000 की मानव मेदनी के समक्ष चैतन्य की सुन्दरता बतलानेवाला सुन्दर प्रवचन गुरुदेव ने किया—अहा! एकत्व-विभक्त चैतन्यस्वरूप आत्मा ही सर्वत्र सुन्दररूप से शोभता है। ऐसा चैतन्यस्वरूप सुनने के लिये दोपहर के भीषण ताप में भी हजारों जीवों के झुण्ड मुम्बई के महावीरनगर में उमड़ पड़ते थे।—क्या सुना उन्होंने प्रवचन में? प्रवचन में उन्होंने समयसार के कर्ताकर्म अधिकार की प्रारम्भिक गाथाओं का विवेचन सुना; भेदज्ञान की पद्धति सुनी... देह से भिन्न चैतन्यमूर्ति आत्मा का स्वरूप सुना; रागादि परभावों के कर्तृत्वरहित ज्ञानस्वभाव सुना... जिसे सुनते और समझते हुए आनन्द हो, ऐसे अपूर्व भेदज्ञान की बात गुरुदेव ने मुम्बई नगरी में सुनाई।

लोगों को आश्चर्य होता था—अरे! मोहमयी मुम्बई नगरी में ऐसी बात!! हाँ, भाई! आत्मा कहाँ मोहमय है? आत्मा तो ज्ञानमय है। मुम्बई में हो या सोनगढ़ में हो, विदेह में हो या भरत में हो, हमारे तो यह ज्ञानस्वरूप आत्मा ही बतलाना है और इस ज्ञानस्वरूप की समझण द्वारा ही जीव का कल्याण है। वाह! धन्य बनी मुम्बईनगरी! अध्यात्मप्रधान भरतक्षेत्र की अलबेली नगरी का गौरव आज सफल हुआ। अध्यात्म की ऐसी बात सुनने का सुअवसर जीवों को महाभाग्य से मिलता है। आत्मा में उसका लक्ष्य करने से अपूर्व कल्याण होता है। और उसका बहुमान करने से भी लोकोत्तर पुण्य बँधता है। गुरुदेव के हृदय में और वाणी में सदा उसका ही झरना बह रहा है। उस झरने के मधुर वीतरागी रस का स्वाद चखनेवाले जीव संसार के रसरहित 'अरस' होकर अमर पद को प्राप्त करते हैं।

मुम्बई-दादर में जैन भाईयों के लिये एक कहान नगर सोसाइटी का निर्माण हुआ है और उसमें चार-पाँच लाख रुपये के खर्च से महावीर भगवान का भव्य जिनमन्दिर तथा सीमन्धर भगवान का सुन्दर समवसरण रचित है, जो एक दर्शनीय वस्तु है। उसमें जिनेन्द्र भगवन्तों की प्रतिष्ठा के लिये महान पंच कल्याणक उत्सव

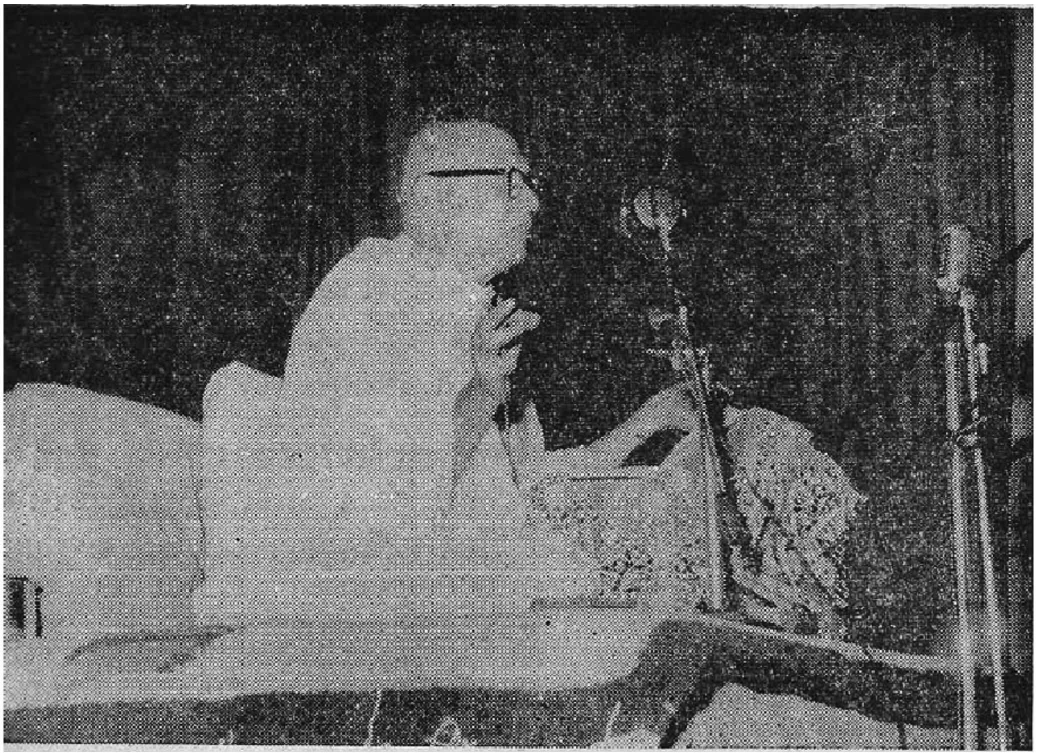

मुम्बई नगरी के आजाद मैदान में—'महावीर नगर' में संवत् 2020 के वैशाख शुक्ल एकम् से शुरु हुआ। दूसरे ही दिन वैशाख शुक्ल दूज आयी और कहान जन्म की मंगल बधाई लायी। गुरुदेव का 75वाँ जन्मोत्सव 'हीरक जयन्ती जन्मोत्सव' रूप से मुम्बई में अति उल्लासपूर्वक मनाया गया। देश भर में से पधारे हुए हजारों भक्तों ने उमंग से उस उत्सव में भाग लिया। मण्डप आज विशेष आकर्षणों से शोभित होता था... और मण्डप में गुरुदेव जैनशासन के हीरा की भाँति झलकते थे। जल्दी सवेरे हजारों भक्तजन जन्म की मंगल बधाई गाते–गाते जिनमन्दिर में से मण्डप में आ पहुँचे... चारों ओर बधाई के नाद से और वादिन्त्रों से मण्डप गूँज उठा और प्रकाश से जगमगा उठा... आनन्दपूर्वक सबने गुरुदेव के दर्शन किये। मंगल बधाई के हजारों नारियलों का ढ़ेर छोटे से पर्वत जैसा दिखता था। तीर्थयात्रा के प्रदर्शन जुड़े... और

भक्तों ने आनन्द भरे प्रवचनों द्वारा गुरु के गुणगान किये... हजारों भक्तों ने 75 के मिलानवाली रकमों का फण्ड घोषित किया, देश-देश से सैकड़ों अभिनन्दन सन्देश आये। परन्तु गुरुदेव ने तो इन सबसे अलिप्तरूप से अध्यात्म सन्देश सुनाकर जन्मरहित होने का मार्ग बताया... भक्ति और आनन्दपूर्वक पूरे दिन ऐसा अनोखा वातावरण छा रहा था—मानो कि मोहमयी मुम्बई नगरी में नहीं परन्तु विदेह की किसी धर्मनगरी में हों और कल्याणक नजरों से निहारते हों।

दूसरे दिन (वैशाख शुक्ल तीज को) जन्म-जयन्ती के निमित्त भारत भर के मुमुक्षुओं द्वारा गुरुदेव का परम बहुमान व्यक्त करता हुआ हीरक जयन्ती का महान अभिनन्दन ग्रन्थ गुरुदेव को अर्पण करने का विशिष्ट कार्यक्रम था। आठ सौ पृष्ठ का हीरों से मड़ा हुआ यह अभिनन्दन ग्रन्थ राष्ट्र के प्रधान श्री लालबहादुरजी शास्त्री के हस्ते गुरुदेव को अर्पण करना था। श्री उच्छरंगरायभाई ढेवर के अध्यक्ष पद में दस-पन्द्रह हजार लोगों की सभा शास्त्रीजी के आगमन की आतुरता से राह देखती थी। अन्तिम घड़ी तक शास्त्रीजी आयेंगे या नहीं, इसकी चिन्ता लगी हुई थी; वहाँ तो 'भारत के जो भावी बड़े प्रधान' उमंग भरे अपने जीवन का एक सुन्दर लहावा (लाभ) लेने और भावी तीर्थनायक को अभिनन्दन करने आ पहुँचे; सभा हर्षनाद से गाज उठी और शास्त्रीजी ने आठ सौ पृष्ठ का हीरों से मढ़ा हुआ सुन्दर अभिनन्दन ग्रन्थ गुरु को अर्पण किया; उस समय गुरुदेव के प्रति बहुमान व्यक्त करते हुए शास्त्रीजी ने कहा कि—'मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, मैं फिर एक बार अपना आदर सम्मान और श्रद्धांजली प्रगट करता हूँ और यह निवेदन करता हूँ कि जो मार्ग—जो रास्ता अहिंसा और शान्ति का, चारित्र का, नैतिकता का आप दिखाते हैं, उस पर यदि हम चलेंगे तो उसमें हमारा भी भला होगा, समाज का भी भला होगा व देश का भी भला होगा।'

पूज्य गुरुदेव द्वारा हुए जैनशासन के प्रभाव की गौरव गाथा गाते हुए इस

अभिनन्दन ग्रन्थ में, सबसे पहले मंगल तोरण स्थान पर पंचरंगी श्री चौबीस तीर्थंकर भगवन्त ऐसे शोभ रहे हैं कि मानों गुरुदेव के ऊपर मंगल आशीर्वाद बरसाते हों। और जवाहरात से जगमगाते इसके मुखपृष्ठ के अक्षर ग्रन्थ के गौरव को प्रकाशित कर रहे हैं। मुमुक्षुओं के हृदय की हार्दिक ऊर्मियाँ उसमें भरी हुई हैं। कितने ही उत्तम प्रसंग, कितने ही चित्र और लगभग पचास शास्त्रों के ऊपर गुरुदेवश्री के प्रवचन भी उसमें हैं। पूरा ग्रन्थ जैन साहित्य का एक कीमती आभूषण जैसा शोभित हो रहा है। शास्त्रीजी द्वारा अनायास आ पहुँचकर गुरुदेव को इस ग्रन्थ के अर्पण का यादगार प्रसंग गुरुदेव के विशिष्ट पुण्यप्रभाव को प्रसिद्ध करता है। गुरुदेव की चरण छत्रछाया में इस बालक ने दस–दस वर्ष से जिस ग्रन्थ की भावना भायी थी, वह ग्रन्थ अन्ततः इस हीरक जयन्ती प्रसंग पर सर्वांग सुन्दर स्वरूप से प्रकाशित हुआ और मेरी वह भावना पूर्ण हुई।

मुम्बई में एक ओर गुरुदेव का यह हीरक जयन्ती महोत्सव चल रहा था, दूसरी ओर पंच कल्याणकों का प्रारम्भ हो रहा था। पार्श्वनाथ भगवान के कल्याणक के विशिष्ट दृश्यों ने मुम्बई नगरी को मुम्बई मिटाकर काशी (वाणारसी) बना दिया था। हम मुम्बई में नहीं परन्तु पारसनाथ के बनारस में बैठे हैं—ऐसी वृत्ति प्रेक्षक अनुभव करते थे। उत्सव में भाग लेने के लिये बाहर गाँवों से लगभग 5000 भक्त आये थे। इस उत्सव निमित्त मुम्बई में महान धार्मिक जागृति आ गयी थी, उसके साथ आसपास के लगते गाँव भी जागृत हुए और घाटकोपर, बोरीबली, मलाड, दादर, खार, गोरेगाँव, कान्दीवली, दहीसर इत्यादि में भी मुमुक्षु मण्डल की विशेष प्रवृत्तियाँ शुरु हुईं। मुम्बई के इस महान उत्सवों ने पूरे भारत का लक्ष्य मुम्बई की ओर तथा गुरुदेव की ओर आकर्षित हुआ।

अहा! मुम्बई में पार्श्वप्रभु के पंच कल्याणक के वे दृश्य आश्चर्यकारी थे। इन्द्रसभा, माताजी के मंगल सोलह स्वप्न, कुमारिका देवियों द्वारा माताजी की सेवा,

भावी राष्ट्रनायक
अभिनन्दन कर रहे हैं
भावी तीर्थनाथ को

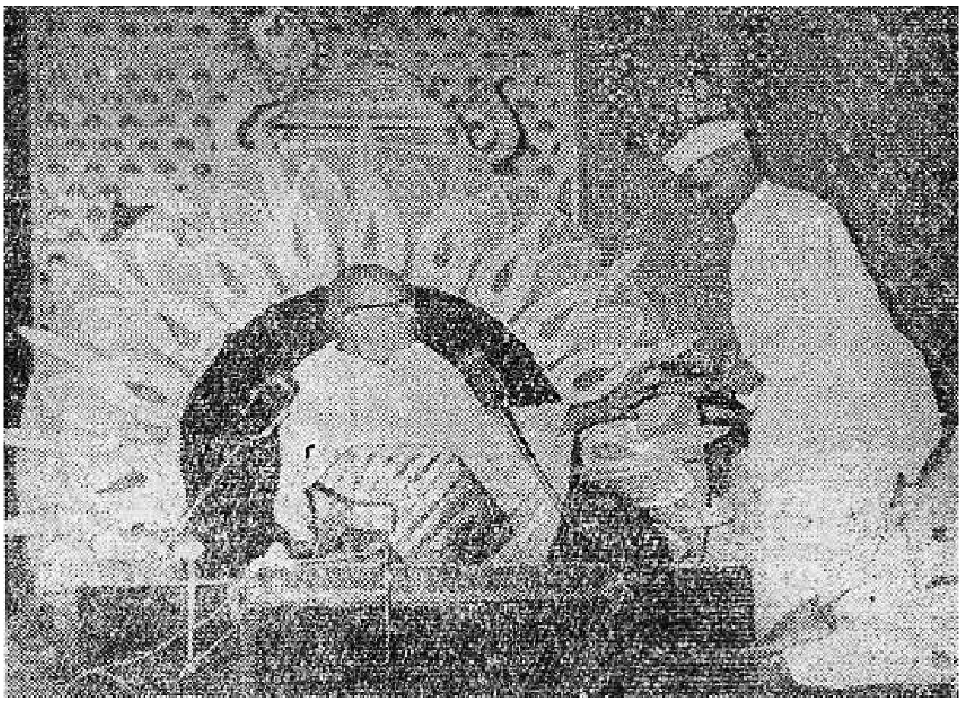

मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं फिर एक बार आपका आदर, सम्मान और श्रद्धांजली प्रगट करता हूँ। और यह निवेदन करता हूँ कि जो मार्ग—जो रास्ता अहिंसा और शान्ति का, चारित्र का, नैतिकता का आप दिखाते हैं, उस पर यदि हम चलेंगे तो उसमें हमारा भी भला होगा, समाज का भी होगा व देश का भी होगा।

– प्रधानश्री लालबहादुरजी शास्त्री

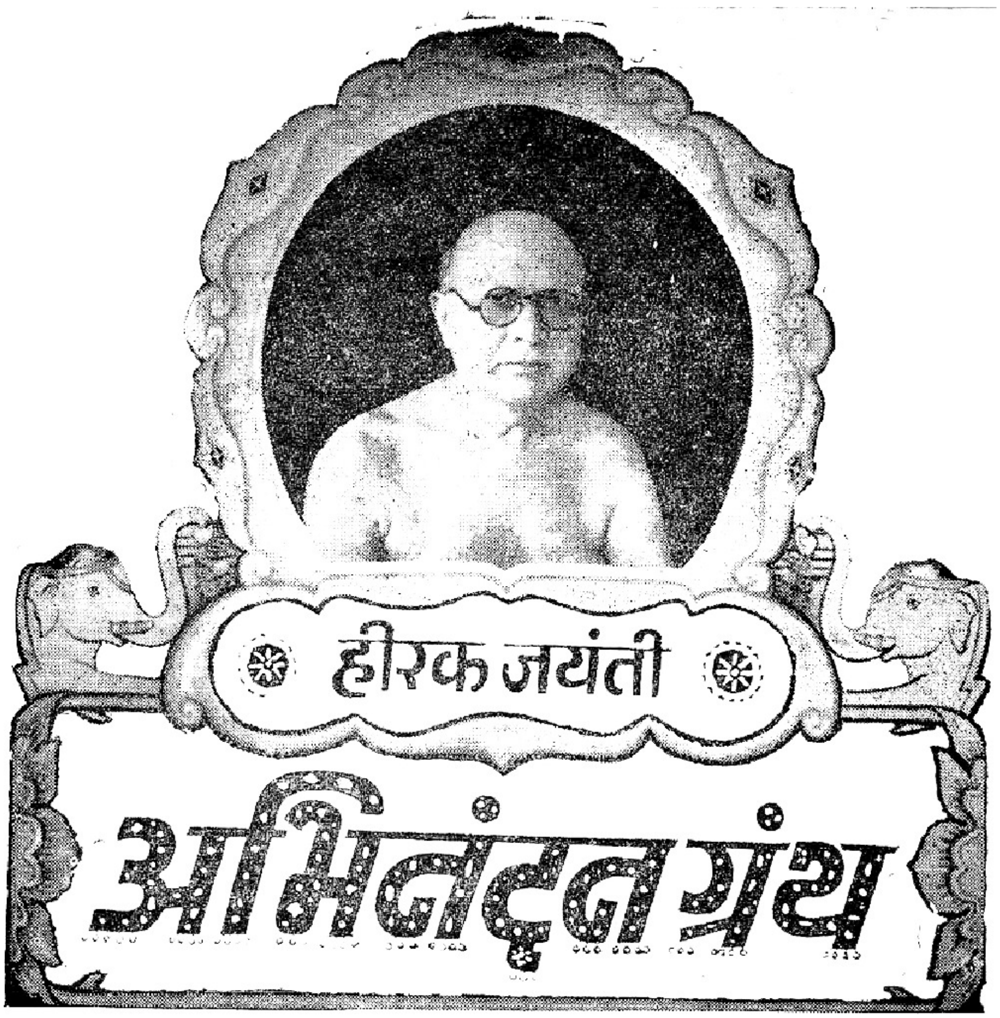

जिनमार्ग के पथिक, सिद्धपद के साधक, अष्ट कर्मों से शून्य और अष्ट महागुण संयुक्त ऐसे चैतन्यपथ के दर्शक, रत्नत्रयमार्ग के प्रकाशक, चैतन्य चिन्तामणि के चिन्तक—ऐसे हे गुरुदेव! एक सम्यक् रत्न हमें भी आपकी रत्नजयन्ती प्रसंग पर प्रदान करो जी!

संवत् 2015 वैशाख शुक्ल दूज फतेपुर में
आत्मधर्म के खास अंक का अवलोकन कर रहे गुरुदेव

मेरु पर जन्माभिषेक—इस प्रकार चौथे काल में बने हुए वे पावन प्रसंग इस पंचम काल में मुम्बई में देखकर मुमुक्षु अपने को धन्य समझते थे और सहज अनुमान भी हो सकता है कि जिनके प्रताप से ऐसे पंच कल्याणक बारम्बार मनाये जाते हैं, वे महात्मा स्वयं भी पंच कल्याणक के साथ सीधा सम्बन्ध धरानेवाले हैं।

पार्श्वप्रभु के जन्मकल्याणक की सवारी कोई अनोखी थी। जहाँ मनुष्यों को भी चलने की कठिनता हो, ऐसे मुम्बई के मार्गों पर हाथी की सवारी और साथ में सात सूँढ वाला ऐरावत, यह दृश्य देखने को सात-सात मंजिल के मकान भी उमड़ पड़े थे। पश्चात् पार्श्वप्रभु की दीक्षा के वैराग्य दृश्य, मुनिराज को आहारदान, अनेक उपसर्ग होने पर भी धैर्यपूर्वक की क्षमा—यह सभी दृश्य वीतराग शासन के प्रति और मुनिवरों के प्रति परम भक्ति जागृत करते थे। गुरुदेव परम भक्ति से मन्त्राक्षर द्वारा अंकन्यास विधि करते थे, तब साध्य और साधक की कैसी एकता है—यह देखकर मुमुक्षु को अद्वैतभक्तिरूप निर्विकल्प साधना का स्मरण होता था। पश्चात् केवलज्ञान और मोक्ष के समय भी, समवसरण की और सम्मेदाचल—मोक्षधाम की नयन मनोहर रचना देखकर प्रसन्नता होती थी।

और फिर वैशाख शुक्ल ग्यारस को जब प्रतिष्ठित हुए जिन भगवन्त दादर मुकाम के जिनालय में तथा समवसरण में पधारे और गुरुदेव ने भक्तिपूर्वक वेदी प्रतिष्ठा की, तब प्रभुजी के दर्शन से हजारों भक्तों को अपार आनन्द हुआ। गुरुदेव इत्यादि का पूर्व जीवन ...जिसके साथ संकलित है, ऐसा विदेहीनाथ का समवसरण इस भरतक्षेत्र में देखकर आनन्दकारी अनन्त अनेक प्रसंग ताजा होते हैं। 75 फीट उन्नत जिनालय और उसके ऊपर 75 इंच का सोने से मढ़ा हुआ कलश आकाश में जगमगा उठा... पवित्र जैनधर्म का ध्वज आकाश में लहरा उठा। यह हीरक जयन्ती इत्यादि का आँखों देखा हाल मुम्बई की आकाशवाणी से प्रसारित किया था। मुम्बई नगरी का यह उत्सव अनोखा था, जैनधर्म की कैसी महान प्रभावना गुरुदेव कर रहे हैं, वह यहाँ दृष्टिगोचर होता था।

ॐअं नमः

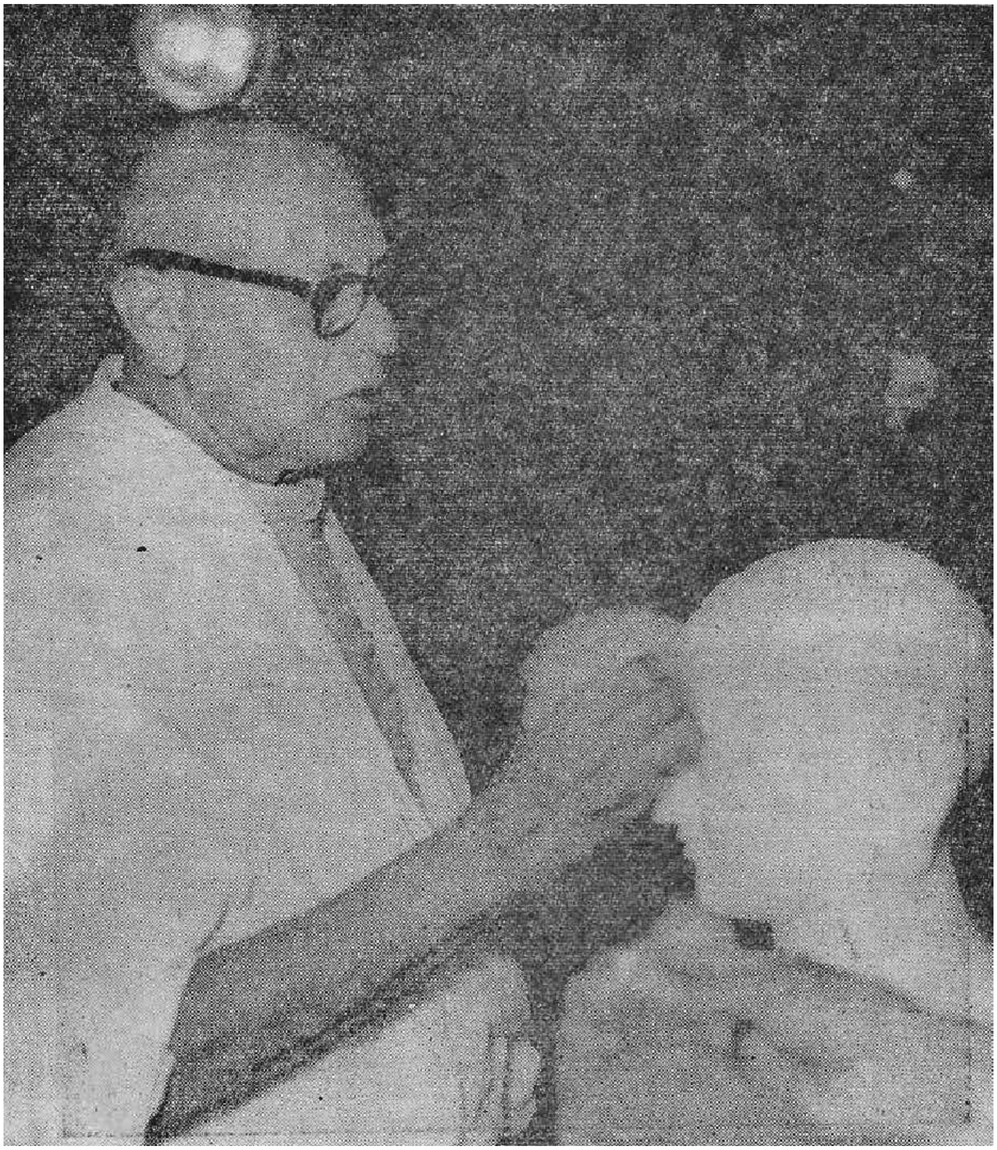

गुरुदेव परम भक्ति से जिनबिम्ब पर अंकन्यास करते थे तब साध्य और साधक की यह एकता देखकर मुमुक्षु को अद्वैतभक्तिरूप निर्विकल्प साधना का स्मरण होता था।

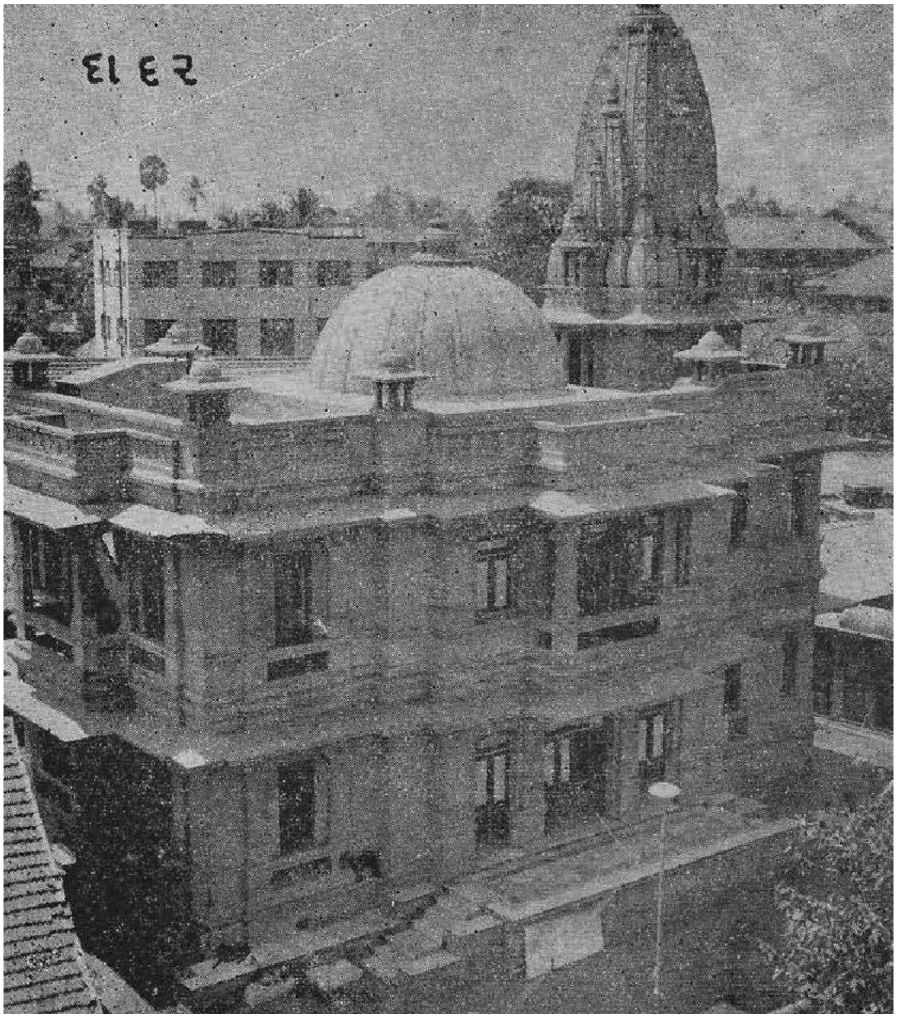

दादर का 75 फीट उन्नत भव्य जिनमन्दिर

जिसमें मूलनायक महावीर प्रभु हैं और ऊपर के भाग में समवसरण है।

श्री सीमन्धर भगवान का समवसरण
दादर : मुम्बई

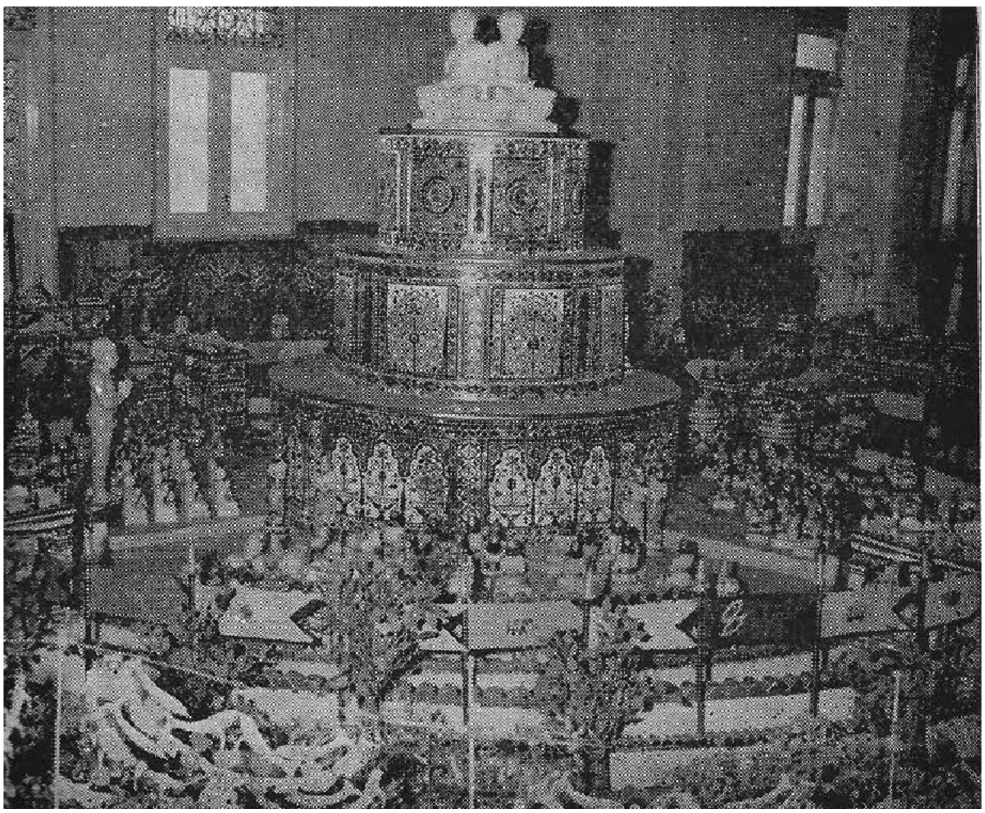

(संवत् 2020 के वैशाख शुक्ल ग्यारस को जिसकी प्रतिष्ठा हुई)

मुनिभक्ति का महोत्सव

दक्षिण देश की यात्रा और मुम्बई के महोत्सव करके जब वापस सोनगढ़ आये, तब मानो मुनिवरों के देश में जाकर आये हों, ऐसी ऊर्मी बारम्बार गुरुदेव को वेदन में आती थी; कुन्दकुन्दस्वामी आदि मुनि भगवन्त जहाँ विचरे हैं, ऐसे उस गुरुधाम में अभी ही जाकर आये होने से उस मुनिदशा को गुरुदेव बारम्बार प्रवचन में स्मरण करते, उसकी अपार महिमा समझाते और साथ ही साथ उस यात्रा की खुशहाली में आषाढ़ माह की अष्टाह्निका के दौरान चौंसठ ऋद्धिधारी मुनिवरों की महा पूजा भी हुई। इसलिए मानो मुनिभक्ति का महोत्सव ही चलता हो, ऐसा वातावरण था। कुन्दकुन्दस्वामी विदेह में गये और वहाँ उनके बहुमान में आठ दिन का महोत्सव हुआ, उसी प्रकार यहाँ भी कुन्दकुन्दस्वामी की यात्रा की खुशहाली में आठ दिन का पूजन महोत्सव हुआ। सोनगढ़ में बारम्बार सिद्धचक्र विधान, सहस्र अष्टोत्तर नाम पूजन विधान, पंच मेरु पूजन-विधान इत्यादि विशिष्ट पूजन-विधान हुआ करते हैं; किसी-किसी समय उन पूजन-विधान में गुरुदेव भी भाग लेते हैं।

'समयसार का युग' और कुन्दकुन्दाचार्यदेव के साथ का सम्बन्ध

समयसार, यह गुरुदेव के जीवन का साथी है... समयसार के रचनाकार कुन्दकुन्दाचार्यदेव के साथ उन्हें विदेह में सीधा सम्बन्ध हुआ होने से उनका समयसार भी गुरुदेव को अतिशय प्रिय है और वे कहते हैं कि—इस जीव पर कुन्दकुन्दाचार्यदेव का और समयसार का महान उपकार है।निरन्तर उसका स्वाध्याय-मनन वे करते हैं। अनेक वर्षों से उस पर प्रवचन तो होते हैं ही, तदुपरान्त दोपहर की निवृत्ति के समय एकान्त में बैठकर समयसार का गहरा अध्ययन वे हमेशा करते हैं और इस प्रकार शताधिक बार उन्होंने समयसार की स्वाध्याय की है। वह स्वाध्याय करते-करते किसी-किसी समय वे विदेहक्षेत्र के सीमन्धरस्वामी के और कुन्दकुन्दस्वामी इत्यादि के गहरे विचार में चढ़ जाते हैं... तब इस भरतक्षेत्र के

वातावरण को भूलकर विदेहक्षेत्र के वातावरण में उनका चित्त स्थिर हो जाता है। संवत् 1978में जब उन्हें समयसार के उपोद्घात में कुन्दकुन्द प्रभु के विदेहगमन सम्बन्धी उल्लेख पढ़ा तब उनकी आत्मा में विदेह के अव्यक्त संस्कार झनझना उठे और अन्तर की गहराई से इस बात का सहर्ष स्वीकार आया था। पश्चात् तो इस सम्बन्ध में आत्म साक्षात्कार जैसा ही मजबूत प्रमाण संवत् 1993 में पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के जातिस्मरणज्ञान के बल से प्राप्त हुआ और भूत-भविष्य के अनेक पावन प्रसंगों की अधिक से अधिक स्पष्टता से गुरुदेव का आत्मा भी खिल उठा... गुरुदेव के मुख से यह बात साक्षात् सुननेवाले भक्त तो हर्ष से नाच उठते थे। आज से 23 वर्ष पहले (संवत् 2002 में) इस बालक को (ब्रह्मचारी हरिभाई को) भी पूज्य गुरुदेव के चरणों में बैठकर डेढ़ घण्टे तक परम वात्सल्यपूर्वक यह सब ही सुनने का परम आनन्दकारी लाभ प्राप्त हुआ है... आहाहा! गुरुदेव के श्रीमुख से विदेह का आश्चर्यकारी वर्णन और धर्म माताओं की अपार महिमा, ये (गुरुदेव) राजकुमार और उनके दोनों मित्रों की मधुर बातें तथा इन तीनों की भविष्य की महान जगपूज्य पदवी—यह सब श्रीगुरु मुख से सुनते हुए कोई परम कल्याण की आगाही से असंख्य प्रदेश झनझना उठते थे। गुरुदेव की परम कृपा का यह प्रसंग स्मरण में आने पर अभी भी चैतन्य प्रदेशों में गुरुदेव के प्रति विशिष्ट लगनी की मधुर तरंगें उल्लसित होती हैं—मानो कोई एक तीर्थंकर के साथ ही यह आत्मा बसता हो, ऐसा आनन्द उल्लसित होता है। धन्य गुरुदेव! धन्य आपका मंगलमूर्ति आत्मा! (षट्खण्डागम में तीर्थंकरादि के आत्मा को त्रिकाल मंगलस्वरूप कहा गया है, उसका भावभीना उल्लेख गुरुदेव बहुत बार करते हैं, उसमें भी अव्यक्तरूप से अपने भविष्य के भणकार गूँजते हैं।)

समयसार पर गुरुदेवश्री के प्रवचन 16वीं बार (संवत् 1925 में) चल रहे हैं... समयसार की शुरुआत के समय 'मैं सिद्ध... तू सिद्ध' ऐसा कहकर जब गुरुदेव अत्यन्त प्रमोद से आत्मा में सिद्धपना स्थापित करते हों, उस समय सिद्ध भगवान के

साक्षात्कार जैसे महाप्रमोद से श्रोता उल्लसित हो जाते हैं। आत्मा के जोशपूर्वक कुन्दकुन्दस्वामी की ओर से गुरुदेव कहते हैं कि 'मैं सिद्ध, तू सिद्ध'—हाँ पाड़ और चला आ सिद्धपद में! हमारे पास समयसार सुनने आया, वह जीव भव्य ही होगा। सिद्धपद लक्ष्य में लेकर उसकी हाँ पाड़ी, वह अप्रतिहत मांगलिक है। इस प्रकार गाथा–गाथा में मोक्ष के मंगल मोती का मेहुलो बरसाते हुए गुरुदेव श्रोताओं के हृदय में शुद्धात्मा का बहुमान ठूँस–ठूँसकर भरते हैं और रागादि का बहुमान जड़ मूल से निकला डालते हैं। आज 35–40 वर्षों से सोलह–सोलह बार समयसार के प्रवचन हुए तथापि वक्ता और श्रोताओं का रस बढ़ता ही जाता है। अधिक और अधिक भाव खुलते जाते हैं। इस (समयसार के प्रवचनों की पाँच पुस्तकें प्रकाशित हो गयी हैं, उसमें से तीन पुस्तकों के प्रवचन तो पूज्य बहिनश्री–बेन (चम्पाबेन–शान्ताबेन) के सुहस्त से लिखे हुए हैं।

इस ग्रन्थाधिराज की मूल गाथायें (415) चाँदी में उत्कीर्ण हैं। इतना ही नहीं, परन्तु विदेह में साक्षात् देखे हुए कुन्दकुन्दाचार्य प्रभु का जिन्हें यहाँ जातिस्मरण के बल से साक्षात्कार किया है, ऐसे पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के सुहस्त से सोनगढ़ के स्वाध्यायमन्दिर में समयसार की पूजनीय स्थापना हुई है। आज तो जैन समाज में मुमुक्षुओं के घर–घर में समयसार विराजमान है और आदरपूर्वक उसका स्वाध्याय होता है।

समयसार के भावों का जो रहस्य गुरुदेव अनेक वर्षों से समझा रहे हैं, उसके प्रताप से धार्मिक साहित्य में अभी 'समयसार का युग' वर्त रहा है और अनेक जिज्ञासु जीव उसमें बताये हुए एकत्व–विभक्त शुद्ध ज्ञायक आत्मा को लक्ष्यगत करके उसके अनुभव के लिये उद्यमशील वर्तते हैं—इस प्रकार जैनशासन की सच्चे हार्द की महान जीवन्त प्रभावना हो रही है।

❀❀❀

(यहाँ से आगे बढ़ने से पहले एक बावत् का थोड़ा सा उल्लेख कर लेते हैं।)

गुरुदेव जड़-चेतन की भिन्नता और आत्मा का अविनाशीपना समझाकर जो भेदज्ञान घुंटा रहे हैं, उसके प्रताप से जिज्ञासुओं का जीवन तो पलट जाता है और मरण भी सुधर जाता है। भावमरण से बचाकर आनन्दमय आत्मजीवन का मार्ग गुरुदेव बता रहे हैं। 'आत्मा तो अविनाशी है, देह से भिन्न है'—इस प्रकार के गुरुदेव के उपदेश के संस्कार द्वारा जिसने अपना जीवन सींचा है, उस मुमुक्षु के जीवन में तो कोई महान परिवर्तन आ जाता है और मृत्यु प्रसंग भी ऐसे विशिष्ट प्रकार से होते हैं कि जिसे देखकर लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं। मुमुक्षु के लिये मृत्यु, वह कोई बड़ा 'हाऊ' नहीं परन्तु मानो कि धर्म के उत्सव का कोई प्रसंग है, ऐसी अत्यन्त सहजता से अन्तिम घड़ी तक देव-गुरु-धर्म को स्मरण करते-करते और तत्त्व का चिन्तन करते-करते देह छोड़कर अन्यत्र चला जाता है। इतना ही नहीं, पीछे के जिज्ञासु भी मृत्यु के पश्चात् (किसी समय तो भरी युवा वय में मृत्यु हो तो भी) कल्पान्त्र या आकुलता न करके अत्यन्त धैर्य रखकर तत्त्व के वांचन-विचार द्वारा वैराग्य का बल बढ़ाते हैं; उसे आश्वासन देने आनेवाले दूसरे उसका धैर्य देखकर उसे आश्वासन देने के बदले उल्टे उससे आश्वासन पाते हैं। तीव्र दर्द में और अत्यन्त गम्भीर आपरेशन के समय भी जिज्ञासु जो धैर्य रखते हैं, उसे देखकर कितने ही डॉक्टर भी आश्चर्यचकित होते हैं। श्वेताम्बर समाज के एक प्रसिद्ध साधु भी एक बार तो बोले कि इन सोनगढ़वाले लोगों का मरण भी अलग प्रकार का होता है! दूसरे एक भाई कहते कि समाधिमरण करना सीखना हो तो सोनगढ़ जाओ। दूसरे अनेकविध प्रतिकूल संयोगों में तो ठीक परन्तु मृत्यु जैसे प्रसंग भी इस प्रकार के धार्मिक संस्कारों की जागृति और शान्तपरिणाम रहना, वह गुरुदेव द्वारा प्रदत्त वीतरागी तत्त्वज्ञान के कारण मुमुक्षु को अत्यन्त सुगम बनता है। गुरुदेव बहुत बार कहते हैं कि भाई! यह अपूर्व चैतन्यतत्त्व जो समझकर अनुभव में लेगा, उसकी तो क्या बात! परन्तु इस तत्त्व का लक्ष्य करके उसके हकार

के जो संस्कार डालेगा, उसे भी दूसरे भव में वे संस्कार उग कर आत्मा का परमहित करेंगे। वास्तव में, परभव में वे संस्कार विस्मृत नहीं होते, इसी प्रकार उन संस्कारदाता गुरुदेव का उपकार भी विस्मृत नहीं किया जाता।

सोनगढ़ में धर्ममय वातावरण

वैसे तो सोनगढ़ में पूज्य गुरुदेव की मंगल छाया में सदा ही ऐसा धर्ममय वातावरण वर्तता है कि मुमुक्षु स्वयं मानो कि छोटे से समवसरण में बैठे हों, ऐसा अनुभव करते हैं। उसमें भी श्रावण महीना, वह सोनगढ़ में विशेष धार्मिक प्रवृत्तिमय होता है; उस समय गुरुदेव के सान्निध्य में शान्ति से रहने और तत्त्व का अभ्यास करने भिन्न–भिन्न प्रान्तों में से सैकड़ों जिज्ञासु गृहस्थ आते हैं, साधर्मीजन परस्पर मिलन से आनन्दित होते हैं। एकदम सवेरे से ही देर रात्रि तक जहाँ देखो वहाँ तत्त्वचर्चा का मेला दिखता है। बहुत–बहुत अभ्यास करके तत्त्व का पूरे वर्ष का पाथेय बहुत से जिज्ञासु इस एक महीने में ले जाते हैं। उस समय गुरुदेव भी बहुत–बहुत खिलते हैं, प्रवचनों की रमझट अनोखी होती है; बाहर में वर्षा ऋतु के मधुर मौसम के साथ यह आध्यात्मिक श्रुतवर्षा सबको प्रफुल्लित करती है और ऐसे प्रसन्न वातावरण में उफान लावे ऐसा प्रसंग पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के जन्मदिन का—वह भी इस श्रावण महीने में ही आता है। उस समय धर्म के वात्सल्य का कोई नवीन ज्वार आता है और बारम्बार गुरुदेव के श्रीमुख से उनके अनुभव ज्ञान की, अद्‌भुत वैराग्य की तथा चार–चार भव के जातिस्मरण की और भविष्य के पवित्र पदों की आनन्दकारी वार्ता सुन–सुनकर भक्तों का हृदय उमंग से उल्लसित होता है और ऐसे सन्तों के दर्शन से भी अपनी धन्यता अनुभव करते हैं। उस पवित्र दिन पूज्य गुरुदेव, बहिनश्री–बेन के यहाँ आहार के लिये पधारते हैं और पूरे दिन उत्सव जैसा वातावरण रहता है। फाल्गुन महीने में पूज्य शान्ताबेन के जन्मदिवस पर भी ऐसा ही वातावरण होता है और आनन्द से उस दिन का उत्सव मनाया जाता है।

श्रावण महीने में चालू हुआ तत्त्वचर्चा का प्रपात भाद्र महीने में भी चालू रहता है और उसमें भी दशलक्षणी धर्म सम्बन्धी विशेष प्रवचन, पूजन-भक्ति इत्यादि के कारण हजारों जिज्ञासु अपने को चौथे काल में ही वर्तते समझकर आनन्दपूर्वक धर्मसाधन करते हैं। वास्तव में तो गुरुदेव जैसे सन्त-धर्मात्माओं के कारण सोनगढ़ में सदैव धर्म काल ही वर्तता है। इसीलिए तो यहाँ की हवा में भी बारम्बार ध्वनि सुनाई पड़ती है कि 'यह सन्तों का धाम है'.... यहाँ पंचम काल नहीं परन्तु चौथा काल है। देव-गुरु के प्रताप से यहाँ धर्म की जहोजलाली वर्तती है। हे मुमुक्षु बन्धुओं! तुम आओ रे आओ! चैतन्य की मुक्ति का अपूर्व मार्ग प्राप्त करने तुम इस धर्मधाम में आओ!

अनेक गाँव के मुमुक्षु सोनगढ़ में आकर बसे हैं और गुरुदेव की मधुर छाया में धार्मिक उपासना द्वारा, आत्मस्वभाव के घोलन द्वारा, अपने जीवन को सार्थक करते हैं। यहाँ के धार्मिक वैभव के समक्ष अपने घर का कोई वैभव विलास उन्हें याद भी नहीं आता। तत्काल में सेठ श्री नवनीतभाई ने तथा सागर (मध्यप्रदेश) के सेठ श्री भगवानदास शोभालालजी ने भी दो-दो लाख के खर्च से यहाँ मकान बनाये हैं और बारम्बार सोनगढ़ आकर लाभ लेते हैं। सागरवाले सेठ भगवानदासजी ने अपने मकान के वास्तु प्रसंग पर जिनप्रतिमाजी को भी विराजमान करके आनन्द से पूजा-भक्ति की थी। प्रत्येक नये मकान के वास्तु प्रसंग पर मंगलरूप से उस मकान में प्रवचन करते हुए गुरुदेव चैतन्य वस्तु में वास्तु कराने की पद्धति बतलाते हुए कहते हैं कि—भाई! इस बाहर के घर में तेरा वास्तु नहीं, अन्दर अनन्त गुण से भरपूर ऐसी तेरी चैतन्य वस्तु में ही तेरा वास्तु है; उसे पहिचानकर तू उसमें बस! यही मंगल वास्तु है।

पुराणकथा के आधार से नित नये धार्मिक संवाद-नाटक भी सोनगढ़ में तथा अन्यत्र प्रसंगानुसार बालक करते हैं और उसके द्वारा बालकों में लघुवय से ही धार्मिक दृढ़ता के सुन्दर संस्कार अभिसिंचित होते हैं। सीताजी, अंजना, चन्दना, चेलना,

अकलंक-निकलंक, भरत-बाहुबली, श्रीकण्ठ वैराग्य; वारिषेणकुमार, वज्रबाहु वैराग्य, हरिषेण चक्रवर्ती इत्यादि अनेक धार्मिक नाटकों का मंचन हो चुका है।

संवत् 2010 से 2020 में कुल 25 बार जिनबिम्ब प्रतिष्ठा के प्रसंग बने और पश्चात् भी वह प्रवाह चालू ही रहा। 2020 के आसोज महीने में जसदण में जिनमन्दिर का शिलान्यास हुआ।

गुरुदेव को सम्मेदशिखर इत्यादि तीर्थों के प्रति विशेष भावना है। जैन समाज में जब उन तीर्थों सम्बन्धी विवाद चलता था तब गुरुदेव भी तीर्थ रक्षा सम्बन्ध में चिन्ता करते थे, बारम्बार चर्चा में उसका उल्लेख करते थे। और कहते कि मूल तो जैन दिगम्बर धर्म ही था, परन्तु दिगम्बर मुनि तो परम निस्पृह, वे तो कहीं बाहर की उपाधि में पड़ते नहीं, तीर्थों में यहाँ से भगवान मोक्ष पधारे हैं—उसके स्मरणरूप से भगवान के चरण होते हैं, ऐसे तीर्थों की सुरक्षा के लिये बन्दोबस्त होना चाहिए। तीर्थों की भाँति साधर्मी के प्रति प्रेम भी अपार है। उसके अनेक प्रसंग बने हैं। सीताजी, अंजना इत्यादि का जीवन वांचते-वांचते गुरुदेव को आँसू आ जाते हैं; वे कहते हैं कि धर्मात्मा पर दु:ख मैं देख नहीं सकता। इसी प्रकार शास्त्रों के प्रति भी बहुत प्रेम और आदर है; कोई नवीन शास्त्र प्राप्त होने पर वे प्रसन्न होते हैं।

राजस्थान के बयाना शहर में 500 वर्ष प्राचीन (संवत् 1507 की) सीमन्धर भगवान की प्रतिमा विराजमान है—यह बात (संवत्) 2021 के कार्तिक महीने में सोनगढ़ में ज्ञात हुई; यह जानकर गुरुदेव इत्यादि बहुत प्रसन्न हुए और उसके दर्शन की इन्तजारी जागृत हुई!

संवत् 2020 मगसर-पौष में समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन में गुरुदेव अद्भुत खिले थे। 47 शक्तियों के प्रवचनों के समय चैतन्य गुणों के प्रति उन्हें कैसा परम अह्लाद उल्लसित होता है!—यह तो सुननेवाले को नजर से दृष्टिगोचर होता है। गुरुदेव प्रतिदिन सवेरे 47 शक्तियों का रटन कर जाते हैं और कहते हैं कि यह मेरी

माला है।'47 शक्तियों, वह आत्मा का वैभव है, ऐसे वैभवशाली भगवान आत्मा का अन्तर में ध्यान करने से ज्ञान–आनन्दरूपी वैभव प्रगट होता है।'—ऐसा गुरुदेव ने अपने स्वहस्त से 'आत्मवैभव' पुस्तक में लिखा है। वे बहुत बार प्रमोद से कहते हैं कि अहा! सन्तों ने अन्दर में सर्वज्ञ भगवान से भेंट कर–करके उनकी शक्ति के अचिंत्य रहस्य खोले हैं। 47 शक्तियों द्वारा आत्मगुणों की जो अपार महिमा गुरुदेव ने समझायी है, वह मुमुक्षु को निहाल करे, ऐसा है।

पौष शुक्ल दसवीं को गुरुदेव बहुत से भक्तों को कहते हैं कि—'आज तो मैंने भगवान देखे'—यह सुनकर भक्त आश्चर्य में पड़ जाते थे और गुरुदेव प्रमोद से स्पष्टीकरण करते कि आज तो स्वप्न में पूर्व के आकाश में बाहुबली भगवान का अद्भुत दीदार देखा। आश्चर्यकारी उनकी मुद्रा थी। उनका रूप और उनके मुख की वीतरागता कोई अलौकिक थी, वह अचिंत्य शक्तिवन्त बाहुबलीनाथ का अद्भुत वैराग्य दीदार के दर्शन से गुरुदेव को बहुत ही आह्लाद हुआ था और गुरुमुख से उसका वर्णन सुनकर भक्तजनों को भी अत्यन्त हर्ष हुआ।

गुरुदेव बारम्बार स्वप्न में अपूर्व भावसूचक स्वप्न देखते हैं—किसी में भूतकाल के भणकार होते हैं तो किसी में भविष्य की होनहार होती है और किसी समय वर्तमान अध्यात्म का जो घोलन चलता हो, वह स्वप्न में फिर से ताजा होता है। बहुत वर्षों पहले के एक स्वप्न में गुरुदेव ने छठ–सप्तम के कितने ही चन्द्रमा से भरपूर आकाश देखा था, उसे बहुत बार स्मरण करके गुरुदेव कहते हैं कि मानो छठवाँ–सातवाँ गुणस्थानरूप मुनिदशा सूचित करता हो—ऐसा वह मंगल स्वप्न था। दूसरे एक स्वप्न में सिद्धान्त सूत्र लिखे हुए बड़े–बड़े पाटिया आकाश में से उतरते हुए देखे—यह जिनवाणी की प्राप्ति और श्रुतज्ञान की अतिशयता का सूचक था। तदुपरान्त मानो स्वयं कोई राजकुमार हो, ऐसा बारम्बार भणकार आता था—जो स्पष्टरूप से पूर्व भव का सूचक था, परन्तु उस समय उसकी खबर नहीं थी; बाद में जातिस्मरणज्ञान के

प्रसंग बनने पर वह सब स्पष्ट हुआ। और सब सन्धि मिल गयी कि स्वयं पूर्वभव में विदेह में एक राजकुमार थे—उसके यह भणकार थे।

वीर संवत् 2487 के ज्येष्ठ महीने में गुरुदेव ने कोई एक मुनिराज को स्वप्न में देखा। मानो कोई मुनिराज दर्शन देने पधारे हैं। मुनिराज के अद्‌भुत आश्चर्यकारी दर्शन से गुरुदेव को अपार प्रमोद हुआ। (इस दृश्य की थोड़ी सी स्मृति स्वर्ण सन्देश के बत्तीसवें अंक में है)। उस समय प्रवचन में अष्टप्राभृत में से मुनिदशा की अपार महिमा का वर्णन चलता था और उसमें फिर स्वप्न द्वारा मुनिराज ने दर्शन दिये—पश्चात् तो पूछना ही क्या! प्रवचन में मुनि महिमा का जो प्रपात बहा, उसमें से थोड़े से बिन्दु नमूने के रूप में देखने पर उसका ख्याल आयेगा; गुरुदेव कहते हैं—

● अहा! मुनिराज, वे तो अरिहन्त के पुत्र हैं; अरिहन्त के युवराज हैं।

● मुनि को तो जिनतुल्य समझकर उनका परम बहुमान और आदर करनेयोग्य है।

● मुनिदशा अर्थात् छठवें–सातवें गुणस्थान की वीतरागी दशा

● मुनि तो सहज स्वरूप की निर्विकल्प शान्ति में झूलते–झूलते सिद्धपद को साध रहे हैं।

● चैतन्य निधान को खोलने निकले हुआ साधु जगत के निधान में लुभाता नहीं है।

—ऐसे हजारों प्रकार से मुनिदशा की सच्ची महिमा गुरुदेव के मुख से सुनकर तीव्र भक्तिपूर्वक ऐसे मुनिराज के दर्शन की छटपटाहट जागृत होती थी। गुरुदेव स्वयं बहुत बार मुनिदर्शन की झंखना व्यक्त करते हैं—परन्तु अन्त में कुन्दकुन्दादि मुनि भगवन्तों की स्मृति से ही सन्तोष मानना पड़ता है और उनकी वाणी को ही मुनि समान समझकर परम आदर से उनके अन्तर के भावों का अधिक से अधिक गहरा मनन करने में उपयोग लगाते हैं।

❀❀❀

(संवत्) 2021 के माघ महीने में गुरुदेव ने मध्यप्रदेश का 25 दिन का प्रवास किया, उसमें भोपाल, इन्दौर, उज्जैन, मक्षीपार्श्वनाथ और मल्हारगढ़ इत्यादि स्थानों पर होकर फाल्गुन शुक्ल एकम् को सोनगढ़ पधारे। इस प्रसंग पर भोपाल और उज्जैन में जिनबिम्ब की वेदी प्रतिष्ठा हुई। मल्हारगढ़ में भी गुरुदेव के पधारने से धार्मिक मेला जैसा भव्य उत्सव हुआ, जंगल में मंगल हुआ।

❀❀❀

पण्डित टोडरमल स्मारक भवन का शिलान्यास

जयपुर के पण्डितश्री टोडरमलजी रचित मोक्षमार्गप्रकाशक गुरुदेव का एक अतिप्रिय शास्त्र है, अनेक बार उस पर प्रवचन हुए हैं और निश्चय-व्यवहार के रहस्यों सम्बन्धी पण्डित टोडरमलजी ने जो स्पष्टीकरण किया है, उसके लिये गुरुदेव कहते हैं कि जैन शास्त्रों के अर्थ करने की यह चाबी है। बहुत प्रकार से पण्डितजी की महिमा गुरुदेव ने प्रसिद्ध की और उसका बहुत प्रचार हुआ; उसके परिणामस्वरूप जयपुर में लाखों रुपये के खर्च से विशाल 'पण्डित टोडरमलजी स्मारक भवन' बनाने का सेठ श्री पूरणचन्दजी गोदीका ने निश्चित किया और संवत् 2021 के माघ कृष्ण पंचमी को उसका शिलान्यास भाईश्री खीमचन्द जेठालाल सेठ के हस्त से हुआ। दो सौ वर्ष पहले पण्डितश्री टोडरमलजी ने प्रसिद्ध 'रहस्यपूर्ण चिट्ठी' इसी दिन लिखी थी। इस चिट्ठी पर गुरुदेव के अद्भुत भावभीने अनुभवप्रधान प्रवचन हो गये हैं और 'अध्यात्म सन्देश' नामक पुस्तकरूप से प्रकाशित हुए हैं—जो स्वानुभव के प्रयत्न के लिये प्रत्येक जिज्ञासु को विशेष मननीय हैं।

राजकोट शहर में
पंच कल्याणक प्रतिष्ठा और जन्म-जयन्ती के उत्सव

राजकोट शहर में सीमन्धर प्रभु के समवसरण की तथा पावन फीट उन्नत मानस्तम्भ की रचना का कार्य पूरा हो गया। तथा वहाँ के संघ की भावना गुरुदेव का

जन्मोत्सव अपने आँगन में मनाने की थी, इसलिए गुरुदेव संवत् 2021, चैत्र शुक्ल तेरह (दिनांक 13-4-1965) के दिन राजकोट पधारे। 76वें जन्मोत्सव निमित्त राजकोट पधारे हुए गुरुदेव का 76मंगल कलश सहित भव्य स्वागत हुआ, तब गुरुदेव ने शुद्धात्मा का और सिद्ध भगवन्तों का स्वागत करते हुए मंगलाचरण में कहा कि—हे प्रभो! मुझे आपका रंग लगा और मैं शुद्धात्मा को साधने के लिये जागृत हुआ, उसमें अब भंग पड़नेवाला नहीं है। जैसे तीर्थंकर हैं वैसा ही मैं हूँ—ऐसी प्रतीति करके शुद्ध आत्मा के अतिरिक्त दूसरे को मन में नहीं लाऊँगा, ऐसी हमारी टेक है। इस प्रकार पहिचानपूर्वक, हे नाथ! मैं आपका मंगल स्वागत करता हूँ। हे सिद्ध भगवन्तों! मेरे ज्ञान में आपको पधराकर मैं स्वागत करता हूँ अर्थात् कि ज्ञान को शुद्धात्म सन्मुख झुकाकर आपका स्वागत करता हूँ। इस प्रकार साधक और सिद्ध के उमंग भरे स्वागत से सब आनन्दित हुए थे। महान उत्सवों की जोरदार तैयारियाँ होने लगीं; जिनमन्दिर के सामने ही 'सीमन्धर नगर' की रचना हो गयी। चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के दिन पूज्य गुरुदेव जामनगर मुरब्बीश्री वीरजीभाई वकील को दर्शन देने पधारे थे। वैशाख शुक्ल पंचमी को श्रीमद् राजचन्द्रजी के समाधि स्थान की भी मुलाकात ली थी और वहाँ श्रीमद् की ज्ञान-वैराग्य दशा की महिमापूर्वक 'अपूर्व अवसर' द्वारा परमपद प्राप्ति की भावना भायी थी। वैशाख कृष्ण छठवीं को बालाश्रम की मुलाकात ली, वहाँ दो-चार दिन के बालक से लेकर 15 वर्ष तक के सैकड़ों निराधार बालकों को देखकर गुरुदेव ने लगन से कहा कि अरे, संसार की यह स्थिति विचारने से तो वैराग्य आ जाये ऐसा है। जहाँ जन्म देनेवाले माता-पिता भी शरण नहीं होते, ऐसा यह अशरण संसार! उसमें आत्मा की पहिचान न करे, तब तक जीव की यही स्थिति है। वहाँ के उन 'अनाथ' बालकों को गुरुदेव ने प्रेम भरा बालोपयोगी उपदेश दिया था और उनके लिये जैन बालपोथी दी गयी थी।

दिनांक 22-4-1965 के दिन सम्मेदशिखरजी तीर्थधाम के सम्बन्ध में

दिगम्बर जैन समाज के सम्पूर्ण हकों की रक्षा हो, और समग्र जैन समाज हिल-मिलकर रहे—इस सन्दर्भ में राजकोट और सौराष्ट्र के समस्त दिगम्बर जैन समाज की ओर से एक प्रस्ताव किया गया था—इसी अवधि में दिल्ली पाट नगर में एक लाख जितने दिगम्बर जैनों का झुण्ड बड़े प्रधानश्री लालबहादुर शास्त्रीजी से मिला था और समाज की भावना व्यक्त की थी।

राजकोट में एक ओर सीमन्धर नगर में सीमन्धरनाथ का सन्देश हजारों श्रोताओं को गुरुदेव सुनाते थे। तो सामने संगमरमर के समवसरण और मानस्तम्भ की बाकी की रचनायें पूरी करने हेतु शीघ्रता से कार्य चल रहा था और साथ ही साथ पंच कल्याणक उत्सव की तैयारियाँ चलती थीं... परन्तु उन सबकी तैयारी हो, उससे पूर्व तो वैशाख शुक्ल दूज उड़ती-उड़ती राजकोट में आ पहुँची और कहान जन्म की मधुर बधाई लेती आयी। एकाएक घण्टनाद से पाटनगर के प्रजाजन झपककर जाग उठे। आज के प्रवचन में दूज का दृष्टान्त देकर गुरुदेव ने बोधि बीज की महिमा समझायी। हजारों भक्तों ने जन्मोत्सव की खुशहाली व्यक्त की। 76दीपकों से जिनदेव की आरती हुई; बालिकाओं ने गुरुजन्म का 'आनन्द नाटक' प्रस्तुत किया। इस प्रकार गुरुदेव का जन्मोत्सव मनाकर सौराष्ट्र का पाटनगर (राजकोट) धन्य बना।

वैशाख शुक्ल 1 से 12 तक पंच कल्याणक प्रतिष्ठा की विधि हुई। कल्याणक के वे पावन दृश्य देखकर धर्मप्रेमी जनता आश्चर्यमुग्ध बनी। वैशाख शुक्ल 12 को तो वह समवसरण सीमन्धर भगवान द्वारा शोभित हो उठा। अहा! साधकों के प्रताप से इस भरतक्षेत्र में भी सीमन्धरनाथ का समवसरण आया—एक प्रकार से देखें तो विदेह के समवसरण में सीमन्धर प्रभु बोलते हैं और भरत के समवसरण में मौन बैठे हैं—इतना ही अन्तर है न! परन्तु दूसरे प्रकार से देखें तो, सीमन्धरनाथ विदेह में जो उपदेश प्रदान कर रहे हैं, वही उपदेश साक्षात् सुनकर उसका सार कहान गुरु द्वारा अपने को भरत में भी मिल ही रहा है और तीसरे प्रकार से देखें तो कहान गुरु के हृदय

में से ही एक भावी तीर्थंकर का दिव्य नाद निकल रहा है—वाह! कैसा मधुर है गुरुदेव का जीवन और कैसे मधुर हैं उनके अतीत–अनागत के संस्मरण!

समवसरण में और मानस्तम्भ में गुरुदेव ने बहुत भक्तिभाव से सीमन्धर प्रभु की प्रतिष्ठा की। हजारों भक्त आनन्दपूर्वक यह साध्य–साधक का मिलन निहार रहे थे। समवसरण में कुन्दकुन्दाचार्यदेव की भी स्थापना की गयी थी। गुरुदेव के प्रभाव से यह 15वाँ पंच कल्याणक महोत्सव हुआ था। प्रतिष्ठा के बाद दूसरे दिन (वैशाख शुक्ल त्रयोदशी) गुरुदेव सोनगढ़ की ओर पधारे और भरी गर्मी में तत्त्व पिपासुओं के लिये प्याऊ फिर से चालू हो गयी।

इस वर्ष के भाद्र कृष्ण दूज को पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के मंगल जन्मदिवस को सभा में पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से हार्दिक प्रमोद भर उद्‌गार सुनकर समाज को अत्यन्त हर्ष हुआ, वह स्वर्ण प्रसंग इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। वे उद्‌गार अक्षरशः लिखे गये हैं और यहाँ देने का मन होता है परन्तु उन्होंने अपनी प्रसिद्धि के प्रति अत्यन्त उदासीनता के कारण उन्हें स्थगित रखना पड़ता है। उनका चार भव का जातिस्मरणज्ञान तथा अनुभव ज्ञान इत्यादि की प्रसिद्धि के सन्दर्भ में एक बार गुरुदेव ने सहज विचार बताया, तब उन्होंने सहजभाव से कहा कि—'गुरुदेव! यह सब तो आपका प्रताप है; बाहर प्रसिद्धि का क्या काम है?' गुरुदेव इसी समय यह प्रसंग याद करके उनकी (बहिनश्री) गम्भीरता की महिमा बताते हैं, तब सुननेवाले आश्चर्य को प्राप्त होते हैं। गुरुदेव बहुत बार कहते हैं कि ऐसी दो बहिनें पकी हैं, यह मण्डल की बहिनों का महाभाग्य है।

श्री जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट के निवर्त प्रमुख मुरब्बी श्री रामजीभाई माणेकचन्द दोशी ने इस संस्था की शुरुआत से ही जो सेवायें की हैं और लगभग 25 वर्ष तक संस्था के प्रमुख पद पर रहकर संस्था का जो विकास किया है, उसके बदले उनके 83 वें जन्मदिवस (भाद्र शुक्ल चौथ को)उनके सम्मान का एक कार्यक्रम

आयोजित किया गया था और प्रमुख श्री नवनीतलालभाई की प्रेरणा से इस निमित्त साहित्य प्रचार के लिये एक लाख रुपये के लगभग फण्ड मुमुक्षुओं में में एकत्रित हुआ था। उस रकम में से लगभग 50000 के खर्च से सोनगढ़ में स्वाध्यायमन्दिर के चौक में एक 'कुन्दकुन्द कहान जैन सरस्वती भवन' बनाया गया है; उसका उद्घाटन (संवत्) 2022 के भाद्र शुक्ल चौथ को जैन समाज के प्रमुख सेठ श्री साहू शान्तिप्रसादजी (कलकत्ता) के हस्त से हुआ था।

'आत्मधर्म' मासिक—कि पहले से जिसके सम्पादक मुरब्बी श्री रामजीभाई थे, उसका अधिक से अधिक व्यवस्थित विकास हो, इस हेतु से माननीय प्रमुखश्री ने ब्रह्मचारी हरिभाई को उसका सम्पादन सौंप दिया था और गुरुदेव की कृपादृष्टि झेलकर आत्मधर्म का अधिक से अधिक विकास होने लगा। आत्मधर्म की रजत जयन्ती के वर्ष में उसका 300वाँ अंक वाँचकर अत्यन्त प्रमोदपूर्वक गुरुदेव के हृदय में से जो उद्गार निकले, वे सुनते हुए गुरुदेव के महान अनुग्रह का ख्याल आता था। आत्मधर्म का हमेशा एक ही उद्देश्य है कि आत्महितकारी परम सत्य उपदेश गुरुदेव अपने को सुना रहे हैं, वह सर्व जिज्ञासुओं तक पहुँचे और गुरुदेव की सत्य महिमा जीवों को लक्ष्यगत हो। यह उद्देश्य सफल हुआ है और हजारों जिज्ञासु उसका लाभ अत्यन्त प्रेम से ले रहे हैं। गुरुदेव द्वारा हो रही महान प्रभावना में आत्मधर्म भी उसका एक अंग बन गया है। उसके बाल विभाग द्वारा हजारों बालकों में बालवय से ही धर्म के उत्कृष्ट संस्कार अभिसिंचित हो रहे हैं। लगभग 2500 जितने उसके सदस्यों में से बहुभाग के सदस्य हमेशा जिनेन्द्रदेव के दर्शन करते हैं, रात्रिभोजन छोड़ दिया है, सिनेमा नहीं देखते, प्रतिदिन तत्त्व का अभ्यास करते हैं और जैनशासन की सेवा करने के लिये बहुत आतुर हैं। स्वयं को 'जिनवर की सन्तान' कहने में वे गौरव अनुभव करते हैं। एक ओर गुरुदेव के प्रताप से श्रुत के महान रहस्य खुलते गये और अधिक से अधिक श्रुत प्रभावना होती गयी, तो दूसरी ओर से बराबर उसी अवधि में, पूर्व के

वीतरागी सन्तों ने गूँथ रखी हुई दिव्यध्वनि के साथ सन्धिवाला श्रुत भी भण्डारों में से बाहर आया और पुस्तकों रूप प्रकाशित होकर गुरुदेव के हाथ में आने लगा; यह पढ़कर गुरुदेव अत्यन्त प्रमोदित होते और उसमें से कोई अनोखे अपूर्व न्याय जब प्रवचन में कहते, तब श्रोताजन भी बहुत उल्लसित होते थे और अत्यन्त बहुमान से ऐसी भावना होती कि अहा! तीर्थंकर की वह दिव्यध्वनि कैसी होगी! और उसका रहस्य झेलनेवाले वीतरागी सन्त कैसे होंगे! उनके प्रति परम भक्ति से हृदय नम पड़ता है। विनयवान शिष्य मतिज्ञान के बल से केवलज्ञान को बुलाता है, मतिज्ञान वह केवलज्ञान का अंश है; अंश द्वारा पूर्ण की प्रत्यक्षता होती है; वस्तु स्वयं अपने विशेष अंशरूप परिणमती है, वह विशेष पर में से नहीं आता; मुनिवरों को निश्चय प्रत्याख्यान में आहार आदि की वृत्ति का भी त्याग—इत्यादि अनेक विषयों का रोमांचकारी वर्णन षट्खण्डागम इत्यादि में से बारम्बार गुरुदेव प्रवचन में कहते हैं। गुरुदेव कहते हैं कि भगवान की सीधी वाणी इन शास्त्रों में गूँथी हुई है। इससे विरुद्ध दूसरे लोगों ने भगवान के नाम से शास्त्र बनाये हैं, परन्तु वह भगवान की वाणी नहीं है। उसमें भगवान की वाणी भव के अन्त का भणकार करती आती है। इसी प्रकार पर्यूषण इत्यादि प्रसंग में दशलक्षण धर्म इत्यादि का स्वरूप विशिष्ट शैली से समझाकर गुरुदेव जैनधर्म का वास्तविक हार्द समझाते हैं। महावीर जयन्ती जैसे प्रसंग गुरुदेव प्रवचन में कहते हैं कि भगवान महावीर शरीर में जन्मे ही नहीं। शरीररूप से वे उपजे ही नहीं; वे तो उनकी निर्मल ज्ञानपर्यायोंरूप से ही उपजे हैं—ऐसी पर्याय में वर्तते आत्मारूप से जो भगवान को पहिचाने, उसने वास्तविक भगवान महावीर को पहिचाना है, दीपावली प्रसंग पर भगवान के मोक्ष की अपार महिमा करके साथ ही साथ कहेंगे कि भाई! जैसे निधान भगवान के पास हैं, वैसे ही निधान तेरे आत्मा में भरे हैं, उन्हें तू पहिचान, तो तुझमें भी ऐसी मोक्षदशा प्रगट होगी।

कैसी अपूर्व प्रस्तुति! मुमुक्षु तो निज निधान सुनकर प्रसन्न... प्रसन्न... हो जाते

हैं। आत्मा को साधने के लिये गुरुदेव की ऐसी वाणी मुमुक्षु को शूरवीरता चढ़ाती है। गुरुदेव बहुत बार कहते हैं कि—शुद्धात्मा को ध्येय बनाकर धर्मी जीवों का संघ मोक्षपुरी में चला जाता है—हे जीव! तू भी उसमें सम्मिलित हो जा! स्वानुभवी की अन्दर की ज्ञानचेतना का स्वरूप और उस सम्बन्ध में हुई चर्चा गुरुदेव कोई बार कहते हैं, वह चर्चा ज्ञानी का सच्चा हृदय समझानेवाली है। (आत्मधर्म, अंक 266, पृष्ठ 45 में से वह वांचन–विचारने हेतु जिज्ञासुओं को प्रेरित कर रहे हैं।) * वास्तव में अनुभव की गहराई में से अध्यात्मरस का मधुर झरना गुरुदेव सदा बहा रहे हैं, उसका रसपान करने से ऐसा लगता है कि अहा! मानो कि किसी दूसरे ही अगम्य देश में विचरते हों और इस संसार से दूर–दूर कहीं चले गये हों!

❀❀❀

मध्यप्रदेश में गुरुदेव का विहार होने के पश्चात् उज्जैन, भोपाल, इन्दौन, गुना, अशोकनगर इत्यादि अनेक शहरों के मुमुक्षु मण्डलों में विशेष जागृति आयी और 'मध्यप्रान्तीय मुमुक्षु मण्डल' संवत् 2022 में स्थापित हुआ। उसके द्वारा जैन शिक्षण शिविर इत्यादि योजनाओं द्वारा तत्त्वज्ञान का अच्छा प्रचार होता है। उसका उद्घाटन मध्यभारत के प्रधानश्री मिश्रीलालजी गंगवाल ने किया था; उन्हें गुरुदेव के प्रति बहुत आदर है और गुरुदेव भोपाल पधारे, तब उनके यहाँ ही गुरुदेव का आवास था। भारत के विशाल भाग में गुरुदेव के प्रवास दौरान स्थान–स्थान पर उमड़ा हुआ जैनसमुदाय नजर से देखने पर, इस लेखक का दृढ़ अनुमान है कि भारत में जैनों की आबादी लगभग एक करोड़ जितनी होगी।

❀❀❀

संवत् 2022 के पौष माह में ऐसा योगानुयोग बना कि यहाँ सोनगढ़ में गुरुदेव को एक स्वप्न आया, जिसमें वीरजीभाई देवलोक में दिखाई दिये; उसी समय

---

* परिशिष्ट देखिये।

जामनगर में शैय्या में वीरजीभाई ने गुरुदेव के दर्शन की इच्छा व्यक्त की—इससे गुरुदेव जामनगर उन्हें दर्शन देने के लिये गये थे। इस प्रसंग में जामनगर के कितने ही जिज्ञासुओं ने गुरुदेव के प्रवचन का लाभ लिया था।

❀❀❀

यह फाल्गुन शुक्ल दूज को सोनगढ़—जिनमन्दिर में सीमन्धर भगवान की प्रतिष्ठा के 25 वर्ष की पूर्णता का महान रजत जयन्ती उत्सव आयोजित किया गया था। वैसे तो प्रतिष्ठा का यह दिन प्रतिवर्ष आठ दिन तक बहिनों में गीत-भक्तिपूर्वक मनाया ही जाता है, परन्तु इस रजत जयन्ती के उत्सव का उल्लास अद्‌भुत था। पच्चीस वर्ष पहले निर्मित 33 फीट उन्नत जिनमन्दिर 25 वर्ष में तो 75 फीट उन्नत हो गया—मानों कि गुरुदेव की प्रभावना वृद्धि के साथ वह भी बढ़ने की प्रतिस्पर्धा करता हो! मन्दिर के अन्दर सुन्दर पौराणिक चित्र दीवार में उत्कीर्ण हैं और सीमन्धर भगवान की शोभा तो ऐसी अद्‌भुत है कि जैसी अद्‌भुत साधक की परिणति! सोनगढ़ में आकर एक बार भी इन दिव्य प्रभु की प्रशान्त मुद्रा देखनेवाला जीवन भर उसे भूलता नहीं। साधक सन्तों द्वारा हमेशा जिनका स्तवन होता हो—उन साध्य की महिमा की क्या बात! आहाहा! उत्सव के समय रथयात्रा में चाँदी के रथ में सीमन्धर भगवान के सारथीरूप से गुरुदेव विराजमान थे—ठीक ही है, आज इस भारत में जिनवर का रथ तो वे ही चला रहे हैं न!! 'जिन' और 'जिन का भक्त' 'कानजी'—ये उन दोनों को रथारूढ़ देखकर भक्त बहुत ही प्रसन्न होते थे (पूर्व में भी उज्जैन और भोपाल में भी जिनरथ के सारथीरूप से गुरुदेव विराजमान थे)। सीमन्धरनाथ प्रभुजी के प्रताप से भारत में आज महान धर्मप्रभावना हो रही है, उनके प्रतिनिधि कहान गुरु उनके पास से यहाँ आकर उनके शासन को शोभित कर रहे हैं।

सीमन्धर प्रभु की प्रतिष्ठा की रजत जयन्ती के पश्चात् तुरन्त ही गुरुदेव की 77वीं जयन्ती भी आ पहुँची। सोनगढ़ में यह जन्म-जयन्ती पाँच वर्ष बाद मनायी जा

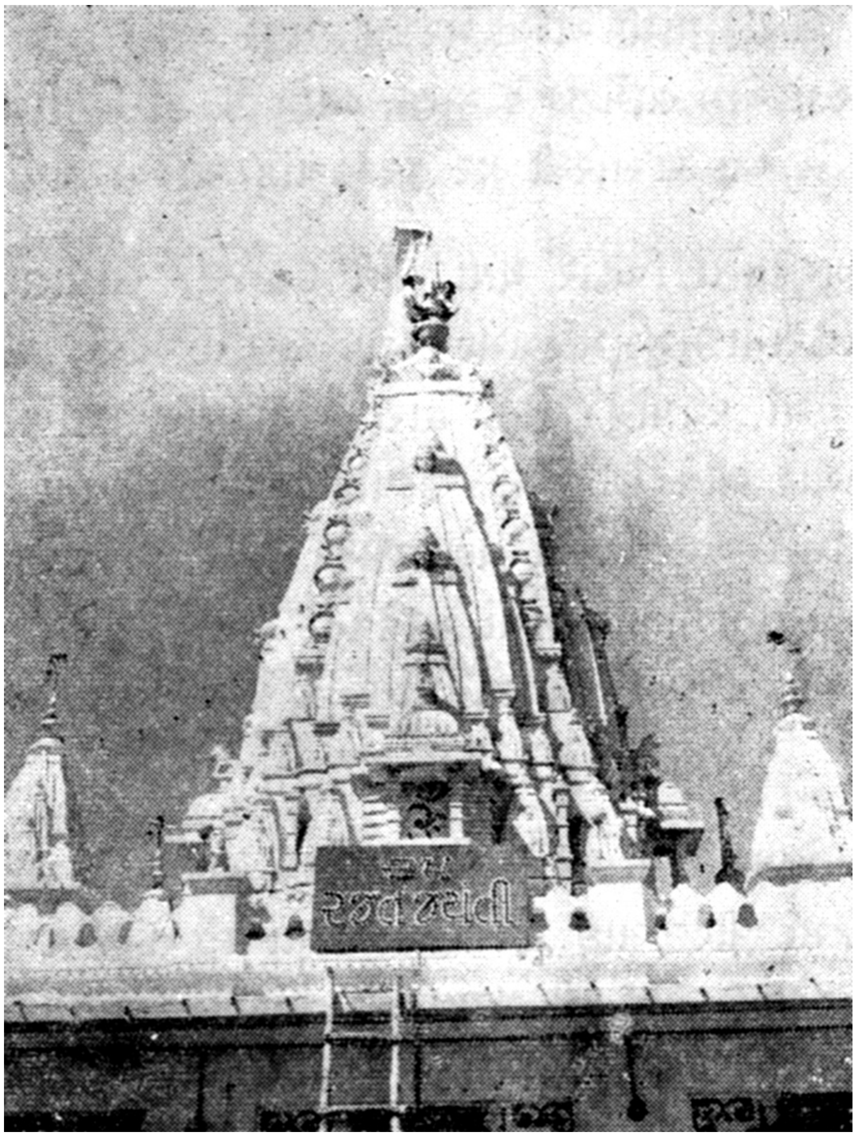

रही होने से नये ही उत्साह से मनायी जा रही थी। उस निमित्त सिद्धचक्र मण्डल विधान पूज्य बहिनश्री–बेन की ओर से हुआ था। सवेरे सीमन्धरनाथ के दर्शन करके, 77 कमानोंवाले आम्रफलों से झूलते मंगल मण्डप में होकर गुरुदेव मंगल मण्डप में पधारे—उस मण्डप की छत में चँवर–छत्र इत्यादि 77 मंगल वस्तुएँ झूलती थीं; 77 कलश, 77 स्वस्तिक और 77 दीपकों की हारमाला शोभित होती थीं। मण्डप के बीच सुन्दर धर्मचक्र घूमता था। दूज के दिन के प्रात:काल पाँच बजे कहान जन्म की मंगल बधाई से पूरा सोनगढ़ गाज उठा, घण्टेनाद और वाजिंत्र बजने लगे। हजारों भक्तों ने हृदय की उमंग से गुरुदेव की जन्म–जयन्ती मनायी। जिनवाणी की अद्‌भुत रथयात्रा, चाँदी के रथ में निकली, उसके सारथीरूप से कौन बैठा होगा, कहो, देखते हैं? जिनवाणी के रणकार जिनके हृदय में गूँजते हैं, ऐसे गुरुदेव उसके सारथी थे। मंगल प्रभात में 'आज मेरे सोना समो रे सूरज उगयो'—ऐसा बहिनें गाती थीं, तब प्रवचन में यह बात याद करके गुरुदेव ने ऐसा गाया कि—

मेरे अन्तर में स्वसंवेदन से चेतन सूर्य उगियो जी...

चेतन के अन्तर में स्वसंवेदन से समकित सूरज उगियो जी...

— इस प्रकार अद्‌भुत सुप्रभात उस दिन खिला था। अहा! आराधक जीव का जन्म, वही वास्तव में जन्म है—ऐसा ही जन्मोत्सव देखने से ख्याल आता था। देश–देश के भक्तों की ओर से लगभग 200 अभिनन्दन सन्देश आये थे। सोनगढ़ के उपरान्त भारत के बड़े–छोटे अनेक शहरों में भी प्रतिवर्ष गुरुदेव का मंगल जन्मोत्सव आनन्द से मनाया जाता है।

इस जन्मोत्सव प्रसंग पर गुरुदेव से अभूतपूर्व बातें सुनने को मिलीं, उसमें से थोड़े प्रसंगों का यहाँ उल्लेख करेंगे—

● गुरुदेव ने कहा कि श्रुतज्ञानी के हृदय में सर्वज्ञ तीर्थंकर विराजते हैं, यह बात बहुत वर्षों पहले पहली बार सुनी, तब मुझे बहुत रुच गयी; वाह! ज्ञानी के हृदय में से

तीर्थंकर भगवान बोलते हैं! जिसके हृदय में सर्वज्ञ विराजते हैं, उसे अनन्त भव होते ही नहीं। इसलिए सर्वज्ञ ने भी उसके अनन्त भव देखे ही नहीं। सर्वज्ञ का निर्णय जिस ज्ञान ने किया, उस ज्ञान में भव है ही नहीं। सर्वज्ञ का निर्णय बिना उनकी वाणी का (शास्त्र का) निर्णय नहीं हो सकता। सर्वज्ञ का अर्थात् कि ज्ञानस्वभाव का निर्णय, वह जैनशासन की मूल वस्तु है, वह ही धर्म का मूल है।

● छोटे बालक भी गुरुदेव के साथ बारम्बार नित नयी बातें करते हैं। एक बालक ने पूछा—गुरुदेव! आप गोरे और मैं काला, ऐसा कैसे? गुरुदेव कहते हैं—भाई! आत्मा कहीं काला या गोरा नहीं है। शरीर कहाँ आत्मा का है? मैं जीव और तू भी जीव। दोनों समान; बस! जीव तो शरीर से भिन्न रंगरहित ज्ञानस्वरूप है।

मैं काला नहीं, मैं तो आत्मा हूँ—ऐसा जानकर वह बालक प्रसन्न हुआ।

● संवत् 1989 के मगसर शुक्ल दसवीं को चेला गाँव में गुरुदेव को एक स्वप्न आया; गुरुदेव उस समय स्थानकवासी सम्प्रदाय में थे। स्वप्न में एक बड़ी हुण्डी मिली, परन्तु उस हुण्डी के साथ स्वप्न में ऐसा भी आया कि यह हुण्डी इस दुकान में (अर्थात् कि जिस सम्प्रदाय में तुम हो, उस सम्प्रदाय में) भुनाई जा सके, ऐसा नहीं है। इसे भुनाने के लिये दूसरी दुकान साहूकार की अर्थात् कि वीतराग मार्गी सन्तों की शोधनी पड़ेगी और इस स्वप्न के पश्चात् थोड़े ही समय में (संवत् 1991 में) गुरुदेव ने हुण्डी भुनाकर तत्त्व की मूल रकम प्राप्त कर ली।

● गुरुदेव कहते हैं कि—

– स्वानुभूति, वह धर्मात्मा का वास्तविक जीवन है;

– स्वानुभूति, वही धर्म के प्राण और धर्म का जीवन है;

– स्वानुभूति को पहिचाने तो ही धर्मी का वास्तविक जीवन पहिचाना जाता है।

– तेरा जीवन वास्तविक तेरा जीवन... जीना जाना, वह आत्म जीवन।

● एक बार (संवत्) 2022 के मगसर कृष्ण अमावस्या को गुरुदेव ने सर्वज्ञ की महिमा सम्बन्धी बहुत-बहुत भाव खोले; सर्वज्ञपद की धुन में वे झूलते थे, तब सर्वज्ञ की अपार महिमा का घोलन करते-करते गुरुदेव को सीमन्धरनाथ का विदेहक्षेत्र स्मरण में आया और उनका हृदय परमभक्ति से, किंचित् विरह की वेदनापूर्वक बोल उठा—

हम परदेशी पंथी साधु जी.... आ रे देश के नाहीं जी....
स्वरूप साधी स्वदेश जासुं, रहेशुं सिद्ध प्रभु साथ जी....
हम परदेशी पंथी साधु जी....

— तत्पश्चात् तो विदेहक्षेत्र की कितनी ही बातें स्मरण करके धर्मात्मा के साथ के कितने ही प्रसंग याद किये। गुरुदेव कहते हैं कि हम विदेह में भगवान के पास थे, वहाँ से यहाँ आये हैं। राम का स्वप्न भरत को मिला, उसी प्रकार विदेह में से हम यहाँ भरत में आ गये हैं। हमारे घर की यह बात नहीं है। यह तो साक्षात् भगवान के पास से आयी हुई बात है। जिसका महान भाग्य होगा, वह इसे समझेगा।

● बहुत वर्ष पहले गुरुदेव ने एक बार स्वप्न में समुद्र देखा। उसमें अपार लहरें उछलती थीं, परन्तु स्वयं को जिस ओर जाने की इच्छा हो, उस ओर के समुद्र में बीच में रास्ता बन जाये। इस प्रकार उछलते समुद्र के बीच भी निर्विघ्न मार्ग प्राप्त हो गया, सहज मार्ग कर दिया। इसी प्रकार इस पंचम काल में मिथ्यामार्ग के उछलते समुद्र के बीच भी गुरुदेव ने यथार्थ मार्ग खोज निकाला और उस मार्ग में गमन किया। जीव तैयार हो, वहाँ जगत में मार्ग हाजिर ही है।

— ऐसे धर्म के नित नये मधुर संस्मरणपूर्वक आनन्द से वैशाख शुक्ल दूज मनायी गयी।

इस दौरान एक विशेष घटना यह बनी कि पाँच वर्ष की बालिका (बजूभाई की पौत्री) राजुल को जातिस्मरण होने की बात प्रसिद्धि में आयी। पूर्व भव में (अर्थात् कि

पाँच ही वर्ष पहले) वह जूनागढ़ में थी और उसका नाम गीता था। उस समय की उसकी माता अभी भी जूनागढ़ में विद्यमान है। राजुल बहिन का परिचय देते हुए सभा में गुरुदेव ने कहा कि इस राजुल को तो जातिस्मरण में इसी क्षेत्र के साथ का सम्बन्ध है। इसलिए इसका प्रमाण बाहर में भी बताया जा सकता है, परन्तु बहिन को (बहिनश्री चम्पाबेन को) तो आत्मा के ज्ञान उपरान्त विदेहक्षेत्रसहित चार भव का ज्ञान है, वह सब अन्दर के प्रमाण से सिद्ध हो गया है, परन्तु यहाँ के जीवों को वह किस प्रकार बताया जा सकता है ?

वैशाख शुक्ल दूज के पश्चात् तुरन्त 15 दिन के लिए गुरुदेव राजकोट पधारे और ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी को पुनः सोनगढ़ पधारे। सोनगढ़ के शान्त-अध्यात्म वातावरण में वन-जंगल में एक बार फिर से गुरुदेव को मुनिदर्शन का भाव जागृत हुआ कि अहा! कोई दिगम्बर सन्त मुनि अभी अचानक आकाश में से उतरकर दर्शन दे तो कैसा अच्छा! मुनि के वीतरागी दीदार नजर से देखें, उनके मुख से झरती अध्यात्म की धारा सुने और उनके चरणों को भक्ति से सेवन करें। अभी विदेह में तो बहुत से मुनिवर हैं, उनमें से कोई एकाध मुनिराज आकाशमार्ग से पधारकर दर्शन दो।—वह धन्य घड़ी और धन्य भाग्य!

एक बार (लगभग 20 वर्ष पहले) दोपहर के समय गुरुदेव बाहर जंगल में गये, तब किसी विचार की धुन ही धुन में लम्बे समय तक बैठे रहे। समय होने पर भी गुरुदेव को वापस आया हुआ न देखकर यहाँ स्वाध्यायमन्दिर में तो कितने ही लोगों को चिन्ता हो गयी... और चारों ओर खोजबीन शुरु हुई। अन्त में एकाध घण्टे की चिन्ता के बाद, वे तो अपनी मस्ती में मस्तरूप से चले आ रहे थे! गुरुदेव पैदल या डोली के मार्फत विहार करते तब भी किसी समय ऐसे विचित्र प्रसंग बनते थे।

संवत् 2022 के श्रावण शुक्ल सप्तम का दिन भारत भर में तथा सोनगढ़ में 'सम्मेदशिखर दिन' के रूप में मनाया गया था। इस दौरान, सम्मेदशिखर सम्बन्ध में

दिगम्बर जैन समाज के सम्पूर्ण अधिकारों की सुरक्षा हो, इस प्रकार का करार बिहार सरकार के साथ हो गया था। श्रावण महीने के शिक्षणवर्ग के दौरान जयपुर से लगभग 150 मुमुक्षु गुरुदेव को जयपुर पधारने की विनती करने आये और सोनगढ़ का अध्यात्म वातावरण देखकर अत्यन्त ही प्रसन्न हुए। मध्यभारत के प्रधानश्री मिश्रीलालजी जैन गंगवाल भी साथ ही थे। जयपुर में फाल्गुन महीने में टोडरमल स्मारक भवन का उद्घाटन तथा उसके चैत्यालय में सीमन्धरनाथ की वेदी प्रतिष्ठा होनेवाली थी। इसलिए गुरुदेव ने जयपुर जाना स्वीकार किया। गुरुदेव के महान प्रभावनायोग के कारण लगातार धर्म के मंगल प्रसंगों के निमित्त विहार हुआ ही करता है।

गुरुदेव को किसी समय वैराग्यरस की अद्भुत खुमारी जगी हो और रात्रिचर्चा में उसे व्यक्त करते हों, तब पूरी सभा वैराग्य के रंग में रंग जाती है। छोटे से राजकुमार कहते हों कि हे माता! इस राजपाट में कहीं हमको सुख नहीं लगता, हमारा सुख हमारे अन्तर में है। उसे साधने के लिये अब हम वन में जायेंगे और मुनि होंयेगे। हे माता! तू आज्ञा दे। तू हमारी अन्तिम माता है... अब दूसरी माता के गर्भ में अवतार नहीं करेंगे। दूसरी माता को नहीं रुलायेंगे...' ऐसा कहकर कुमार दीक्षा लेते हों और छोटे से हाथ में पिच्छी-कमण्डलसहित मुनिरूप से विचरते हों—वे दृश्य कैसे होंगे! ऐसे प्रसंगों का तथा सीताजी के वनवास इत्यादि का वैराग्यरस भीना वर्णन सुनने पर मुमुक्षु को इस संसार का रस टूट जाता है और तीव्र में तीव्र वैराग्य भाव पोषित होते हैं। आहा! मानो आज ही उस संयम के वीतरागमार्ग में चले जायें।

बहुत बार रात्रि में चिन्तन करते-करते जागृत हुई कोई मधुर चैतन्य ऊर्मी सवेरे गुरुदेव भावभीने उद्गार द्वारा व्यक्त करते हैं। एक बार गुरुदेव ने कहा—प्रभु! तू स्वयं अनन्त शक्ति का धाम है, फिर दूसरे अन्तर्जल्प या बहिर्जल्प करने की वृत्ति का क्या काम है? बाहर जाती हुई वृत्ति को छोड़कर एक अनन्त शान्तिमय धाम प्रभु आत्मा में ही तू लवलीन हो... उसकी ही प्रीति करके उसी में रम।

साथ ही साथ एक भगवान की बात भी सुनो! भगवान तो सही, परन्तु अद्‌भुत और आश्चर्यकारी! स्फटिक जैसे उज्ज्वल... परन्तु वे किसमें से बने हुए, खबर है ?—मीठी मिश्री की अखण्ड डली में से उत्कीर्ण वे भगवान खड्‌गासन थे। मिश्री के भगवान अर्थात् मानो मीठे अमृतरस से भरपूर, अतीन्द्रिय आनन्द से भरपूर और कारीगरी तो ऐसी आश्चर्यकारी कि मानो शाश्वत् रत्न की मूर्ति हो और बोलती हो! ऐसे अद्‌भुत उन भगवान को संवत् 2023 की शरद पूर्णिमा की रात्रि में गुरुदेव ने स्वप्न में देखा। अहो! शरद पूर्णिमा को मिश्री के प्रभुदर्शन का यह मीठा स्वाद... वह मधुर आह्लाद! उस जिनप्रतिमा के आनन्दकारी दर्शन का वर्णन करते हुए उल्लासपूर्वक गुरुदेव कहते हैं कि उस प्रतिमा की आश्चर्यकारी अद्‌भुतता का वर्णन मैं वचन से बराबर नहीं कह सकता। जिनगुण चिन्तन में दिन–रात मग्न रहनेवाले गुरुदेव स्वप्न में भी बारम्बार जिनदेव को देखते हैं। वह अमृत स्वादमय मिश्री के जिनप्रतिमा का दर्शन कोई मीठे–मधुर प्रभावशाली फल की भवितव्यता सूचित करता है। हे गुरुदेव! हमको भी जिनमार्ग के इस अमृत का मधुर स्वाद चखाओ।

— और इस स्वप्न का मधुर फल चखने के लिये ही मानो सिद्ध भगवन्तों के देश में जाने का और सम्मेदशिखर सिद्धिधाम की यात्रा करने का निश्चित हुआ। वाह! गुरुदेव के साथ सन्तों के धाम में जायेंगे और वहाँ गुरुदेव अपने को सिद्ध भगवान दिखलायेंगे।

परम सत्य तत्त्व की गम्भीरता और भारत की अभी की परिस्थिति देखकर गुरुदेव किसी–किसी समय कहते हैं कि—बापू! यह कोई साधारण बात नहीं हैं, यह तो सर्वज्ञ परमात्मा के पास से आया हुआ सत्य का प्रवाह है। यहाँ के जीवों के भाग्य से यह महानिधान आ गया है। जो इस निधान को ठुकरायेगा, वह पछतायेगा। महाभाग्य से प्राप्त यह अवसर चूकनेयोग्य नहीं है। जगत के कोलाहल में न रुककर, वीररस प्रगट करके आत्मा को साध लो।

संवत 2023 में फिर से गुरुदेव का मंगल विहार आया। पंच कल्याणक, वेदी प्रतिष्ठायें, सम्मेदशिखरजी इत्यादि तीर्थयात्राएँ तथा महान आनन्दकारी एक अविचारित प्रसंग, इन सब मंगल कार्यों के लिये गुरुदेव ने पौष शुक्ल बारह के दिन सोनगढ़ से प्रस्थान किया। चलो, हम भी गुरुदेव के साथ जायें और मंगल प्रसंगों का साक्षात् अवलोकन करके उनका आनन्द लें।

'आत्मा को साधने के लिये सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्ररूप जो निज कार्य, वह मंगल है।'—ऐसे मंगल उद्गारपूर्वक गुरुदेव ने प्रस्थान किया और अमरापुर गाँव में पहुँचे; छोटे से गाँव में ब्रह्मचारिणी ताराबेन और उनके परिवार ने सत्संग का अद्भुत लाभ लिया। पश्चात् लाठी होकर अमरेली पधारे। पूज्य शान्ताबेन का यह गाँव। यहाँ संवत् 1976 से लेकर आज तक के कितने ही प्राचीन संस्मरण गुरुदेव ने याद किये थे। वहाँ से जदसण पधारे और नवीन जिनमन्दिर में वर्धमान जिनेन्द्र की प्रतिष्ठा का महोत्सव हुआ। यहाँ का राजकुटुम्ब भी प्रवचनों का लाभ लेता था।

जदसण से फिर गुरुदेव आंकड़िया गाँव में पधारे। आत्मधर्म मासिक के प्रकाशन का जहाँ से प्रारम्भ हुआ, ऐसे इस छोटे से गाँव के नवीन जिनमन्दिर में पंच कल्याणक का विशाल उत्सव हुआ। उत्सव में सम्पूर्ण गाँव की जनता ने भाग लिया। ग्राम्य जनता का उत्साह भी ऐसा कि किसान लोगों के झुण्ड के झुण्ड गीत गाते–गाते प्रवचन सुनने आते थे। मन्दिर निर्माण करानेवाले स्वर्गीय श्री बालचन्दभाई के बन्धु कपूरचन्दभाई इत्यादि तो इस पंच कल्याणक के दृश्य पहली ही बार निहारकर ऐसे मुग्ध हो गये कि उन्होंने कहा—वाह! यह तो भारी सरस! हृदय को हिला डाले ऐसा है। हमने ऐसा तो कभी देखा नहीं था। (कहाँ से देखा हो पहले तो स्थानकवासी थे न?) यहाँ तालाब के किनारे खड़े–खड़े गिरनार दिखता है और पंच कल्याण नेमिप्रभु के ही हुए थे, इस उत्सव प्रसंग में अमरेली के भावी जिनालय के लिये श्री शान्तिनाथ तथा सीमन्धर भगवान की प्रतिमाजी की भी प्रतिष्ठा हुई थी। उत्सव के समय गाँव के

युवक किसान भाई भी समयसार के गीत गाते थे। प्रतिष्ठा माघ शुक्ल एकम् को हुई थी।

आंकडिया से अमरेली, बरवाळा—उमराला तीनों गाँवों से गुजरते हुए राणपुर तथा अहमदाबाद होकर हिम्मतनगर आये। यहाँ महावीरनगर सोसाइटी में सवा लाख रुपये के खर्च से नवीन जिनमन्दिर बनाया गया है। अत्यन्त उल्लासपूर्ण वातावरण के बीच भव्य पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ। हेलीकॉप्टर विमान द्वारा पुष्पवृष्टि भी हुई। इस प्रसंग पर लगभग 25000 लोगों का आनन्द मेला हुआ था। मूलनायक महावीर प्रभु और ऊपर खड्गासन शान्तिनाथ प्रभु की प्रतिमाजी से जिनमन्दिर बहुत शोभित होता है।

हिम्मतनगर के महोत्सव के पश्चात् अहमदाबाद होकर, बीच में एक टाइम सोनगढ़ में विश्राम लेकर गुरुदेव भावनगर पधारे। गुरुदेव ने 39 वर्ष पहले (संवत् 1986में) चम्पाबेन को पहले-पहले यहाँ भावनगर में देखा था और 'इस बहिन का आत्मा कोई अलौकिक है' ऐसा उन्हें देखते ही लगा। पूज्य चम्पाबेन तो उस समय 16-17 वर्ष की ही थीं। ऐसे अनेक संस्मरण गुरुदेव ने भावनगर में ताजा किये थे। यहाँ से अहमदाबाद, हिम्मतनगर होकर आबू पहुँचे। फिर सिरोही, शिवगंज और पाली आये। पाली हीराचन्दजी महाराज का गाँव होने से अनेक प्रसंग गुरुदेव स्मरण करते थे। दीक्षा के पश्चात् एक बार उन्होंने कहा कि कानजी! हमने तुमसे काम कराने के लिये तुम्हें दीक्षा नहीं दी है, परन्तु तुम जैनशासन का स्तम्भ हो—इसलिए दीक्षा दी है। यह दीक्षा तो भले दीक्षा के ठिकाने रही परन्तु 'जैनशासन का स्तम्भ' होने की भविष्यता तो एकदम सत्य सिद्ध हुई।

पाली के पश्चात् सोजत, किशनगढ़, कुचामन होकर वच्छराजजी सेठ के लाडनूं गाँव आये। यहाँ लगभग बीस लाख रुपये के खर्च से तैयार हुए सुखदेव आश्रम में प्रवेश करते ही विशाल चौक में खड्गासन बाहुबली भगवान, मानस्तम्भ और अन्दर जिनमन्दिर में स्वर्णबिम्ब जैसे जगमगते अति भाववाही आदिनाथ भगवान,

अगल–बगल में भरत–बाहुबली, कलामय तोरणद्वार इत्यादि के दर्शन से आनन्द होता है। तदुपरान्त जमीन में से निकले हुए दूसरे प्राचीन मन्दिर भी दर्शनीय है। इस लाडनूं शहर में 27 बार तो पंच कल्याणक उत्सव हुए हैं। लाडनूं के पश्चात् सीकर होकर दिनांक 6–3–1967 के दिन जयपुर शहर में प्रवेश किया।

जयपुर का प्रभावशाली उत्सव

यहाँ लगभग पाँच लाख रुपये के खर्च से सेठ श्री पूरणचन्दजी गोदीका ने टोडरमल स्मारक भवन बनाया है, उसका उद्घाटन, उसमें जिनबिम्ब की वेदी प्रतिष्ठा, पण्डित टोडरमलजी का द्विशताब्दी उत्सव इत्यादि प्रसंग थे। उत्सव के लिये बहुत उल्लास और बड़ी तैयारियाँ थीं। उसी समय कड़क कर्फ्यू (घर से बाहर निकलने का कड़क प्रतिबन्ध) आ पड़ा, तथापि उत्सव तो चालू ही रहा। चारों ओर भरी बन्दूक तानकर लश्कर घूमता हो, उसके बीच भी जगत में परम अहिंसा का ध्वज फहरानेवाले जिनदेव की प्रतिष्ठा का उत्सव आयोजित था—यह देखकर आश्चर्य होनेयोग्य था। मुल्ताननगर (कि जहाँ के साधर्मियों के लिये पण्डितजी ने रहस्यपूर्ण चिट्ठी लिखी थी और अभी जो पाकिस्तान में है), वहाँ से आकर यहाँ आदर्शनगर में रहनेवाले मुल्तानी साधर्मी भाईयों की विनती से गुरुदेव ने वहाँ प्रवचन किया था और टोडरमलजी की महिमा की थी। आदर्शनगर में नया जिनालय दो–तीन लाख रुपये के खर्च से सुन्दर बना है। उसमें मुल्तान से साथ में लाये हुए सैकड़ों जिनबिम्ब हैं, उनके दर्शन किये। सोनगढ़ में जिस दिन सीमन्धर प्रभु की प्रतिष्ठा हुई, उसी दिन (फाल्गुन शुक्ल दूज को) जयपुर में भी सीमन्धर भगवान की प्रतिष्ठा हुई; टोडरमल स्मारक भवन का उद्घाटन हुआ तथा टोडरमलजी जिस जिनमन्दिर में शास्त्र वांचन करते थे, उस मन्दिर में 200 वर्ष से कलश–ध्वज चढ़े नहीं थे, वे भी आज ही गुरुदेव के सुहस्त से मंगल स्वस्तिक पूर्वक चढ़े और वहाँ ही हजारों लोगों की सभा में 'मोक्षमार्ग एक ही है, दो नहीं'—इस विषय पर मोक्षमार्गप्रकाशक में से गुरुदेव ने प्रवचन किया।

अहा! कर्फ्यू के बन्धन में पड़ी हुई जयपुरनगरी आज कुछ मुक्ति की हवा मनाती थी। टोडरमल स्मारक भवन का विस्तार पैंसठ हजार, चौसठ फीट से अधिक है और उसके एक कमरे में सीमन्धर भगवान का चैत्यालय है। सेठ श्री शान्तिप्रसादजी शाहू की अध्यक्षता में टोडरमल द्विशताब्दी महोत्सव का उद्घाटन सेठ श्री नवनीतलालभाई ने किया और गुरुदेव ने 'मंगलमय मंगल करण वीतराग विज्ञान' इस पर मंगल प्रवचन करके वीतराग विज्ञान की महिमा समझायी। टोडरमलजी ग्रन्थमाला के प्रथम पुष्परूप से मोक्षमार्गप्रकाशक की 11000 प्रतियाँ प्रकाशित हुईं। जयपुर उत्सव के दौरान गुरुदेव खानियांजी तथा पद्मपुरी के जिनमन्दिरों के दर्शन करने गये थे। सांगानेर के प्राचीन जिनालयों के भी दर्शन किये। सुन्दरता के कारण देश–विदेश में प्रसिद्ध ऐसी इस जयपुर नगरी को वास्तविक गौरव तो यहाँ के कितने ही जिनालय और टोडरमलजी इत्यादि अनेक विद्वानों ने ही प्रदान किया है। टोडरमलजी के जीवन पर बालकों का सुन्दर नाटक तथा सीताजी के वनवास और अग्निपरीक्षा का भी सुन्दर नाटक हुआ था। और जयपुर उत्सव के अन्तिम दिन फाल्गुन शुक्ल पंचमी को महावीर पार्क के प्रवचन में लगभग दस हजार लोग थे।—यह दृश्य देखकर विद्वान भी आश्चर्य को प्राप्त थे। पश्चात् जयपुर के इतिहास में कदाचित् अभूतपूर्व ऐसी जिनेन्द्र भगवान की रथयात्रा निकली थी; जिसमें अठारह हाथी थे, कहान गुरु जिनरथ के सारथी थे। अनेक वैभव सम्पन्न इस रथयात्रा को निहारकर लाखों लोग आश्चर्यचकित थे। राजस्थानी–गुजराती–मुल्तानी सभी भक्त एक–दूसरे के साथ उमंग से जिनभक्ति करते थे। दस–दस दिन के कर्फ्यू की वेदना में से छूटी हुई जयपुर नगरी यह अद्भुत रथयात्रा देखकर आनन्द से प्रफुल्लित बनी थी। रथयात्रा की पूर्णता होने पर अठारह हाथियों ने सूँड ऊँची करके सलामी दी, कि बराबर उसी समय कुदरत की अमी वृष्टिरूप से आकाश में से झरमर छींटे बरसे। अद्भुत था जयपुर का वह प्रभावशाली उत्सव—और उससे भी अधिक रोमांचकारी

आनन्द का प्रसंग अभी दूसरे दिन बननेवाला है—कहाँ? वह तो अभी आप इसी पुस्तक में पढ़ेंगे।*

❀❀❀

फाल्गुन शुक्ल छठवीं के दिन जयपुर से सम्मेदशिखरजी के यात्रासंघ का चार सौ यात्रियों सहित प्रस्थान हुआ। महावीरजी की प्रशान्तमूर्ति के दर्शन किये और फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को आये—बयाना शहर।

बयाना शहर में सीमन्धर भगवान के दर्शन से गुरुदेव को अपूर्व उल्लास और गुरुमुख से पूर्व भव का आनन्दकारी वर्णन

बयाना शहर में सीमन्धर भगवान के प्राचीन प्रतिमाजी (संवत् 1507 के) विराजमान हैं। प्रतिमाजी के शिलालेख में लिखा है कि 'पूर्व्व विदेह के तीर्थकर्ता श्री जीवन्तस्वामी श्री सीमन्धरस्वामी।' इन विदेहीनाथ के दर्शन से गुरुदेव को अलौकिक ऊर्मियाँ जागृत हुईं, उनके साथ के पूर्वभव के सम्बन्ध के स्मरण ताजा हुए और प्रवचन के समय अत्यन्त आनन्द भरे वातावरण में यह बात गुरुदेव ने प्रसिद्ध की। मंगल प्रवचन में गुरुदेव ने कहा कि—अभी सीमन्धर भगवान पूर्व विदेह में तीर्थंकररूप से विचरते हैं। दो हजार वर्ष पहले जिनकी वाणी सुनकर कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने शास्त्र रचे, वे ही सीमन्धर भगवान अभी भी विराज रहे हैं। हमारे सोनगढ़ में भी सीमन्धर भगवान की स्थापना है, यहाँ सीमन्धर भगवान की 500 वर्ष प्राचीन प्रतिमा के दर्शन से हमको बड़ा प्रमोद आया।

यह सीमन्धर भगवान हमारे प्रभु हैं, हमारे देव हैं, इनका हमारे ऊपर महान उपकार है। इससे पहले के भव में हम इन भगवान के पास थे, परन्तु हमारी भूल के कारण से यहाँ भरत में आये हैं। कुन्दकुन्दाचार्यदेव यहाँ से सीमन्धर परमात्मा के पास

* जयपुर उत्सव के प्रभावशाली प्रभावना के समाचार इसी पुस्तक के परिशिष्ट में आत्मधर्म से समाहित किये गये हैं।

आये और भगवान की वाणी सुनी, तब हम भी वहाँ उपस्थित थे। इन दोनों बहिनों का आत्मा भी पुरुष भव में वहाँ उपस्थित थे और वे हमारे मित्र थे। कुन्दकुन्दाचार्य तो हमने साक्षात् देखे हैं। विशेष क्या कहें ? और भी बहुत गम्भीर बात है। सीमन्धर परमात्मा का यहाँ विरह हुआ; यहाँ के भगवान की बात सुनकर और आज साक्षात् दर्शन कर हमको बहुत प्रमोद हुआ। (गुरुदेव के इस पूर्वभव सम्बन्धी दृश्य आप चित्र में देख सकेंगे।)

आज गुरुदेव के अन्तर में कोई अलग ही उत्साह था। इसलिए अन्तर में घुट रही एक अत्यन्त महत्व की सोनेरी बात प्रसिद्ध की... सीमन्धरनाथ के दर्शन से अन्तर में जागृत विदेहक्षेत्र के मधुर संस्मरण आज गुरुदेव के हृदय में आनन्द की ऊर्मियाँ जागृत करते थे। और हृदय के बहुत-बहुत भाव खोलने का मन हो रहा था। पूज्यश्री चम्पाबेन को पूर्व के चार भव का जातिस्मरणज्ञान है और पूर्व भव में श्री सीमन्धर भगवान के पास थे, वह बात प्रसिद्ध करते हुए अत्यन्त प्रमोद और प्रसन्नता से गुरुदेव ने कहा कि—

देखो, यहाँ सीमन्धर भगवान विराजमान हैं; सीमन्धर भगवान की यहाँ साक्षी है; इन भगवान की साक्षी में यहाँ यह बात प्रसिद्ध करता हूँ कि इन चम्पाबेन को (सामने बैठी हुई हैं उन्हें) चार भव का जातिस्मरणज्ञान है। यह दोनों बहिनें (चम्पाबेन और शान्ताबेन) पूर्व में महाविदेहक्षेत्र में भगवान के पास थे, वहाँ से यहाँ आये हैं। यह दोनों बहिनें, मैं तथा दूसरे एक भाई थे—ऐसे चार जीव भगवान के समीप में थे, परन्तु हमारी भूल से हम इस भरतक्षेत्र में आये। यहाँ 500 वर्ष प्राचीन सीमन्धर प्रभु विराज रहे हैं, इन्हें देखकर बहुत प्रमोद हुआ। इन परमात्मा के समीप में मैं यह बात आज यहाँ खुल्ली रखता हूँ कि यह बहिनें और हम पूर्व में सीमन्धर परमात्मा के पास थे और इन चम्पाबेन को चार भव का ज्ञान है। आत्मा के ज्ञान उपरान्त इन्हें तो चार भव का ज्ञान है। यह सीमन्धर भगवान की साक्षी में समाज में यह

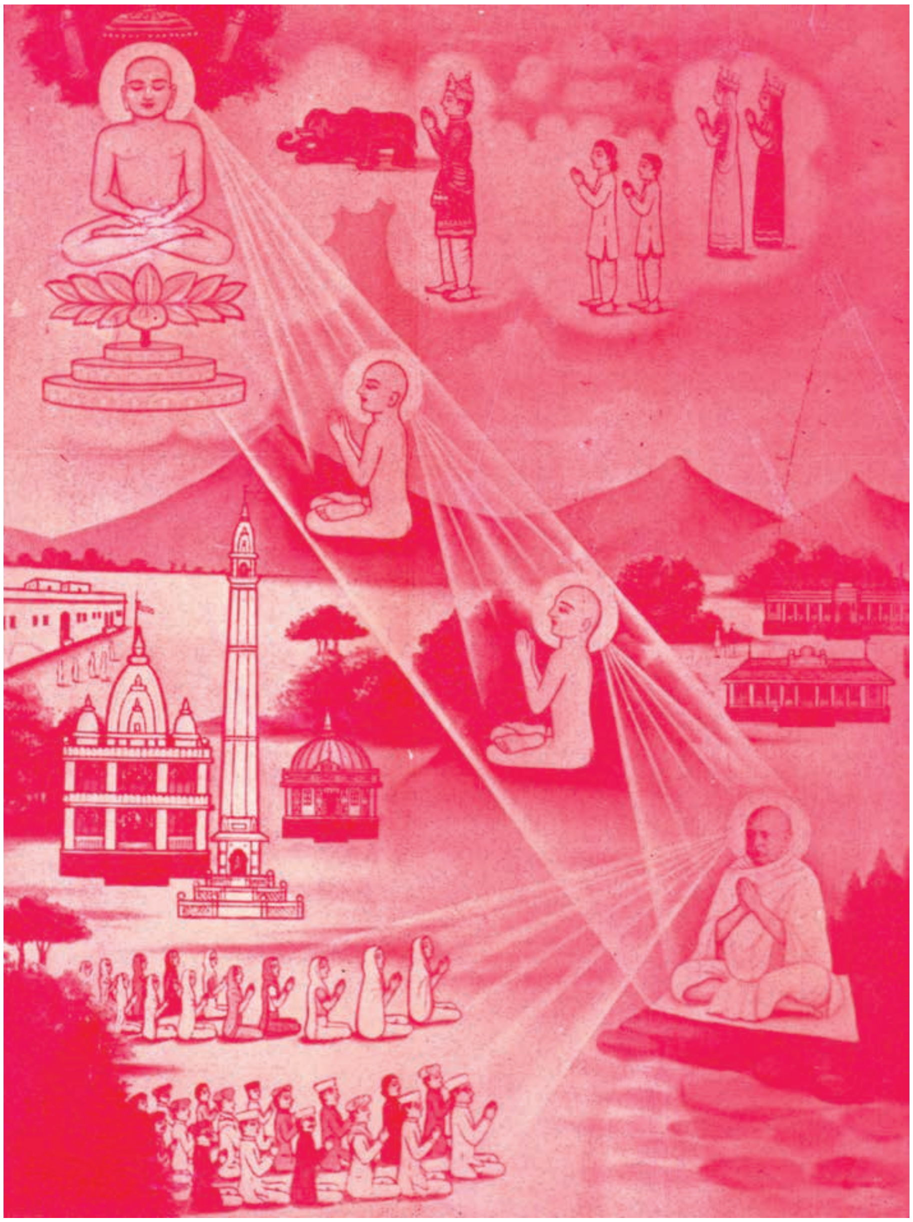

कुन्दकुन्दाचार्य विदेह में आये, तब हम वहाँ थे; इन दोनों बहिनों के आत्मा भी पुरुष भव में वहाँ थे और वे हमारे मित्र थे....

पूज्य गुरुदेव, बयाना शहर में।

बात बाहर प्रसिद्ध की है। हमारे ऊपर भगवान का महा उपकार है।

अहा! सीमन्धर भगवान के समीप में गुरुदेव के ऐसे परम भावभीने हृदयोद्‌गार सुनकर श्रोताजन हर्षानन्द में लवलीन हुए... यात्रा में सब धन्यता अनुभव करने लगे। विदेहीनाथ सीमन्धर प्रभु की गुरुदेव ने महान आनन्दपूर्वक यात्रा करायी। एक-एक यात्री दूसरा सब भूलकर सीमन्धरनाथ की चर्चा में लवलीन थे। बयाना नगर में जहाँ देखो वहाँ गुरुदेव के आज के हृदयोद्‌गार का वातावरण दिखाई देता था। जयपुर के भव्य उत्सव के पश्चात् तुरन्त ऐसा महान आनन्दकारी प्रसंग बना—यह वास्तव में सीमन्धर भगवान के प्रताप से गुरुदेव द्वारा भरतक्षेत्र में महान धर्म वृद्धि होने का सूचित करता है।

सीमन्धर भगवान... बयाना शहर

यह सीमन्धर भगवान हमारे प्रभु हैं, हमारे देव हैं, इनके हमारे ऊपर महान उपकार है। इससे पहले के भव में हम भगवान के पास थे।

—पूज्य गुरुदेवश्री के हृदयोद्गार

जय हो जीवन्तस्वामी सीमन्धरनाथ की....
जय हो सीमन्धर नन्दन गुरुदेव की....
जय हो विदेह से पधारे हुए सन्तों की....

❀❀❀

इस प्रकार बहुत ही प्रमोदपूर्वक गुरुदेव ने सीमन्धर प्रभु के चरण सान्निध्य में हृदय के भाव खोले। श्रोताजनों के हर्ष का तो आज पार नहीं था। बयाना से ऐसी आनन्दकारी यात्रा की तो किसी को कल्पना भी नहीं थी। बयाना शहर मानो आज सीमन्धरनगर बन गया था। आज के आनन्दकारी प्रसंग की ही चर्चा गुरुदेव बारम्बार करते थे। अभी भी हृदय के बहुत-बहुत भाव खोलने का गुरुदेव का मन था। प्रसन्नचित्त से बारम्बार उन्होंने कहा—कोई लोग कहते हैं कि तुमने सीमन्धर प्रभु की प्रतिमा क्यों पथरायी ? परन्तु भाई ! प्रतिमा तो चौबीस तीर्थंकरों की भाँति ही विद्यमान तीर्थंकरों की भी होती है। यहाँ 500 वर्ष पहले सीमन्धर प्रभु की स्थापना हुई है—यही इसका बड़ा प्रमाण है; और प्रतिमा के ऊपर सीमन्धर प्रभु का लेख अत्यन्त स्पष्ट है। उन्हें **जीवन्त स्वामी** अर्थात् कि विद्यमान तीर्थंकर कहा है। उनके दर्शन का विचार था, वह आज सफल हुआ और भगवान के समीप में यह बात प्रसिद्ध की, वह मंगल है।

यहाँ तो सीमन्धर भगवान की स्थापना है और महाविदेह में साक्षात् सीमन्धर परमात्मा अभी विराजते हैं। इन चम्पाबेन को चार भव का ज्ञान है। पूर्व भव में हम चार जीव भगवान के पास थे, यह इनके ज्ञान में स्पष्ट भासित हुआ है; दूसरा भविष्य का भी बहुत है। आत्मज्ञान के उपरान्त इन्हें तो चार भव का ज्ञान है। बीस वर्ष में आज यहाँ सीमन्धर भगवान की साक्षी में यह बात प्रसिद्ध करता हूँ। पूर्व भव में यह दोनों बहिनें और मेरा आत्मा (गुरुदेव का आत्मा-राजकुमाररूप से) वहाँ भगवान के समीप में थे। वहाँ से हम चार जीव इस भरतक्षेत्र में आये हैं। यहाँ भगवान के समीप में आज समाज में यह बात मैं प्रसिद्ध करता हूँ।

गुरुदेव के श्रीमुख से बारम्बार ऐसी आनन्दकारी घोषणा सुनकर भक्तों को अत्यन्त ही हर्ष हो रहा था। वैसे तो गुरुदेव बहुत भक्तों से बारम्बार यह बात करते थे। परन्तु भरी सभा के बीच, इतनी प्रसन्नतापूर्वक और सीमन्धर भगवान की साक्षी में गुरुदेव ने आज जो प्रसिद्धि की, वह विशिष्ट नवीनता थी और श्रोताजन यह सुनकर धन्यता अनुभव करते थे। वाह! आज की यात्रा सफल हुई। गुरुदेव भी यहाँ के प्रसंग को बारम्बार सैकड़ों बार आनन्द से स्मरण करते हैं और विदेह के साधर्मी भी यह बात जानकर आनन्दित होते होंगे।

मानो विदेहक्षेत्र की यात्रा करते हों, ऐसी उमंग से यह बयाना की यात्रा करके गुरुदेव ने इन सीमन्धर भगवान को सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध कर दिया। इतना ही नहीं, इन सीमन्धर भगवान के साथ के पूर्व भव के सम्बन्ध को भी आनन्दपूर्वक प्रसिद्ध करके महान मंगल किया।

सीमन्धर भगवान की जय हो!

दोपहर में भी पुनः-पुनः सीमन्धरनाथ का अवलोकन करने गुरुदेव पधारे थे; बार-बार सूक्ष्मता से अवलोकन करते हुए उनके हृदय में नित नये भाव जागृत होते थे और पूर्व के बहुत मधुर स्मरण ताजा होते थे। तब भक्तों को ऐसा लगता था कि यहाँ इस भरतक्षेत्र में संवत् 1507 में जब इन सीमन्धर भगवान की स्थापना होती होगी, तब गुरुदेव और पूज्य बहिनश्री-बेन इत्यादि का आत्मा तो विदेहक्षेत्र में साक्षात् सीमन्धरनाथ की सेवा करते होंगे! उस समय बयाना में किसे कल्पना होगी कि 516वर्ष बाद साक्षात् सीमन्धर भगवान के पास के भक्त यहाँ आकर इन सीमन्धरनाथ के दर्शन-पूजन करेंगे! दोपहर में भक्तों को भावना जागृत हुई कि गुरुदेव के साथ यहाँ आये हैं तो चलो, भगवान का अभिषेक भी करें और गुरुदेव से भी अभिषेक करायें। उत्साह से अभिषेक के लिये बोली हुई और गुरुदेव ने स्वहस्त से भावभीने चित्त से अपने प्रिय नाथ का अभिषेक किया। गुरुदेव के हस्त से सीमन्धरनाथ के अभिषेक का

दृश्य देखकर यात्रिक संघ में तथा बयाना की जनता में हर्षपूर्वक जय–जयकार छा गया और सीमन्धरनाथ की इस यात्रा की प्रसन्नता में कुल रुपये 5555 (पाँच हजार पाँच सौ पचपन) जिनमन्दिर (बयाना) को अर्पण किये गये। दोपहर के प्रवचन में भी गुरुदेव ने बारम्बार अपना प्रमोद व्यक्त किया था। प्रवचन का स्थान बराबर सीमन्धर भगवान के सन्मुख निकट में ही था, इसलिए गुरुदेव को विशेष भाव उल्लसित होते थे (इस प्रवचन के लिये देखो, आत्मधर्म, अंक 282) *

आज दिन भी फाल्गुन शुक्ल सप्तमी का था; (दस वर्ष पहले इसी दिन सम्मेदशिखरजी की यात्रा की थी और अभी भी उसी की यात्रा करने जा रहे थे)। प्रवचन के पश्चात् फिर से सीमन्धर प्रभु के दर्शन करके बयाना से प्रस्थान किया।

सम्मेदशिखर यात्रा करके सोनगढ़ की ओर

बयाना के पश्चात् फिरोजाबाद, जसवन्तनगर, इटावा, कानपुर, इलाहाबाद (प्रयाग) होकर फाल्गुन शुक्ल ग्यारह के दिन बनारस (काशी) पहुँचे। चार प्रभु के जन्मधाम की यात्रा की। पश्चात् डालमियानगर होकर सम्मेदशिखर पहुँचे और फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को आनन्दपूर्वक उस सिद्धिधाम की यात्रा की। अन्तिम पारस टोंक पर गुरुदेव ने स्तवन गवाया और 'सम्मेदशिखर की जय हो... जय हो...', ऐसे हस्ताक्षर करके दिये। तत्पश्चात् गिरडीह, ऋजुवालिका, वालिका (खराखर) नदी, ईसरी आश्रम, पावापुर, राजगृही–विपुलाचल, नालन्दा, कुण्डलपुर, कोडरमा, झुमरीतलैया, हजारी बाग होकर रांची आये। यहाँ ब्रह्मचारिणी कोकिलाबेन और उनके परिवार ने तथा अन्य मुमुक्षुओं ने विशेष उत्साह से लाभ लिया। चैत्र कृष्ण दशमी को रांची से प्रस्थान किया और धनबाद, आसनसोल, चिनसुरा होकर कोलकाता पहुँचे। कोलकाता में तीन दिन रहकर धनबाद और ईसरी दो–दो दिन रहे। थकान के कारण तबियत जरा अस्वस्थ होने से सिद्धिधाम की मधुर छाया में (ईसरी

* पाठकवर्ग की सुविधा के लिये प्रस्तुत प्रवचन इसी पुस्तक में परिशिष्ट में दिया जा रहा है।

में) विश्राम लिया। (गया, फतेहपुर, तथा मैनपुरी के कार्यक्रम रद्द करने पड़े)। ईसरी से ट्रेन द्वारा कोलकाता, वहाँ से विमान द्वारा आगरा होकर फिरोजाबाद आये; सेठ श्री छदामीलालजी ने उत्साह से स्वागत किया। तत्पश्चात् बुलन्दशहर, गाजियाबाद और शाहदरा होकर दिल्ली आये। लाल मन्दिर के बाजू में मण्डप में प्रवचन होते थे, भव्य रथयात्रा निकली थी, तथा समन्तभद्र विद्यालय में विद्यानन्दजी महाराज के साथ मुलाकात भी हुई थी। पश्चात् मथुरा सिद्धक्षेत्र की यात्रा करके, आगरा में महावीर जयन्ती की और जयपुर पधारे। थकान और गर्मी के कारण यहाँ गुरुदेव ने चार दिन आराम लिया। (इससे अजमेर, चित्तौड़, कूण और भिंडर का प्रवास रद्द करना पड़ा। कूण ग्राम में वेदी प्रतिष्ठा हुई थी)। जयपुर से प्लेन द्वारा उदयपुर आये। बारह मील दूर डबोक गाँव में एक दिन आराम किया। वैशाख कृष्ण पंचमी को उदयपुर में प्रवेश किया और नवीन जिनालय में वेदी प्रतिष्ठा का भव्य उत्सव मनाया। राणा प्रताप की यह रमणीय नगरी प्राकृतिक सौन्दर्य और जैनधर्म के प्राचीन गौरव से शोभ रही है। यहाँ एक मन्दिर में संगमरमर के सम्मेदशिखर की विशाल रचना है। भव्य रथयात्रा के लिए अजमेर से आये हुए स्वर्णरथ में सारथीरूप से कहान गुरु बैठै थे; उदयपुर में चन्द्रप्रभस्वामी इत्यादि भगवन्तों की प्रतिष्ठा करके गुरुदेव ने गुजरात में प्रवेश किया और बावणवाड़ा आये, वहाँ से अहमदाबाद होकर बोटाद आये; बोटाद शहर में आनन्दपूर्वक गुरुदेव का 78वाँ जन्मोत्सव मनाया गया। वैशाख शुक्ल तीज को राजकोट पधारे और वहाँ जैन शिक्षणवर्ग चला। ज्येष्ठ कृष्ण नौ के दिन पुनः सोनगढ़ पधारे। सोनगढ़ में आते ही मंगलमय स्वानुभवरस की महिमा करते हुए गुरुदेव ने कहा कि—स्वानुभूति में वेदन में आनेवाला शान्तरस वह 'रसेन्द्र है', सब रसों में वही श्रेष्ठ है। ऐसे शान्तरस का अध्यात्म झरना सोनगढ़ में बहने लगा।

नौ कुमारिका बहिनों की ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा

अध्यात्मरस के समक्ष संसार का रस कहाँ से टिक सकता है ? इसलिए संसार से विरक्त होकर, सन्तों की छाया में उस अध्यात्मरस को साधने के लिये संवत् 2023

के भाद्र कृष्ण एकम् को छोटी उम्र की नौ कुमारिका बहिनों ने ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा ली। (सर्वप्रथम) छह, चौदह, आठ, पश्चात् नौ बहिनों की प्रतिज्ञा का यह चौथा प्रसंग बना। बालब्रह्मचारिणी बहिनों की कुल संख्या पचास हो गयी। जिसमें मात्र गुजराती ही नहीं परन्तु दूर–दूर की हिन्दी बहिनें भी अनेक हैं। इस प्रसंग पर उत्सव जैसा अनोखा वातावरण था और फिर दूसरे ही दिन 'दूज' थी। परमवत्सल पूज्य बहिनश्री–बेन के प्रताप से 50 बहिनों का कैसा उत्तम जीवन गढ़तर हो रहा है और आत्महित के लिये कैसी उत्तम प्रेरणाएँ मिल रही हैं, वह तो नजर से देखनेवाले को ख्याल आवे। गुरुदेव का अध्यात्म उपदेश मुमुक्षु के अन्तर में जो वैराग्य बीज रोपता है, उसे वात्सल्य का पानी पिलाकर माताजी पोषित करती हैं... और सन्तों के प्रताप से उगा हुआ यह वैराग्य का वृक्ष सम्यक्त्व आदि मधुर फल देनेवाला है।

'समयसार' और 'ज्ञानचेतना'

संवत् 1978 में समयसार हाथ में आया, तब गुरुदेव के पहले उद्गार यह थे कि 'यह शास्त्र अशरीरी भाव बतलानेवाला है; अशरीरी ऐसे सिद्धपद का मार्ग इसमें बताया है।'

और संवत् 1992 में भी स्वानुभव की और ज्ञानचेतना की जो अत्यन्त महत्त्व की चर्चा हुई, वह प्रसंग याद करके किसी समय प्रसन्नता से गम्भीर भाव से जब गुरुदेव सुनाते हैं, तब जिज्ञासु का रोम–रोम पुलकित होकर ज्ञानी के स्वानुभव के प्रति उल्लसित हो जाता है। 'ज्ञानी की ज्ञानचेतना' कैसी होती है ? और उसका कार्य क्या ? उसका स्वानुभवसहित वर्णन लक्ष्यगत करते हुए मुमुक्षु के अन्तर में कोई अपूर्व भेदज्ञान की झनझनाहट जागृत हो जाती है। (देखो, आत्मधर्म अंक 298) *

'जहाँ हम, वहाँ तुम'

संवत् 1991 से पूर्व, जब गुरुदेव सम्प्रदाय छोड़कर परिवर्तन की विचारणा में

---

* इसी पुस्तक में परिशिष्ट में यह प्रवचन दिया जा रहा है।

थे, निवृत्त होकर कहीं एकान्त में रहना चाहते थे, उस समय दोनों बहिनों ने ऐसा पूछा कि 'गुरुदेव! हमारा क्या?' तब गुरुदेव ने कहा—'जहाँ हम, वहाँ तुम।' अहा! ठेठ सिद्धपद तक के साथीदार ऐसे गुरुदेव के मुख से 'जहाँ हम, वहाँ तुम' यह सुनकर दोनों बहिनों को असंख्य प्रदेश में जो आह्लाद हुआ, उसका असर आज 35 वर्ष के बाद भी उनकी वाणी में दृष्टिगोचर होता है। ऐसे तो दूसरे बहुत से आनन्दकारी प्रसंग गुरुदेव के प्रताप से बने हुए हैं।

❀❀❀

पूर्व में जिसका उल्लेख हो गया है, उस सरस्वती भवन के उद्घाटन प्रसंग पर सोनगढ़ पहली ही बार आये हुए जैन समाज के नेता साहू शान्तिप्रसादजी शान्त अध्यात्म वातावरण में प्रसन्न होकर ऐसा बोले कि 'मुझे इस पवित्र तीर्थस्थान में आकर बड़ी प्रसन्नता हुई, आज जैसे हम लोग भगवान कुन्दकुन्दस्वामी का नाम मंगलरूप में लेते हैं, वैसे भविष्य की पीढ़ी के लोग आपका (कानजीस्वामी का) नाम लेते रहेंगे।

संवत् 2024 का वर्ष वह आत्मधर्म की रजत जयन्ती का वर्ष था, संवत् 2000 में शुरु हुआ यह मासिक संवत् 2024 में 25 वर्ष पूर्ण करता था; आत्मधर्म द्वारा गुरुदेव की वाणी घर-घर में जिज्ञासु अत्यन्त प्रेम से वांचते हैं। रजत जयन्ती के वर्ष में गुरुदेव के विशेष आशीर्वाद मिले। साथ ही साथ इस वर्ष में ही श्रीमद् राजचन्द्रजी की जन्मशताब्दी का भी उत्सव था, इसलिए उनके सारभूत उत्तम वचनामृतों का दोहन करके आत्मधर्म द्वारा उनका बहुत प्रचार किया गया। पण्डित टोडरमलजी की द्विशताब्दी का उत्सव भी इसी वर्ष में मनाया गया और उसके प्रचार में भी विशिष्ट विशेषांक द्वारा महत्त्व का योगदान दिया गया। अफ्रीका में भी अपने जिज्ञासुओं ने 'श्रीमद् राजचन्द्र स्मृतिगृह' बनाया है। अफ्रीका में एक मुमुक्षु भाई के यहाँ विवाह प्रसंग पर चार हजार धार्मिक पुस्तकें सोनगढ़ से मँगाकर प्रभावना की गयी थी और जैन विधि अनुसार विवाह हुआ था। गुरुदेव के उपदेश को थोड़ा सा भी लक्ष्यगत

करने से कुदेव–कुगुरु–कुधर्म का सेवन तो मुमुक्षु के हृदय में से जड़–मूल से उखड़ जाता है और वीतरागी देव–गुरु–धर्म के प्रति कोई विशिष्ट भक्ति की उमंग जगती है। यह तो धर्म का एकड़ा लिखने के लिये कोरी स्लेट है। एकड़ा तो अभी इससे आगे है।

गुरुदेव के पास कोई हस्ताक्षर माँगे तो सामान्यरूप से 'ॐ' लिख देते हैं। एक भाई ने हस्ताक्षर माँगे, ॐ लिख दिया, वह भाई कुछ समझे नहीं, इसलिए कहा कि आपका नाम लिख दो—गुरुदेव कहते हैं कि यह ॐ है, वह सर्वज्ञ भगवान की वाणी है, वही हमारा नाम है और वही हमारा धाम है। ॐ अर्थात् शुद्ध आत्मा। (जिस दिन यह बात हुई, उस दिन चैत्र कृष्ण एकम् थी, सोनगढ़ में जहाँ गुरुदेव विराजते हैं, वहाँ ॐ की स्थापना उसी दिन हुई है।)

संवत् 2024 में फाल्गुन शुक्ल दूज को गुरुदेव ने सौराष्ट्र में विहार के लिये सोनगढ़ से मंगल प्रस्थान किया। लाठी होकर राजकोट पधारे, पश्चात् वडाल से शाम को नेमिप्रभु की साधनाभूमि गिरनार तीर्थधाम में दर्शन कर आये; वहाँ से पोरबन्दर, जैतपुर, गोण्डल, वडिआ, मोरबी, ववाणिया, चैत्र शुक्ल तेरस को वांकानेर, चोटीला, सुरेन्द्रनगर, वडवाण, जोराबरनगर होकर वीछिया पधारे। जहाँ ॐकार के अव्यक्त भणकार आये थे, ऐसे ही गाँव में 78वाँ जन्म–जयन्ती का महोत्सव मनाया गया। वीछिया का जिनमन्दिर अर्थात् सोनगढ़ के प्राचीन जिनमन्दिर की ही प्रतिकृति। अभी तो सोनगढ़ का जिनालय 25 फीट उन्नत धर्मध्वज फहरा रहा है परन्तु 15 वर्ष पहले जो गुम्मटवाला 37 फीट उन्नत जिनालय था, वह देखना हो तो बिछिया का जिनालय देख लो। बिछिया में जन्मोत्सव के पश्चात् तुरन्त गुरुदेव जन्मधाम में उमराला पधारे।

जन्मधाम में गुरुदेव को दूसरे अनेक संस्मरणों के साथ 'माँ' का भी स्मरण हुआ। घूमकर रात्रि में घूम आये तब दरवाजा खोलने के लिये 'माँ' कहकर आवाज लगाते थे, इत्यादि प्रसंग गुरुदेव ने कहे। माता, वह माता! माता के वात्सल्य भरे संस्मरण ही ऐसे होते हैं कि वे याद आने पर पुत्र का हृदय रोमांच अनुभव करता है।

47 वर्ष पहले अर्थात् कि 33 वर्ष की उम्र में (संवत् 1978में) गुरुदेव को ॐकार के भणकार इस उमराला में भी आये थे; (सबसे पहले भणकार वांकानेर के उपाश्रय में संवत् 1977 में आये थे।) थोड़े ही वर्षों पहले साक्षात् सुनी हुई उन तीर्थंकर वाणी के संस्मरण आत्मा में बोलते होने से गुरुदेव को उस जिनवाणी अनुसार मार्ग के अतिरिक्त दूसरे किसी मार्ग में चैन नहीं पड़ता था। अन्त में जिनवाणी प्राप्त करके जगत में वह मार्ग प्रसिद्ध किया। जन्मोत्सव के समय तो उमराला नगरी अयोध्या की सखी जैसी लगती थी। जन्मोत्सव के बाद लींबडी होकर गुरुदेव वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को सोनगढ़ पधारे।

गुरुदेव सोनगढ़ में आवे तो अध्यात्म की धुन जमे। मुमुक्षु भी अपने-अपने प्रयत्न में संलग्न हो जाये। अध्यात्म की आनन्दकारी चर्चा की कोई धन्य पल में गुरुदेव के उद्गार निकले कि 'ज्ञान की हरी बाड़ी में आत्मा आनन्द की क्रीड़ा करता है।' इस उद्गार के साथ 37 वर्ष पहले की 'आत्मचर्चा' भी गुरुदेव बहुत महिमापूर्वक ताजा करते हैं... और साथ ही साथ विशिष्ट उदाहरणपूर्वक आत्मा को शोधने की रीति बताते हैं।

2024 के भाद्र कृष्ण दूज को प्रवचनसार शास्त्र की नौवीं आवृत्ति का प्रकाशन था, जरीयुक्त ग्रन्थ पण्डितश्री हिम्मतभाई ने गुरुदेव को अर्पण किया; उस दिन पूज्य चम्पाबेन का जन्मदिवस होने से गुरुदेव ने अपार वात्सल्यपूर्वक कहा कि 'यह पुस्तक में बहिन को भेंट देता हूँ।' वाह! कैसा अद्भुत प्रसंग। गुरुदेव द्वारा प्रदत्त जिनवाणी की भेंट का वह दृश्य देखकर **जयधवला** का वह कथन याद आता था कि जिसमें जिनवचनों को **परमानन्द-पाहुड़** कहा गया है, क्योंकि उसके द्वारा जिन भगवान ने भव्य जीवों के लिये 'परम आनन्द' की भेंट भेजी है, अहा! ऐसे आनन्द को देनेवाला और उस आनन्द को लेनेवाले सन्तों को नजर से निहारने पर कैसा आनन्द होता है! वास्तव में, वे सन्त अपने को भी आनन्ददातार हैं।

आज मंगल मुहूर्तरूप से गुरुदेव ने प्रवचनसार की पहली पाँच गाथायें वाँचन कीं; उसमें पंच परमेष्ठी को नमस्काररूप मुक्ति मण्डप के मंगल वाजिंत्र मुमुक्षु को विशिष्ट आनन्द प्रदाता थे—मानो पंच परमेष्ठी भगवन्त ही साक्षात् पधारे हैं या क्या? भेद तोड़कर, पंच परमेष्ठी के साथ ही सम्मिलित होकर उन्हें नमस्कार किस प्रकार किया जाता है? वह गुरुदेव समझाते थे... उस समय के रणकार अभी भी आत्मप्रदेशों में झनझनाते हैं। धन्य था वह अवसर!

एक ओर प्रवचनसार में पंच परमेष्ठी की धुन, दूसरी ओर समयसार पर सोलहवीं बार के प्रवचनों के प्रारम्भ में सिद्धपद की धुन,—मानो सोनगढ़ में पंच परमेष्ठी का विशाल मेला भरा हो—ऐसा वातावरण प्रवचन के समय वर्तता था। गुरुदेव बारम्बार महिमापूर्वक कहते हैं कि यह शास्त्र शुद्धात्मा का अनुभव कराकर भव का नाश करानेवाला है, आत्मा के अशरीरी भाव को बतलानेवाला यह शास्त्र है। साधक कहते हैं—अन्तर में हम हमारे चिदानन्दस्वभाव सन्मुख झुककर सिद्ध भगवान का साथ लिया है, परभाव से अब हम भिन्न हुए हैं और सिद्धालय में अनन्त सिद्ध भगवन्तों की पंक्ति में बैठनेवाले हैं—कैसी निःशंक वाणी! कैसे आत्मस्पर्शी भाव!—मानों दिव्यध्वनि की कोई मंगल वीणा बजती हो! अभी ही मानो कुन्दकुन्दस्वामी विदेह में से आकर वहाँ के अतीन्द्रिय ज्ञान-आनन्द का स्वरूप समझाते हों! (आराधकभाव की झनझनाहट कराते हुए उन प्रवचनों का दोहन जब आत्मधर्म के अंक 300 में गुरुदेव ने पढ़ा तब उन्होंने अतिशय आह्लादपूर्वक प्रमोद व्यक्त किया था।)

संवत् 2025 के मगसिर महीने में घाटकोपर में, मलाड में तथा भावनगर में दिगम्बर जैन मन्दिर का शिलान्यास हुआ। भावनगर में शिलान्यास प्रसंग पर गुरुदेव भी वहाँ पधारे थे। इसी अवधि में गिरनार सिद्धक्षेत्र में मानस्तम्भजी का शिलान्यास हुआ।

अहमदाबाद-रणासर-मुम्बई के पंच कल्याणक महोत्सव और

मुम्बई में कहान गुरु-रत्नचिन्तामणि जयन्ती महोत्सव

संवत् 2025 में अहमदाबाद-रणासण तथा मुम्बई (मलाड तथा घाटकोपर) के जिनमन्दिरों में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा के तीन महोत्सव निमित्त, तथा मुम्बई में 80वीं रत्नचिन्तामणि जन्म-जयन्ती के महोत्सव निमित्त गुरुदेव ने फाल्गुन कृष्ण छठवीं के दिन सोनगढ़ से मंगल प्रस्थान किया। राणपुर होकर अहमदाबाद पधारे। लगभग सवा लाख जैनों से शोभित यह पाटनगर में जिनेन्द्र देव के पंच कल्याणक से शोभित हो उठा। विशाल जिनबिम्ब की वीतरागी प्रभा से भव्य जिनालय शोभित हो रहा था। नेमिप्रभु का यह जन्मकल्याणक और दीक्षा इत्यादि अद्भुत प्रसंग देखकर अहमदाबाद की जनता मुग्ध हो गयी। अहमदाबाद में यह शिखरबद्ध जिनालय (खाडिया विस्तार में) लगभग पाँच हजार रुपये के खर्च से तैयार हुआ है। पाटनगर में ऐसे भव्य जिनालय से गुजरात गौरववन्त बना है। आदिनाथ भगवान का यह जिनालय फिरोजाबाद के जिनालय का स्मरण कराता है। लगभग सवा लाख जैनों से भरपूर इस नगरी का और जैन समाज का गौरव बढ़ानेवाली एक घटना का उल्लेख करना आवश्यक है कि आठ दिन का यह भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव दिगम्बर जैन समाज का होने पर भी अहमदाबाद के श्वेताम्बर जैन समाज ने अत्यन्त मध्यस्थता रखकर तथा यथाशक्य इतना सहयोग देकर सम्पूर्ण जैन समाज का गौरव बढ़ाया है। जरा भी विसंवाद फैले, ऐसा परस्पर कहीं नहीं बना। अहमदाबाद के लिये यह शोभा का बात है और सम्पूर्ण भारत भर में इस प्रकार परस्पर बन्धुत्व का सहयोग का वातावरण विस्तृत हो, यह अब भगवान (महावीर के) ढाई हजारवें निर्वाणोत्सव प्रसंग पर अत्यन्त आवश्यक है। अहमदाबाद का प्रतिष्ठा महोत्सव अद्भुत था। चार-चार हाथी और दूसरे अनेक ठाठ-बाट सहित जिनेन्द्रदेव की रथयात्रा लाखों दर्शकों को आनन्द प्राप्त कराती थी। जिनमन्दिर में विशाल कमल पर सवा पाँच फीट

श्री आदिनाथ दादा... अहमदाबाद

जय कमलासन सुन्दर शासन भासत नव द्वय बाधवरम।

उन्नत पद्मासन में प्रभु आदिश्वर दादा विराज रहे हैं—जिनका वीतरागी वैभव मुमुक्षुओं को मुग्ध करता है।

अहमदाबाद के आनन्दकारी उत्सव के पश्चात् देहगाँव, रखियाल, तलोद और वामणवाड़ा होकर मुनई पधारे, वहाँ स्वाध्यायमन्दिर का उद्घाटन हुआ और सम्पूर्ण ग्राम की जनता ने आनन्द से उत्सव मनाया। पश्चात् भीलोडा गाँव में प्राचीन जिनालय के आनन्दपूर्वक दर्शन–भक्ति करके फाल्गुन शुक्ल ग्यारह के दिन रणासण गाँव में पधारे। छोटे गाँव में भी विशाल पंच कल्याणक उत्सव अहमदाबाद जैसा ही मनाया गया। मात्र पाँच घर दिगम्बर जैनों के होने पर भी डेढ़ लाख रुपये के खर्च से तीन शिखर से सुशोभित जिनालय निर्मित किया गया है। 'जंगल में मंगल' जैसा महान उत्सव यहाँ मनाया गया... आदिप्रभु के पंच कल्याणक से रणासण मानो अयोध्या बन गया हो, ऐसा शोभित होता था। दो हजार की बस्तीवाले गाँव में बीस हजार के लगभग प्रेक्षकों का मेला उमड़ पड़ा था। अद्भुत था यह उत्सव और धन्य बना रणासण।

फाल्गुन शुक्ल तीन को हिम्मतनगर आये और वहाँ अत्यन्त उल्लास भरपूर वातावरण के बीच जैन स्वाध्यायमन्दिर का उद्घाटन इन्दौर के सेठश्री राजकुमारसिंहजी के हस्त से हुआ था। तत्पश्चात् नरसिंहपुरा–जहर, फतेपुर और अहमदाबाद होकर चैत्र कृष्ण दसवीं को सोनगढ़ पधारे (बीच में वरवाला और सांवरकुण्डला के कार्यक्रम खाँसी की तकलीफ के कारण स्थगित हुए)।

सोनगढ़ के उपशान्त वातावरण में दस दिन निवृत्ति से रहकर चैत्र शुक्ल पंचमी को गुरुदेव राजकोट पधारे। वहाँ नौ दिन तक श्रुतज्ञानरूपी अमृत पिलाकर सुरेन्द्रनगर, अहमदाबाद, पालेज, सूरत, थाणा होकर वैशाख कृष्ण ग्यारह के दिन गुरुदेव मुम्बई नगरी में पधारे और अद्भुत पंच कल्याणक महोत्सव मनाने की उमंग भरी तैयारियाँ आजाद मैदान में महावीर नगर में चल रही है। साथ ही साथ वैशाख शुक्ल दूज को

गुरुदेव की 80वीं जन्म–जयन्ती का रत्नचिन्तामणि महोत्सव भी मनाया जा रहा है और उस इस रत्नचिन्तामणि जयन्ती महोत्सव के निमित्त यह पुस्तक आपके हाथ में शोभित हो रही है। इसमें वर्णित पावन प्रसंग अपने को चैतन्यचिन्तामणि के अनुभव द्वारा रत्नत्रय की प्राप्ति करायें, ऐसी मंगल प्रार्थनापूर्वक पुस्तक समाप्त करता हूँ।

❀❀❀

पूज्य गुरुदेवश्री की मंगल छाया में बसते हुए मुझे छब्बीस वर्ष हुए, उसमें गुरु प्रताप से अनेक उत्तम प्रसंग बने हैं, उससे पूर्व के भी कितने ही प्रसंग गुरुमुख से सुने हैं, अनेक उत्तम प्रसादियाँ गुरुदेव के आशीर्वादपूर्वक प्राप्त हुई है, उनके हजारों संस्मरण आत्मा के गहरे संशोधन में ले जाते हैं। और सन्त–ज्ञानियों के पवित्र जीवन के प्रति अर्पणता प्रगट कराते हैं, ऐसे कितने ही प्रसंगों का उल्लेख इस पुस्तक में किया है, दूसरे भी कितने ही प्रसंग इस पुस्तक में दिये जा सकते थे, परन्तु एक तो पुस्तक अकेले हाथ से अत्यन्त अल्प अवधि में पूर्ण करनी थी और दूसरा इसकी नोंध और इससे सम्बन्धित दूसरा साहित्य सोनगढ़ में था,—गुरुदेव के साथ प्रवास में होने के कारण उस साहित्य का पूरा उपयोग नहीं हो सका, तथापि जितने बन सके उतने प्रसंगों का विविधतापूर्ण संकलन करके इस पुस्तक को सुन्दर–रसपूर्ण बनाने का प्रयास किया है; जिज्ञासु जीवों को यह अत्यन्त रुचिकर होगी और इसमें से अनेक प्रकार आत्महित की उत्तम प्रेरणाएँ प्राप्त होंगी। गुरुदेव के जीवन में से यही आदर्श अपने को लेना है।

जीवन में गुरुदेव ने यह बात तो रगड़–रगड़ कर घोंटायी है कि यदि आत्मार्थ साधना है तो जीवन की कोई परिस्थिति अपने को रोक नहीं सकती। जहाँ अन्तर में आत्मार्थ साधने का दृढ़ निर्णय और सच्ची लगन है, वहाँ जगत सम्बन्धी विविध अनेक प्रसंगों में से गुजरने पर भी इस निर्णय को और इस लगन को जरा भी ढीली–पोची (शिथिल) नहीं होने देना और सन्त चरण में उसका बल बढ़ाते रहना, परम

वैभव से भरपूर जो अपना शुद्धस्वरूप, उसकी महिमा कर–करके उसमें अन्तर्मुख होना, यह अपना कर्तव्य है। जीवन में अधिक से अधिक वैराग्य और अधिक से अधिक आत्मरस से गुरुचरण में अपना हित साधने का एक ही लक्ष्य रखकर क्षण–क्षण—पल–पल आत्मसाधना में प्रयत्नशील रहना।

अहो! जीवन में ऐसी आत्महित की उत्तम प्रेरणा प्रदाता कहानगुरु जैसे जो रत्नचिन्तामणि सन्त रत्न अपने को मिले हैं, उनके अनन्त उपकार के स्मरणपूर्वक नमस्कार हो।

जयजिनेन्द्र

नोट – पूज्य गुरुदेवश्री के 80वें रत्नचिन्तामणि जन्मजयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रकाशित इस पुस्तक में जन्म–जयन्ती के प्रसंग पर गुरुदेवश्री मुम्बई पधारे हैं, यहाँ तक का वृत्तान्त संकलित है क्योंकि इस पुस्तक का विमोचन उस कार्यक्रम में हुआ था। किन्तु यह मंगल महोत्सव जिस उमंग एवं भक्ति–उल्लासपूर्वक मनाया गया, उसके रोमांचकारी समाचार आत्मधर्म में प्रकाशित हुए हैं। जो इस प्रसंग को अनुलक्ष्य कर यहाँ परिशिष्टरूप से दिये जा रहे हैं।

परमात्मध्यान भावना

(मोक्षमार्ग सूचक 108 नामों की चैतन्य चिन्तामणि—रत्नमाला)

सहज शुद्ध ज्ञानानन्दस्वभावी परमात्मतत्त्व के सन्मुख होकर, उसके ध्यान से प्रगट हुई निर्मल पर्यायरूपी जो मोक्षमार्ग—उसके अनेक नामों की माला द्रव्यसंग्रह में वर्णन की है, गुरुदेव को वह 'माला' अत्यन्त प्रिय है। उस द्रव्यसंग्रह में समागत नामों के उपरान्त दूसरे भी कितने ही नाम गुरुदेव ने कहे हैं उनमें से संकलित कर कुल 108रत्नों की यह माला यहाँ रत्नचिन्तामणि—जन्मोत्सव के निमित्त से प्रस्तुत की जाती है। इसका प्रत्येक रत्न मोक्षमार्ग को प्रकाशित करनेवाला है।

1. वही शुद्धात्मस्वरूप है।
2. वही परमात्मस्वरूप है।
3. वही सुखामृतसरोवर के परमहंसस्वरूप है।
4. वही परम ब्रह्मस्वरूप है।
5. वही परम विष्णुस्वरूप है। (स्वगुणों में व्यापक)
6. वही परम शिवस्वरूप है। (आत्मकल्याण)
7. वही परम बुद्धस्वरूप है। (ज्ञानस्वरूप)
8. वही परम निजस्वरूप है।
9. वही परम स्वात्मोपलब्धिलक्षण सिद्धस्वरूप है।
10. वही निरंजनस्वरूप है।
11. वही निर्मलस्वरूप है।
12. वही स्वसंवेदनज्ञान है।
13. वही परमतत्त्वज्ञान है।
14. वही शुद्धात्मदर्शन है।

15. वही परम अवस्थास्वरूप है।
16. वही परमात्मा का दर्शन है।
17. वही परमात्मज्ञान है।
18. वही शुद्धात्मज्ञान है।
19. वही ध्येयभूत शुद्धपारिणामिकभावरूप है।
20. वही ध्यानभावनास्वरूप है।
21. वही शुद्धचारित्र है।
22. वही अन्तरतत्त्व है।
23. वही परमतत्त्व है।
24. वही शुद्धात्मद्रवय है।
25. वही परमज्योति है।
26. वही शुद्धात्मअनुभूति है।
27. वही परमप्रतीति है।
28. वही परमसंवृत्ति है।
29. वही स्वरूप–उपलब्धि है।
30. वही नित्य–उपलब्धि है।
31. वही परम समाधि है।
32. वही परम आनन्द है।
33. वही नित्य आनन्द है।
34. वही सहज आनन्द है।
35. वही सदानन्द है।
36. वही शुद्धात्मपदार्थ का अध्ययन है।
37. वही परमस्वाध्याय है।
38. वही निश्चय मोक्षउपाय है।
39. वही एकाग्रचिन्ता निरोध है।

40. वही परमबोध है।
41. वही परम शुद्ध उपयोग है।
42. वही परम योग है।
43. वही भूतार्थ है।
44. वही परमार्थ है।
45. वही निश्चय पंचाचार है।
46. वही समयसार है।
47. वही अध्यात्मसार है।
48. वही समता इत्यादि छह निश्चय आवश्यकस्वरूप है।
49. वही अभेदरत्नत्रयस्वरूप है।
50. वही वीतराग सामायिक है।
51. वही परम शरण–उत्तम–मंगल है।
52. वही केवलज्ञान उत्पत्ति का कारण है।
53. वही सकल कर्मक्षय का कारण है।
54. वही निश्चय चतुर्विध आराधना है।
55. वही परमात्मभावना है।
56. वही सुख की अनुभूतिरूप परमकला है।
57. वही दिव्य कला है।
58. वही परम अद्वैत है।
59. वही परम अमृत है।
60. वही परम धर्मध्यान है।
61. वही शुक्लध्यान है।
62. वही रागादि विकल्पशून्य ध्यान है।
63. वही निष्कल (अशरीरी) ध्यान है।
64. वही परम स्वास्थ्य है।

65. वही परम वीतरागपना है।
66. वही परमसाम्य है।
67. वही परम एकत्व है।
68. वही परम अभेदज्ञान है।
69. वही परम समरसीभाव है।
70. वही अमृत मार्ग है।
71. वही वीतराग–विज्ञान है।
72. वही भेदविज्ञान है।
73. वही सम्यग्दर्शन है।
74. वही सम्यक् आचार है।
75. वही सर्वज्ञ की परमार्थ स्तुति है।
76. वही परम निष्कर्म है।
77. वही अकर्तृत्वभाव है।
78. वही अनेकान्त का रहस्य है।
79. वही स्याद्वाद की सौरभ है।
80. वही शुद्ध उपादान है।
81. वही शुद्ध उपयोग है।
82. वही परमात्मा की सेवा है।
83. वही शुद्धात्मसन्मुख परिणाम है।
84. वही धर्म की पाँच लब्धि है।
85. वही भव्यत्व शक्ति की व्यक्ति है।
86. वही औपशमिक आदि तीन भाव है।
87. वही शुद्धचेतना है।
88. वही सम्यक् पुरुषार्थ है।
89. वही आनन्दमार्ग है।

90. वही परमात्मा का साक्षात्कार है।
91. वही सिद्धों को सच्चा नमस्कार है।
92. वही धर्म की क्रिया है।
93. वही मोक्ष की क्रिया है।
94. वही जैनधर्म है।
95. वही शुद्ध परिणति है।
96. वही ज्ञान की अनुभूति है।
97. वही शुद्धनय है।
98. वही आत्मलब्धि का अवसर है।
99. वही नियम से कर्तव्य है।
100. वही कारणपरमात्मा है।
101. वही ज्ञानी का कार्य है।
102. वही मोह–क्षोभरहित परिणाम है।
103. वही भावश्रुत है।
104. वही ज्ञायकभाव की उपासना है।
105. वही जैनशासन है।
106. वही परमेष्ठी पद है।
107. वही तीर्थंकरों का मार्ग है।
108. **वही चैतन्यचिन्तमाणिरत्न है।**

(उत्तम में उत्तम ऐसे 108 रत्नों की यह मंगल माला कि जिसको पहनना साधक जीवों को अत्यन्त प्रिय है, उस माला द्वारा अपनी भक्ति और आनन्द व्यक्त करते हैं... और भावना भाते हैं कि इस मंगल माला का एक मोती हम भी बन जायें।)

(—हरि)

दर्शन प्राभृत

(जैनशासन में भगवान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने '**दंसणमूलो धम्मो**' कहकर धर्म का जो महान मन्त्र दिया, उसके विवेचन द्वारा पूज्यश्री कानजीस्वामी हमेशा सम्यक्त्व का स्वरूप उपदेशकर उसकी अपार महिमा समझाते हैं। ऐसे सम्यक्त्व की महिमा से भरपूर दर्शनप्राभृत की गाथाओं का गुजराती अनुवाद विद्वान भाईश्री हिम्मतलाल जेठालाल शाह ने किया है, उन्हीं गाथाओं का हिन्दी पद्यानुवाद यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। दर्शनप्राभृत अर्थात् सम्यक्त्वरूपी भेंट; गुरुदेव की रत्नचिन्तामणि जयन्ती प्रसंग पर सम्यक्त्व रत्न की उत्तम भेंट सभी को रुचिकर होगी। हम भी ऐसा रत्न प्रगट करें और उस द्वारा गुरुदेव की भावस्तुति करें।)

❀❀❀

जिनवर वृषभ वर्धमान को कर नमन दर्शन मार्ग को।
मैं कहूँगा संक्षेप में क्रमश: कहा जिनराज जो।।१।।
दर्शन धर्म का मूल कहते सभी जिनवर शिष्य को।
स्व-श्रोत्र से यह सुन नहीं है वंद्य दर्शन-हीन जो।।२।।
हैं भ्रष्ट दर्शन-भ्रष्ट दर्शन-भ्रष्ट की मुक्ति नहीं।
हों सिद्ध चारित्र-भ्रष्ट दर्शन-भ्रष्ट की सिद्धि नहीं।।३।।
सम्यक्त्व रत्न-विहीन बहुविध शास्त्र जाने पर सदा।
आराधना विरहित भटकता इसी भव में वह सदा।।४।।
सम्यक्त्व विरहित सहस कोटी वर्ष तक भी विधीवत्।
बहु उग्र तप आचरे पर बोधि नहीं पाता नियत।।५।।
सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान बल वीरज सदा वर्धित रहें।
कलि कलुष पाप विहीन वे अति शीघ्र वर ज्ञानी बनें।।६।।
सम्यक्त्व जल बहता सदा जिसके हृदय में उसी के।
नहिं कर्म-रज आवरण होता पूर्व बद्ध भि नष्ट ये।।७।।
जो भ्रष्ट-दर्शन ज्ञान-भ्रष्ट चारित्र-भ्रष्ट रहें सदा।
वे भ्रष्ट से भी भ्रष्ट करते अन्य को भी नष्ट हा!।।८।।

संयम नियम तप धर्म शील सुयोग गुणधारी सदा।
के दोष कहते भ्रष्ट वे कर भ्रष्टता की घोषणा।।९।।
परिवार तरु का मूल बिन जैसे कभी बढ़ता नहीं।
जिन-दर्शनात्मक मूल बिन त्यों सिद्धि नहिं होती कभी।।१०।।
ज्यों मूल से स्कंध शाखादि अनेकों हों सदा।
त्यों मोक्ष-मग का मूल जिन-दर्शन जिनेंद्रों ने कहा।।११।।
दृग-भ्रष्ट जो दर्शन-सहित से पैर पुजवाते उन्हें।
बोधि कठिन है हों सदा वे मूक लूले भविष्य में।।१२।।
जो जानते भी उन्हें गारव भय शरम से पूजते।
बोधि नहीं है उन्हें भी वे पाप ही अनुमोदते।।१३।।
दोनों परिग्रह त्याग तीनों योग में संयम-सहित।
के कहा दर्शन ज्ञान शुद्ध-करण कराहारी-सहित।।१४।।
सम्यक्त्व से सद्ज्ञान उससे सर्व भाव सुज्ञात हों।
नित अर्थ उपलब्धक ही जाने श्रेय अरु अश्रेय को।।१५।।
अश्रेय श्रेय सुजानता दुश्शील तज हो शीलयुत।
इस शील-फल से अभ्युदय पश्चात् उससे मोक्ष सुख।।१६।।
नित विषय-सुख-रेचक सुधा-सम जर-मरण-व्याधि-हरण।
सब दुःख-नाशक औषधी-सम हैं सदा जिनवर वचन।।१७।।
है एक लिंग जिनरूप उत्तम श्रावकों का दूसरा।
है आर्यिका का तीसरा चौथा न लिंग दर्शन कहा।।१८।।
छह द्रव्य अस्तिकाय पंच पदार्थ नौ सातों सु तत्त्व।
के रूप का श्रद्धान करता जानना सद्दृष्टि वह।।१९।।
जिनवर कहें व्यवहार से जीवादि का श्रद्धान है।
सम्यक्त्व निश्चय से निजातम प्रतीति सम्यक्त्व है।।२०।।
यों जिन-कथित दर्शन रतन गुण रत्नत्रय में सार है।
सोपान पहला मोक्ष का धारण करो सब भाव से।।२१।।
जो शक्य है वह करो और अशक्य की श्रद्धा करो।
नित केवली-जिन कहें श्रद्धावान के सम्यक्त्व हो।।२२।।

दृग ज्ञान चारित्र तप विनय में सदा सुस्थित जो रहें।
गुणधरों से गुण प्रशंसित वे नित्य वंदन-योग्य हैं।।२३।।
जो देख सहजोत्पन्न रूप न मानता ईर्ष्यादि से।
वह भले संयम-युक्त पर स्पष्ट मिथ्यादृष्टि है।।२४।।
सुर-वंद्य शील-सहित श्रमण को देख जो गारव करें।
विनयादि करते नहीं समकित हीन ही जानो उन्हें।।२५।।
नहिं वंद्य वस्त्र-विहीन केवल असंयत भी वंद्य नहिं।
दोनों हि एक समान उनमें एक भी संयत नहीं।।२६।।
नहिं देह वंदन-योग्य कुल नहिं जाति भी नहिं वंद्य है।
गुण-हीन पूजे कौन? वह श्रावक नहीं नहिं श्रमण है।।२७।।
सम्यक्त्व-युत शुध भाव से उनके तपों को शील को।
मैं वंदता गुण ब्रह्मचर्य रु शिव-गमन के भाव को।।२८।।
चौंषठ चँवर चौंतीस अतिशय से सहित अरहंत को।
नित बहुत प्राणी हितंकर हेतु कर्म-क्षय नमन हो।।२९।।
हैं ज्ञान से दर्शन तपों से चरित्र संयम गुणों से।
इन चार से संयुक्त का ही जिनधर्म में मोक्ष है।।३०।।
है सार नर का ज्ञान उसका सार भी सम्यक्त्व है।
सम्यक्त्व से चारित्र है चारित्र से निर्वाण है।।३१।।
दृग ज्ञान में सम्यक्त्व पूर्वक तप चरण इन चार के।
संयोग में हो सिद्ध आतम सुनिश्चित जानो इसे।।३२।।
कल्याण पारंपर्य से सुविशुद्ध समकित प्राप्त हो।
सम्यग्दरश है रत्न जग में सुरासुर से पूज्य हो।।३३।।
उत्कृष्ट गोत्र-सहित मनुजता प्राप्तकर सम्यक्त्व को।
पा सौख्य अक्षय ज्ञान केवल और मुक्ति प्राप्त हो।।३४।।
वे सहस अष्ट सुलक्षणों चौंतीस अतिशय से सहित।
जब तक जिनेंद्र विहार करते कहें प्रतिमा स्थावर।।३५।।
द्वादश तपों से युक्त अपने विधी बल से कर्म-क्षय।
कर देह विरहित अनुत्तर निर्वाण को पाते नियत।।३६।।

अब आप पढ़ेंगे—

पूज्य गुरुदेव के पवित्र हस्ताक्षर

(विधविध प्रसंगों पर गुरुदेव ने अपने अन्तर के जो भाव हस्ताक्षर द्वारा व्यक्त किये हैं, वे उन्हीं के हस्ताक्षर में पढ़कर आनन्द होगा। ऐसे लगभग 80 हस्ताक्षर प्रस्तुत करने की भावना थी... परन्तु इस कार्य में समय की अल्पता के कारण तथा पूज्य गुरुदेवश्री के साथ प्रवास में रहने के कारण पूरे 80 प्रस्तुत नहीं किये जा सके हैं, तथापि जितने प्रस्तुत किये जा सके हैं, वे भी जिज्ञासुओं को आनन्दित करेंगे।

विशेष उल्लेखनीय है कि हिन्दी भाषी पाठकों की सुविधा के लिये मूल गुजराती हस्ताक्षर का हिन्दी अनुवाद भी साथ ही प्रस्तुत किया जा रहा है।)

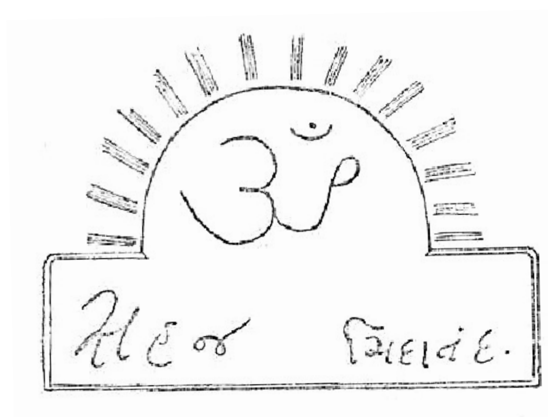

मुमुक्षुओं के हजारों-लाखों पुस्तकों में गुरुदेव ने यह हस्ताक्षर किये हैं। गुरुदेव कहते हैं कि इसमें जो ॐ है, वह सर्वज्ञ भगवान की वाणी है और वह शुद्धात्मा दिखाती है। वह शुद्धात्मा कैसा है? 'सहज चिदानन्द' अर्थात् कि अतीन्द्रिय ज्ञान और आनन्दस्वरूप है, ऐसे आत्मा को तुम पहिचानो, ऐसा गुरुदेव के यह हस्ताक्षर अपने को कहते हैं।

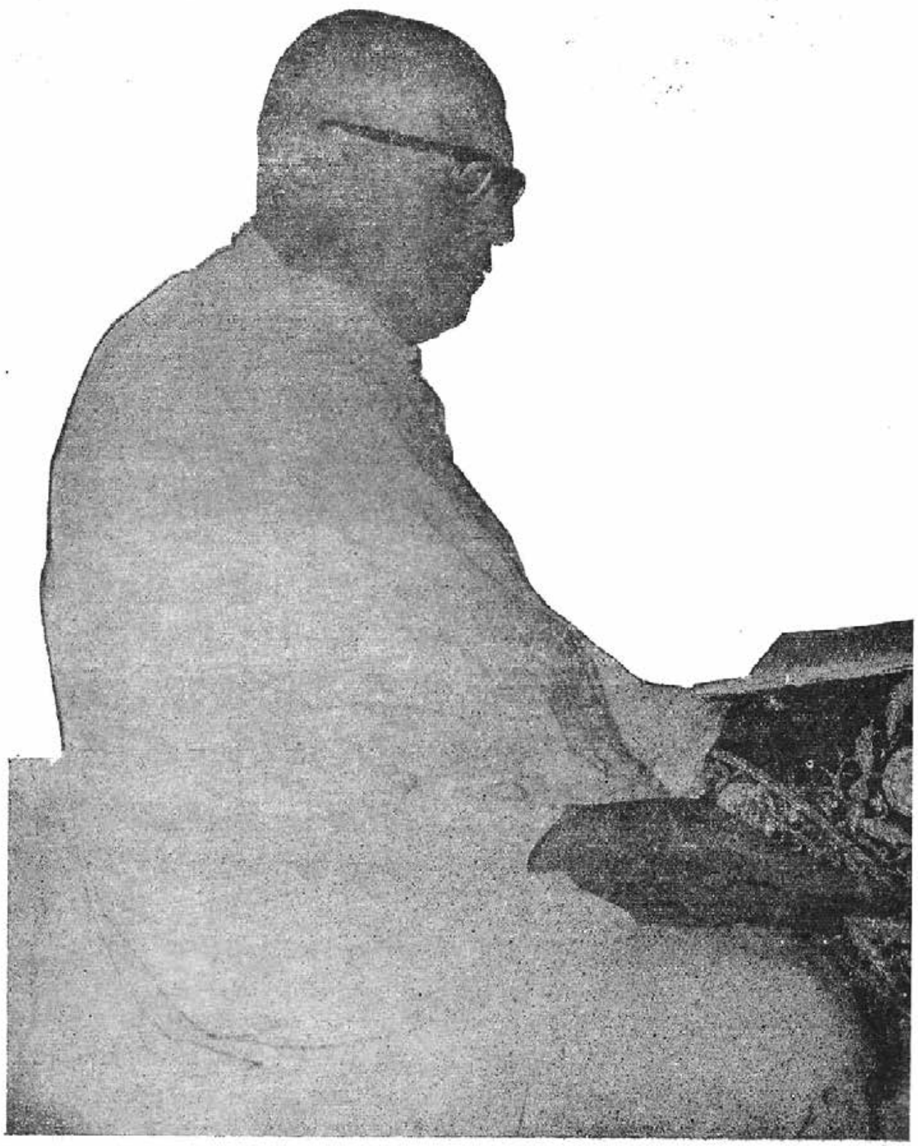

गुरुदेव ने समयसार के लिये लिखे हुए विशिष्ट हस्ताक्षर (संवत् 1996)

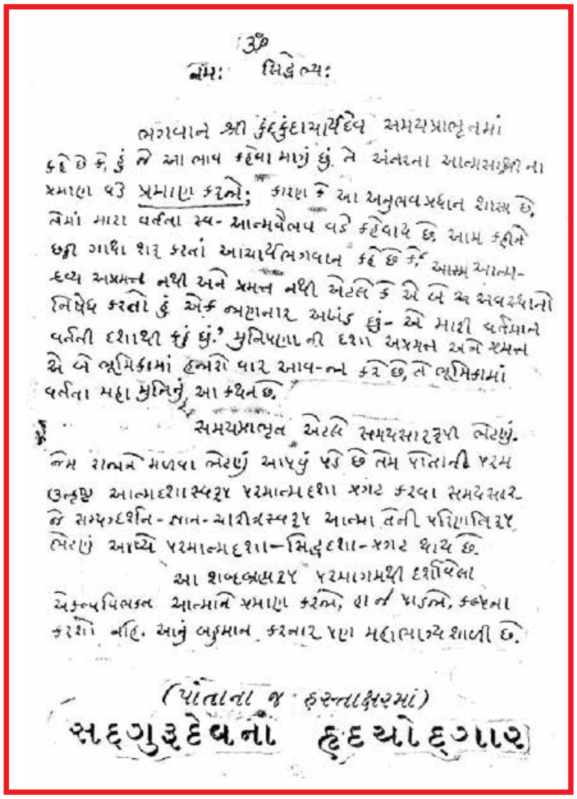

ૐ

નમઃ સિદ્ધેભ્યઃ

ભગવાન શ્રી કુંદકુંદાચાર્યદેવ સમયપ્રાભૃતમાં
કહે છે કે, હું જે આ ભાવ કહેવા માગું છું તે અંતરના આત્મસાક્ષીના
પ્રમાણ વડે પ્રમાણ કરજો; કારણ કે આ અનુભવપ્રધાન શાસ્ત્ર છે,
જેમાં મારા વર્તતા સ્વ-આત્મવૈભવ વડે કહેવાય છે આમ કહીને
છઠ્ઠી ગાથા શરૂ કરતાં આચાર્યભગવાન કહે છે કે, આત્મ આત્મ-
દ્રવ્ય અપ્રમત્ત નથી અને પ્રમત્ત નથી એટલે કે એ બે અવસ્થાનો
નિષેધ કરતો હું એક જાણનાર અખંડ છું- એ મારી વર્તમાન
વર્તતી દશાથી કહું છું.' મુનિપણાની દશા અપ્રમત્ત અને પ્રમત્ત
એ બે ભૂમિકામાં હજારો વાર આવ-જા કરે છે, તે ભૂમિકામાં
વર્તતા મહા મુનિનું આ કથન છે.

સમયપ્રાભૃત એટલે સમયસારરૂપી ભેટણું.
જેમ રાજાને મળવા ભેટણું આપવું પડે છે તેમ પોતાની પરમ
ઉત્કૃષ્ટ આત્મદશાસ્વરૂપ પરમાત્મદશા પ્રગટ કરવા સમયસાર-
જે સમ્યગ્દર્શન-જ્ઞાન-ચારિત્રસ્વરૂપ આત્મા તેની પરિણતિરૂપ
ભેટણું આપ્યે પરમાત્મદશા-સિદ્ધદશા-પ્રગટ થાય છે.

આ શબ્દબ્રહ્મરૂપ પરમાગમથી દર્શાવેલ
એકત્વવિભક્ત આત્માને પ્રમાણ કરજો, હા જ પાડજો, કલ્પના
કરશો નહિ. આનું બહુમાન કરનાર પણ મહાભાગ્યશાળી છે.

(પોતાના જ હસ્તાક્ષરમાં)

સદ્ગુરુદેવનાં હૃદયોદ્ગાર

सद्गुरुदेवश्री के हृदयोद्गार
(स्व हस्ताक्षर में)
[भाषान्तर]

ॐ

नमः सिद्धेभ्यः

भगवान कुन्दकुन्द आचार्यदेव समयप्राभृत में कहते हैं कि, 'मैं जो यह भाव कहना चाहता हूँ, वह अन्तर के आत्मसाक्षी के प्रमाण द्वारा प्रमाण करना क्योंकि यह अनुभवप्रधान ग्रन्थ है, उसमें मुझे वर्तते स्व-आत्मवैभव द्वारा कहा जा रहा है'—ऐसा कहकर गाथा 6में आचार्य भगवान कहते हैं कि, 'आत्मद्रव्य अप्रमत्त नहीं और प्रमत्त नहीं है अर्थात् उन दो अवस्थाओं का निषेध करता मैं एक जाननहार अखण्ड हूँ—यह मेरी वर्तमान वर्तती दशा से कह रहा हूँ।' मुनित्वरूप दशा अप्रमत्त व प्रमत्त—इन दो भूमिका में हजारों बार आती–जाती हैं, उस भूमिका में वर्तते महा–मुनि का यह कथन है।

समयप्राभृत अर्थात् समयसाररूपी उपहार। जैसे राजा को मिलने के लिए उपहार लेकर जाना होता है। उस भाँति अपनी परम उत्कृष्ट आत्मदशारूप परमात्मदशा प्रगट करने के लिए समयसार जो सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्रस्वरूप आत्मा, उसकी परिणतिरूप उपहार देने पर परमात्मदशा–सिद्धदशा प्रगट होती है।

यह शब्दब्रह्मरूप परमागम से दर्शित एकत्वविभक्त आत्मा को प्रमाण करना।'हाँ' से ही स्वीकृत करना, कल्पना नहीं करना; इसका बहुमान करनेवाला भी महाभाग्यशाली है।

संवत् 2017 में गिरनार यात्रा के समय 'सुवर्णसन्देश' के लिए प्रार्थना करने पर गुरुदेव ने गिरनार पर बैठे–बैठे यह भावभीने हस्ताक्षर लिखकर दिये थे।

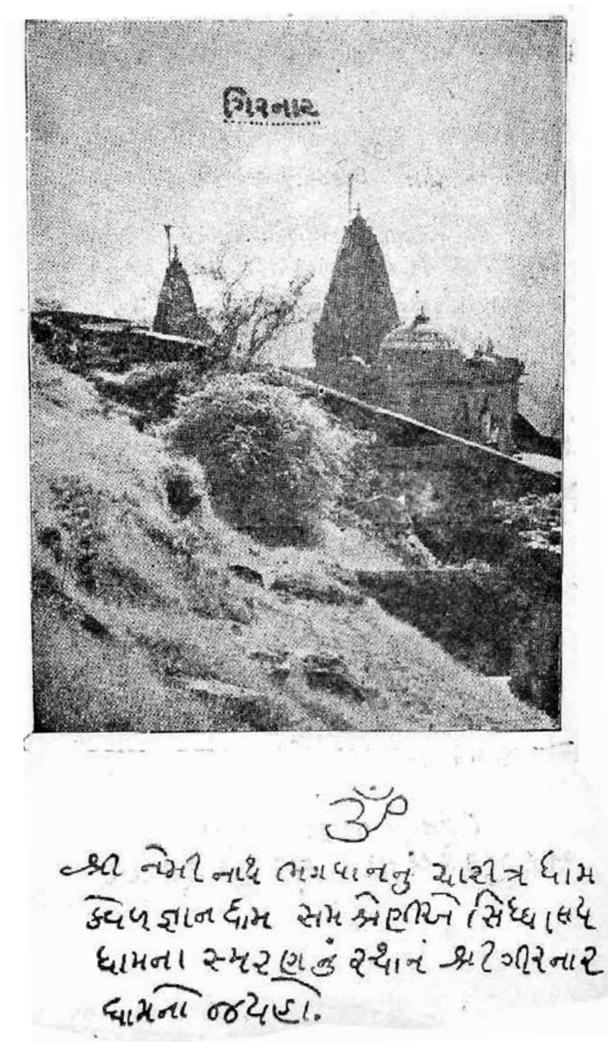

ॐ

श्री नेमिनाथ भगवान का चारित्रधाम, केवलज्ञानधाम, समश्रेणी से सिद्धालय धाम के स्मरण का स्थान श्री गिरनारधाम की जय हो!

ॐ

સ્વાલંબી ઉપયોગરૂપ સ્વરૂપને સાધીને
જે ક્ષેત્રથી સિદ્ધ થયા તે જ ક્ષેત્રે
સમશ્રેણીએ ઊર્ધ્વ સિદ્ધપણે બિરાજે છે,
તેના સ્મરણના કારણરૂપ
આ તીર્થ નિમિત્ત છે.

ॐ

ચિદાનંદ નમઃ

ॐ

स्वावलम्बी उपयोगरूप स्वरूप को साधकर जिस क्षेत्र से सिद्ध हुए, उसी क्षेत्र से समश्रेणी से ऊर्ध्व सिद्धरूप से विराजते हैं, उनके स्मरण के कारणरूप ये तीर्थ निमित्त हैं।

ॐ

કહાન ચિદાનંદ.

सुवर्णसन्देश के वैशाख शुक्ल दूज के अंक में गुरुदेव के हस्ताक्षर

गुरुदेव को अत्यन्त प्रिय ऐसी सैंतालीस शक्ति के पुस्तक में

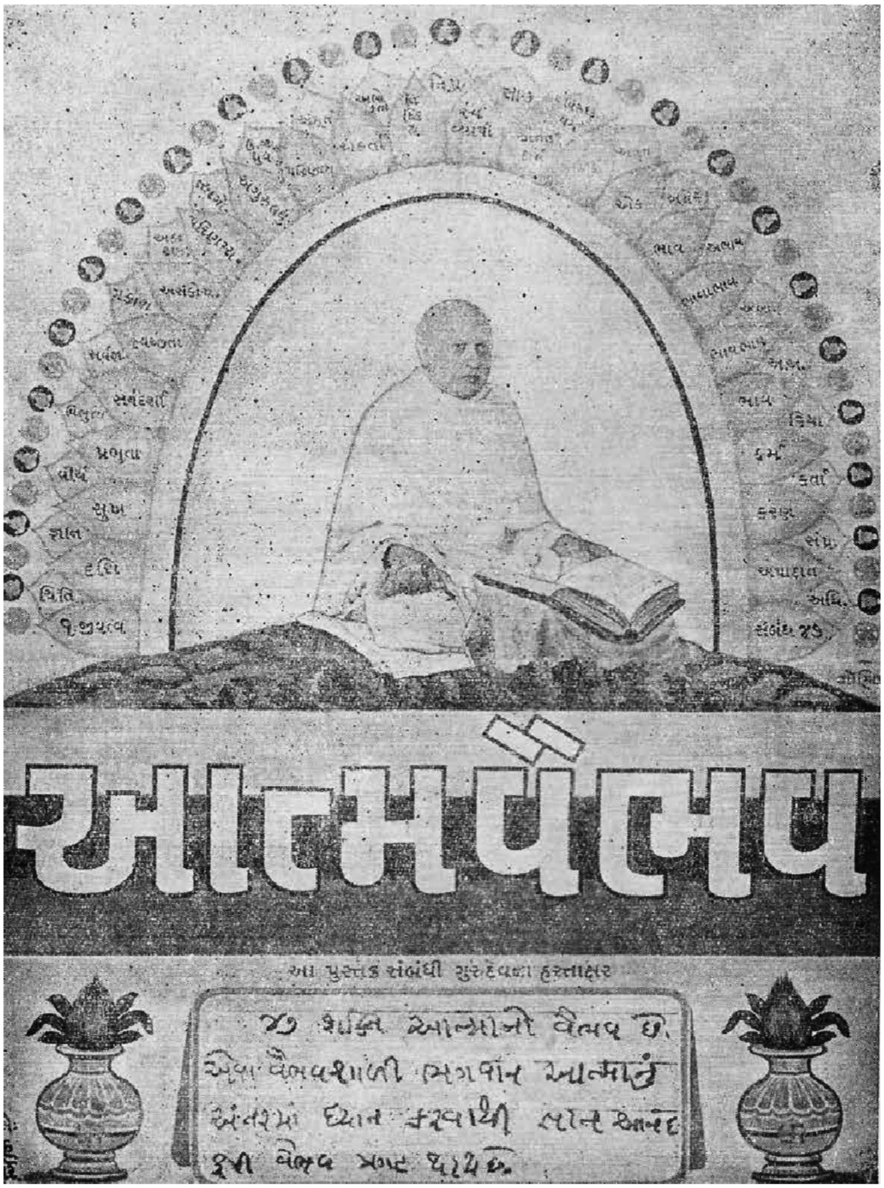

सैंतालीस शक्ति आत्मा का वैभव है ऐसे वैभवशाली भगवान आत्मा का अन्तर में ध्यान करने से ज्ञान–आनन्दरूपी वैभव प्रगट होता है।

पाँच बोल से पूरा प्रभु

આત્મચિંતનપૂર્વક ગુરુદેવે સ્વહસ્તે લખેલા પાંચ બોલ–

પરમ પારિણામિક ભાવ છું

કારણ પરમાત્મા છું

કારણ જીવ છું

શુદ્ધ ઉપયોગોહં

નિર્વિકલ્પોહં

आत्मचिन्तवनपूर्वक गुरुदेव ने स्वहस्त से लिखे हुए पाँच बोल—

परमपारिणामिकभाव हूँ, कारणपरमात्मा हूँ

कारण जीव हूँ, शुद्ध उपयोगोहं, निर्विकल्पोहं

ॐ आशीर्वाद

परम कृपापूर्वक गुरुदेव के आशीर्वाद की प्राप्ति–वह इस बालक के जीवन का एक अति मधुर संस्मरण है। आज से 22 वर्ष पहले (2003 में) फाल्गुन कृष्ण चौदस के दिन पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद की प्राप्ति का मंगल प्रसंग बना तत्पश्चात् संवत् 2019 की दीपावली के दिन उस मंगल प्रसंग को याद करके गुरुदेव से प्रार्थना करने पर उनके फोटो में उन्होंने स्वहस्त से उपरोक्त आशीर्वाद लिखकर दिया है। गुरुदेव के कृपा भरे आशीर्वाद से इस बालक का जीवन कृतार्थ बना है।

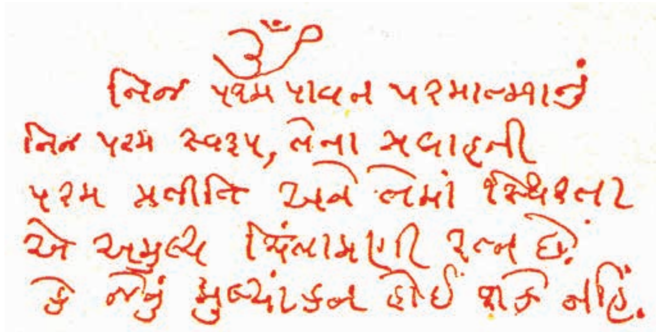

ॐ
નિજ પરમ પાવન પરમાત્માનું
નિજ પરમ સ્વરૂપ, તેના પ્રવાહની
પરમ પ્રતીતિ અને તેમાં સ્થિરતા
એ અમૂલ્ય ચિંતામણી રત્ન છે
કે જેનું મુલ્યાંકન હોઈ શકે નહિં.

ॐ

निज परम पावन परमात्मा का निज परम स्वरूप, उसके प्रवाह की परम प्रतीति और उसमें स्थिरता, वह अमूल्य चिन्तामणी रत्न है कि जिसका मूल्यांकन नहीं हो सकता।

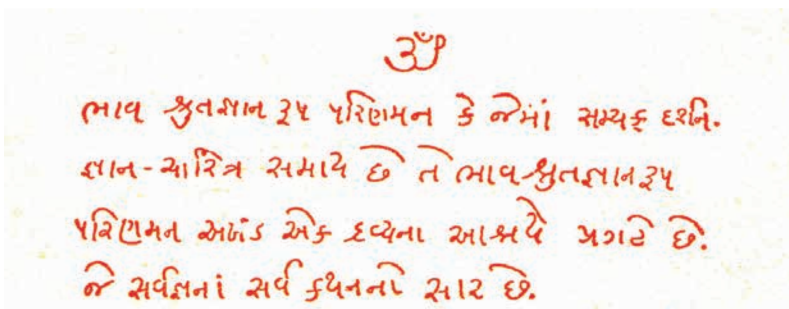

ॐ
ભાવ શ્રુતજ્ઞાનરૂપ પરિણમન કે જેમાં સમ્યક્ દર્શન-
જ્ઞાન-ચારિત્ર સમાયે છે તે ભાવશ્રુતજ્ઞાનરૂપ
પરિણમન અખંડ એક દ્રવ્યના આશ્રયે પ્રગટે છે.
જે સર્વજ્ઞનાં સર્વ કથનનો સાર છે.

ॐ

भावश्रुतज्ञानरूप परिणमन कि जिसमें सम्यग्दर्शन ज्ञान–चारित्र समाहित है, वह भावश्रुतज्ञानरूप परिणमन अखण्ड एक द्रव्य के आश्रय से प्रगट होता है, जो सर्वज्ञ के सर्व कथन का सार है।

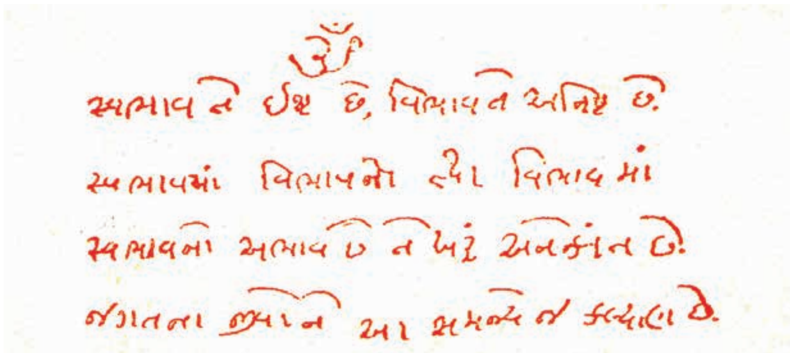
ॐ
સ્વભાવ તે ઈષ્ટ છે, વિભાવ તે અનિષ્ટ છે.
સ્વભાવમાં વિભાવનો તથા વિભાવમાં
સ્વભાવનો અભાવ છે તે ખરું અનેકાંત છે.
જગતના જીવોને આ સમજવું કઠણ છે.

ॐ

स्वभाव, वह इष्ट है; विभाव, वह अनिष्ट है, स्वभाव में विभाव का तथा विभाव में स्वभाव का अभाव है, यह वास्तविक अनेकान्त है। जगत के जीवों को यह समझना कठिन है।

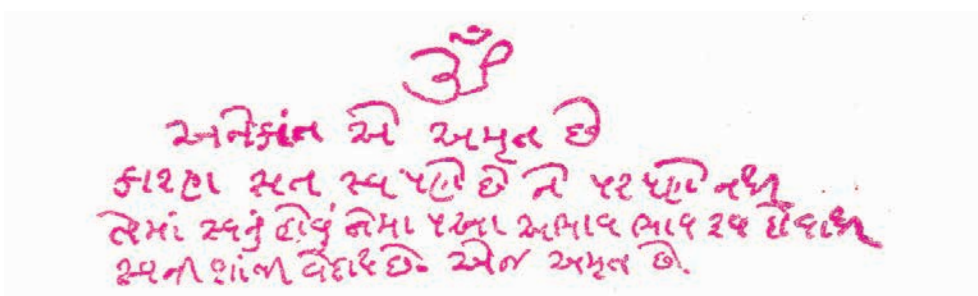
ॐ
અનેકાંત એ અમૃત છે
કારણ સત સ્વપણે છે ને પરપણે નથી
તેમાં સ્વનું હોવું તેમાં પરના અભાવ ભાવરૂપ હોવાથી
સ્વની શાંતિ વેદાય છે. એજ અમૃત છે.

ॐ

अनेकान्त वह अमृत है। कारण सत् स्व-रूप से है और पर-रूप से नहीं। उसमें स्व का होना, उसमें पर का अभाव भावरूप होने से स्व की शान्ति वेदन में आती है, यही अमृत है।

ॐ

આત્માનું જ્ઞાન સ્વપર પ્રકાશક
હોવાથી તેના અનુભવના કાળમાં પણ
તે જ્ઞાન સ્વરૂપ જ્ઞાનને પણ પ્રકાશે છે
અને આનંદને પણ પ્રકાશે છે તેથી તેને
નિશ્ચયથી સ્વપર પ્રકાશક કહેવાય છે:

ॐ

आत्मा का ज्ञान स्व-पर प्रकाशक होने से उसके अनुभव के काल में भी वह ज्ञान स्वरूप ज्ञान को भी प्रकाशित करता है और आनन्द को भी प्रकाशित करता है, इसलिए उसे निश्चय से स्व-परप्रकाशक कहा जाता है।

ॐ

આત્મા સહજ આનંદ સ્વરૂપ છે તે ખરેખર
દુઃખ રૂપ નથી. કેમકે પદાર્થનો સહજ સ્વભાવ
અવિકૃત હોય છે તેથી ખરેખરમાં દુઃખ નથી

ॐ

आत्मा सहज आनन्दस्वरूप है, वह वास्तव में दुःखरूप नहीं, क्योंकि पदार्थ का सहज स्वभाव अविकृत होता है, इसीलिए वास्तव में दुःख नहीं है।

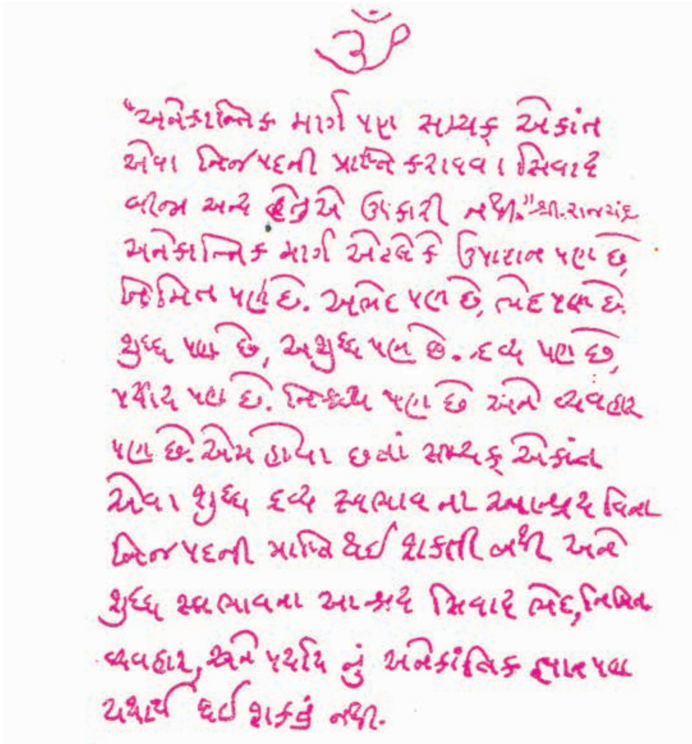
ॐ

"અનેકાન્તિક માર્ગ પણ સમ્યક્ એકાંત એવા નિજપદની પ્રાપ્તિ કરાવવા સિવાય બીજા અન્ય હેતુએ ઉપકારી નથી." શ્રી રાજચંદ્ર

અનેકાન્તિક માર્ગ એટલે કે ઉપાદાન પણ છે, નિમિત્ત પણ છે. અભેદ પણ છે, ભેદ પણ છે. શુદ્ધ પણ છે, અશુદ્ધ પણ છે. દ્રવ્ય પણ છે, પર્યાય પણ છે. નિશ્ચય પણ છે અને વ્યવહાર પણ છે. એમ હોવા છતાં સમ્યક્ એકાંત એવા શુદ્ધ દ્રવ્ય સ્વભાવના આશ્રય વિના નિજપદની પ્રાપ્તિ થઈ શકતી નથી અને શુદ્ધ સ્વભાવના આશ્રય સિવાય ભેદ, નિમિત્ત, વ્યવહાર, અને પર્યાયનું અનેકાંતિક જ્ઞાન પણ યથાર્થ થઈ શકતું નથી.

ॐ

"अनेकान्तिक मार्ग भी सम्यक् एकान्त ऐसे निजपद की प्राप्ति कराने के अतिरिक्त दूसरे अन्य हेतु से उपकारी नहीं है।" श्रीमद् राजचन्द्र। अनेकान्तिक मार्ग अर्थात् कि उपादान भी है, निमित्त भी है; अभेद भी है, भेद भी है; शुद्ध भी है, अशुद्ध भी है; द्रव्य भी है, पर्याय भी है; निश्चय भी है और व्यवहार भी है; ऐसा होने पर भी सम्यक् एकान्त ऐसे शुद्ध द्रव्य स्वभाव के आश्रय बिना निजपद की प्राप्ति नहीं हो सकती और शुद्ध स्वभाव के आश्रय सिवाय भेद, निमित्त, व्यवहार, और पर्याय का अनेकान्तिक ज्ञान भी यथार्थ नहीं हो सकता।

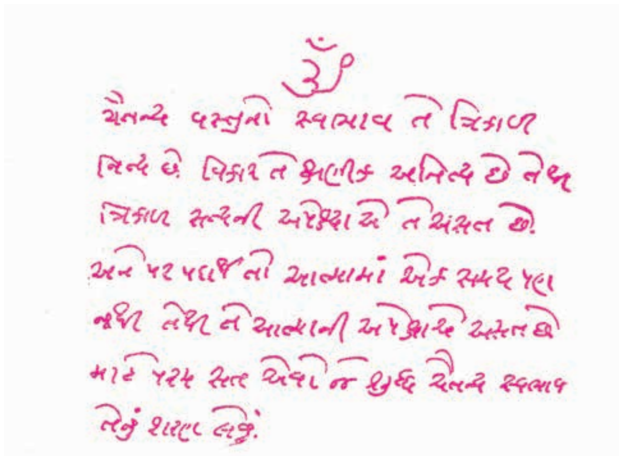
ॐ
ચૈતન્ય વસ્તુનો સ્વભાવ તે ત્રિકાળ
નિત્ય છે વિકાર તે ક્ષણિક અનિત્ય છે તેથી
ત્રિકાળ સત્યની અપેક્ષાએ તે અસત છે.
અને પર પદાર્થ તો આત્મામાં એક સમય પણ
નથી તેથી તે આત્માની અપેક્ષાએ અસત છે
માટે પરમ સત એવો જે શુદ્ધ ચૈતન્ય સ્વભાવ
તેનું શરણ લેવું.

ॐ

चैतन्य वस्तु का स्वभाव वह त्रिकाली नित्य है, विकार क्षणिक–अनित्य है, इसलिए त्रिकाली सत्य की अपेक्षा से वे असत् हैं और परपदार्थ तो आत्मा में एक समय भी नहीं है, इसलिए वे आत्मा की अपेक्षा से असत् हैं, इसलिए परम सत् ऐसा जो शुद्ध चैतन्य स्वभाव, उसकी शरण लेना।

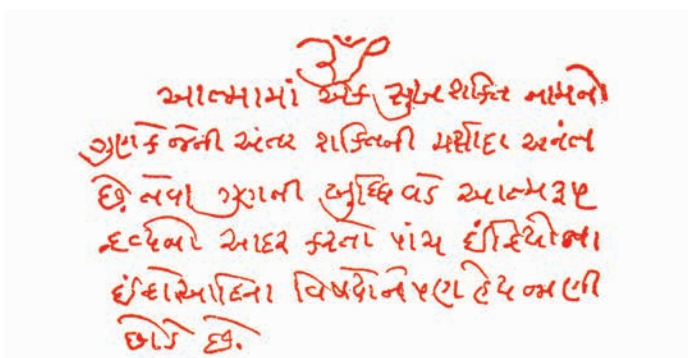
ॐ
આત્મામાં એક સુખશક્તિ નામનો
ગુણ કે જેની અંદર શક્તિની મર્યાદા અનંત
છે તેવા ગુણની બુદ્ધિ વડે આત્મરૂપ
દ્રવ્યનો આદર કરતા પાંચ ઇંદ્રિયોના
ઇંદ્રાદિના વિષયોને પણ હેય જાણી
છોડે છે.

ॐ

आत्मा में एक सुखशक्ति नाम का गुण कि जिसकी अन्दर शक्ति की मर्यादा अनन्त है, ऐसी गुण की बुद्धि द्वारा आत्मरूप द्रव्य का आदर करने से पाँच इन्द्रियों के इन्द्रादि के विषयों को भी हेय जानकर छोड़ता है।

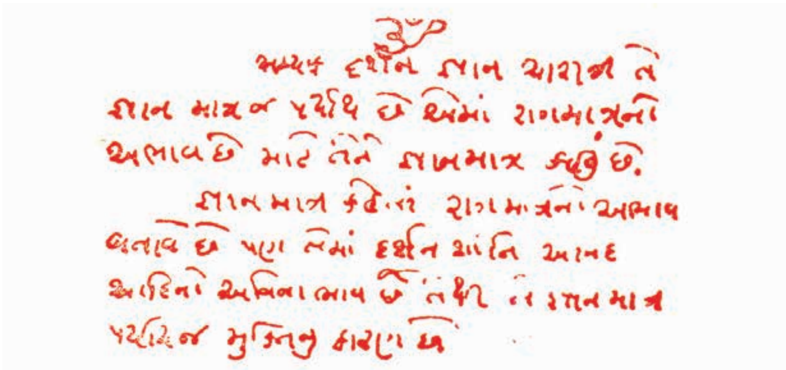
સમ્યક્ દર્શન જ્ઞાન અરાગી તે
જ્ઞાન માત્ર જ પર્યાય છે એમાં રાગમાત્રનો
અભાવ છે માટે તેને જ્ઞાનમાત્ર કહ્યું છે.
જ્ઞાનમાત્ર કહેતાં રાગમાત્રનો અભાવ
બતાવે છે પણ તેમાં દર્શન શાંતિ આનંદ
આદિનો અવિનાભાવ છે તેથી તે જ્ઞાનમાત્ર
પર્યાય જ મુક્તિનું કારણ છે

सम्यक् दर्शन–ज्ञान अरागी वह ज्ञानमात्र ही पर्याय है, उसमें रागमात्र का अभाव है, इसलिए उसे ज्ञानमात्र कहा है।

ज्ञानमात्र कहने से रागमात्र का अभाव बताते हैं परन्तु उसमें दर्शन शान्ति आनन्द आदि का अबिनाभाव है, इसलिए वह ज्ञानमात्र पर्याय ही मुक्ति का कारण है।

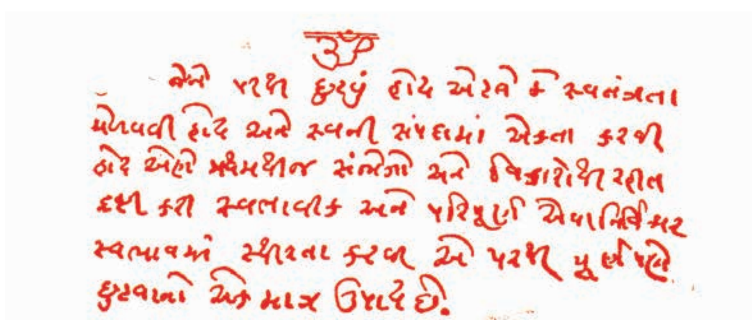
જેને પરથી છૂટવું હોય એટલે કે સ્વતંત્રતા
મેળવવી હોય અને સ્વની સંપદામાં એકતા કરવી
હોય તેણે પહેલેથી જ સંયોગો અને વિકારોથી રહિત
દૃષ્ટિ કરી સ્વાભાવિક અને પરિપૂર્ણ એવા નિર્વિકાર
સ્વભાવમાં સ્થાપના કરવી એ પરથી પૂર્ણપણે
છૂટવાનો એક માત્ર ઉપાય છે.

जिसे पर से छूटना हो अर्थात् कि स्वतन्त्रता प्राप्त करनी हो और स्व की सम्पदा में एकता करनी हो, उसे प्रथम से ही संयोग और विकारों से रहित दृष्टि करके स्वाभाविक और परिपूर्ण ऐसे निर्विकार स्वभाव को स्वीकार करना और पर से पूर्णरूप से छूटने का एकमात्र उपाय है।

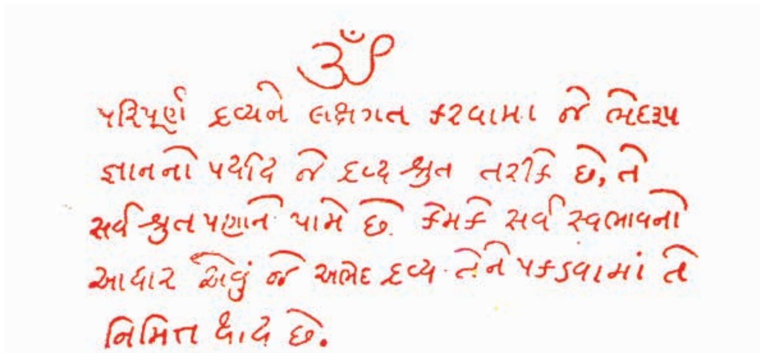

ૐ

પરિપૂર્ણ દ્રવ્યને લક્ષગત કરવામાં જે ભેદરૂપ
જ્ઞાનનો પર્યાય જે દ્રવ્યશ્રુત તરીકે છે, તે
સર્વશ્રુતપણાને પામે છે કેમકે સર્વ સ્વભાવનો
આધાર એવું જે અભેદ દ્રવ્ય તેને પકડવામાં તે
નિમિત્ત થાય છે.

परिपूर्ण द्रव्य को लक्ष्यगत करने में जो भेदरूप ज्ञान की पर्याय जो द्रव्यश्रुतरूप से है, वह सर्व श्रुतपने को पाती है, क्योंकि सर्व स्वभाव का आधार ऐसा जो अभेद द्रव्य, उसे पकड़ने में वह निमित्त होती है।

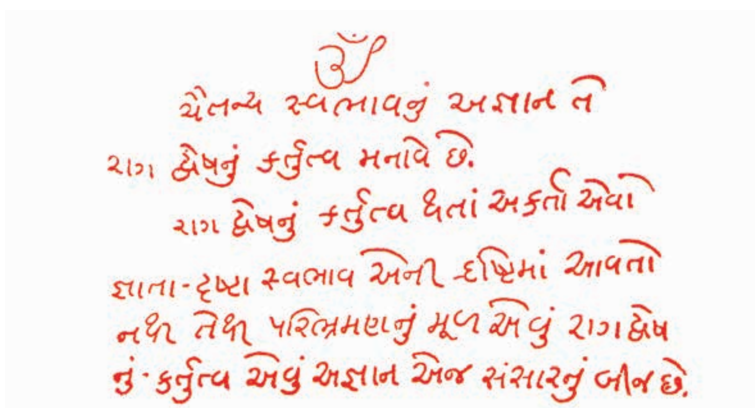

ૐ

ચૈતન્ય સ્વભાવનું અજ્ઞાન તે
રાગ દ્વેષનું કર્તુત્વ મનાવે છે.
રાગ દ્વેષનું કર્તુત્વ થતાં અકર્તા એવો
જ્ઞાતા-દૃષ્ટા સ્વભાવ એની દૃષ્ટિમાં આવતો
નથી તેથી પરિભ્રમણનું મૂળ એવું રાગદ્વેષ
નું કર્તુત્વ એવું અજ્ઞાન એજ સંસારનું બીજ છે.

चैतन्य स्वभाव का अज्ञान वह राग–द्वेष का कर्तृत्व मनाता है।

राग–द्वेष का कर्तृत्व होने पर अकर्ता ऐसा ज्ञाता–दृष्टा स्वभाव उसकी दृष्टि में नहीं आता, इसलिए परिभ्रमण का मूल ऐसा राग–द्वेष का कर्तृत्व, ऐसा अज्ञान ही संसार का बीज है।

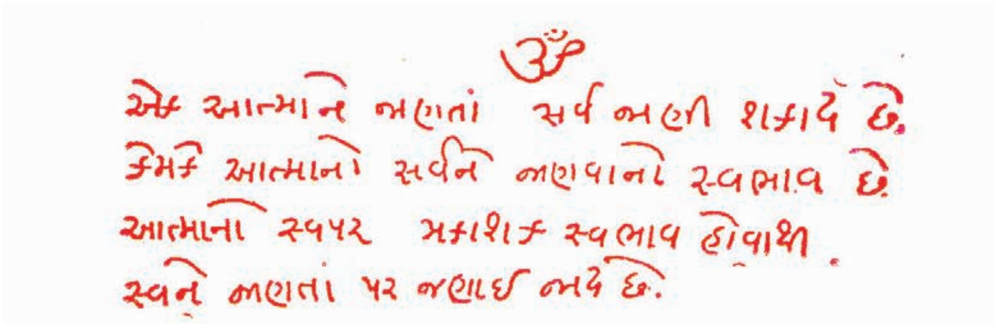

एक आत्मा को जानने से सर्व जाना जा सकता है, क्योंकि आत्मा का सर्व को जानने का स्वभाव है, आत्मा का स्व–परप्रकाशक स्वभाव होने से, स्व को जानने से पर ज्ञात हो जाता है।

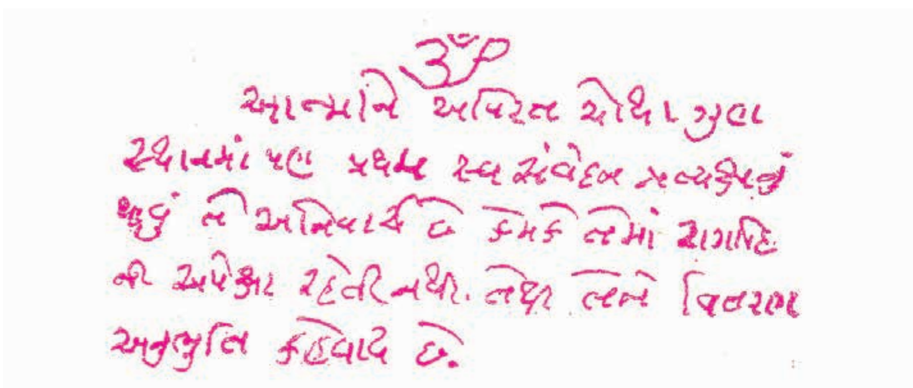

आत्मा को अविरत चौथे गुणस्थान में भी प्रथम स्वसंवेदन प्रत्यक्ष का होना अनिवार्य है, क्योंकि उसमें रागादि की अपेक्षा नहीं रहती; इसलिए उसे वीतराग अनुभूति कहा जाता है।

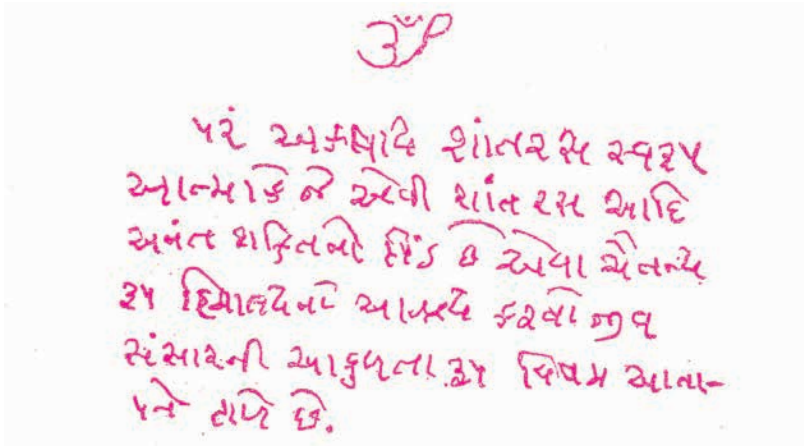

ॐ

પરં અકષાયિ શાંતરસ સ્વરૂપ આત્મા કે જે એવી શાંત રસ આદિ અનંત શક્તિનો પિંડ છે એવા ચૈતન્ય રૂપ હિમાળયનો આશ્રય કરવો જીવ સંસારની આકુળતા રૂપ વિષય આતાપને ટાળે છે.

ॐ

परम अकषाय शान्तरसस्वरूप आत्मा कि जो ऐसी शान्तरस आदि अनन्त शक्तियों का पिण्ड है, ऐसा चैतन्यरूप हिमालय का आश्रय करना जीव संसार की आकुलतारूप विषय आताप को टालता है।

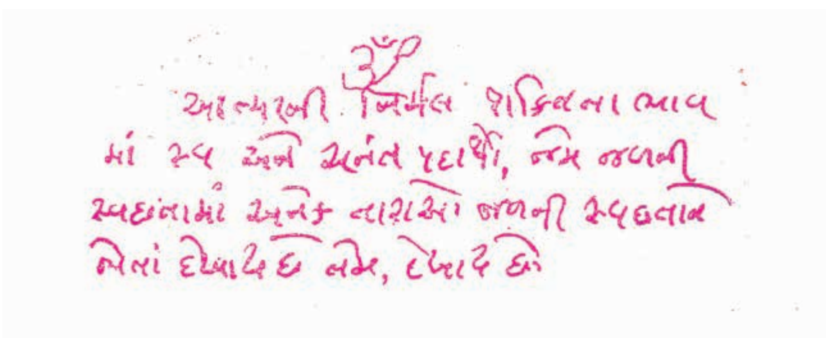

ॐ

આત્માની નિર્મળ શક્તિના ભાવમાં સ્વ અને અનંત પદાર્થો, જેમ જળની સ્વચ્છતામાં અનેક તારાઓ જળની સ્વચ્છતા જોતાં દેખાય છે તેમ, દેખાય છે

ॐ

आत्मा की निर्मल शक्ति के भाव में स्व और अनन्त पदार्थ, जैसे जल की स्वच्छता में अनेक तारे जल की स्वच्छता को देखने से दिखाई देते हैं, वैसे दिखाई देते हैं।

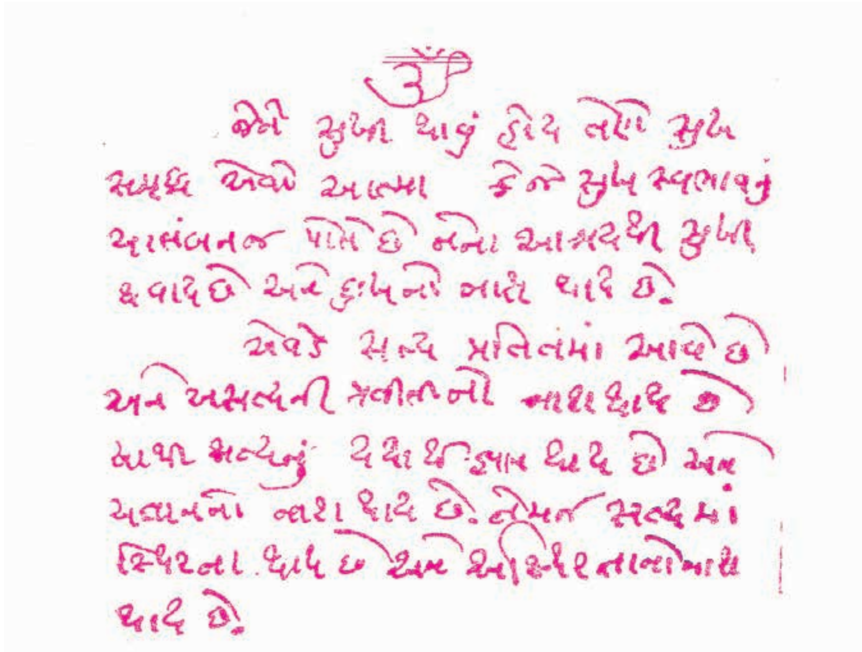

ॐ

જેને સુખી થવું હોય તેણે સુખ
સમૃદ્ધ એવો આત્મા કે જે સુખસ્વભાવનું
આલંબન જ પોતે છે તેના આશ્રયથી સુખી
થવાય છે અને દુઃખનો નાશ થાય છે.
એટલે સત્ય પ્રતીતમાં આવે છે
અને અસત્યની પ્રતીતનો નાશ થાય છે
આથી સત્યનું યથાર્થ જ્ઞાન થાય છે અને
અસત્યનો નાશ થાય છે. તેમજ સત્યમાં
સ્થિરતા થાય છે અને અસ્થિરતાનો નાશ
થાય છે.

ॐ

जिसे सुखी होना हो, उसे सुख समृद्ध आत्मा कि जो सुखस्वभाव का आलम्बन ही पाता है, उसके आश्रय से सुखी हुआ जाता है और दु:ख का नाश होता है।

इसलिए सत्य प्रतीति में आता है और असत्य की प्रतीति का नाश होता है, इससे सत्य का यथार्थ ज्ञान होता है और असत्य का नाश होता है तथा सत्य में स्थिरता होती है और अस्थिरता का नाश होता है।

ૐ

આત્માનું બળ એટલે કે વીર્ય એમાં એવી તાકાત છે કે તે આત્મ સ્વરૂપની રચના કરે છે અને તેજ તેનો સ્વભાવ છે. તે વિકાર ને રચે કે પરને રચે તેવું તે વીર્યનું સ્વરૂપ જ નથી.

પરમજ્ઞાની આત્માની દિવ્ય શક્તિઓનું વર્ણન કરતાં જણાવે છે કે આત્મામાં દ્રવ્ય ગુણ પર્યાયની રચનાના સામર્થ્ય રૂપ એક વીર્ય શક્તિ છે કે જેનું શક્તિવાન એવા આત્મ દ્રવ્ય ઉપર નજર જતાં દ્રવ્ય ગુણપર્યાય એ ત્રણેમાં વ્યાપવું થાય છે.

ॐ

आत्मा का बल अर्थात् कि वीर्य, उसमें ऐसी ताकत है कि वह आत्मस्वरूप की रचना करता है और वही उसका स्वभाव है। वह विकार को रचे या पर को रचे, ऐसा वीर्य का स्वरूप ही नहीं।

परमज्ञानी आत्मा की दिव्यशक्तियों का वर्णन करते हुए बतलाते हैं कि आत्मा में द्रव्य–गुण–पर्याय की रचना के सामर्थ्यरूप एक वीर्यशक्ति है कि जिसका शक्तिवान ऐसे आत्मद्रव्य पर नजर जाने से द्रव्य–गुण–पर्याय, इन तीनों व्यापना होता है।

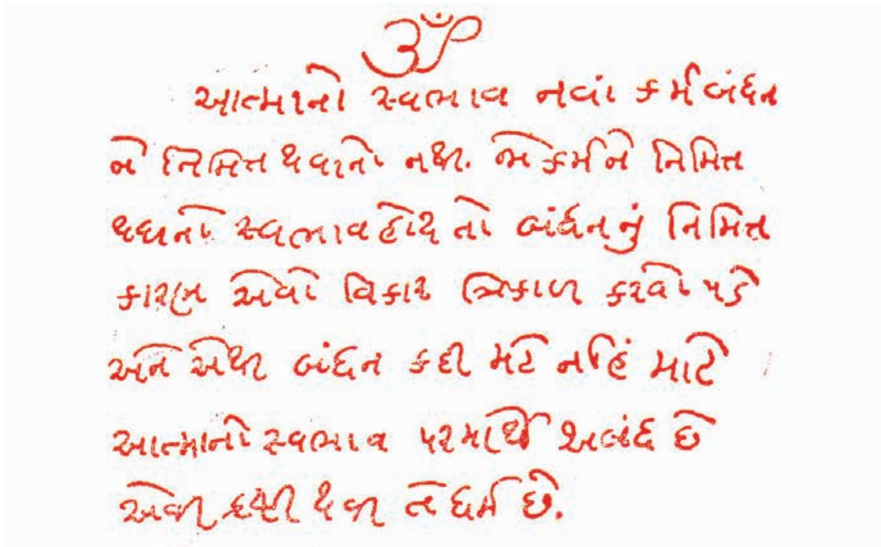

ॐ
આત્માનો સ્વભાવ નવાં કર્મબંધન
ને નિમિત્ત થવાનો નથી. જો કર્મને નિમિત્ત
થવાનો સ્વભાવ હોય તો બંધનનું નિમિત્ત
કારણ એવો વિકાર ત્રિકાળ કરવો પડે
અને એથી બંધન કદી મટે નહિં માટે
આત્માનો સ્વભાવ પરમાર્થે આનંદ છે
એવી દ્રષ્ટી હોવી તે ધર્મ છે.

ॐ

आत्मा का स्वभाव नये कर्मबन्ध का निमित्त होने का नहीं है। यदि कर्म को निमित्त होने का स्वभाव हो तो बन्धन का निमित्तकारण ऐसा विकार त्रिकाल करना पड़े और इससे बन्धन कभी मिटे नहीं, इसलिए आत्मा का स्वभाव परमार्थ से आनन्द है, ऐसी दृष्टि होना, वह धर्म है।

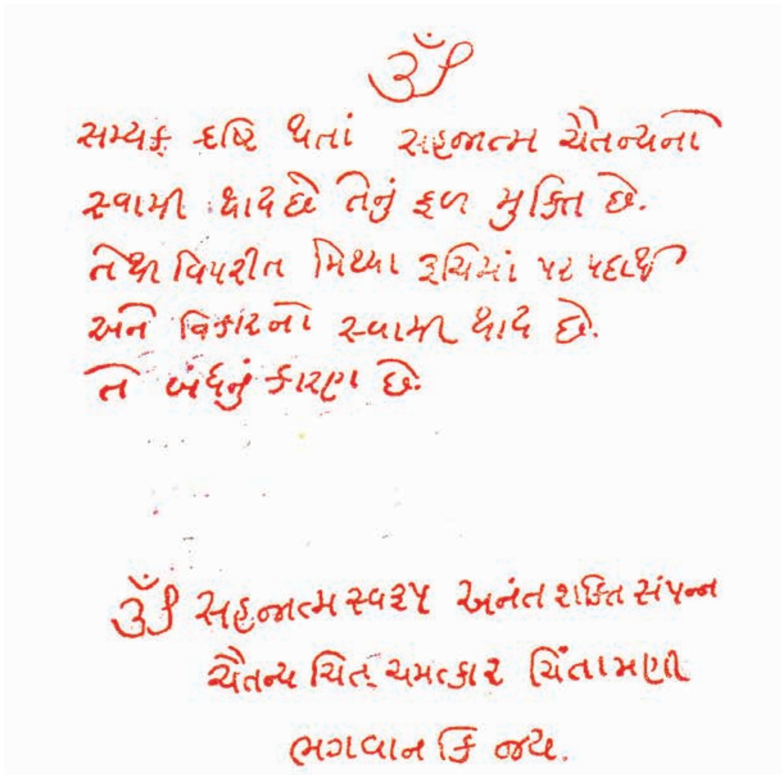

ૐ

સમ્યક્ દૃષ્ટિ થતાં સહજાત્મ ચૈતન્યનો
સ્વામી થાય છે તેનું ફળ મુક્તિ છે.
તેથી વિપરીત મિથ્યા રૂચિમાં પર પદાર્થ
અને વિકારનો સ્વામી થાય છે.
તે બંધનું કારણ છે.

ૐ સહજાત્મસ્વરૂપ અનંત શક્તિ સંપન્ન
ચૈતન્ય ચિત્ ચમત્કાર ચિંતામણી
ભગવાન કિ જય.

ॐ

सम्यक्दृष्टि होने पर सहजात्म चैतन्य का स्वामी होता है, उसका फल मुक्ति है। इससे विपरीत मिथ्यारुचि में परपदार्थ और विकार का स्वामी होता है, वह बन्ध का कारण है।

ॐ सहजात्मस्वरूप अनन्त शक्तिसम्पन्न चैतन्य चित् चमत्कार चिन्तामणी भगवान की जय।

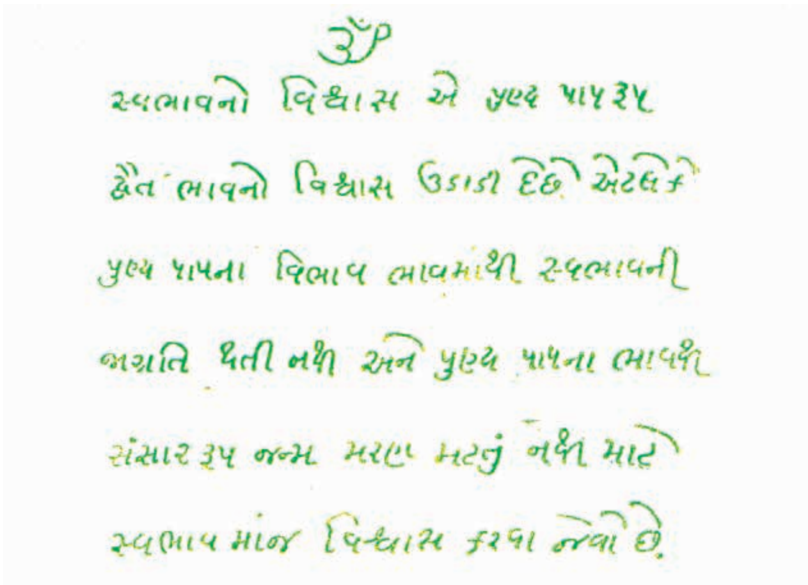
ॐ
સ્વભાવનો વિશ્વાસ એ પુણ્ય પાપરૂપ
દ્વૈત ભાવનો વિશ્વાસ ઉડાડી દે છે એટલે કે
પુણ્ય પાપના વિભાવ ભાવમાંથી સ્વભાવની
જાગૃતિ થતી નથી અને પુણ્ય પાપના ભાવથી
સંસાર રૂપ જન્મ મરણ મટતું નથી માટે
સ્વભાવ માંજ વિશ્વાસ કરવા જેવો છે.

ॐ

स्वभाव का विश्वास, वह पुण्य-पापरूप द्वैत भाव का विश्वास उड़ा देता है। अर्थात् कि पुण्य-पाप के विभाव भाव में से स्वभाव की जागृति नहीं होती और पुण्य-पाप के भाव से संसाररूप जन्म-मरण मिटता नहीं, इसलिए स्वभाव में ही विश्वास करनेयोग्य है।

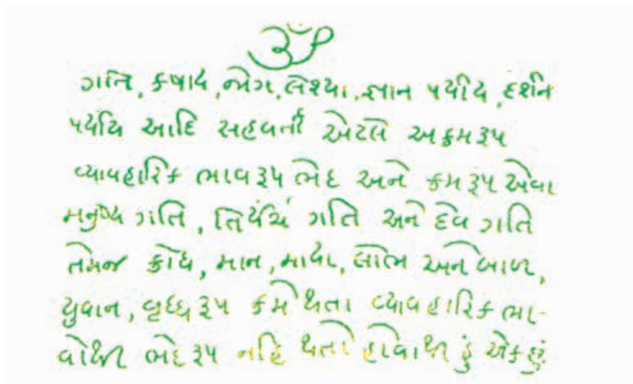
ॐ
ગતિ, કષાય, યોગ, લેશ્યા, જ્ઞાન પર્યાય, દર્શન
પર્યાય આદિ સહવર્તી એટલે અક્રમરૂપ
વ્યાવહારિક ભાવરૂપ ભેદ અને ક્રમરૂપ એવા
મનુષ્ય ગતિ, તિર્યંચ ગતિ અને દેવ ગતિ
તેમજ ક્રોધ, માન, માયા, લોભ અને બાળ,
યુવાન, વૃદ્ધરૂપ ક્રમે થતા વ્યાવહારિક ભા-
વોથી ભેદરૂપ નહિ થતો હોવાથી હું એક છું.

ॐ

गति, कषाय, योग, लेश्या, ज्ञानपर्याय, दर्शनपर्याय आदि सहवर्ती अर्थात् अक्रमरूप व्यवहारिक भावरूप भेद और क्रमरूप ऐसे मनुष्यगति, तिर्यंचगति और देवगति तथा क्रोध, मान, माया, लोभ और बाल-युवा-वृद्धरूप क्रम से होते व्यवहारिक भावों से भेदरूप नहीं होता होने से मैं एक हूँ।

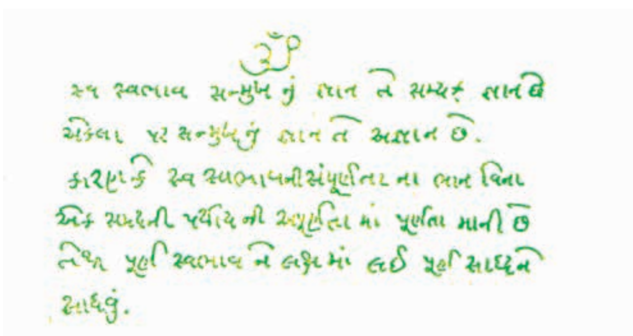
ॐ
સ્વ સ્વભાવ સન્મુખનું જ્ઞાન તે સમ્યક્ જ્ઞાન છે
એકલા પર સન્મુખનું જ્ઞાન તે અજ્ઞાન છે.
કારણ કે સ્વ સ્વભાવની સંપૂર્ણતા ના ભાન વિના
એક સમયની પર્યાયની અપૂર્ણતા માં પૂર્ણતા માની છે
તેથી પૂર્ણ સ્વભાવ ને લક્ષ માં લઈ પૂર્ણ સાધ્યને
સાધવું.

ॐ

स्व-स्वभाव सन्मुख का ज्ञान वह सम्यक्ज्ञान है। अकेले परसन्मुख का ज्ञान, वह अज्ञान है। कारण कि स्वस्वभाव की सम्पूर्णता के भान बिना एक समय की पर्याय की अपूर्णता में पूर्णता मानी है। इसलिए पूर्ण स्वभाव, उसे लक्ष्य में लेकर पूर्ण साध्य को साधना।

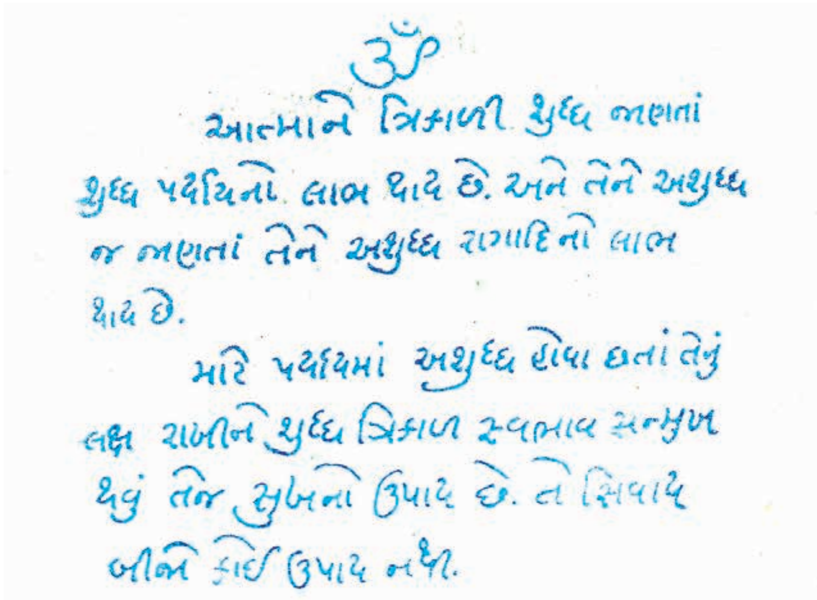

ૐ

આત્માને ત્રિકાળી શુધ્ધ જાણતાં શુધ્ધ પર્યાયનો લાભ થાય છે. અને તેને અશુધ્ધ જ જાણતાં તેને અશુધ્ધ રાગાદિનો લાભ થાય છે.

માટે પર્યાયમાં અશુધ્ધ હોવા છતાં તેનું લક્ષ રાખીને શુધ્ધ ત્રિકાળ સ્વભાવ સન્મુખ થવું તેજ સુખનો ઉપાય છે. તે સિવાય બીજો કાંઈ ઉપાય નથી.

ॐ

आत्मा को त्रिकाली शुद्ध जानने से शुद्धपर्याय का लाभ होता है, और उसे अशुद्ध ही जानने से उसे अशुद्ध रागादि का लाभ होता है।

इसलिए पर्याय में अशुद्ध होने पर भी उसका लक्ष्य रखकर शुद्ध त्रिकाल स्वभाव सन्मुख होना, यही सुख का उपाय है। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नहीं है।

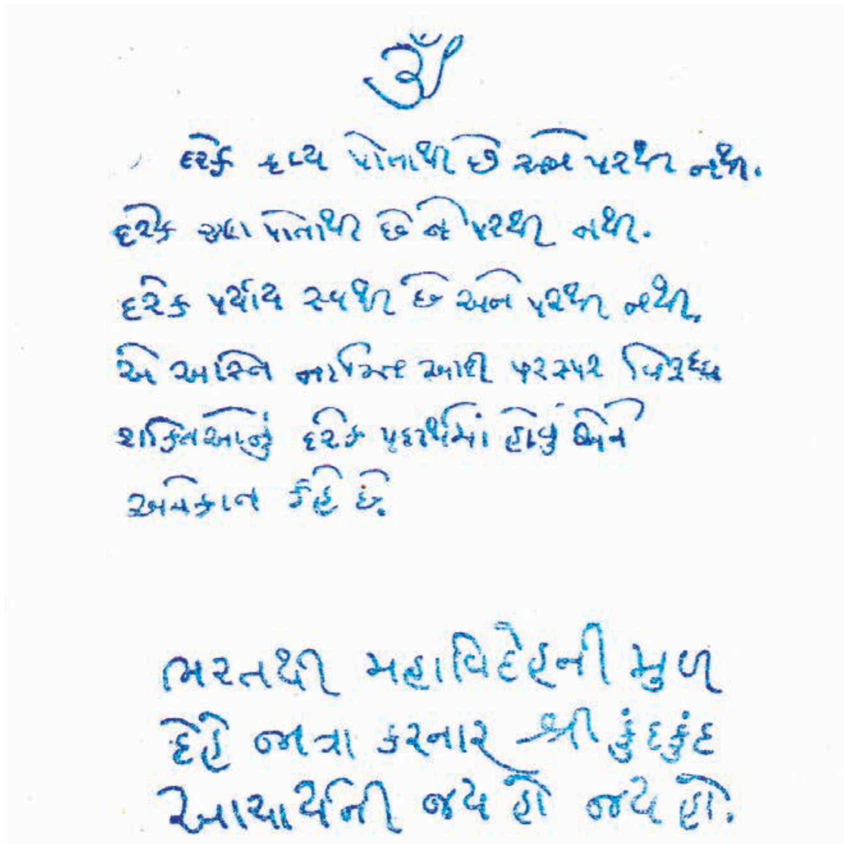

ॐ

દરેક દ્રવ્ય પોતાથી છે અને પરથી નથી.
દરેક ગુણ પોતાથી છે ને પરથી નથી.
દરેક પર્યાય સ્વથી છે અને પરથી નથી.
એ અસ્તિ નાસ્તિ આદી પરસ્પર વિરુદ્ધ
શક્તિઓનું દરેક પદાર્થમાં હોવું એને
અનેકાન્ત કહે છે.

ભરતથી મહાવિદેહની મુળ
દેહે જાત્રા કરનાર શ્રી કુંદકુંદ
આચાર્યની જય હો જય હો.

ॐ

प्रत्येक द्रव्य अपने से है और पर से नहीं। प्रत्येक गुण अपने से है और पर से नहीं। प्रत्येक पर्याय स्व से है और पर से नहीं। यह अस्ति–नास्ति आदि परस्पर विरुद्ध शक्तियों का प्रत्येक पदार्थ में होना, उसे अनेकान्त कहते हैं।

भरत से महाविदेह की मूल देह से यात्रा करनेवाले श्री कुन्दकुन्द आचार्य की जय हो.... जय हो.... !

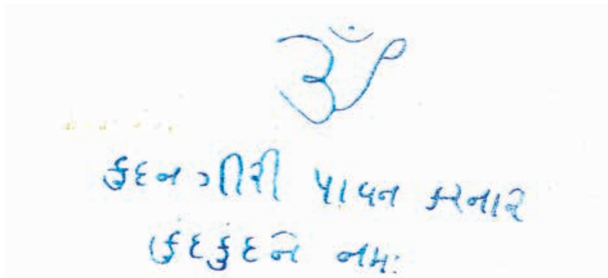
ॐ
કુદનગીરી પાવન કરનાર
કુદકુદને નમઃ

ॐ

कुन्दनगिरी पावन करनेवाले
कुन्दकुन्द को नमः

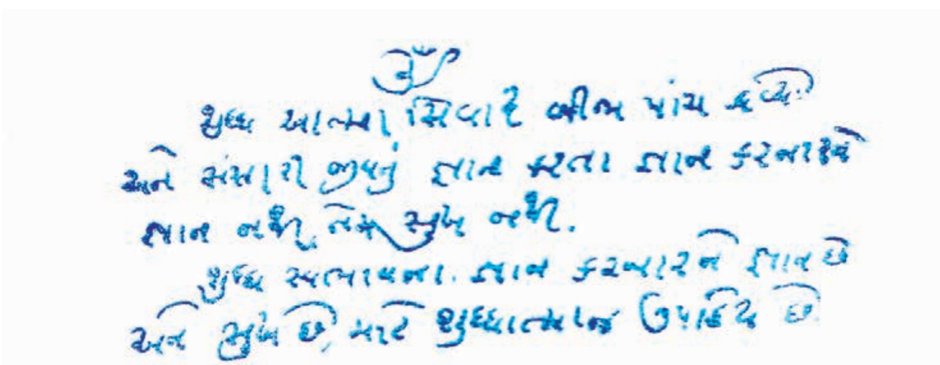
ॐ
શુદ્ધ આત્મા સિવાઈ બીજા પાંચ દ્રવ્ય
અને સંસારી જીવનું જ્ઞાન કરતા જ્ઞાન કરનારને
જ્ઞાન નથી, તેમ સુખ નથી.
શુદ્ધ સ્વભાવના જ્ઞાન કરનારને જ્ઞાન છે
અને સુખ છે, માટે શુદ્ધાત્મા જ ઉપાદેય છે

ॐ

शुद्ध आत्मा के अतिरिक्त दूसरे पाँच द्रव्य और संसारी जीव का ज्ञान करने से ज्ञान करनेवाले को ज्ञान नहीं तथा सुख नहीं।

शुद्ध स्वभाव का ज्ञान करनेवाले को ज्ञान है और सुख है, इसलिए शुद्धात्मा ही उपादेय है।

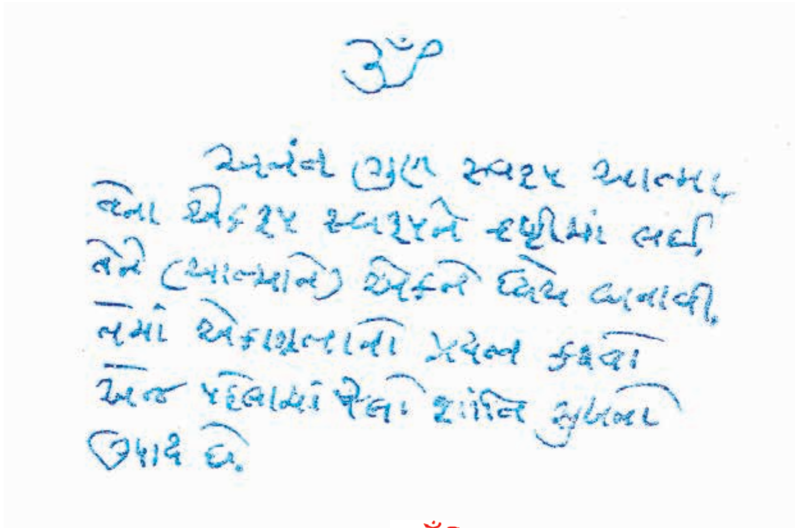

ॐ

અનંત ગુણ સ્વરૂપ આત્મા
તેના એકરૂપ સ્વરૂપને દૃષ્ટીમાં લઈ
તેને (આત્માને) એકને ધ્યેય બનાવી
તેમાં એકાગ્રતાનો પ્રયત્ન કરવો
એજ પહેલામાં પહેલો શાંતિ સુખનો
ઉપાય છે.

अनन्त गुण स्वरूप आत्मा, उसके एकरूप स्वरूप को दृष्टि में लेकर, उसे (आत्मा को) एक को ध्येय बनाकर उसमें एकाग्रता का प्रयत्न करना, यही पहले में पहला शान्ति–सुख का उपाय है।

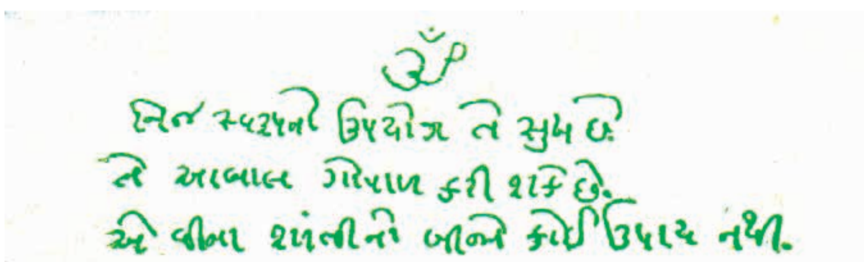

ॐ

નિજ સ્વરૂપનો ઉપયોગ તે સુખ છે
તે આબાલ ગોપાળ કરી શકે છે.
એ વીના શાંતીનો બીજો કોઈ ઉપાય નથી.

निज स्वरूप का उपयोग वह सुख है, वह आबाल गोपाल कर सकता है, इसके बिना शान्ति का दूसरा कोई उपाय नहीं है।

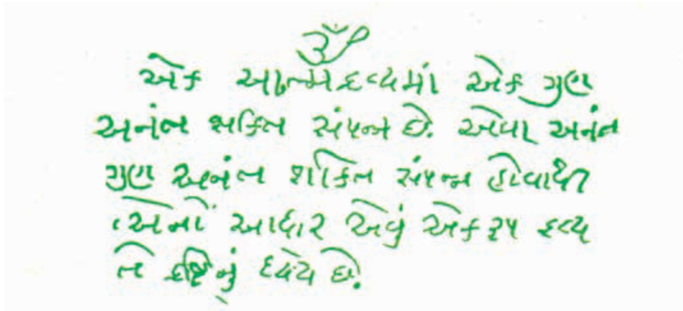

ૐ
એક આત્મદ્રવ્યમાં એક ગુણ
અનંત શક્તિ સંપન્ન છે. એવા અનંત
ગુણ અનંત શક્તિ સંપન્ન હોવાથી
તેનો આધાર એવું એકરૂપ દ્રવ્ય
તે દૃષ્ટિનું ધ્યેય છે.

ॐ

एक आत्मद्रव्य में एक गुण अनन्त शक्ति सम्पन्न है, ऐसे अनन्त गुण अनन्त शक्ति सम्पन्न होने से, उनका आधार ऐसा एकरूप द्रव्य वह दृष्टि का ध्येय है।

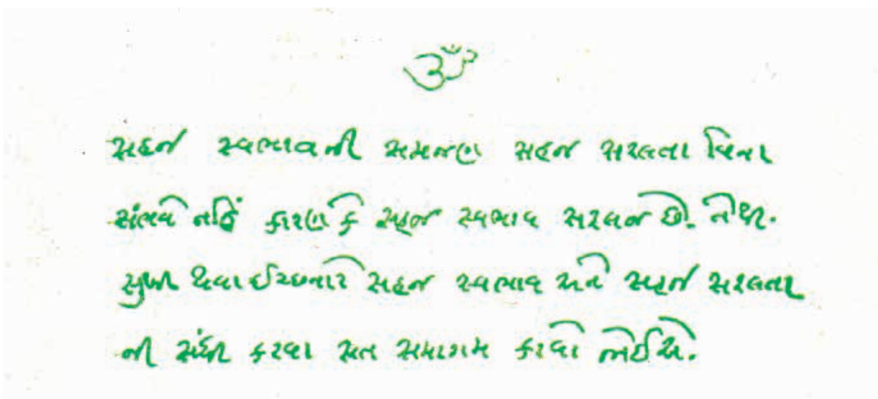

ૐ
સહજ સ્વભાવની સમજણ સહજ સરળતા વિના
સંભવે નહિ કારણ કે સહજ સ્વભાવ સરળ છે. તેથી
સુખી થવા ઈચ્છનાર સહજ સ્વભાવ અને સહજ સરળતા
ની સંધિ કરવા સત્ સમાગમ કરવો જોઈએ.

ॐ

सहज स्वभाव की समझ सहज सरलता बिना सम्भव नहीं है, क्योंकि सहज स्वभाव सरल ही है, इसलिए सुखी होने के इच्छुक को सहज स्वभाव और सहज सरलता की सन्धि करने के लिये सत् समागम करना चाहिए।

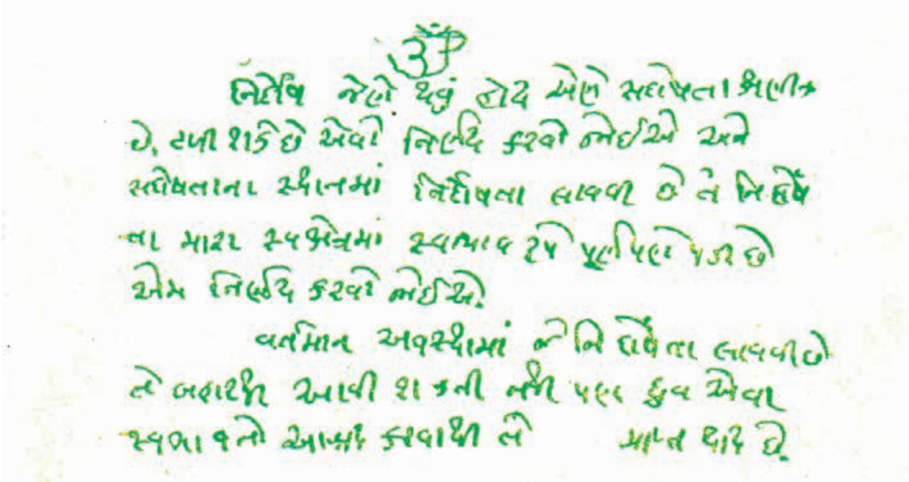

ॐ

નિર્દોષ જેણે થવું હોય એણે સદોષતા ક્ષણિક
છે, ટળી શકે છે એવો નિર્ણય કરવો જોઈએ અને
સદોષતાના સ્થાનમાં નિર્દોષતા લાવવી છે તે નિર્દોષ-
તા મારા સ્વક્ષેત્રમાં સ્વભાવરૂપે પૂર્ણપણે પડી છે
એમ નિર્ણય કરવો જોઈએ.
વર્તમાન અવસ્થામાં જે નિર્દોષતા લાવવી છે
તે બહારથી આવી શકતી નથી પરંતુ ધ્રુવ એવા
સ્વભાવનો આશ્રય કરવાથી તે પ્રાપ્ત થાય છે.

ॐ

जिसे निर्दोष होना हो, उसे सदोषता क्षणिक है, टल सकती है, ऐसा निर्णय करना चाहिए और सदोषता के स्थान में निर्दोषता लाना है, वह निर्दोषता मेरे स्वक्षेत्र में स्वभावरूप से पूर्णरूप पड़ी है, ऐसा निर्णय करना चाहिए।

वर्तमान अवस्था में जो निर्दोषता लानी है, वह बाहर से नहीं आ सकती, परन्तु ध्रुव ऐसे स्वभाव का आश्रय करने से वह प्राप्त होती है।

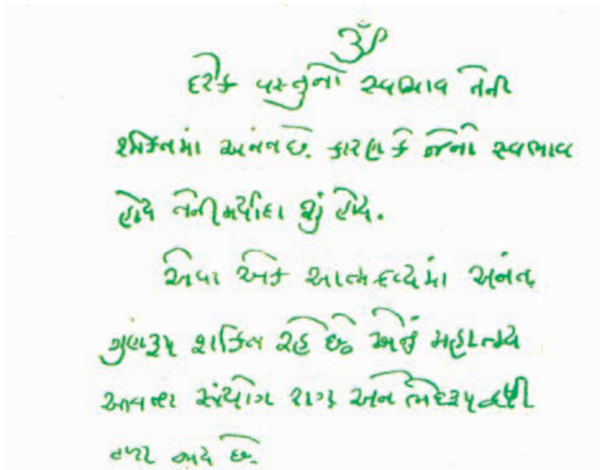

ॐ
દરેક વસ્તુનો સ્વભાવ તેની
શક્તિમાં અનંત છે. કારણ કે જેનો સ્વભાવ
હોય તેની મર્યાદા શું હોય.
એવા એક આત્મદ્રવ્યમાં અનંત
ગુણરૂપ શક્તિ રહે છે એનું માહાત્મ્ય
આવતાં સંયોગ રાગ અને ભેદરૂપથી
ટળી જાય છે.

ॐ

प्रत्येक वस्तु की स्वभाव उसकी शक्ति में अनन्त है, क्योंकि जिसका स्वभाव हो, उसकी मर्यादा क्या हो!

ऐसे एक आत्मद्रव्य में अनन्त, गुणरूप शक्ति रहती है, उसका माहात्म्य आने से संयोग राग और भेदरूप .... टल जाते हैं।

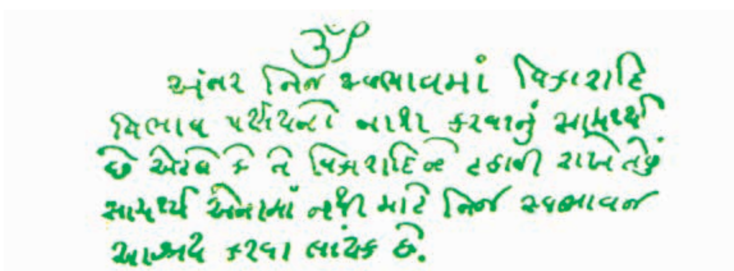

ॐ
અંતર નિજ સ્વભાવમાં વિકારાદિ
વિભાવ પર્યાયનો નાશ કરવાનું સામર્થ્ય
છે એટલે કે તે વિકારાદિને ટકાવી રાખે તેવું
સામર્થ્ય એનામાં નથી માટે નિજ સ્વભાવનો
આશ્રય કરવા લાયક છે.

ॐ

अन्तर निज स्वभाव में विकारादि विभाव पर्याय का नाश करने का सामर्थ्य है, अर्थात् कि वह विभावादि को टिकाये रखे, ऐसा सामर्थ्य उसमें नहीं है, इसलिए निज स्वभाव का आश्रय करने योग्य है।

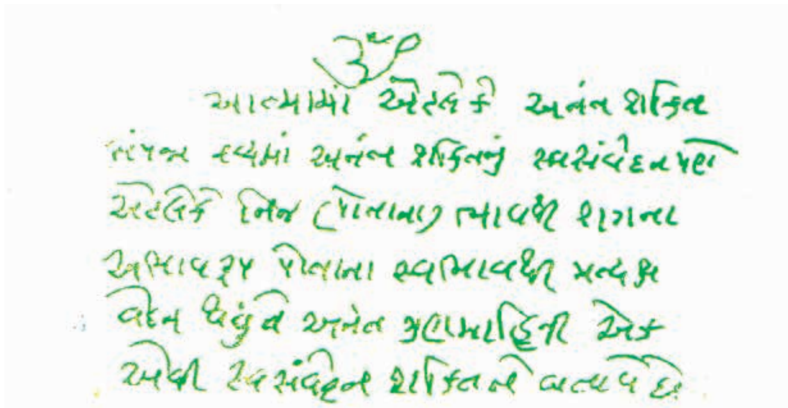

ॐ
આત્મામાં એટલે કે અનંત શક્તિ
સંપન્ન દ્રવ્યમાં અનંત શક્તિનું સ્વસંવેદનપણે
એટલે કે નિજ (પોતાના) ભાવથી રાગના
અભાવરૂપ પોતાના સ્વભાવથી પ્રત્યક્ષ
વેદન થવું તે અનંત ગુણપ્રાપ્તિની એક
એવી સ્વસંવેદન શક્તિને બતાવે છે.

ॐ

आत्मा में अर्थात् कि अनन्त शक्ति सम्पन्न द्रव्य में अनन्त शक्ति का स्वसंवेदनरूप से अर्थात् कि निज (अपने) भाव से राग के अभावरूप अपने स्वभाव से प्रत्यक्ष वेदन होना और अनन्त गुण प्राप्ति की ऐसी स्वसंवेदन शक्ति वह बताती है।

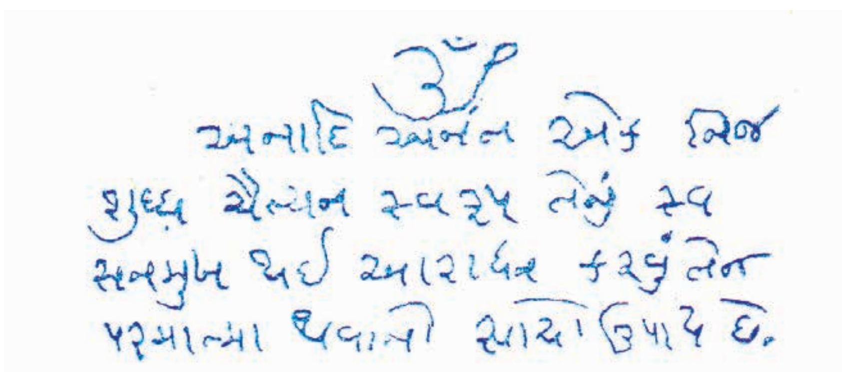

ॐ
અનાદિ અનંત એક નિજ
શુદ્ધ ચૈતન્ય સ્વરૂપ તેનું સ્વ
સન્મુખ થઈ આરાધન કરવું તેજ
પરમાત્મા થવાનો સાચો ઉપાય છે.

ॐ

अनादि अनन्त एक निज शुद्ध चैतन्य स्वरूप का स्वसन्मुख होकर आराधन करना, वही परमात्मा होने का सच्चा उपाय है।

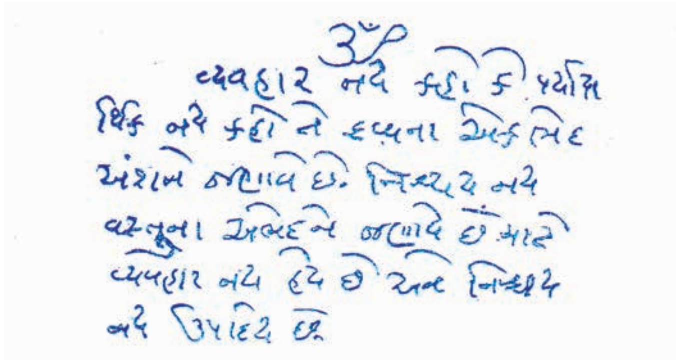

ॐ

વ્યવહાર નયે કહો કે પર્યાયા
ર્થિક નયે કહો તે દ્રવ્યના એક ભેદ
અંશને બતાવે છે. નિશ્ચય નયે
વસ્તુના અભેદને બતાવે છે માટે
વ્યવહાર નય હેય છે અને નિશ્ચય
નય ઉપાદેય છે.

ॐ

व्यवहारनय कहो या पर्यायार्थिकनय कहो, वह द्रव्य के एक भेद अंश को बतलाता है। निश्चयनय वस्तु के अभेद को बतलाता है, इसलिए व्यवहारनय हेय है और निश्चयनय उपादेय है।

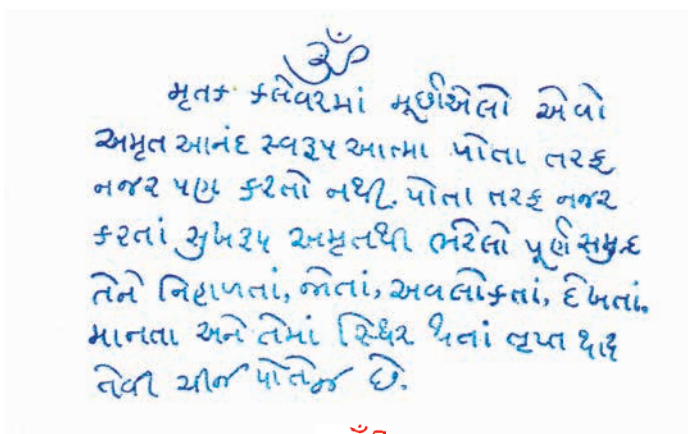

ॐ

મૃતક કલેવરમાં મૂર્છાએલો એવો
અમૃત આનંદ સ્વરૂપ આત્મા પોતા તરફ
નજર પણ કરતો નથી. પોતા તરફ નજર
કરતાં સુખરૂપ અમૃતથી ભરેલો પૂર્ણ સમુદ્ર
તેને નિહાળતાં, જોતાં, અવલોકતાં, દેખતાં,
માનતા અને તેમાં સ્થિર થતાં તૃપ્ત થાય
તેવી ચીજ પોતેજ છે.

ॐ

मृतक कलेवर में मूर्च्छित अमृत आनन्दस्वरूप आत्मा अपनी ओर नजर भी करता नहीं। अपनी ओर नजर करने से सुखरूप अमृत से भरपूर पूर्ण समुद्र को निहारने से, देखने से, अवलोकन करने से, देखने–मानने और उसमें स्थिर होने से तृप्त हो ऐसी चीज़ स्वयं ही है।

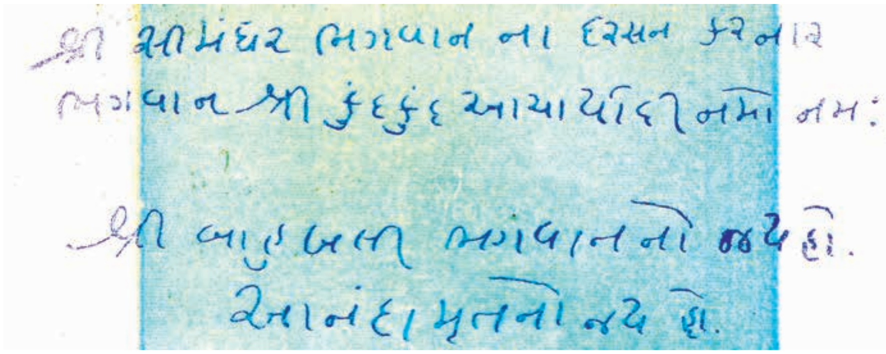
શ્રી સીમંધર ભગવાન ના દરસન કરનાર
ભગવાન શ્રી કુંદકુંદ આચાર્યદેવને નમો નમઃ
શ્રી બાહુબલી ભગવાન નો જય હો.
આનંદામૃત નો જય હો.

श्री सीमन्धर भगवान के दर्शन करनेवाले
भगवान श्री कुन्दकुन्द आचार्य को नमो नमः

श्री बाहुबली भगवान की जय हो
आनन्दामृत की जय हो

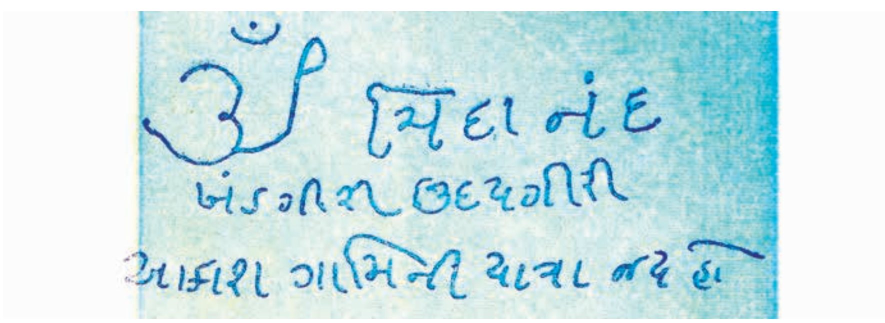
ૐ ચિદાનંદ
ખંડગીરી ઉદયગીરી
આકાશ ગામિની યાત્રા જય હો

ॐ चिदानन्द
खण्डगिरि, उदयगिरि
आकाशगामिनी यात्रा जय हो

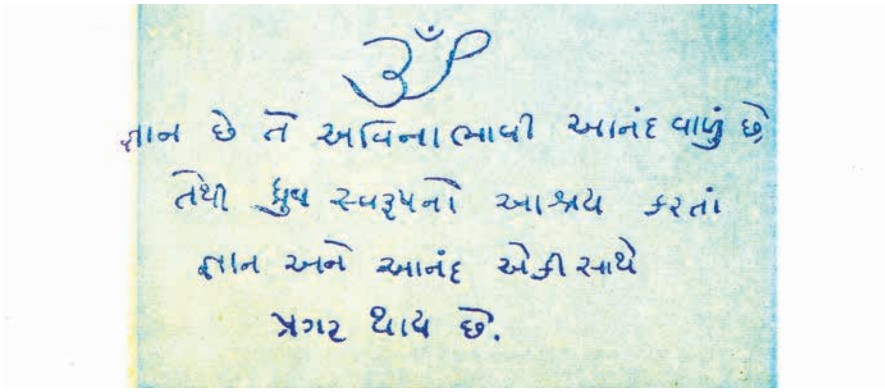

ૐ

જ્ઞાન છે તે અવિનાભાવી આનંદ વાળું છે
તેથી ધ્રુવ સ્વરૂપનો આશ્રય કરતાં
જ્ઞાન અને આનંદ એકી સાથે
પ્રગટ થાય છે.

ॐ

ज्ञान है वह अविनाभावी आनन्दवाला है, इसलिए ध्रुव स्वरूप का आश्रय करने से ज्ञान और आनन्द एक साथ प्रगट होते हैं।

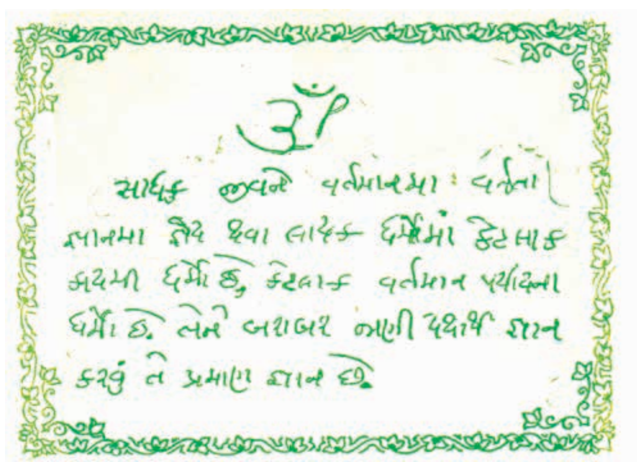

ૐ

સાધક જીવને વર્તમાનમાં વર્તતા
જ્ઞાનમાં જ્ઞેય થવા લાયક ધર્મોમાં કેટલાક
કાયમી ધર્મો છે, કેટલાક વર્તમાન પર્યાયના
ધર્મો છે. તેને બરાબર જાણી યથાર્થ જ્ઞાન
કરવું તે પ્રમાણ જ્ઞાન છે.

ॐ

साधक जीव को वर्तमान में वर्तते ज्ञान में ज्ञेय होने योग्य धर्मों में कितने ही कायमी धर्म है, कितने ही वर्तमान पर्याय के धर्म हैं। उन्हें बराबर जानकर यथार्थ ज्ञान करना, वह प्रमाण ज्ञान है।

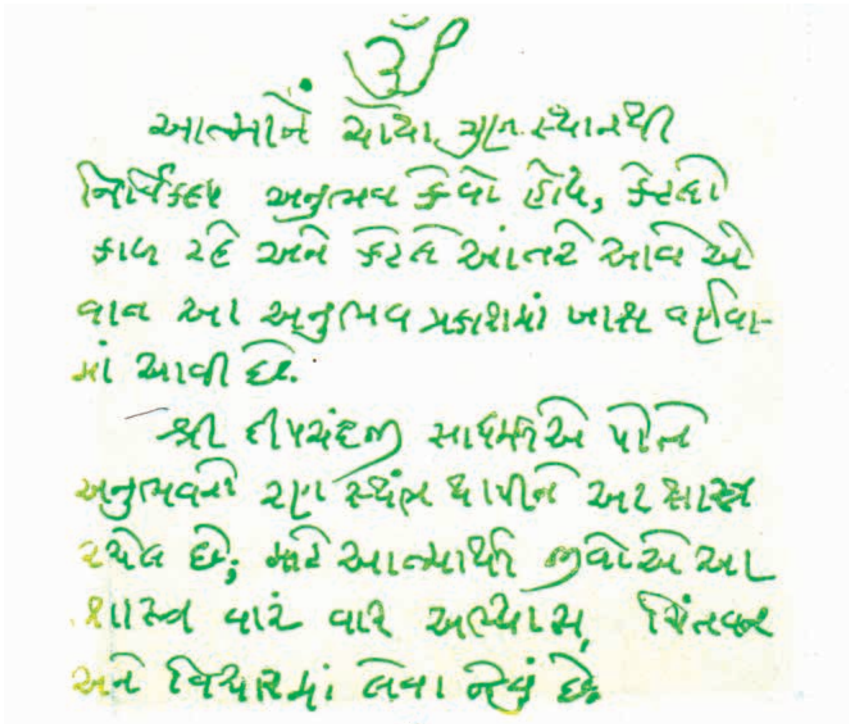

ॐ

આત્માને ચોથા ગુણસ્થાનથી
નિર્વિકલ્પ અનુભવ કેવો હોય, કેટલો
કાળ રહે અને કેટલે અંતરે આવે એ
વાત આ અનુભવ પ્રકાશમાં ખાસ વર્ણવા-
માં આવી છે.

શ્રી દીપચંદજી સાધર્મીએ પોતે
અનુભવનો રસ સ્થંભ સ્થાપીને આ શાસ્ત્ર
રચેલ છે; માટે આત્માર્થી જીવોએ આ
શાસ્ત્ર વારંવાર અભ્યાસ, ચિંતવન
અને વિચારમાં લેવા જેવું છે.

ॐ

आत्मा को चौथे गुणस्थान से निर्विकल्प अनुभव कैसा होता है, कितने काल रहता है और कितने अन्तराल में आता है यह बात इस अनुभवप्रकाश में विशिष्ट वर्णन की गयी है।

श्री दीपचन्दजी साधर्मी ने स्वयं अनुभव का रस स्तम्भ स्थापित कर यह शास्त्र रचा है, इसलिए आत्मार्थी जीवों को यह शास्त्र बारम्बार अभ्यास और विचार में लेनेयोग्य है।

मंगलमय मंगलकरण
वीतरागविज्ञान
नमुं तेह जातें भये
अरिहंतादि महान

૧૮
૧૯
૨૦
૨૧
૨૨
૨૩
૨૪
૨૫
૨૬

परिशिष्ट - 1

सुवर्ण सन्देश, अंक-32, दिनांक - 16-06-1961

धन्य वे मुनिवर

[बोध प्राभृत में गाथा, ४२ से ५९ में प्रव्रज्या का वर्णन है। उन गाथाओं पर इन प्रवचनों में गुरुदेव ने रोम-रोम से प्रमोद और भक्ति से मुनिदशा का अपार माहात्म्य प्रसिद्ध किया है।]

प्रव्रज्या अर्थात् मुनिदीक्षा। वह दीक्षा देनेवाला मुनि कैसा होता है, उनका स्थान कैसा होता है, उन्हें ध्यानयोग्य जिनवाणी, तीर्थ और जिनबिम्ब इत्यादि कैसे होते हैं—यह आचार्यदेव बतलाते हैं। आत्मा के ज्ञान-ध्यान में परायण ऐसे मुनिवर तीर्थस्थान में, गिरिगुफा में, वन-जंगल में बसते होते हैं। ऋद्धिधारी मुनिवर अकृत्रिम जिनमन्दिर इत्यादि में ध्यान करने जाते हैं। ध्यान और स्वाध्याय यह मुनियों की मुख्य प्रवृत्ति है। जगत में उत्तम तीर्थस्थान, भगवान के मोक्षस्थान—सम्मेदशिखर इत्यादि—वे भगवान के स्मरण में निमित्त हैं। उस तीर्थ को जो न माने, वह मिथ्यादृष्टि है, तदुपरान्त स्वयं रत्नत्रयरूप से परिणमित मुनिवर, वे भी तीर्थ हैं। ऐसे रत्नत्रयसहित मुनिराज वे स्वयं दीक्षासहित होते हैं और वे ही दूसरों को प्रव्रज्या प्रदान करनेवाले हैं। प्रव्रज्यावन्त मुनिवर भी मेरु इत्यादि तीर्थस्थानों का चिन्तवन करते हैं। ऐसे तीर्थस्थानों को या वन-जंगल, गिरिगुफा को प्रव्रज्या का स्थान कहा है।

प्रव्रज्या लेनेवाले की दशा कैसी होती है? प्रथम तो घर और वस्त्रादि परिग्रह छोड़ा हो, अन्तर में से ममत्व और राग-द्वेषरूप परिग्रह छोड़ा हो; किसी के पास याचना करे नहीं, अध:कर्मी आहार ले नहीं, चैतन्य के आनन्द की लहर में गुप्त हुए हैं, वहाँ संसार का परिग्रह कैसा? स्वरूप की शान्ति में झूलते-झूलते बाईस परीषह सहते हैं। स्वरूप से डिगते नहीं और किसी प्रकार के पापारम्भ में प्रवर्तते नहीं—ऐसी दशा हो उसे जिनमार्ग में प्रव्रज्या कहते हैं।

दीक्षा का धाम ऐसा जो चैतन्यघर, वह जिसने देखा ही नहीं, उसे दीक्षा कैसी?

मुनियों के पास वस्त्र, धन, धान्य इत्यादि परिग्रह नहीं होता कि दूसरे को उसका दान करे! मुनियों के पास तो दर्शन-ज्ञान-चारित्र हैं, उनका भव्य जीवों को दान करते हैं। किसी समय पात्र जीव को देखकर मुनियों को वृत्ति उठती है कि इस जीव को धर्म प्राप्त कराऊँ! (जैसे ऋषभदेव के जुगलिया के भव में प्रीतिंकर मुनिराज उन्हें सम्यक्त्व प्रदान करने आये)। कोई जीव दीक्षा योग्य हो तो उसे दीक्षा का दान दे। इसके अतिरिक्त हिंसा के कारणरूप ऐसा वस्त्रादि का दान मुनियों को होता नहीं; अन्नदान, वस्त्रदान इत्यादि तो सब गृहस्थ लोगों को होता है।

और मुनि कैसे हैं?—जिन्हें शत्रु-मित्र के प्रति अत्यन्त समभाव है.... प्रशंसा या निन्दा दोनों में समभाव है और लाभ-अलाभ में या लोह-कंचन में जिन्हें समभाव है।—ऐसे मुनियों को प्रव्रज्या होती है। आहा! प्रव्रज्या अर्थात् छठवें-सातवें गुणस्थान की वीतरागीदशा.... उसमें कितनी शान्ति और समभाव हो!! शान्तरस का झरना! इसका नाम प्रव्रज्या है। स्वर्ण का या रत्नों का ढ़ेर देखकर भी जिनका मन किंचित् भी चलित नहीं होता, चैतन्य के निधान को खोलने निकला हुआ साधु जगत के निधान में ललचाता नहीं—

रजकण या ऋद्धि वैमानिक देव की
सबको माना पुद्गल एक स्वभाव जब

—ऐसी जिनकी परिणति परिणम गयी है। अरे! भव-मोक्ष के प्रति भी जिन्हें समभाव वर्तता है, स्वभाव में ऐसे झूल रहे हैं कि 'भव से छूटूँ और मोक्ष को प्राप्त करूँ' ऐसी राग-द्वेष की वृत्ति का उत्थान भी नहीं होता। सहज स्वरूप की निर्विकल्प शान्ति में झूलते-झूलते मोक्ष को साध ही रहे हैं—ऐसी दशा में प्रव्रज्यावन्त मुनिराज झूलते हैं। अहा! ऐसी दशावाले मुनिवरों को पहिचानकर उन्हें सम्मत होने से, उनकी प्रशंसा और अनुमोदन करने से भी निर्जरा होती है।

अहा! साधु, वे कौन हैं? वे तो अरिहन्त के पुत्र हैं।

प्रव्रज्या का स्थान ऐसी जो मुनिदशा, उसका यह वर्णन है। मुनियों की दशा में अशरीरीभाव इतना परिणम गया है कि शरीर के प्रति उदासीनभाव हुआ है, शरीर को शृंगार करने की वृत्ति नहीं, उपशान्त परिणामी हुए हैं। जहाँ क्रोधादि हों, वहाँ मुनिदशा कैसी? जहाँ इन्द्रिय विषयों की गृद्धि हो, वहाँ अतीन्द्रिय चैतन्य में लीनता कहाँ से होगी? जिसे चिदानन्द का भान नहीं और विषय-कषायसहित हो तथापि जो अपने को दिखता सहित—मुनि मानता है, वह अतीत नहीं परन्तु पतीत है। अतीत तो उसे कहा जाता है कि जो राग से पार हो, राग से अतीत ऐसे जो मुनिराज उन्हें ही सच्ची प्रव्रज्या है।

मुनियों को मिथ्यात्वादि विपरीत भाव दूर हुए हैं; राग से निराला चैतन्यतत्त्व दृष्टि में लेकर उसे जो साध रहे हैं और मिथ्यात्व को नष्ट किया है तथा सम्यक्त्व की शुद्धता द्वारा चैतन्य को पर से भिन्न साधते हैं, ऐसे जीवों को प्रव्रज्या होती है।

जिन्हें मिथ्यादृष्टि है और आत्मा के वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते, उन्हें मुनि प्रव्रज्या नहीं होती। भगवान ऋषभदेव के साथ चार हजार राजाओं ने दीक्षा ली थी। भगवान तो चैतन्य के अनुभव में लीन थे—छह महीने तक तो आहार की वृत्ति भी नहीं उठी, परन्तु दूसरे राजाओं को कुछ भान नहीं थी, थोड़े दिन तक तो वे भगवान की देखादेखी से टिके रहे, परन्तु अन्दर कुछ भान तो था नहीं और क्षुधा से पीड़ित होने लगे। कितनों को भूख के कारण आँख के आगे अन्धेरा हो गया या एक चन्द्र के सौ चन्द्र दिखने लगे। इसीलिए उन्हें ऐसा भ्रम हो गया कि जैसे एक चन्द्र होने पर भी भ्रम से सौ दिखते हैं उसी प्रकार आत्मा भी एक है परन्तु भ्रम से अनेक दिखते हैं। ऐसे अभिप्राय से वेदान्तमत निकला; भिन्न आत्मा का भान न रहा। दूसरे कोई क्षुधा से ऐसे निर्बल हो गये थे कि वृक्ष के फूल खाने की इच्छा हुई, परन्तु वहाँ जा नहीं सके, इसलिए उनका मत ऐसा हो गया कि इस देह में आत्मा है ही नहीं, इस प्रकार उनकी नास्तिक मान्यता से चार्वाक्मत चल पड़ा। और किसी को भूख की तीव्र पीड़ा के कारण आगे-पीछे का कुछ याद ही नहीं रहा। और भान भूलकर वे क्षणिकवादी हो गये, वहाँ से बौद्धमत निकला। इस प्रकार अनेक प्रकार की मिथ्या मान्यता सहित

जीव हैं, ऐसे जीवों को मुनिदशा या प्रव्रज्या नहीं होती। अहा! तीर्थंकर के साथ देखा-देखी से मुनि हुए थे परन्तु अन्दर में चैतन्य के भान बिना मुनिपना कहाँ से आवे?

मुनि तो आत्मज्ञानसहित समभाव में झूलते हैं—

आत्मज्ञान समदर्शिता, विचरे उदय प्रयोग,
अपूर्व वाणी परमश्रुत, सद्गुरु लक्षणयोग।

(श्रीमद् राजचन्द्र)

मुनिवर समभावी होते हैं। समभाव का अर्थ ऐसा नहीं कि सत्-असत् का विवेक नहीं करना। और सब समान मानना!—यह तो अज्ञान है। सत्-असत् का बराबर विवेक किये बिना सच्चा समभाव आता ही नहीं। देव और कुदेव समान, गुरु और कुगुरु समान—ऐसा माने वह कहीं समभाव नहीं है, वह तो मिथ्याभाव है। तत्त्वार्थश्रद्धान की विपरीतता टले बिना समभाव होता नहीं। इसलिए सम्यग्दर्शन बिना दीक्षा नहीं होती।

अहा! प्रव्रज्या अर्थात् जिनदीक्षा तो कर्म के क्षय का कारण है। प्रव्रज्यावन्त मुनि दुष्ट अष्ट कर्म का क्षय करनेवाले हैं। अरे! छह में से चाहे जो संहनन हो, उसे भी मुनिदशा आ सकती है; निर्बल संहनन हो तो मुनिदशा नहीं आती—ऐसा नहीं है। पंचम काल के अन्त में अत्यन्त निर्बल संहननवाले जीव होंगे, तब भी अन्तिम भावलिंगी सन्त एक मुनि होंगे। परन्तु ऐसा नहीं कि निर्बल संहनन हो, इसलिए मुनि वस्त्रादि रखें। संहनन निर्बल में निर्बल हो तो भी मुनि निर्ग्रन्थ ही होते हैं—यथाजातरूप होते हैं। शरीर से दिगम्बरपना वह यथाजात है और आत्मा का जैसा सहज स्वरूप है, वैसा प्रगट किया है, वह आत्मा का यथाजातरूप है। ऐसे यथाजातरूप मुनिवर होते हैं। अहो! ऐसी मुनिदशारूप मोक्षमार्ग की परम अचिन्त्य महिमा है, उसका स्वरूप चिन्तवन करने से मार्ग की महिमा आने पर किसी जीव को सम्यक्त्व हो जाता है, उसे 'मार्ग सम्यक्त्व' कहा जाता है। ऐसी जिनमार्ग की प्रव्रज्या, वह आठों कर्मों के नाश का कारण है। ऐसी दशा बिना अष्टकर्म का क्षय नहीं होता। इसलिए हे भव्य जीवों! कर्मक्षय के कारणरूप ऐसी प्रव्रज्या को पहिचानकर

अंगीकार करो। बोधिस्वरूप ऐसा जो भगवान आत्मा, उसकी श्रद्धा-ज्ञान करके उसमें लीनता से चारित्रदशारूप प्रव्रज्या होती है। केवलज्ञान प्रगट करनेवाले तो पहले (व्रजवृषभनाराच) संहननवाले ही होते, परन्तु मुनिदशा तो छह में से किसी भी संहननवाले को होती है।

अहा! प्रव्रज्या अर्थात् मुनिदशा, उसमें तिल के छिलके जितना भी वस्त्रादि का परिग्रह नहीं होता। कुन्दकुन्दाचार्यदेव कहते हैं कि भगवान सर्वदर्शी ने तो ऐसी प्रव्रज्या कही है। अपवादमार्ग में साधु वस्त्र रखे—यह बात भगवान सर्वज्ञ के कहे हुए सूत्र में नहीं है, परन्तु भगवान के नाम से कल्पित सूत्र की बात है। कालदोष से ऐसे मत चले हैं। अरेरे! ऐसे जीव निकले कि मुनिदशा के नाम से शासन को कलंकित कर रहे हैं। मुनिदशा अलौकिक है, वह तो भगवान सर्वज्ञ से किंचित् ही न्यून है। असंख्य विमान का स्वामी इन्द्र भी जहाँ किसी मुनि को देखता है, वहाँ आकर चरणों में मस्तक झुकाकर नमस्कार करता है कि अहा! धन्य... धन्य... मुनिदशा!

देखो, भव्य जीवों के बोध के लिये आचार्यदेव यह मुनिदशा का स्वरूप बता रहे हैं। ओहो! यह स्मरण में आने पर भी रोम-रोम उल्लसित हो जाते हैं! ऐसा मुनिमार्ग वह तो शूरवीरों का मार्ग है। तीर्थंकरों ने जिसे आदर किया, भरत चक्रवर्ती जैसों ने जिस मार्ग का आदर किया, वह मार्ग कैसा होगा! स्वप्न में भी उनका दर्शन होने से भक्ति से रोम-रोम उल्लसित हो जाते हैं। अरे! शरणभूत वस्तु तो यह है। कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने दो हजार वर्ष पहले यह मार्ग प्रसिद्ध किया है... भव्य जीवों के प्रतिबोध के लिये करुणा से परम सत्यमार्ग का उपदेश किया है।

हे कुन्दकुन्दादि आचार्यो! आपके वचन भी स्वरूप-अनुसन्धान में इस पामर को परम उपकारभूत हुए हैं, इसलिए मैं आपको अतिशय भक्ति से नमस्कार करता हूँ।

गुरुदेवश्री अत्यन्त प्रमोद से और भक्ति से कहते हैं कि :— **अहो प्रभु! आप सन्त हुए... और सन्त का पंथ आपने हमें बतलाया। आपका इस पामर पर महा उपकार है।**

परिशिष्ट – 2

आत्मधर्म (गुजराती), अंक – 266

'ज्ञानचेतना'
—जिसके द्वारा ज्ञानी पहिचाना जाता है।

(ज्ञानचेतना मोक्ष का मार्ग.... अज्ञानचेतना संसार का मार्ग
ज्ञानचेतना द्वारा ज्ञानी केवलज्ञान को बुलाता है।)

(श्रीसमयसार कलश–224 पर ज्ञानचेतना का स्वरूप समझानेवाला विशिष्ट प्रवचन)

ज्ञानचेतना अर्थात् शुद्धात्मा को अनुभव करनेवाली चेतना, वह चेतना मोक्षमार्ग है। उस ज्ञानचेतना का सम्बन्ध शास्त्र के पठन के साथ नहीं है। ज्ञानचेतना तो अन्तर्मुख होकर आत्मा के साक्षात्कार का कार्य करती है;—कम–अधिक जानपना हो, उसके साथ सम्बन्ध नहीं, परन्तु ज्ञानानन्दस्वभाव में सन्मुख होने से ज्ञानचेतना प्रगट होती है; उस ज्ञानचेतना में आत्मा अत्यन्त शुद्धरूप से प्रकाशित होता है। ऐसी ज्ञानचेतना चौथे गुणस्थान से शुरु होती है। ज्ञानचेतना, वह कारण और केवलज्ञान उसका कार्य। ज्ञानचेतना का कार्य राग तो नहीं, और ज्ञानचेतना का कार्य बाहर का जानपना भी नहीं; अन्तर्मुख होकर शुद्ध आत्मा को संचेतना–अनुभव करना वह ज्ञानचेतना का कार्य है। ऐसी ज्ञानचेतना को धर्मी ही जानता है। धर्म की, संवर की और मोक्षमार्ग की शुरुआत इस ज्ञानचेतना से होती है।

ज्ञानचेतना आत्मिकरस से भरपूर है और समस्त विषयों से अत्यन्त उदासीन है। जीव के शुद्ध स्वरूप को अनुभव करनेवाली ज्ञानचेतना द्वारा शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होती है और अशुद्धता के अनुभव द्वारा अशुद्धता की प्राप्ति होती है। इस प्रकार कारण अनुसार कार्य होता है, अर्थात् कि शुद्ध कारण के सेवन से शुद्ध कार्य होता है और अशुद्ध कारण के सेवन से अशुद्धता होती है। राग तो अशुद्धता है उस अशुद्धता के

सेवन द्वारा कभी शुद्धता हो जाये—ऐसा नहीं होता। ज्ञानचेतना द्वारा अन्तर में शुद्धस्वभाव को अनुभव करने से केवलज्ञानरूप शुद्धता खिलती है। बस, अन्तर में स्वभावसन्मुख का अनुभव, वही ज्ञानचेतना का काम है।

उपदेश देकर दूसरे जीवों को तारना, वह कहीं ज्ञानचेतना का कार्य नहीं है। अन्दर विकल्प उठे, वह भी ज्ञानचेतना का कार्य नहीं है। वहाँ वाणी की तो क्या बात? विकल्प को और वाणी को जो ज्ञानचेतना का कार्य मानता है, उस जीव को ज्ञानचेतना प्रगटी नहीं, ज्ञानचेतना क्या है—इसकी उसे खबर नहीं। वह तो राग-द्वेष परिणाम में तन्मय होकर अज्ञानचेतना को सेवन करता है और अज्ञानचेतना में से संसार की उत्पत्ति होती है।

इस प्रकार ज्ञानचेतना, वह मोक्ष का मार्ग और अज्ञानचेतना, वह संसार का मार्ग है। जिसमें ज्ञान नहीं, उसके सेवन से मोक्षमार्ग कैसे होगा? शुभविकल्प, वह कहीं ज्ञान नहीं। इसलिए उस शुभविकल्प के सेवन से मोक्षमार्ग नहीं होता; जो शुभविकल्प को मोक्षमार्ग मानता है, वह अज्ञानचेतना को सेवन करता है। उस अज्ञानचेतना का फल हर्ष-शोक का वेदन है अर्थात् कि दु:ख का वेदन है और वह ज्ञान की शुद्धता को रोकता है। तथा आठ कर्मों को बाँधता है। उसके सामने ज्ञानचेतना में आनन्द का वेदन है, वह शुद्धता प्रगट करता है और आठ कर्म के बन्ध को तोड़ता है।

ज्ञानचेतना द्वारा ज्ञानी ने जाना है कि मैं शुद्ध चैतन्यस्वरूप जीव हूँ; सर्व कर्म की उपाधि से रहित मेरा शुद्धस्वरूप मुझे स्वानुभव प्रत्यक्ष से आस्वाद में आता है। ज्ञानी ऐसी ज्ञानचेतना द्वारा ही पहिचाना जाता है।

ज्ञानचेतना द्वारा ज्ञानी अपने शुद्ध आत्मा को ही चेतता है—अनुभव करता है; ज्ञानचेतना द्वारा ज्ञानी कहीं राग को चेतता नहीं अर्थात् कि राग को स्व-पने अनुभव

नहीं करता। स्वतत्त्व को पकड़कर उसके अनुभव में एकाग्र होना, वह ज्ञानचेतना का कार्य है, शुद्धचारित्र भी उसमें समाहित हो जाता है; ऐसी ज्ञानचेतना, वह मोक्षमार्ग है, वह केवलज्ञान को बुलानेवाली है। अहा! ज्ञानचेतना द्वारा ज्ञानी केवलज्ञान को बुलाता है। विकल्प द्वारा बुलाने से केवलज्ञान कुछ जवाब दे, ऐसा नहीं है। विकल्प तो अशुद्धता है, उसके द्वारा केवलज्ञान कैसे आवे? ज्ञानचेतना वह केवलज्ञान की जाति की ही है, उसके द्वारा अन्तर्मुख होकर बुलाने से तुरन्त केवलज्ञान आता है। ऐसी ज्ञान चेतना द्वारा ज्ञानी केवलज्ञान को बुलाता है।

ऐसी ज्ञानचेतनाधारी केवली के पथानुगामी सन्तों को नमस्कार!

परिशिष्ट - 3

आत्मधर्म (गुजराती), अंक-282

बयाना शहर में अपूर्व मंगल के साथ अपूर्व घोषणा

गुरुदेव ने महान उल्लासपूर्वक की हुई पूर्व भव की आनन्दकारी बात पाँच सौ वर्ष प्राचीन सीमन्धर प्रभु की प्रतिमा के समक्ष हुआ भव्य उत्सव।

फाल्गुन कृष्ण 7, बयाना नगर में पहुँचे... सीमन्धर भगवान यहाँ के जिनमन्दिर में विराजते हैं, उनके विशेष दर्शन करने के लिये ही गुरुदेव की विशिष्ट भावना से यहाँ का कार्यक्रम रखा गया था; इसलिए गुरुदेव के साथ सीमन्धर भगवान के दर्शन करते हुए सबको बहुत ही हर्ष हुआ। प्रथम, गुरुदेव के पधारने पर स्वागत हुआ और गुरुदेव जिनमन्दिर में दर्शन करने पधारे। जिनेन्द्र भगवन्तों को अर्घ्य चढ़ाते-चढ़ाते और दर्शन करते-करते जहाँ सीमन्धर प्रभु के निकट आये कि तुरन्त बहुत भाव से गुरुदेव प्रभु को देख रहे हैं। पाँच सौ वर्ष प्राचीन प्रतिमाजी के ऊपर लेख में सीमन्धरस्वामी का नाम पढ़ा। उसमें लिखा है कि **पूर्व विदेह के तीर्थकर्ता श्री जीवन्तस्वामी श्री श्रीमंधरस्वामी** बारम्बार गुरुदेव ने यह नाम पढ़ा और इस लेख की नोंध करने को कहा। भावभीने चित्त से गुरुदेव प्रभुजी के निकट में बहुत देर तक बैठे रहे और पूज्य बहिनों को भक्ति करने को कहा। थोड़ी देर भावभीनी भक्ति हुई। गुरुदेव ने कहा कि इन सीमन्धर भगवान के दर्शन करने के लिये ही यहाँ आये हैं। तत्पश्चात् प्रवचनसभा में भावभीना मंगल प्रवचन करते हुए गुरुदेव ने कहा—

'मंगल' चार प्रकार से है—नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव; आत्मा का स्वरूप जो शुद्ध भूतार्थ स्वभाव है, वह मंगल है; उस स्वरूप को साधकर जो सर्वज्ञ परमात्मा हुए, वे मंगल हैं; ऐसे परमात्मा सीमन्धर भगवान अभी विदेहक्षेत्र में विराजमान हैं और यहाँ भी स्थापनानिक्षेप से सीमन्धर परमात्मा विराज रहे हैं। हमारे सोनगढ़ में भी सीमन्धर भगवान को पधराया है, परन्तु यहाँ तो पाँच सौ वर्ष प्राचीन

सीमन्धर भगवान की प्रतिमा है; उनके विशिष्ट दर्शन करने के लिये यहाँ आये हैं। कोई कहता था कि *'हमारा गाँव छोटा है।'* भाई! गाँव भले छोटा हो लेकिन भगवान तो बड़ा है! ऐसे सीमन्धरादि परमात्मा का नाम मंगलरूप है; वे जहाँ विराजते हों, वह क्षेत्र मंगलरूप है; जिस काल में वे जन्मे, दीक्षा ली और केवलज्ञानादि प्राप्त किये, वह काल भी मंगल है और जिस भाव से वे केवलज्ञानादि को प्राप्त हुए, वे सम्यक्त्वादि भाव भी मंगलरूप हैं। और षट्खण्डागम में तो वीरसेनस्वामी ने एक विशेष बात की है कि जो आत्मा तीर्थंकरादि होनेवाला है और केवलज्ञानादि पानेवाला है, वह आत्मद्रव्य त्रिकाल मंगलरूप है।

अभी सीमन्धर भगवान पूर्व विदेह में तीर्थंकररूप से विचरते हैं। दो हजार वर्ष पहले जिनकी वाणी सुनकर कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने शास्त्र रचे, वे ही सीमन्धर भगवान अभी भी विराज रहे हैं। उनका आयुष्य करोड़ पूर्व का है। जैसे चौबीस तीर्थंकरों की स्थापना होती है, वैसे सीमन्धर भगवान आदि विद्यमान तीर्थंकरों की ही स्थापना होती है। उसका यहाँ पाँच सौ वर्ष प्राचीन प्रमाण इस मूर्ति के शिलालेख में है, हमारे सोनगढ़ में तो मानस्तम्भ में चार ऊपर, चार नीचे, समवसरण में चौमुखी तथा मन्दिरजी में दो—ऐसे सीमन्धर भगवान की स्थापना है। तथा सौराष्ट्र इत्यादि में बहुत जगह भी सीमन्धर भगवान विराजते हैं, परन्तु यहाँ सीमन्धर भगवान के पाँच सौ वर्ष पहले की प्राचीन प्रतिमा के दर्शन से हमको बड़ा प्रमोद आया! जैसे यहाँ महावीरादि चौबीस तीर्थंकर हुए, वैसे ही सीमन्धर भगवान भी तीर्थंकररूप से विदेह में अभी विचर रहे हैं, क्या कहें! दूसरी बहुत बात है....

मंगल के श्लोक में महावीर भगवान और गौतम गणधर के पश्चात् तीसरा नाम कुन्दकुन्दाचार्यदेव का (मंगलं कुन्दकुन्दार्यो) आता है। वे इस भरतक्षेत्र में दो हजार वर्ष पहले हुए महान सन्त थे, आत्मा के ज्ञान-आनन्द के प्रचुर स्वसंवेदन में झूलते थे, अतीन्द्रिय आनन्द से विलसित वे मद्रास के निकट (अस्सी मील दूर) 'पौन्नूर' पहाड़ पर रहकर आत्मध्यान करते थे। एक बार उन्हें भरतक्षेत्र में तीर्थंकर-केवली का विरह चुभा और सीमन्धर परमात्मा का ध्यान किया। उन्हें आकाश में

गमन करने की महान लब्धि थी और देहसहित वे सीमन्धर परमात्मा के निकट विदेहक्षेत्र में गये थे। अहा! उनकी पवित्रता तो अलौकिक और उनका पुण्य भी कैसा अलौकिक कि भरतक्षेत्र के मानव ने देहसहित विदेहक्षेत्र के तीर्थंकर की यात्रा की! विदेह में आठ दिन तक सीमन्धर भगवान की दिव्यध्वनि सुनकर, पश्चात् भरतक्षेत्र में पौन्नूर पर उन्होंने समयसारादि महान शास्त्र रचे हैं। उस समय जो सीमन्धर परमात्मा विराजते थे, वे ही अभी भी विराज रहे हैं।

यहाँ बयाना में भी पाँच सौ वर्ष प्राचीन सीमन्धर भगवान विराजते हैं, यह सुना तब से इन प्रतिमाजी के दर्शन करने की भावना थी। जयपुर के उत्सव के कारण इस ओर आना हुआ और यहाँ के सीमन्धर भगवान के दर्शन किये। खास यह दर्शन करने के लिये ही यहाँ आये हैं। गाँव छोटा हो या बड़ा, परन्तु भगवान तो बड़े विराज रहे हैं। यह सीमन्धर भगवान हमारे प्रभु हैं, हमारे देव हैं, इनका हमारे ऊपर महान उपकार है।

इससे पहले के भव में हम इन भगवान के पास थे। परन्तु हमारी भूल के कारण यहाँ भरत में आये हैं। कुन्दकुन्दाचार्यदेव यहाँ से सीमन्धर परमात्मा के पास आये और भगवान की वाणी सुनी, तब हम भी वहाँ उपस्थित थे। इन दोनों बहिनों का आत्मा भी पुरुष भव में वहाँ उपस्थित थे। कुन्दकुन्दाचार्य तो हमने साक्षात् देखे हैं, विशेष क्या कहें? और भी बहुत गम्भीर बात है। सीमन्धर परमात्मा का यहाँ विरह हुआ; यहाँ के भगवान की बात सुनकर और आज साक्षात् दर्शन कर हमको बहुत प्रमोद हुआ।

❁ ❁ ❁ ❁

मंगल प्रवचन पूरा हुआ... बयाना नगर के एक भाई ने स्वागत गीत भी गाया... परन्तु कार्यक्रम पूरा हो, उससे पहले पूज्य गुरुदेव ने अन्तर में घुट रही अत्यन्त महत्त्व की सुनहरी बात प्रसिद्ध की.... सीमन्धरनाथ के दर्शन से अन्तर में जागृत विदेहक्षेत्र के मधुर संस्मरण आज गुरुदेव के हृदय में आनन्द की ऊर्मियाँ जागृत करते थे और हृदय बहुत-बहुत भाव खोलने का मन होता था। पूज्यश्री चम्पाबेन को पूर्व के चार

भव का जातिस्मरणज्ञान है और पूर्व भव में सीमन्धर भगवान के पास थे, यह बात प्रसिद्ध करते हुए अत्यन्त प्रमोद और प्रसन्नता से गुरुदेव ने कहा कि —

देखो! यहाँ सीमन्धर भगवान विराजमान हैं; सीमन्धर भगवान की यहाँ साक्षी है; इन भगवान की साक्षी में यहाँ दो बात प्रसिद्ध करता हूँ कि इन चम्पाबहिन को (सामने बैठी हैं उनको) चार भव का जातिस्मरणज्ञान है। यह दोनों बहिनें (चम्पाबेन और शान्ताबेन) पूर्व में विदेहक्षेत्र में भगवान के पास थे, वहाँ से यहाँ आये हैं। यह दोनों बहिनें, मैं तथा दूसरे एक भाई थे—ऐसे चार जीव भगवान के समीप थे परन्तु हमारी भूल से हम इस भरतक्षेत्र में आये। यहाँ पाँच सौ वर्ष प्राचीन सीमन्धर प्रभु विराज रहे हैं। उन्हें देखकर बहुत प्रमोद हुआ। इन परमात्मा के समीप मैं यह बात आज यहाँ खुल्ली रखता हूँ कि यह बहिनें और हम पूर्व में सीमन्धर परमात्मा के पास थे और इन चम्पाबहिन को चार भव का ज्ञान है। आत्मा के ज्ञानोपरान्त इन्हें तो चार भव का ज्ञान है। यह सीमन्धर भगवान की साक्षी में समाज में यह बात प्रसिद्ध की है। हमारे ऊपर भगवान का महा उपकार है।

अहा! सीमन्धर भगवान के समीप गुरुदेव के ऐसे परम भावभीने हृदयोद्गार सुनकर श्रोताजन हर्षनाद में सराबोर बने... यात्रा में सब धन्यता अनुभव करने लगे। विदेहीनाथ सीमन्धर प्रभु की गुरुदेव ने महान आनन्दपूर्वक यात्रा करायी। प्रत्येक यात्री दूसरा सब भूलकर सीमन्धर प्रभु की चर्चा में तल्लीन था। बयाना नगर में जहाँ देखो वहाँ गुरुदेव के आज के हृदयोद्गार का वातावरण दिखता था। जयपुर के भव्य उत्सव के पश्चात् तुरन्त ऐसा महान आनन्दकारी प्रसंग बना, यह वास्तव में सीमन्धर भगवान के प्रताप से गुरुदेव द्वारा भरतक्षेत्र में महान धर्मवृद्धि होने का सूचक है।

जय हो सीमन्धरनाथ की.....
जय हो सीमन्धर नन्दन गुरुदेव की.....
जय हो विदेह से पधारे हुए सन्तों की.....

❁ ❁ ❁ ❁

इस प्रकार बहुत ही प्रमोदपूर्वक गुरुदेव ने सीमन्धर प्रभु के चरण सान्निध्य में हृदय के भाव खोले। श्रोताजनों के हर्ष का तो आज पार नहीं था। बयाना की ऐसी आनन्दकारी यात्रा की तो किसी को कल्पना भी नहीं थी। बयाना शहर मानो आज सीमन्धरनगरी बन गया था। आज के आनन्दकारी प्रसंग की ही चर्चा गुरुदेव बारम्बार किया करते थे। अभी भी हृदय के बहुत–बहुत भाव खोलने का गुरुदेव का मन था। प्रसन्नचित्त से बारम्बार उन्होंने कहा — कोई लोग कहते हैं कि तुमने सीमन्धर प्रभु की प्रतिमा क्यों पधराई? परन्तु भाई! प्रतिमा तो चौबीस तीर्थंकर की तथा विद्यमान तीर्थंकरों की भी होती है। यहाँ पाँच सौ वर्ष पहले सीमन्धर प्रभु की स्थापना हुई है, वही इसका बड़ा प्रमाण है और प्रतिमा पर सीमन्धर प्रभु का लेख अत्यन्त स्पष्ट है। उन्हें 'जीवन्त स्वामी' अर्थात् विद्यमान तीर्थंकर कहा है। उनके दर्शन करने का विचार था, वह आज सफल हुआ और भगवान के समीप यह बात प्रसिद्ध की, वह मंगल है।

यहाँ तो सीमन्धर भगवान की स्थापना है और महाविदेह में साक्षात् सीमन्धर परमात्मा अभी विराजते हैं। इन चम्पाबहिन को चार भव का ज्ञान है। पूर्व भव में हम चार जीव भगवान के पास थे, यह इनके ज्ञान में स्पष्ट भासित हुआ है; दूसरा भी बहुत है। आत्मज्ञान उपरान्त इन्हें तो चार भव का ज्ञान है। तीस वर्ष में आज यहाँ सीमन्धर भगवान की साक्षी में यह बात प्रसिद्ध करता हूँ। पूर्व भव में ये दोनों बहिनें तथा मेरा आत्मा (गुरुदेव का आत्मा—राजकुमार रूप से) वहाँ भगवान के समीप में थे। वहाँ से हम चार जीव इस भरतक्षेत्र में आये हैं। यहाँ भगवान के समीप में आज समाज में यह बात मैं प्रसिद्ध करता हूँ।

गुरुदेव के श्रीमुख से बारम्बार ऐसी आनन्दकारी घोषणा सुनकर भक्तों को बहुत ही हर्ष होता था। यों तो गुरुदेव बहुत भक्तों को बारम्बार यह बात करते थे, परन्तु भरी सभा के बीच इतनी महान प्रसन्नतापूर्वक और सीमन्धर भगवान की साक्षी में गुरुदेव ने आज जो प्रसिद्धि की, वह विशिष्ट नवीनता थी और श्रोताजन उसे सुनकर

धन्यता अनुभव करते थे। वाह ! आज की यात्रा सफल हुई। गुरुदेव भी यहाँ के प्रसंग को बारम्बार सैकड़ों बार आनन्द से याद करते हैं।

यह प्रतिमा पाँच सौ वर्ष पहले की स्थापित होने पर भी अभी तक प्रसिद्ध क्यों नहीं थी और अभी ही क्यों प्रसिद्धि में आयी ? इस सम्बन्धी इतिहास भी जाननेयोग्य है। जिनमन्दिर की जिस वेदी पर यह भगवान विराजते हैं, उस वेदी पर दूसरी भी अनेक प्रतिमाजी विराजमान थीं, उसमें इस प्रतिमाजी के अगले भाग में दूसरी एक प्रतिमाजी इस प्रकार से थी कि उसके द्वारा सीमन्धर भगवान की मूर्ति के ऊपर का लेख ढँक जाता था और अन्तिम दो सौ वर्षों से परम्परागत लोग चन्द्रप्रभरूप से इन भगवान की पूजा करते आये हैं। ऐसे में गुरुदेव का प्रभाव और प्रचार बयाना तक पहुँचा। बयाना के जिज्ञासुओं ने आत्मधर्म द्वारा तथा अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित सीमन्धर प्रभु की प्रतिमा के अनेक चित्र देखे.... उनकी मुद्रा मानो कि इन भगवान से मिलान खाती हो, ऐसा उन्हें लगा। (विशेष में इस वेदी पर विराजमान दूसरी अनेक प्रतिमाओं की नेत्रदृष्टि की अपेक्षा इन भगवान की नेत्रदृष्टि में एक विशेषता है।) इसलिए बीच के दूसरे प्रतिमाजी को एक ओर लेकर इस प्रतिमा के ऊपर का लेख वाँचा। लेख वाँचा और पुजारी को आश्चर्य हुआ कि अरे! यह चन्द्रप्रभ सीमन्धरस्वामी कैसे बन गये ? उसके लिये यह एक आश्चर्य की बात थी, इसलिए जैन पत्रों में यह बात प्रसिद्ध की और इस प्रकार बयाना के ये सीमन्धर भगवान प्रसिद्ध हुए। पश्चात् तो अपने इनका खास फोटो मँगाकर आत्मधर्म में उसे प्रसिद्ध किया और आज गुरुदेव ने उनकी साक्षात् यात्रा करके इन सीमन्धर भगवान को सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध कर दिया। इतना ही नहीं, इन सीमन्धर भगवान के साथ के पूर्व भव के सम्बन्ध को भी आनन्दपूर्वक प्रसिद्ध करके महान मंगल किया।

श्री सीमन्धर भगवान की जय हो.....

दोपहर में भी बारम्बार सीमन्धरनाथ का अवलोकन करने गुरुदेव पधारे थे

और बारम्बार सूक्ष्मता से अवलोकन करते हुए उनके अन्तर में नित नये भाव जागृत होते थे और पूर्व के बहुत मधुर स्मरण ताजा होते थे। तब भक्तों को ऐसा लगता था कि यहाँ इस भरतक्षेत्र में संवत् 1507 में जब ये सीमन्धर भगवान स्थापित होते होंगे, तब गुरुदेव और पूज्यबहिनश्री–बेन इत्यादि आत्मायें तो विदेहक्षेत्र में साक्षात् सीमन्धरनाथ की सेवा करते होंगे! उस समय बयाना में किसे कल्पना होगी कि 516 वर्ष पश्चात् साक्षात् सीमन्धर भगवान के पास से भक्त यहाँ आकर इन सीमन्धरनाथ के दर्शन–पूजन करेंगे।

दोपहर को भक्तों को भावना जागृत हुई कि गुरुदेव के साथ यहाँ आये हैं तो चलो, भगवान का अभिषेक भी करें और गुरुदेव से भी अभिषेक करायें। उत्साह से अभिषेक के लिये बोली हुई और गुरुदेव ने स्वहस्त से भावभीने चित्त से अपने प्रियनाथ का अभिषेक किया। गुरुदेव के हस्त से सीमन्धरनाथ के अभिषेक का दृश्य देखकर यात्रिकसंघ तथा बयाना की जनता में हर्षपूर्वक जय–जयकार छा गया और सीमन्धरनाथ की इस यात्रा की प्रसन्नता में कुल रुपये 5555 (पाँच हजार पाँच सौ पचपन) जिनमन्दिर (बयाना) को अर्पण किये गये। तदुपरान्त दूसरी भी कितनी ही रकमें घोषित की गयीं। बयाना शहर के संघ ने बहुत प्रेम प्रदर्शित किया था और उत्साहपूर्वक आवभगत की थी। दोपहर के प्रवचन में भी गुरुदेव ने बारम्बार अपना प्रमोद व्यक्त किया था। प्रवचन का स्थान बराबर सीमन्धर भगवान के सन्मुख निकट में ही था, इसलिए गुरुदेव को विशेष भाव उल्लसित होते थे। आज दिन भी फाल्गुन शुक्ल सप्तमी था; (दस वर्ष पहले इसी दिन सम्मेदशिखर की यात्रा की थी और अभी भी उसकी ही यात्रा करने जा रहे थे)। प्रवचन के पश्चात् फिर एक बार सीमन्धर प्रभु के दर्शन करके तथा दूसरे मन्दिर में दर्शन करके भगवान की जय–जयकारपूर्वक गुरुदेव ने तथा यात्रासंघ ने इटावा की ओर प्रस्थान किया।

❀ ❀ ❀ ❀

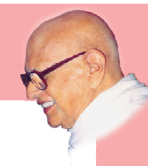

आत्मधर्म, वर्ष–22, अंक –10

॥ श्री महावीराय नमः ॥

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी स्मारक भवन का उद्घाटन, वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव तथा द्विशताब्दि समारोह

दिनांक 06 मार्च से 16 मार्च 1967 तक

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी महान विद्वान एवं सुधारक थे, उन्होंने अपने अल्प जीवनकाल में ही अनेक उच्चकोटि के 'मोक्षमार्गप्रकाशक' जैसे अनुपम ग्रन्थों की रचना एवं 'गोम्मटसार' जैसे महान कठिन ग्रन्थों की अर्थ संदृष्टि सहित अत्यन्त सरल भाषा में टीका तैयार करके धर्म, समाज एवं जिनवाणी माता की अपूर्व सेवा की थी।

यह जयपुर नगरी बहुत सौभाग्यशाली है, जहाँ पर ऐसे–ऐसे अनेकों मोक्षमार्गी महापुरुषों ने जन्म लेकर जिनवाणी की सतत साधना के द्वारा स्व–परकल्याण कर इस नगरी को पवित्र किया। महापुरुष आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी ने उसी साधना की रक्षा के लिये अपने आपको इसी भूमि पर बलिदान कर दिया। उनके स्वर्गवास को २०० वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। अतः हम सबका कर्तव्य है कि उनके उपकार की स्मृति को ताजा करने के लिये एवं उनके बताये हुये मार्ग पर प्रवृत्ति करने के लिये उनके बलिदान को द्विशताब्दि समारोह के रूप में सारे भारतवर्ष में विशेष–विशेष आयोजनों के साथ निम्न प्रकार से अखिल भारतीय स्तर पर मनाया जावे।

इस सम्बन्ध में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल जयपुर की मीटिंग में निम्न निर्णय लिये गये हैं। अतः समस्त जैन समाज से निवेदन है कि कार्यक्रमों में पूर्ण उत्साह से भाग लेकर सभी कार्यक्रमों को सफल बनायें।

1– जैनाजैन पत्रों में प्रचार कर द्विशताब्दि समारोह मनाने के लिये समाज में जागृति उत्पन्न की जावे।

2- दिनांक 13 मार्च 67 को प्रत्येक स्थान पर विशालरूप से सभाओं का आयोजन करके पण्डित टोडरमलजी के व्यक्तित्व एवं गुणों पर विस्तृत प्रकाश डालकर सर्वसाधारण को इस सम्बन्ध में अवगत कराया जावे।

3- द्विशताब्दि समारोह के अवसर पर पण्डितजी साहब के सम्बन्ध में व उनके साहित्य के सम्बन्ध में परिचयात्मक लेख व श्रद्धांजलियाँ आदि संग्रह कर उनके प्रकाशन की व्यवस्था की जावे, अतः मार्च में पण्डित टोडरमलजी जयन्ती स्मारिका जयपुर में प्रकाशित की जा रही है।

4- उक्त अवसर पर श्री टोडरमलजी साहब की रचनाओं का एवं अन्य सत् साहित्य का प्रकाशन किया जावे।

5- अपने आत्म कल्याण के हेतु जैन शास्त्रों के अध्ययन व मनन की रुचि जागृत की जावे।

❁ ❁ ❁ ❁

बापूनगर (जयपुर) में नवनिर्मित

टोडरमल स्मारक भवन

जयपुर में पण्डित टोडरमल द्विशताब्दि समारोह का विशाल आयोजन दिनांक 13 से 16 मार्च तक किया जा रहा है। जयपुर में पण्डित टोडरमल स्मारक भवन का निर्माण बापू नगर में हुआ है—उसकी उद्घाटन भी दिनांक 13 मार्च को होगा तथा इसी समय इस स्मारक भवन में श्री सीमन्धर भगवान को नवनिर्मित वेदी में प्रतिष्ठापूर्वक स्थापन किया जावेगा तथा पण्डित टोडरमलजी की स्वहस्त लिखित प्राचीन ग्रन्थों एवं अन्य दर्शनीय अलभ्य जैन साहित्य की प्रदर्शनी का भी आयोजन है।

जयपुर जैन समाज के अति आग्रह के कारण एक सप्ताह पूर्व ही सोनगढ़ के सन्त पूज्य कानजीस्वामी संघ सहित टोडरमल स्मारक भवन के उद्घाटन तथा वेदी

प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये दिनांक 6 मार्च को जयपुर पधार रहे हैं तथा यहाँ दिनांक 17 मार्च तक विराजेंगे। उनकी छत्रछाया में ही उपरोक्त सभी आयोजन सम्पन्न होंगे।

इसी अवसर पर पूज्य स्वामीजी द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक भवन के उद्घाटन के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम, जैन कवि सम्मेलन, जैन साहित्य सेमिनार, संगीत सम्मेलन, धार्मिक नाटक आदि के कार्यक्रम भी सम्पन्न होंगे।

इसके सम्बन्ध में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल की विशेष मीटिंग में महोत्सव की सुव्यवस्था के लिये श्री टोडरमल स्मारक महोत्सव कमेटी तथा अनेक समितियों का निम्न प्रकार गठन किया गया है।

(1) प्रचार समिति (2) विशेष अतिथि–समिति (3) पण्डाल समिति (4) वेदी प्रतिष्ठा (5) आवास (6) भोजन (7) जल व्यवस्था (8) प्रकाश (9) द्विशताब्दि समारोह (10) प्रदर्शनी (11) स्मारिका (12) जलूस (13) यातायात (14) साहित्य प्रचार (15) सांस्कृतिक कार्यक्रम (16) सार्वजनिक सम्पर्क समिति (17) सुरक्षा व्यवस्था समिति।

वेदी प्रतिष्ठा एवं द्विशताब्दि समारोह की तैयारियाँ जोरों से प्रारम्भ कर दी गई हैं।

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल (कार्यालय)
सेठी भवन, फोन नं० 73086
हनुमानजी का रास्ता, जयपुर–3

निवेदक—
मंत्री
श्री टोडरमल स्मारक महोत्सव कमेटी,
जयपुर

बुलेटिन नं० 1।
प्रचार मंत्री व सम्पादक :—डॉ० ताराचंद्र जैन, बख्शी भवन, न्यू कालोनी, जयपुर–1
आत्मधर्म के इस अंक का कोडपत्र

❁ ❁ ❁ ❁

आत्मधर्म, वर्ष-22, अंक-11

पण्डित श्री टोडरमल स्मारक हॉल का उद्घाटन, जिनमन्दिर में वेदी प्रतिष्ठा, पण्डितजी का द्विशताब्दि समारोह आदि महोत्सव निमित्त

पूज्य श्री कानजीस्वामी का जयपुर में पदार्पण

जयपुर—तारीख 6-3-67 श्री पण्डितजी के वंशज सुयोग्य आत्मार्थी श्री पूरणचन्दजी गोदीका द्वारा पवित्र धर्म प्रभावना का उत्तम उत्साह सहित, ऐतिहासिक और बड़ा भारी अनेकविध विशाल आयोजन हुआ (जिनका वर्णन करें तो ग्रन्थ बन जाये) संक्षेप में—पूज्य स्वामीजी का स्वागत, मंगल प्रवचन, दोपहर को श्री टोडरमल कीर्ति मण्डप में प्रवचन रखे गये थे। सभा स्थान 16000 संख्या सुन सके ऐसा विशाल था किन्तु शहर में कर्फ्यू होने से 8 दिन तो नगर निवासी बड़ी संख्या में आकर पूर्णतया लाभ न ले सके। बम्बई, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश से दो हजार मेहमान आये थे, समझदार विद्वानों की संख्या अच्छी थी, सर्वत्र सुन्दर तत्त्वचर्चा का वातावरण था जो कि देखते ही बनता था।

तारीख 7-8 पूज्य स्वामीजी द्वारा ऋषभजिनस्तोत्र (पद्मनन्दि) तथा समयसारजी शास्त्र पर प्रवचन हुये थे। रात्रि को पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव फिल्म, अजमेर भजनमण्डली तथा दाहोद निवासी भाईयों द्वारा भजन के कार्यक्रम तथा श्री खेमचन्दभाई, श्री बाबूभाई, श्री पण्डित गेंदालाजी शास्त्री, श्री पण्डित नाथूलालजी शास्त्री, पण्डित श्री बंशीधरजी के द्वारा प्रवचन।

तारीख 10 मार्च—महावीर जैन हाईस्कूल में श्री पूरणचन्दजी गोदीका द्वारा बड़े हॉल का उद्घाटन तथा स्वामीजी का प्रवचन, स्कूल को मदद रूप में अच्छी रकम का चन्द हुआ।

तारीख 11 मार्च टोडरमल स्मारक हॉल जिनमन्दिर में, इन्द्रध्वज, पूजन

विधान, शान्तिमन्त्र जाप्य प्रारम्भ, इन्द्र प्रतिष्ठा, नांदी विधान, मण्डल विधान पूजा, रात्रि को कीर्ति मण्डप में विद्वानों द्वारा प्रवचन।

तारीख 12 दोपहर में आदर्शनगर मुलतानी दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रवचन रखा गया था। रात्रि को श्री टोडरमलजी कीर्ति मण्डप में मदनगंज–किशनगढ़ के सुप्रसिद्ध श्री दिगम्बर जैन वीर संगीत मण्डल के युवक सदस्यों द्वारा 'श्री सीताजी की अग्नि परीक्षा' नामक धार्मिक अभिनय आकर्षक साज सामानों के साथ सुन्दर ढंग से दिखाया गया। 04 घण्टे में पूर्ण हुआ था जो सभी को अत्यधिक पसन्द आया। अभिनय का उद्घाटन श्री पण्डित हिम्मतलालजी जेठालालजी शाह एम.एस.सी. के कर कमलों द्वारा हुआ था।

मण्डल को अभिनय में होनेवाले व्यय के अलावा श्री पूरणचन्दजी सा० गोदीका द्वारा 1001) रुपया तथा श्री मीठालालजी महेन्द्रकुमारजी सेठी जयपुर द्वारा 101), श्री सेठ भगवानदासजी शोभालालजी सागर द्वारा 101) तथा श्री सेठ पोपटलालजी बोहर, फर्म–नेशनल टाइल्स एण्ड इण्डस्ट्रीज प्रा० लि० बम्बई द्वारा 101), श्री ला० कैलाशचन्द्रजी जैन, राजा टायेज दिल्ली द्वारा 101) रुपया प्रदान किये गये। इस मण्डल के सभी जैन युवकगण अच्छे सम्पन्न घराने के हैं, प्रदर्शन द्वारा जो आय होती है, उसे मदनगंज में जैन विश्रान्ति भवन बन रहा है, उसमें लगाते हैं।

तारीख 13 मार्च शहर में दीवानजी के बड़े मन्दिरजी में श्री कानजीस्वामी की उपस्थिति में मन्दिरजी में सुवर्ण कलशों तथा ध्वजादण्ड आरोहण विधि की गई, जो बीच में कई वर्षों से नहीं हो पाई थी। मन्दिरजी में जहाँ श्री टोडरमलजी के नित्य प्रवचन होते थे, वह स्थान बताया, तथा श्री पण्डित टोडरमलजी, पण्डित जयचन्दजी, पण्डित सदासुखदासजी आदि विद्वानों की हस्तलिखित प्रतियाँ, सुनहरी स्याही से लिखित तथा चित्रोंवाले शास्त्रों की प्रदर्शनी दिखाई गई। दर्शकों की बहुत भीड़ रही। वहाँ व्यवस्थापक श्री तथा डॉ. कस्तूरचन्दजी काशलीवाल, श्री भंवरलालजी शाह

आदि यह समझाते थे। पण्डित जगन्मोहनलालजी शास्त्री, श्री पण्डित कैलाशचन्दजी शास्त्री, पण्डित फूलचन्दजी शास्त्री, पण्डित बंशीधरजी न्यायालंकार, पण्डित प्रकाशचन्दजी 'हितैषी', पण्डित परमानन्दजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानगण ने उसमें अच्छी तरह भाग लिया, चर्चा-वार्ता चलती थी। स्वामीजी का प्रवचन यहाँ हुआ, श्रोताओं की सबसे ज्यादा संख्या रही। पश्चात् सवेरे 9 बजे से बापूनगर में श्री टोडरमल स्मारक भवन में पहुँचे। इस विशाल हॉल का उद्घाटन पूज्य श्री कानजीस्वामी के शुभहस्त से हुआ। जिनमन्दिर में वेदी में भगवान सीमन्धर भगवान की प्रतिष्ठा, शिखर पर कलश-ध्वजारोहण, स्मारक हॉल ऊपर ध्वजारोहण विधि, जिनमन्दिर में श्री समयसारजी शास्त्र जिनवाणी की स्थापना आदि सब विधि प्रतिष्ठाचार्य पण्डित श्री नाथूलालजी शास्त्री ने कराई। पूज्य कानजीस्वामी सब विधि में उपस्थित थे। श्री पूरणचन्दजी गोदीका, उनके परिवार तथा श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी, श्री नेमीचन्दजी पाटनी, श्री कोमलचन्दजी आदि तथा सभी कार्यवाहकों को धन्यवाद। आज श्री गोदीकाजी का शहर में स्थित चैत्यालय में जिनप्रतिमाजी विराजमान किये गये। तारीख 13 रात्रि को पण्डित टोडरमलजी द्विशताब्दि महोत्सव मनाया, उद्घाटन श्रीमान सेठ साहू शान्तिप्रसादजी जैन द्वारा करवाया गया। तथा इस मंगल कार्य में श्री नवनीतभाई सी. जवेरी (प्रमुख श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर सोनगढ़) को अध्यक्ष बनाया गया। आपका परिचय श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी ने कराया।

पूज्य स्वामीजी ने पण्डित कैलाशचन्दजी सिद्धान्तशास्त्री को मंगलाचरण पढ़ने को कहा, मंगल उच्चारण पश्चात् अध्यक्ष श्री नवनीतभाई का प्रवचन और टोडरमल स्मारक ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित पुष्प नं० 1 से 6 का तथा अन्य ग्रन्थों का उद्घाटन श्री पूरणचन्दजी द्वारा कराया गया, श्री गोदीकाजी द्वारा विद्वानों को ग्रन्थ समर्पण, (1) मोक्षमार्गप्रकाशक, (2-3) जयपुर (खानिया) तत्त्वचर्चा भाग 1-2, (4) अध्यात्मसन्देश (रहस्यपूर्ण चिट्ठी-प्रवचन), (5) मोक्षमार्ग प्रगट करने का

उपाय तत्त्वनिर्णय, (6) शास्त्रों के अर्थ करने की पद्धति उपरान्त—श्री टोडरमल जयन्ती स्मारिका, पद्मनन्दिपंचविंशतिका में से 'ऋषभजिनस्तोत्र', पण्डित टोडरमलजी परिचय। ग्रन्थ उद्घाटन के पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने टोडरमलजीकृत मंगलाचरण—

मंगलमय मंगल करण वीतराग विज्ञान
नमो तेह जातैं भये, अरहंतादि महान॥

पढ़कर सुन्दर अर्थ समझाये। पश्चात् जयपुर (खानिया) तत्त्वचर्चा पुस्तक का महत्त्व और उनका पूर्व इतिहास और प्रयोजन सुनाया। श्री नेमीचन्दजी पाटनी ने सोनगढ़ निवासी माननीय पण्डित श्री हिम्मतलाल जे० शाह का परिचय कराया। राजुल नामक बालिका जिसे कि पूर्व भव की स्पष्ट स्मृति है, उसका परिचय कराया। बाद में पण्डित श्री हिम्मतलालभाई ने टोडरमलजी तथा उनकी महान कृति का महिमा युक्त परिचय कराया, पश्चात् श्रीमन्त सेठ साहू शान्तिप्रसादजी ने श्री टोडरमलजी तथा पूज्य स्वामीजी द्वारा समाज को बहुत उपकार बताकर निश्चयनय द्वारा सच्चा समाधान और शान्ति मिलती है, ऐसा कहकर जैनाचार्यों की परम्परा और समाज हित की भावना प्रगट की। पश्चात् पण्डित जगन्मोहनलालजी शास्त्री ने, पूज्य टोडरमलजी प्रति परम श्रद्धा; जैन सिद्धान्तों की रक्षा का कर्तव्य और पूरणचन्द्रजी गोदीकाजी के प्रति धर्मवात्सल्य, स्वामीजी द्वारा पण्डित टोडरमलजी अनुसार महान धर्मकार्य और उपकारक का वर्णन-पश्चात् पण्डित श्री कैलाशचन्दजी, पण्डित श्री फूलचन्दजी, पण्डित श्री बंसीधरजी न्याय अलंकार और पण्डित श्री चैनसुखदासजी, श्री खेमचन्दभाई जे. शेठ ने अपनी-अपनी शैली से सुन्दर वक्तव्य दिये। श्री बाबूलाल चुन्नीलाल महेता ने पण्डित टोडरमलजी द्वारा महान उपकार और घोर उपसर्ग विजेता, जैनधर्म के अनमोल बलिदान वीररूप में अनेक प्रकार उनकी स्मृति गाकर सर्वज्ञ वीतराग कथित तत्त्वज्ञानमय स्मारक जीवन्त बनाने के लिये ध्रुवफण्ड की बात कहते

ही हजारों–सैंकड़ों की रकम दान में आने लगी, करीब एक लाख का चन्दा ध्रुवफण्ड में हो गया।

पण्डितजी चैनसुखदासजी, वयोवृद्ध होने पर आज भी अदम्य उत्साही हैं। आपने टोडरमलजी के वंशज गोदीकाजी पूरणचन्दजी का परिचय देकर उनकी महान आदर्शता बतलाई, स्मारकहॉल तथा जैन साहित्य का प्रकाश–विकास और शोधकार्य पर भार दिया, श्री पण्डित गेंदालालजी शास्त्री बूँदी, श्री पण्डित प्रकाशचन्दजी 'हितैषी', श्री पण्डित परमानन्दजी शास्त्री देहली, पण्डित भंवरलालजी न्यायतीर्थ आदि जयपुर के विद्वान तथा 105 क्षुल्लकजी पूर्णसागरजी आदि त्यागीगण पधारे थे।

तारीख 14–15–16 तक विद्वानों के प्रवचन द्वारा टोडरमलजी द्विशताब्दि जयन्ती मनायी गयी।

तारीख 14 मार्च—रात्रि को जिनेन्द्रभक्ति उपरान्त हिम्मतनगर जिनेन्द्र पंच कल्याणक फिल्म प्रदर्शनी भी दिखायी गयी।

टोडरमलजी स्मारक भवन बहुत बड़ा विशाल बना है, उनका तथा इस महामहोत्सव के आयोजन तथा व्यवस्था के सब खर्च श्री सेठ पूरणचन्दजी गोदीका परिवार की ओर से लगा है। इस महोत्सव की तैयारी 12 मास से हो रही थी, उनमें मुख्य–मुख्य सहयोगदाता, कार्यकर्तागण सबके नाम लिखा जाना सम्भव नहीं, सभी को बहुत–बहुत धन्यवाद।

जयपुर में इस टोडरमल स्मारक ग्रन्थमाला पुस्तक प्रकाशन आदि की जानकारी के लिये पत्र व्यवहार करना हो तो पता—श्री भंवरलालजी शाह ठि० चित्तरंजन मार्ग–सी–स्कीम, शान्ति निवास पोस्ट जयपुर (राजस्थान) पर करें।

❁ ❁ ❁ ❁

बम्बई नगरी में रत्नचिन्तामणि–जन्मोत्सव

धन्य हुई बम्बई नगरी और धन्य हुए भक्त....वैशाख शुक्ला दोज को गुरुदेव का ८0वाँ जन्मोत्सव आनन्दोल्लासपूर्वक रत्नचिन्तामणि महोत्सव के रूप में मनाया गया। प्रात:काल ही अनेक भक्त गुरुदेव के जन्म की मंगल–बधाई लेकर आ पहुँचे और रत्नों से पूज्य गुरुदेव को बधाई दी। सर्वप्रथम गुरुदेव अपने परम प्रिय सीमन्धरनाथ का आशीर्वाद लेने के लिय जिनमन्दिर गये... उस समय शुभ शकुनरूप में सामने से जन्म–मंगल गाती हुई प्रभातफेरी उन्हें सामने मिली। जिनमन्दिर में जाकर पूज्य गुरुदेव ने सीमन्धरनाथ के दर्शन किये, अर्घ चढ़ाया और रत्नों से भगवान की आरती की। गुरुदेव के साथ भगवान के दर्शन करते हुए भक्तों को आनन्द हो रहा था! तत्पश्चात् गुरुदेव महावीरनगर के मण्डप में पधारे। आज मण्डप की शोभा अद्भुत थी! जब बम्बई नगरी सो रही थी और रास्ते सुनसान थे, उस समय महावीरनगर का मण्डप जन्म की बधाइयों से गूँज रहा था। मण्डप चारों ओर से जगमगा रहा था और उसके प्रवेश द्वार पर चौबीसों भगवान मानों एक साथ पधारकर गुरुदेव पर आशीर्वाद बरसा रहे थे। ज्यों ही गुरुदेव प्रवेश द्वार पर आये कि तुरन्त हाथी ने सात बार सूँढ़ उठाकर चन्दनहार से गुरुदेव का स्वागत किया; शहनाई की ध्वनि वातावरण में गूँज उठी और हजारों भक्तों के जय–जयकार से मण्डप गूँज उठा। गुरुदेव सुशोभित पाठपीठ पर आकर विराजमान हुए और सबने स्तुति–मंगलपूर्वक जन्मोंत्सव का

आह्लाद व्यक्त किया। बम्बई का समुद्र भी मानों इस रत्नाकर का गुणगान कर रहा हो, इस प्रकार धीर-गम्भीर मधुरनाद से लहरा रहा था। आज के इस मंगल अवसर पर केवलज्ञानादि परम ऋद्धिधारी सन्तों का स्मरण करके चौंसठ ऋद्धि मंगल-विधान हुआ था। प्रवचन से पूर्व पूज्य गुरुदेव के 'जीवन-परिचय' का एक सुन्दर अंक गुजराती में प्रकाशित किया गया। जिस प्रकार पाँच वर्ष पूर्व बम्बई में गुरुदेव की हीरक जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रगट करके तत्कालीन गृहमन्त्री स्व. श्री लालबहादुर शास्त्री द्वारा पूज्य गुरुदेव को अर्पण किया गया था, उसी प्रकार इस रत्नचिन्तामणि महोत्सव पर भी कोई सुन्दर ग्रन्थ प्रगट करने की भावना बम्बई मुमुक्षु मण्डल की थी और वह काम उन्होंने श्री ब्रह्मचारी हरिलालजी को सौंपा। श्री हरिलालजी ब्रह्मचारी ने गुरुदेव का विस्तृत जीवन-परिचय तथा गुरुदेव के पवित्र हस्ताक्षरों आदि का संकलन करके वह सुन्दर अंक तैयार किया था। आज के मंगल प्रसंग पर वह श्री रमणीकलाल जेठालाल सेठ द्वारा गुरुदेव को अर्पण किया गया। अंक के मुखपृष्ठ पर श्री सीमन्धर भगवान के साथ गुरुदेव का सम्बन्ध दर्शानेवाला सुन्दर दृश्य चाँदी के पत्र में अंकित किया गया है। अंक का लागत मूल्य तीन रुपये होने पर भी मात्र एक रुपये में बेचा जा रहा है।

'जीवन परिचय-अंक' का प्रकाशन होने के पश्चात् श्री समसयसार की ७१वीं गाथा पर पूज्य गुरुदेव का प्रवचन हुआ।

❁ ❁ ❁ ❁

बम्बई नगरी में वैशाख शुक्ला दौज का मंगल-प्रवचन

रत्नचिन्तामणि-जन्मोत्सव उल्लासपूर्वक समाप्त होने के बाद नर-नारियों की विशाल सभा में प्रवचन करते हुए गुरुदेव ने प्रारम्भ में ही महिमापूर्वक कहा कि—इस समयसार की आध्यात्मिक चर्चा इस बम्बई जैसी महानगरी में हजारों जिज्ञासुओं के बीच चल रही है, वह जीवों का महान सद्भाग्य है। बड़ा शहर हो या छोटा गाँव हो,

[फोटो : पूनम सेठ, बम्बई]

बम्बई में प्रेमपूर्वक परमात्मपद का प्रवचन सुनते हुए श्रोताजन

परन्तु जिसे अपना हित करना है, उसे आत्मा की यह बात अवश्य लक्ष्य में लेना होगी।

भगवान आत्मा ज्ञान–आनन्द की मूर्ति है; उसमें शुभ या अशुभ रागादिभाव होते हैं, वह आस्रव हैं, वह आत्मा का मूल स्वरूप नहीं है, वे तो परोन्मुखता से होनेवाले विकृतभाव हैं, उनकी और ज्ञान की एकता नहीं है परन्तु पृथकता है। ज्ञान तो सहज शान्त आनन्दस्वरूप है और रागादिभाव आकुलतारूप हैं, दुःखरूप हैं। ऐसी भिन्नता को भूलकर जीव ज्ञान और राग दोनों को एकमेक मानकर, उसमें कर्ता–कर्मपना मानता है, इसलिए दुःखी है। उस दुःख से आत्मा कैसे छूटे? उसकी यह बात है।

भूल, वह दुःख है। भूल पर में नहीं है और पर के कारण नहीं है; शरीर में भूल नहीं है। अपने ज्ञानस्वभाव से च्युत होकर रागादि विकार मेरा कार्य—ऐसी मिथ्याबुद्धि, वह दुःख है। अपने में ऐसा दुःख जिसे भासित होता है और अब उससे छूटना चाहता है, वह शिष्य जिज्ञासा से पूछता है कि—प्रभो! ऐसा अज्ञान कैसे दूर हो? और ज्ञान द्वारा आत्मा इन दुःखमय आस्रवों से कैसे छूटे?—उसकी रीति बतलाइये।

उसके उत्तर में आचार्यदेव 71वीं गाथा में आत्मा और आस्रवों की भिन्नता बतलाते हुए भेदज्ञान कराते हैं। आत्महित की यह अद्भुत बात है!

प्रथम तो आत्मा इस जगत में एक स्वतन्त्र वस्तु है और स्वतन्त्र वस्तु अपने स्वभावमात्र ही होती है, इसलिए आत्मा अपने ज्ञानस्वभाव जितना ही है। ज्ञान के परिणमन में राग का परिणमन नहीं है। आत्मा के ज्ञानस्वभाव का परिणमन होकर उसमें से क्रोधादि की उत्पत्ति नहीं होती और क्रोधादि के परिणमन में से ज्ञान उत्पन्न नहीं होता। इस प्रकार दोनों की (ज्ञानस्वभाव की ओर क्रोधादि परभावों की) अत्यन्त भिन्नता है; ऐसी भिन्नता को जानने पर आत्मा उन क्रोधादि का कर्ता नहीं

होता; ज्ञानभाव के कर्तारूप ही परिणमित होता है। ऐसा अपूर्व भेदज्ञान, वह मोक्ष की कला है।

सीमन्धर परमात्मा साक्षात् विराजमान हैं; उनकी दिव्यध्वनि साक्षात् सुनकर कुन्दकुन्दाचार्यदेव कहते हैं कि—भाई! आत्मा ज्ञानरूप रहनेवाला है, वह क्रोधरूप होनेवाला नहीं है। जो क्रोधरूप हो, उसे हम सच्चा आत्मा नहीं कहते। ज्ञानानन्दस्वरूप आत्मा आनन्द का धाम है; ऐसे ज्ञानस्वरूप को जो जानता है, अपने को ज्ञानस्वरूप अनुभव करता है, वह राग को अपनेरूप नहीं मानता, राग से भिन्नरूप ही अपने को जानता है। सीमन्धर भगवान ने जो कहा, वही कुन्दकुन्दाचार्यदेव कहते हैं। सर्वज्ञ की वाणी कहो या सन्तों की वाणी कहो—दोनों में कोई अन्तर नहीं है। भगवान आत्मा ज्ञायकतत्त्व है, वह ज्ञायकतत्त्व कहीं रागादि परभावों से संयुक्त नहीं है परन्तु अज्ञानी को वह संयुक्त भासित होता है। अज्ञानी का ऐसा प्रतिभास, वह संसार का बीज है। परभावों से भिन्न शुद्ध आत्मा का प्रतिभास अर्थात् अनुभव, वह मोक्ष का बीज है। भेदज्ञानरूपी दोज उगी, वह बढ़ते–बढ़ते केवलज्ञानरूपी पूर्णिमा होगी ही।

चैतन्यरस की मस्ती में सभा को झुलाते–झुलाते पूज्य गुरुदेव ने कहा कि—सम्यग्दर्शन होने पर धर्मी को अपना आत्मा ज्ञानरूप होता भासित होता है, आनन्दरूप होता भासित होता है, परन्तु रागरूप या संयोगरूप होता भासित नहीं होता। राग को जानने से मैं रागरूप हो गया अथवा संयोग को जानने से मैं संयोगरूप हो गया—ऐसा ज्ञानी अनुभव नहीं करते; परन्तु राग से और संयोग से भिन्नरूप अपना अनुभव करते हैं। सर्वज्ञ भगवान ने तथा सन्तों ने जो कहा, वही यहाँ कहा जा रहा है, और जिसे कल्याण करना हो, उसे यह बात मानना ही होगी... फिर आज माने या कल माने; परन्तु इसे मानने से ही कल्याण एवं धर्म है।

गुरुदेव का यह भावपूर्ण प्रवचन हजारों श्रोता उल्लासपूर्वक सुन रहे थे और सुनते–सुनते बारम्बार हर्षध्वनि करते थे। गुरुदेव भी आज खूब प्रसन्न थे और प्रवचन

[फोटो : पूनम सेठ, बम्बई]

भीतर स्वभाव में शक्ति भरी है.... उसमें एकाग्र होने से सर्वज्ञपद प्रगट होता है....

के बीच-बीच में विदेहीनाथ सीमन्धर भगवान को याद कर-करके कहते थे कि यह तो भगवान का आदेश है... भगवान का आदेश तीन काल-तीन लोक में बदल नहीं सकता। करीब पन्द्रह हजार श्रोताजन भगवान के उस आदेश को भक्तिपूर्वक शिरोधार्य करके अपने को धन्य मान रहे थे। मोहनगरी मानों आज अध्यात्मनगरी बन गई थी। नगर में सर्वत्र अध्यात्म की गूँज थी।

आनन्द भरे वातावरण के बीच प्रवचन समाप्त हुआ और जन्मोत्सव की मंगल-बधाई से मण्डप गूँज उठा। आज के शुभ दिन मोरबी निवासी भाई श्री यशवन्तराय चन्दुलाल पारेख (हाल-धनबाद) ने तथा अन्य कुछ भाई-बहिनों ने ब्रह्मचर्य-प्रतिज्ञा अंगीकार की। पश्चात् समाज की ओर से पूज्य गुरुदेव को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सोनगढ़ के विद्वान पण्डित श्री हिम्मतलाल जेठालाल तथा दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर के अध्यक्ष श्री नवनीतलाल जवेरी ने गुरुदेव का उपकार व्यक्त किया था। जैन समाज के अग्रणी सेठ श्री श्रेयांसप्रसाद साहू ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी। तदुपरान्त भाईश्री वाडीलाल चत्रभुज गाँधी जो कि श्वेताम्बर जैन समाज के अग्रणी कार्यकर्ता हैं, उन्होंने भी भावभीनी श्रद्धांजलि व्यक्त की थी। पण्डित श्री भगवानदासजी तथा पण्डित अमृतलालजी ने काव्यों द्वारा अपनी हार्दिक अंजली अर्पित की थी। सूरत निवासी श्री मूलचन्द किसनदास कापड़िया जो कि एक वयोवृद्ध समाजसेवी हैं और अनेक वर्षों से समाज की सेवा करते आ रहे हैं, उन्होंने अपनी जोशदार शैली में गुरुदेव का अभिनन्दन किया था। तत्पश्चात् भाईश्री प्राणलाल छगनलाल वोर, पण्डित श्री बंसीधरजी न्यायालंकार इन्दौर, पण्डित हीरालालजी शास्त्री ब्यावर; महाराष्ट्र के विद्वान कार्यकर्ता पण्डित माणिकचन्दजी चवरे कारंजा; तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामन्त्री श्री चन्दुलाल कस्तूरचन्द, तथा विद्वान श्री खीमचन्द जेठालाल सेठ एवं प्रसिद्ध वक्ता अध्यात्मप्रेमी श्री बाबूभाई फतेपुरवालों ने भी संक्षिप्त भाषण द्वारा गुरुदेव का खूब-खूब उपकार मानते हुए अपनी हार्दिक

शुभकामनाएँ व्यक्त की थी। तत्पश्चात् 80वें रत्नचिन्तामणि–जन्मोत्सव के हर्षोपलक्ष्य में अनेक भाई–बहिनों की ओर से '80' के मेलवाली रकमों के दान की घोषणा की गई थी। सर्व प्रथम श्री नवनीतलाल चुनीलाल जवेरी ने 101×80=8080 रुपये की रकम लिखायी और देखते ही देखते करीब सवा लाख रुपये एकत्रित हो गये।

बम्बई में मनाये गये इस रत्नचिन्तामणि–जन्मोत्सव की स्थायी स्मृति के रूप में बम्बई दिगम्बर मुमुक्षु मण्डल की ओर से निम्नानुसार तीन योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही हैं:—

(1) **जिनागम मन्दिरः**—सोनगढ़ में एक सुन्दर हॉल बनवाकर उसकी दीवारों पर संगमरमर पाषाण में भगवान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव प्रणीत पाँच परमागम श्री समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, पंचास्तिकाय तथा अष्टप्राभृत अंकित कराये जायें। जिसका खर्च करीब तीन लाख रुपये होगा। (जन्मोत्सव के फण्ड में आयी हुई रकम का उपयोग इस जिनागम मन्दिर के निर्माण में होगा।)

(2) **साहित्य प्रकाशनः**—गुजराती एवं हिन्दी भाषा के उपरान्त मराठी, कन्नड़, अंग्रेजी आदि भाषाओं में भी साहित्य का प्रकाशन करके उसका प्रचार किया जाये।

(3) **जैन विद्यार्थी गृहः**—बम्बई (मलाड) में श्री जिनमन्दिर के निकट एक जैन विद्यार्थी गृह का निर्माण कराया जाये। जिसका प्रारम्भ माननीय सेठ श्री जुगराजजी की उदार सखावत से हो चुका है।

जन्म–जयन्ती की रात्रि को पूज्य गुरुदेव के जीवन सम्बन्धी विविध घटनाओं से युक्त एक सुन्दर नाटक भी प्रदर्शित किया गया था।

वैशाख शुक्ला तृतीया को इन्द्रों ने यागमण्डल पूजन विधान किया और

भगवान के गर्भकल्याणक की पूर्वक्रिया के दृश्य दिखाये गये। भगवान महावीर का जीव देवलोक से छह महीने बाद तीर्थंकर के रूप में वैशाली के राज सिद्धार्थ के घर रानी त्रिशला देवी की कूख से जन्म लेनेवाला है... वे सब दृश्य बड़े ही आकर्षक ढंग से दिखाये गये थे। इन्द्र वैशाली नगरी को सजाते हैं, कुमारिका देवियाँ माताजी की सेवा करती हैं; माताजी को 16 मंगल स्वप्न आते हैं आदि। पूज्य गुरुदेव के प्रताप से बम्बई नगरी में दस वर्ष के भीतर यह तीसरी बार पंच कल्याणक के अद्भुत दृश्य दिखाये जा रहे हैं, जिन्हें देखकर हजारों जिज्ञासु मन्त्रमुग्ध हो जाते थे। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के काँग्रेस अध्यक्ष श्री मिश्रीलालजी गंगवाल ने गुरुदेव का अभिनन्दन करते हुए गुजराती भाषा में एक गीता गाया था कि—

जिननां समोसरणनुं अहीं भाग्य छे ना;
दिव्यध्वनि श्रवणनुं अहीं भाग्य छे ना;
तो ये सीमंधर अने वीरना ध्वनिना
पडघा सुणाय गुरुकहान-प्रवचनोमां....

वैशाख शुक्ला चतुर्थी के प्रातःकाल माताजी के १६ मंगलस्वप्नों का उत्तम फल; देवियों द्वारा माताजी से तत्त्वचर्चा, भक्ति आदि दृश्य हुए थे। दोपहर को मलाड जिनमन्दिर में कलश-धवज तथा वेदीशुद्धि हुई थी। रात्रि को श्रीकृष्ण के लघु भ्राता गजकुमार के वैराग्य जीवन सम्बन्धी नाटक प्रदर्शित किया गया था। मोरबी (सौराष्ट्र) की राष्ट्रीयशाला के बालकों ने भक्ति-नृत्य एवं संवाद का अच्छा कार्यक्रम प्रस्तुत किया था।

जहाँ लाखों लोगों की अपार भीड़ और कोलाहल के बीच रास्ते पर चलना भी कठिन हो... ऐसी दौड़धाम के बीच जब लोग महावीरनगर के कार्यक्रम देखते थे तब उन्हें ऐसी शान्ति का अनुभव होता था मानों बम्बई से दूर-दूर किसी शान्तिपूर्ण स्थान में बैठे हों... उसी में वैशाख शुक्ला पंचमी का वातावरण तो बम्बई के लिये

आश्चर्यकारी था। प्रात:काल भगवान महावीर का जन्म हुआ और अद्‌भुत हर्षपूर्ण कोलाहल के बीच धामधूम से जन्मकल्याणक मनाया गया। इन्द्र भक्ति से नाच उठे; सिद्धार्थ महाराजा के दरबार में पुत्रजन्म की मंगल बधाईयाँ बजने लगीं; चारों ओर हर्ष छा गया। वैभवशाली बम्बई नगरी आज सच्चे अर्थ में वैभवशाली बन गई। इन्द्रराज ऐरावत लेकर आ पहुँचे और धामधूम से जन्माभिषेक की सवारी मेरु पर्वत की ओर चलने लगी। अद्‌भुत जुलूस देखकर नगरजन आश्चर्य में पड़ जाते थे कि—अरे, यह काहे की सवारी निकल रही है!! कौन बैठा है इस गजराज पर!! कौन से महात्मा पधारे हैं?... धीरे-धीरे जन्माभिषेक की सवारी बोरीबन्दर स्टेशन के सामने आज़ाद मैदान में निर्मित मेरुपर्वत की ओर आगे बढ़ रही थी! पूज्य गुरुदेव भी साथ-साथ चल रहे थे। लोगों के हर्षोल्लास का पार नहीं था।....मेरुपर्वत पर विराजमान भगवान की शोभा अद्‌भुत थी! इन्द्र परमभक्ति से भगवान का अभिषेक कर रहे थे। उस समय 'हेलीकॉप्टर' से दो बार पुष्पवृष्टि की गई थी। जिनेन्द्र महिमा के दृश्यों से भक्तजन आनन्दित हो रहे थे... भगवान का जन्माभिषेक अत्यन्त उल्लासपूर्ण वातावरण में समाप्त हुआ।

दोपहर को बालतीर्थंकर वीरकुँवर को पालना झुलाने की विधि हुई थी। हजारों भक्तों ने भगवान वीरकुँवर का पालना झुला-झुलाकर अपनी हार्दिक भक्ति व्यक्त की थी।

रात्रि को 'जैन कला केन्द्र, टूण्डला' की मण्डली ने भगवान के गर्भ एवं जन्मकल्याणक के दृश्य नृत्य-अभिनय द्वारा प्रस्तुत किये थे जो वास्तव में दर्शनीय थे। जिन्हें देखकर दर्शक हर्षविभोर हो गये थे। रात्रि को सिद्धार्थ महाराजा की सभा और भगवान के विवाह का प्रस्ताव तथा भगवान द्वारा उस प्रस्ताव का अस्वीकार एवं वैराग्य द्वारा बारह भावनाओं का चिन्तवन... दृश्य हुए थे।

वैशाख शुक्ला 6 के प्रात:काल लोकान्तिक देवों ने आकर भगवान की स्तुति

की और उनके वैराग्य का अनुमोदन किया। इन्द्र दीक्षा–कल्याणक मनाने के लिये पालकी लेकर आ पहुँचे। दीक्षा के लिये वनगमन की भव्य रथयात्रा निकली। दीक्षावन में (विल्सन हाईस्कूल, खेतवाड़ी में) अपार भीड़ एवं कोलाहल के बीच भगवान ने चैतन्य की परम शान्ति में लीन होकर मुनिदशा प्रगट की... धन्य वह मुनिदशा और वह पावन दृश्य! मोहमयी नगरी में निर्मोही मुनिराज को देखकर वैराग्यपूर्ण वातावरण छा गया था। भगवान की दीक्षा के पश्चात् पूज्य गुरुदेव ने उस मुनिदशा की भावना भायी और उस दशा की परम महिमा अपने प्रवचन में प्रगट की। जिसकी फिल्म सरकार की ओर से भारतीय समाचार चित्र (इण्डियन न्यूज रील) के लिये उतारी गई थी... जो कुछ ही दिनों में भारत के समस्त सिनेमागृहों में प्रदर्शित की जायेगी। दीक्षावन में गुरुदेव का धारावाही प्रवचन अद्भुत था।

आज वैशाख शुक्ला 6 के दिन बम्बई के झवेरी बाजार स्थित जिनमन्दिर की प्रतिष्ठा के 10 वर्ष पूरे हो रहे थे, इसलिए मन्दिर पर ध्वजारोहण हुआ था। सायंकाल घाटकोपर जिनमन्दिर की वेदीशुद्धि एवं कलश–ध्वजशुद्धि हुई थी। रात्रि को 'जिनेन्द्र कलाकेन्द्र, टूण्डला' की ओर से भगवान के शेष तीन कल्याणकों (दीक्षा, केवलज्ञान और मोक्ष) का नृत्य–अभिनय प्रदर्शित किया गया था जो वास्तव में दर्शनीय एवं सराहनीय था। रीछ द्वारा मुनिभक्ति का दृश्य आनन्दकारी था।

वैशाख शुक्ला सप्तमी, बुधवार को मुनिराज महावीर भगवान के आहारदान का पावन दृश्य दर्शकों के हृदय में भक्ति एवं वैराग्य जागृत करता था। मुनिराज का आहारदान देखकर हजारों भक्त उसका अनुमोदन कर रहे थे। आहारदान का सौभाग्य 'इप्का' लेबोरेटरीवाले श्री बलुभाई चुनीलाल शाह को प्राप्त हुआ था और उस अवसर पर उन्होंने ब्रह्मचर्य–प्रतिज्ञा अंगीकार करके सराहनीय कार्य किया था। (आजाद मैदान के निकट ही आहारदान की विधि हुई थी।) दोपहर को गुरुदेव के सुहस्त से जिनबिम्बों पर अंकन्यासविधान हुआ था—जिसमें बासठ जिनबिम्बों पर गुरुदेव ने

अंकन्यास किया था। विदेहक्षेत्र के बीस तीर्थंकर तथा भरतक्षेत्र के 24 तीर्थंकर—इस प्रकार तीर्थंकर भगवन्तों का मेला देखकर प्रसन्नता होती थी। तीन महीने में तीन बार पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ तथा सौ जितने जिनबिम्बों की स्थापना का होना एक अद्‌भुत महान धर्मप्रभावना है... और ऐसी धर्मप्रभावना पूज्य गुरुदेव के प्रताप से हो रही है। हजारों जीव गुरुदेव के प्रवचनों द्वारा जैनधर्म का वीतरागी सन्देश सुनकर अपने को धन्य अनुभव कर रहे हैं!

दोपहर को केवलज्ञानकल्याणक की पूजा एवं समवसरण की रचना हुई थी। पूज्य गुरुदेव ने प्रवचन द्वारा दिव्यध्वनि का सार समझाया था। वे बारम्बार कहते थे कि भगवान ने दिव्यध्वनि में जो कहा, वही बात साक्षात् सुनकर कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने इस समयसार में समझायी है और वही बात यहाँ कही जा रही है। आज भी जिनेन्द्र कला केन्द्र टूण्डला का सुन्दर कार्यक्रम था।

वैशाख शुक्ला सप्तमी (द्वितीय) गुरुवार के प्रात:काल निर्वाणकल्याणक होने के पश्चात् तुरन्त मलाड के जिनमन्दिर में भगवन्तों को विराजमान किया गया। पूज्य गुरुदेव के शुभहस्त से भगवन्तों की प्रतिष्ठा हुई, उस समय मलाड जिनमन्दिर में तथा आसपास अपार भीड़ थी। मूलनायक भगवान ऋषभदेव को विराजमान करने का लाभ श्री मणिलाल जेठालाल सेठ और उनके भाईयों ने लिया था। भगवान ऋषभदेव के आसपास भगवान वासुपूज्य एवं भगवान मल्लिनाथ को विराजमान करने का लाभ श्री नवनीतलाल चुनीलाल जवेरी तथा चन्द्रकान्त हरिलाल दोशी ने लिया था। तदुपरान्त ऊपर के भाग में सीमन्धरादि बीस विहरमान भगवन्तों की प्रतिष्ठा हुई थी, जिसमें भिन्न-भिन्न लोगों ने उत्साहपूर्वक प्रतिष्ठा का लाभ लिया था। एक साथ बीस विहरमान तीर्थंकरों की प्रतिष्ठा के अवसर पर लोगों में खूब उल्लास था। ऊपर से हेलीकॉप्टर विमान द्वारा पुष्पवृष्टि हो रही थी। आकाश में से होनेवाली उस पुष्पवृष्टि का दृश्य मनोहर था... ऐसा लगता था जैसे मन्दिर के चारों ओर जगमागते हुए रत्नों

की वर्षा हो रही हो! जिनेन्द्रमहिमा के ऐसे नये–नये दृश्य देखकर आनन्द होता था। आज तो मलाड उपनगर का वातावरण बदल गया था, मानों सारा उपनगर जैनों से भर गया हो! इस प्रकार आनन्दसहित मलाड जिनमन्दिर में जिनेन्द्र भगवन्तों की प्रतिष्ठा पूर्ण हुई। वहाँ विराजमान सर्व जिनेन्द्र भगवन्तों को हमारा नमस्कार हो!

दूसरे दिन वैशाख शुक्ला अष्टमी के प्रात:काल पूज्य गुरुदेव घाटकोपर जिनमन्दिर में जिनेन्द्र भगवन्तों की प्रतिष्ठा करने के लिये पधारे और हजारों भक्तों ने गुरुदेव का हार्दिक स्वागत किया। मन्दिर के प्रांगण में और आसपास बेसुमार भीड़ थी। मूलनायक श्री नेमिनाथ भगवान को विराजमान करने का लाभ श्री मणिलाल जेठालाल सेठ एवं उनके भाईयों ने लिया था; सीमन्धरनाथ भगवान को विराजमान करने का लाभ जयन्तीलाल बेचरदास दोशी ने लिया था। तदुपरान्त ऊपर के भाग में ऋषभादि चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिष्ठा हुई थी, उसमें भिन्न–भिन्न सद्गृहस्थों ने उल्लासपूर्वक प्रतिष्ठा का लाभ लिया था। एक साथ चौबीस भगवन्तों की प्रतिष्ठा के अवसर पर लोगों में खूब उत्साह था। ऊपर से हेलीकॉप्टर विमान द्वारा होनेवाली पुष्पवृष्टि सबको आनन्दित कर रही थी। यों तो घाटकोपर उपनगर के आकाश में प्रतिदिन सैकड़ों विशाल वायुयान गुजरते हैं, परन्तु जिनेन्द्र भगवन्तों पर पुष्पवृष्टि के लिये उड़ते हुए हेलीकॉप्टर को देखकर सारा उपनगर आश्चर्यचकित हो रहा था। सारे उपनगर में जिनेन्द्र महिमा फैल रही थी।—इस प्रकार घाटकोपर के जिनमन्दिर में आनन्दपूर्वक जिनेन्द्र भगवन्तों की प्रतिष्ठा हुई। वहाँ विराजमान सर्व जिनेन्द्र भगवन्तों को नमस्कार हो!

दोनों उपनगरों में आनन्दपूर्वक जिनेन्द्र भगवन्तों की प्रतिष्ठा हुई और मन्दिर के शिखर पर कलश एवं ध्वजाएँ चढ़ने से वे सुशोभित हो उठे।

दोपहर को शान्तियज्ञ के पश्चात् भगवान की भव्य रथयात्रा निकली और

आनन्दमय वातावरण के बीच जय–जयकारपूर्वक मंगल–उत्सव समाप्त हुआ। इसके लिये बम्बई नगरी के मुमुक्षुओं को धन्यवाद।

बम्बई मुमुक्षु मण्डल के उत्साही अध्यक्ष श्री रमणीकलाल जेठालाल सेठ तथा मन्त्री श्री चिमनलाल ठाकरशी मोदी एवं मुकुन्दभाई मणिलाल खारा आदि समस्त उत्साही कार्यकर्ता तथा मलाड के अध्यक्ष श्री धीरजलाल भाईलाल डेलीवाला, एवं घाटकोपर के अध्यक्ष श्री मनमोहनदास छोटालाल गाँधी आदि सर्व मुमुक्षुओं ने उल्लासपूर्वक उत्सव की शोभा एवं सफलता में तन–मन–धन से योगदान दिया। मात्र दो–तीन महीने में ही मलाड तथा घाटकोपर दोनों स्थानों पर इतने भव्य जिनालय तैयार हो गये जिन्हें देखकर आश्चर्यानन्द होता है।

इस उत्सव के प्रसांगों का सुन्दर वर्णन करने का सम्पादक ने प्रयत्न किया है; परन्तु बम्बई के कठिनाई भरे वातावरण के बीच कितने ही कार्यों में वे पहुँच नहीं पाते थे; इसलिए किन्हीं–किन्हीं प्रसंगों का वर्णन बाकी रह जाने की सम्भावना है।

अन्त में हर्षपूर्वक एक जरूरी बात कहना है कि—अहमदाबाद की भाँति बम्बई नगरी में भी—जहाँ एक लाख से भी अधिक जैनों की संख्या होगी—दिगम्बर जैन समाज के इस भव्य प्रतिष्ठा–महोत्सव में बम्बई के श्वेताम्बर जैन समाज ने अत्यन्त मध्यस्थता से, प्रेमपूर्वक हो सके उतना सहयोग देकर समस्त जैन समाज का गौरव बढ़ाया है। कहीं भी विसंवाद का नामनिशान नहीं था। यह बम्बई के लिये तथा सारे भारत के जैन समाज के लिये शोभा की बात है, इससे जैन समाज का गौरव बढ़ा है। हम सब भगवान जिनेन्द्रदेव से प्रार्थना करें कि—इस प्रकार सारे भारत में मित्रता का वातावरण फैले और जैनशासन का झण्डा गगन में लहराये।

जयजिनेन्द्र

जैनं जयतु शासनम्

श्री कहानरत्नचिन्तामणि–जयन्ती महोत्सव

मुम्बईनगरी का यह यादगार महोत्सव.... वीर सं. २४९० वैशाख
हीरकजयन्ती और जिनबिम्ब–पंच कल्याणक में यह मधुर संभारणां

મુંબઈનગરીનો એ યાદગાર મહોત્સવ........વીર સં. ૨૪૯૦ વૈશાખ
હીરકજયંતી અને જિનબિંબ–પંચકલ્યાણકનાં આ મધુર સંભારણાં.

'સ્વાનુભૂતિથી ઝળકે છે, નિજ ચૈતન્યતેજે ચમકે છે, જિનમાર્ગને પ્રકાશે છે આ હીરલો હિન્દુસ્તાનનો.'
[ફોટા: પુનમ શેઠ, મુંબઈ]

'स्वानुभूति से झलके है, निज चैतन्य तेज चमके है, जिनमार्ग को प्रकाशित करता है यह हीरा हिन्दुस्तान का।'

[फोटो : पूनम सेठ, मुम्बई]